|| अर्हम् ||

|| न्यायाम्भोनिधिश्रीमद्विजयानन्दसूरीश्वरेभ्यो नमः ||

वडगच्छगयणदिणयरसिरिनेमिचन्दसूरिरइयं

महावीरचरियम् ।

पणमह पढमजिणिन्दं भवियाणणकमलबोहणदिणिन्दं । कोहण्डुयासणकन्दं[1] पणयासुरअमरनरइन्दं ॥ १ ॥
सिरिसिद्धत्थनराहिवकुलनहयलविमलपुण्णिमायन्दं । निज्जियकामगइन्दं[2] पणमह वीरं सया धीरं ॥ २ ॥
सेसेऽवि य बावीसे अजियाईपासनाहपज्जन्ते । जियरागदोसमोहे वन्दामि जिणेसरे सिरसा ॥ ३ ॥
जरजम्ममरणरहिए केवलवरनाणदंसणसमग्गे । सिद्धे निद्धुयकम्मे अणाइनिहणे सया नमह ॥ ४ ॥
पञ्चविहायारधरे सुत्तत्थविसारए पसन्तमणे । भवियारविन्दपडिबोहदिणयरे नमह आयरिए ॥ ५ ॥
परमत्थगहियसारे आयाराईदुवालसङ्गस्स । संजमतवनियमरए उज्झाए नमह सुत्तादए[3] ॥ ६ ॥
पञ्चमहव्वयगुरुभारधारए चरणकरणसंपन्ने । पञ्चसमिए तिगुत्ते मुत्ते साहू य[4] सइ नमह ॥ ७ ॥

१ 'कन्दं' इति कं जलं ददातीति कन्दं मेघमित्यर्थः । २ अ—°मइन्दं । ३ 'सुत्तदए' इति सूत्रददानित्यर्थः । ४ ब—°सया ।

॥ अर्हम् ॥

॥ न्यायाम्भोनिधिश्रीमद्विजयानन्दसूरीश्वरेभ्यो नमः ॥

वडगच्छगयणदिणयरसिरिनेमिचन्दसूरिरइयं

महावीरचरियम् ।

पणमह पढमजिणिन्दं भवियाणणकमलबोहणदिणिन्दं । कोहहुयासणकन्दं पणयासुरअमरनरइन्दं ॥ १ ॥
सिरिसिद्धत्थनराहिवकुलनहयलविमलपुण्णिमायन्दं । निज्जियकामगइन्दं पणमह वीरं सया धीरं ॥ २ ॥
सेसेऽवि य बावीसे अजियाईपासनाहपज्जन्ते । जियरागदोसमोहे वन्दामि जिणेसरे सिरसा ॥ ३ ॥
जरजम्ममरणरहिए केवलवरनाणदंसणसमग्गे । सिद्धे निद्धुयकम्मे अणाइनिहणे सया नमह ॥ ४ ॥
पञ्चविहायारधरे सुत्तत्थविसारए पसन्तमणे । भवियारविन्दपडिबोहदिणयरे नमह आयरिए ॥ ५ ॥
परमत्थगहियसारे आयाराईदुवालसङ्गस्स । संजमतवनियमरए उज्झाए नमह सुत्तादए[3] ॥ ६ ॥
पञ्चमहव्वयगुरुभारधारए चरणकरणसंपन्ने । पञ्चसमिए तिगुत्ते मुत्ते साहू यँ सइ नमह ॥ ७ ॥

---

१ 'कन्दं' इति कं जलं ददातीति कन्दं मेघमित्यर्थः । २ अ—°नइन्दं । ३ 'सुत्तदए' इति सूत्रददानित्यर्थः । ४ ब—°सया ।

एयम्मि अरण्णम्मि समागया तुम्ह दंसणं जायं । इय कहिए सो तुट्ठो धन्नोऽहं जेण मे दिट्ठा ॥ २१ ॥
कप्पतरु व्व मरुथले दरिद्दगेहे हिरण्णवुट्ठि व्व । मायङ्गगिहे एरावणो व्व इत्थं इमे दिट्ठा ॥ २२ ॥
सफलं मम मणुयत्तं सहलं मम जम्म जीवियं अज्ज । जं एयंमि अरण्णे दिट्ठा एयारिसा साहू ॥ २३ ॥
पुण्णकलियाण मुणिणो दंसणविसयं पि जन्ति हयपावा। चिन्तामणिसंजोगो होइ अधन्नस्स न कयाइ ॥ २४॥

तथाहि—

जइणो हु बम्भयारी अगिहे दन्तिन्दिए पसन्ते य । तवनियमभूसियङ्गे धन्न च्चिय एत्थ पेच्छन्ति ॥ २५ ॥
एयं विचिन्तिऊणं भत्तिभरुल्लसियबहलरोमञ्चो । भत्तं पाणं वियरइ जहोचियं तेसि साहूणं ॥ २६ ॥
भुत्तुत्तरे य तेणं इच्छियपन्थम्मि मेलिया साहू । भणिओ सो य वलन्तो गुरूहिँ अणुकम्पजुत्तेहिं ॥ २७ ॥
उवविसह खणं एक्कं रुक्खच्छायाएँ वीसमामो त्ति । एवं ति तेण भणिए उवविट्ठा तत्थ सव्वेऽवि ॥ २८ ॥
धम्मस्स एस जोगो एयं परिभाविऊण सूरीहिं । पारद्धा धम्मकहा पडिबोहत्थं इमा तस्स ॥ २९ ॥
बहुजोणिलक्खगहिरे संसारे दुल्लहं मणुयजम्मं । राहावेहो व्व इहं जुगछिद्दे समिलपविसो व्व ॥ ३० ॥

भणियं च—

काऊणमणेगाइं जम्मणमरणपरियट्टणसयाइं । दुक्खेण माणुसत्तं जइ लहइ जहिच्छियं जीवो ॥ ३१ ॥

---

१ ब-ता सफलं मणु° । २ 'अगिहे' इति गृहरहितानित्यर्थः ।

एयम्मि अरण्णम्मि समागया तुम्ह दंसणं जायं । इय कहिए सो तुट्ठो धन्नोऽहं जेण मे दिट्ठा ॥ २१ ॥
कप्पतरु व्व मरुथले दरिद्दगेहे हिरण्णवुट्ठि व्व । मायङ्गगिहे एरावणो व्व इत्थं इमे दिट्ठा ॥ २२ ॥
सफलं[1] मम मणुयत्तं सहलं मम जम्म जीवियं अज्ज । जं एयंमि अरण्णे दिट्ठा एयारिसा साहू ॥ २३ ॥
पुण्णकलियाण मुणिणो दंसणविसयं पि जन्ति हयपावा। चिन्तामणिसंजोगो होइ अधन्नस्स न कयाइ ॥ २४ ॥

तथाहि—

जइणो हु बम्भयारी अगिहे[2] दन्तिन्दिए पसन्ते य । तवनियमभूसियङ्गे धन्न च्चिय एत्थ पेच्छन्ति ॥ २५ ॥
एयं विचिन्तिऊणं भत्तिभरुल्लसियबहलरोमञ्चो । भत्तं पाणं वियरइ जहोचियं तेसि साहूणं ॥ २६ ॥
भुत्तुत्तरे य तेणं इच्छियपन्थम्मि मेलिया साहू । भणिओ सो य वलन्तो गुरूहिँ अणुकम्पजुत्तेहिं ॥ २७ ॥
उववसिह खणं एक्कं रुक्खच्छायाएँ वीसमामो त्ति । एवं ति तेण भणिए उवविट्ठा तत्थ सव्वेऽवि ॥ २८ ॥
धम्मस्स एस जोगो एयं परिभाविऊण सूरीहिं । पारद्धा धम्मकहा पडिबोहत्थं इमा तस्स ॥ २९ ॥
बहुजोणिलक्खगहिरे संसारे दुलहं मणुयजम्मं । राहावेहो व्व इहं जुगछिद्दे समिलपविसो व्व ॥ ३० ॥

भणियं च—

काऊणमणेगाइं जम्मणमरणपरियट्टणसयाइं । दुक्खेण माणुसत्तं जइ लहइ जहिच्छियं जीवो ॥ ३१ ॥

---

१ च–ता सफलं मणु० । २ 'अगिहे' इति गृहरहितानित्यर्थः ।

भणिओ य तेण गुरू—

उद्धरिओऽहं भयवं ! तुमए भवसायरम्मि निवडन्तो । अहवा उत्तमसङ्गो उत्तमकल्लाणहेउ त्ति ॥ ४३ ॥
एवमभिनन्दिऊणं नमिऊण गुरुं मुणी य सो चलिओ । अत्ताणं मन्नन्तो सुकयत्थं बोहिलाभेण ॥ ४४ ॥

तथाहि—

धन्नोऽहं जेण मए अणोरपारम्मि भवसमुद्दम्मि । भवसयसहस्सदुलहं लद्धं सद्धम्मजाणं ति ॥ ४५ ॥
पत्तो कमेण गेहं कालेण य सुद्धधम्मपरिणामो । सोहम्मे उववन्नो पलियाउ सुरो महिड्ढीओ ॥ ४६ ॥
भोत्तूण तत्थ भोए दिव्वे सुररमणिमज्झयारम्मि । आउयखयम्मि चविउं जत्थुववन्नो तयं सुणह ॥ ४७ ॥
अत्थि अउज्झानयरी मणिकणगमया सुरेहिँ निम्मविया । बारसजोयणदीहा नव वित्थिण्णा परमरम्मा ॥४८॥
तत्थ य भरहो राया छखण्डभरहाहिवो पढमचक्की । सिरिउसहसामितणओ उद्दण्णखुहपुन्नपब्भारो ॥ ४९ ॥
तस्स सुओ उववन्नो सव्वङ्गोवङ्गसुन्दरो जुइमं । धम्मप्पिओ अकूरो मिरि त्ति नामेण विक्खाओ ॥ ५० ॥
सो तारुण्णे पत्तो पञ्चपयारे उ भुञ्जए भोए । नियपासायवरगओ इट्ठो नियजणणिजणयाणं ॥ ५१ ॥
सिरिउसभस्स भगवओ उप्पन्ने केवलम्मि देवेहिं । रइयम्मि समोसरणे केवलिमहिमाएँ परमाए ॥ ५२ ॥
वद्धन्ताए भरहो समागओ पुत्तनत्तुयसमेओ । भयवन्तवन्दणत्थं परमेणं भत्तिराएणं ॥ ५३ ॥
काऊण य तिक्खुत्तो पयाहिणं वन्दिऊण भयवन्तं । निव्वत्तो नाणमहे उवविट्ठो रइयकरकमलो ॥ ५४ ॥

भणिओ य तेण गुरू—

उद्धरिओऽहं भयवं ! तुमए भवसायरम्मि निवडन्तो । अहवा उत्तमसङ्गो उत्तमकल्लाणहेउ त्ति ॥ ४३ ॥
एवमभिनन्दिऊणं नमिऊण गुरुं मुणी य सो चलिओ । अत्ताणं मन्नन्तो सुकयत्थं बोहिलाभेण ॥ ४४ ॥

तथाहि—

धन्नोऽहं जेण मए अणोरपारम्मि भवसमुद्दम्मि । भवसयसहस्सदुलहं लद्धं सद्धम्मजाणं ति ॥ ४५ ॥
पत्तो कमेण गेहं कालेण य सुद्धधम्मपरिणामो । सोहम्मे उववन्नो पलियाउ सुरो महिड्ढीओ ॥ ४६ ॥
भोत्तूण तत्थ भोए दिव्वे सुररमणिमज्झयारम्मि । आउयखयम्मि चविउं जत्थुववन्नो तयं सुणह ॥ ४७ ॥
अत्थि अउज्झानयरी मणिकणगमया सुरेहिँ निम्मविया । बारसजोयणदीहा नव वित्थिण्णा परमरम्मा ॥४८॥
तत्थ य भरहो राया छक्खण्डभरहाहिवो पढमचक्की । सिरिउसहसामितणओ उद्दण्णसुहपुन्नपब्भारो ॥ ४९ ॥
तस्स सुओ उववन्नो सव्वङ्गोवङ्गसुन्दरो जुइमं । धम्मप्पिओ अकूरो मिरि त्ति नामेण विक्खाओ ॥ ५० ॥
सो तारुण्णे पत्तो पञ्चपयारे उ भुञ्जए भोए । निययपासायवरगओ इट्ठो निययजणणिजणयाणं ॥ ५१ ॥
सिरिउसभस्स भगवओ उप्पन्ने केवलम्मि देवेहिं । रइयम्मि समोसरणे केवलिमहिमाएँ परमाए ॥ ५२ ॥
वद्धन्ताए भरहो समागओ पुत्तनत्तुयसमेओ । भयवन्तवन्दणत्थं परमेणं भत्तिराएणं ॥ ५३ ॥
काऊण य तिक्खुत्तो पयाहिणं वन्दिऊण भयवन्तं । निव्वत्ते नाणमहे उवविट्ठो रइयकरकमलो ॥ ५४ ॥

जो विसयसुहपसत्तो लद्धुं मणुयत्तणाइसामग्गिं । न कुणइ धम्मं [illegible] ॥ १७ ॥
एवं नाउं तुब्भे जाव न वाही निरुम्भए देहं । जाव न जरा न मच्चू [illegible] ॥ १८ ॥
सम्मत्तं पडिवज्जह करेह सावज्जजोगवेरमणं । निज्जियपमायसत्तू [illegible] कुणह ॥ १९ ॥
मिच्छद्दंसणअविरइकसायपमायाइदुट्ठजोगेहिं । जीवो बन्धइ कम्मं कम्मेण य भमइ संसारे ॥ २० ॥

इय एवमाइ सोउं धम्मकहं भगवओ सकण्णसुहं । [illegible] ॥ २१ ॥
पञ्च य पुत्तसयाइं भरहस्स य सत्त नत्तुयसयाइं । सयराहं पव्वइया [illegible] कुमारा [illegible] ॥ २२ ॥
आपुच्छिऊण भरहं सिरिइकुमारोऽवि परमसंविग्गो । संमत्तनिच्चियमई धम्मं [illegible] ॥ २३ ॥
पञ्चसमिओ तिगुत्तो सज्झायज्झाणविणयसंपन्नो । तवनियमसंजमरओ विहरइ सो साहुणा सद्धिं ॥ २४ ॥
एक्कारसअङ्गाइं तेण अहीयाइं गुरुसयासम्मि । गीयत्थो सञ्जाओ धम्मकहालद्धिसंपन्नो ॥ २५ ॥
अह अन्नया कयाई गिम्हे उण्हेण तावियसरीरो । अन्नाणेण किलन्तो कम्मवसा चिन्तए एवं ॥ २६ ॥
मेरुगिरीसमभारे वोढुं संपइ खणं पि न समत्थो । सामण्णगुणे अगुणो अहयं संसारमणुकङ्खी ॥ २७ ॥
न य घरवासो जुत्तो बहुसावज्जो पमायहेउ त्ति । ता लिङ्गन्तरधारी सावगधम्मं पवज्जामि ॥ २८ ॥

किञ्च तं लिङ्गन्तरम्—

१ ब-°सामग्गी । २ ब-°उवरमणं । ३ °डग्डवि° । ४ 'सयराहं' शीघ्रमित्यर्थः ।

होही अजिओ संभव अभिनन्दण सुमइ सुप्पहु सुपासो। ससि पुप्फदन्त सीयल सेज्जंसो वासुपुज्जो य ॥ [illegible] ॥
विमलोऽणन्तइ धम्मो सन्ती कुन्थू अरो य मल्ली य। मुणिसुव्वय नमि नेमी पासो तह [illegible] ॥ [illegible] ॥
अह भणइ नरवरिन्दो भरहे चक्कम्मि जारिसो अहयं। [illegible] ॥
तो भणइ जिणवरिन्दो जारिसओ तं नरिन्दसद्दूलो। [illegible] ॥
होही सगरो मघवं सणंकुमारो य सन्ति कुन्थू अरो। तह य सुभूमो पउमो हरिसेणो तह जयो चेव ॥ [illegible] ॥
अह पुट्ठो कहइ जिणो इमाएँ ओसप्पिणीएँ होहिन्ति। जे केसवबलदेवा [illegible] ॥ [illegible] ॥
होइ तिविट्ठु दुविट्ठू सयम्भुपुरिसोत्तिमे पुरिससीहे। तह पुरिसपुण्डरीए दत्ते नारायणे कण्हे ॥ [illegible] ॥
अयले विजए भद्दे सुप्पभे य सुदंसणे। आनन्दे नन्दणे पउमे रामे यावि अपच्छिमे ॥ [illegible] ॥
आसग्गीवे तारए मेरए महुकेढवे निसुम्भे य। बलि पहराए तह रावणे य नवमे जरासन्धे ॥ [illegible] ॥
एए खलु पडिसत्तू कित्ती पुरिसाण वासुदेवाण। सव्वे य चक्कजोही हम्मेहिन्ति सचक्केहिं ॥ [illegible] ॥
पुणरवि पुच्छइ भरहो अजियाइजिणवराण मज्झम्मि। भयवं! कोइ भविस्सइ निव्वाणगमो तुहं वंसे ॥ [illegible] ॥
तत्थ सिरी पुडुत्तो आइपरिव्वायओ उसभणत्ता। सम्मत्तनाणजुत्तो पच्छन्ते [illegible] ॥ ३ ॥
तं दरिसेइ जिणिन्दो एव नरिन्देण पुच्छिओ सन्तो। होही चरिमो एसो निव्वाणगमो नीरयाणं ति ॥ ४ ॥

---

१ चापि । २ रावणः । ३ नमो गोत्रः इत्यर्थे ।

होही अजिओ संभव अभिनन्दण सुमइ सुप्पह सुपासो । [illegible]
विमलोऽणन्तइ धम्मो सन्ती कुन्थू अरो य मल्ली य । मुणिसुव्वय नमि [illegible]
अह भणइ नरवरिन्दो भरहे नाहविय जारिसो अहयं । [illegible]
तो भणइ जिणवरिन्दो जारिसओ तं नरिन्दसद्दूलो । [illegible]
होही सगरो मघवं सणंकुमारो य सन्ति कुन्थू अरो । [illegible]
अप्पुट्ठो कहइ जिणो इमाएँ ओसप्पिणीएँ होहिन्ति । जे केसव [illegible]
होइ तिविट्ठु दुविट्ठू सयम्भु पुरिसोत्तिमे पुरिससीहे । [illegible]
अयले विजए भद्दे सुप्पभे य सुदंसणे । आणन्दे नन्दणे पउमे रामे [illegible]
आसग्गीवे तारए मेरए महुकेढवे निसुम्भे य । बलि पह्लाए तह [illegible]
एए खलु पडिसत्तू कित्ती पुरिसाण वासुदेवाण । सव्वे य चक्कजोही [illegible]
पुणरवि पुच्छइ भरहो अजियाइजिणवराण वक्खविय । भयवं ! होइ भविस्सइ [illegible]
तत्थ सिरी पुत्तो आइपरिव्वायओ उसभणत्ता । मज्झायगागजुत्तो [illegible]
तं दरिसेइ जिणिन्दो एव नरिन्देण पुच्छिओ सन्तो । होही चरिमो एसो तित्थयरो [illegible]

१ चापि । २ रावणः । ३ नमा गोत्रः इत्यर्थे ।

जचाइमयफलेण नीयट्ठाणाइँ पावमाणो उ । भमइ चिरं संसारे तम्हा उ मए विवज्जेज्जा ॥ १७ ॥
सो अन्नया गिलाणो जाओ पडियग्गिओ न साहूहिं । अस्संजउ त्ति काउं ताहे चिन्तेइ मायण्णो ॥ १८ ॥
अस्संजयस्स मुणिणो किच्चं न कुणन्ति संजमपहाणा । न य कारिउं पि जुज्जइ वेयावच्चं इमे मज्झ ॥ १९ ॥
ता किंचि तहारूवं अप्पसहायं करेमि सीसमहं । भवियव्वयाएँ पउणो जाओ इय चिन्तमाणस्स ॥ २० ॥
तस्स सयासं पत्तो कयाइ कविलो त्ति नाम रायसुओ । पुच्छइ धम्मं सोऽवि य जइधम्मं अक्खिवइ तस्स ॥ २१ ॥
न कुणसि कीस तुममिमं इय पुट्ठे कहइ चइयरं नियगं । कविलोऽवि हु धम्मत्थी जइधम्मं काउमसमत्थो ॥ २२ ॥
पभणइ किं तुज्झ वए धम्मफलं नत्थि किंचि इय भणिए । गुरुकम्मो एसोऽवि हु जइधम्मं नेच्छए काउं ॥ २३ ॥
इय चिन्तिय सो भणिओ पडिपुण्णफलं जईण धम्मम्मि । भो कविल ! केत्तियं पि हु मज्झवि दिक्खाएँ अत्थि त्ति॥
सीसत्थिणा उ एयं मिच्छत्तवियड्ढिकारगं वोत्तुं । बद्धं असुभं कम्मं भवभमणनिबन्धणं घोरं ॥ २४ ॥

भणियं च—

दुब्भासिएण एक्केण मिरीई दुक्खसागरं पत्तो । भमिओ कोडाकोडिं सागरसरिनामधेज्जाणं ॥ २६ ॥
पव्वाविओ य कविलो तेण समं किं पि विहरिउं कालं । चुलसीइ पुव्वलक्खे सव्वाउं पालिउं तत्तो ॥ २७ ॥
अप्पडिकन्तो दुब्भासियस्स कालं गओऽणसणविहिणा । दससागरोवमाऊ बम्भे कप्पे सुरो जाओ ॥ २८ ॥
आसुरिपमुहा सीसा कविलेणं दिक्खिया समायारं । कहिउं तेसिं नियमं बम्भे कप्पे गओ सोऽवि ॥ २९ ॥

जचाइमयफलेणं नीयट्ठाणाइँ पावमाणो उ । भमइ चिरं संसारे तम्हा उ मए विवज्जेज्जा ॥ १७ ॥
सो अन्नया गिलाणो जाओ पडियग्गिओ न साहूहिं । अस्संजउ त्ति काउं ताहे चिन्तेइ मायन्नो ॥ १८ ॥
अस्संजयस्स मुणिणो किच्चं न कुणन्ति संजमपहाणा । न य काहिउं पि जुज्जइ वेयावच्चं इमे मज्झ ॥ १९ ॥
ता किंचि तहारूवं अप्पसहायं करेमि सीसमहं । भवियव्वयाएँ पउणो जाओ इय चिन्तमाणस्स ॥ २० ॥
तस्स सयासं पत्तो कयाइ कविलो त्ति नाम रायसुओ । पुच्छइ धम्मं सोऽवि य जइधम्मं अखिवइ कहइ ॥ २१ ॥
न कुणसि कीस तुममिमं इय पुट्ठे कहइ वइयरं नियगं । कविलोऽवि हु धम्मत्थी जइधम्मं काउमसमत्थो ॥ २२ ॥
पभणइ किं तुज्झ वए धम्मफलं नत्थि किंचि इय भणिए । गुरुकम्मो एसोऽवि हु जइधम्मं नेच्छए काउं ॥ २३ ॥
इय चिन्तिय सो भणिओ पडिपुण्णफलं जईण धम्मम्मि । भो कविल ! केत्तियं पि हु मज्झवि दिक्खाएँ अत्थि त्ति ॥
सीसत्थिणा उ एयं मिच्छत्तवियड्ढिकारगं वोत्तुं । बद्धं असुभं कम्मं भवभमणनिबन्धणं घोरं ॥ २५ ॥

भणियं च—

दुब्भासिएण एक्केण मिरीई दुक्खसागरं पत्तो । भमिओ कोडाकोडिं सागरसरिनामधेज्जाणं ॥ २६ ॥
पव्वाविओ य कविलो तेण समं किं पि विहरिउं कालं । चुलसीइ पुव्वलक्खे सव्वाउं पालिउं तत्तो ॥ २७ ॥
अप्पडिकन्तो दुब्भासियस्स कालं गओऽणसणविहिणा । दससागरोवमाऊ बम्भे कप्पे सुरो जाओ ॥ २८ ॥
आसुरिपमुहा सीसा कविलेणं दिक्खिया समायारं । कहिउं तेसिं नियमं बम्भे कप्पे गओ सोऽवि ॥ २९ ॥

[illegible] इसाण उववन्नो तओ चुओ मन्दिरपुरम्मि ॥ ४२ ॥
जाओ य अग्गिभूई माहण परिवायगो य होऊण । छप्पण्णपुव्वलक्खा सव्वाउं पालइत्ताणं ॥ ४३ ॥
पत्तो सणंकुमारं सेयवियाए य आउयक्खएणं । जाओ भारद्दाओ पत्तो परिवायगत्तं च ॥ ४४ ॥
चोयालीसं लक्खा पुव्वाणं तत्थ आउयं जायं । मरिउं माहिन्दसुरो संजाओ मज्झिमठिईओ ॥ ४५ ॥
तो संसारं हिण्डिय चिरकालं थावरो त्ति नामेणं । रायगिहे पवरदिओ तत्थवि परिवायगो जाओ ॥ ४६ ॥
चउतीसपुव्वलक्खा परमाउं पालिऊण बम्भम्मि । कप्पम्मि सुरो जाओ भमिओ तत्तो य संसारे ॥ ४७ ॥
रायगिहम्मि पुरवरे राया नामेण विस्सनन्दि त्ति । भज्जा तस्स पियङ्गू विसाहनन्दी य ताण सुओ ॥ ४८ ॥
रण्णो तस्स कणिट्ठो भाया नामं विसाहभूइ त्ति । सो जुवरज्जे ठविओ तस्स पिया धारिणी देवी ॥ ४९ ॥
सो मिरिइजीवदेवो चविऊणं बम्भलोगकप्पाओ । धारिणिपुत्तो जाओ नामेणं विस्सभूइ त्ति ॥ १५० ॥
जणणिजणयाण इट्ठो पञ्चहिं धाईहिं लालियसरीरो । चन्दो इव वड्ढन्तो कमेण सो जोव्वणं पत्तो ॥ ५१ ॥

केरिसो य सो—

कुसलो सव्वकलासुं सूरो चाई य सत्तवन्तो य । धम्मप्पिओ अकूरो गुरुयणभत्तो अयसभीरू ॥ ५२ ॥
पुप्फकरण्डुज्जाणं तम्मि पुरे पवरतरुवरसमिद्धं । कीलइ सो तत्थ सुहं अन्तेउरपरिगओ विविहं ॥ ५३ ॥

---

१ व-परियायं । २ व-चइऊणं । ३ व-गुरूण भत्तो ।

चउसट्ठि पुव्वलक्खा तत्थाउं होइउं परिव्वाओ । ईसाणे उववन्नो तओ चुओ मन्दिरपुरम्मि ॥ ४२ ॥
जाओ य अग्गिभूई माहण परिवायगो य होऊण । छप्पण्णपुव्वलक्खा सव्वाउं पालइत्ताणं ॥ ४३ ॥
पत्तो सणंकुमारं सेयवियाए य आउयक्खएणं । जाओ भारद्दाओ पत्तो परिवायगत्तं च ॥ ४४ ॥
चोयालीसं लक्खा पुव्वाणं तत्थ आउयं जायं । मरिउं माहिन्दसुरो संजाओ मज्झिमट्ठिईओ ॥ ४५ ॥
तो संसारं हिण्डिय चिरकालं थावरो त्ति नामेणं । रायगिहे पवरदिओ तत्थवि परिवायगो जाओ ॥ ४६ ॥
चउतीसपुव्वलक्खा परमाउं पालिऊण बम्भम्मि । कप्पम्मि सुरो जाओ भमिओ तत्तो य संसारे ॥ ४७ ॥
रायगिहम्मि पुरवरे राया नामेण विस्सनन्दि त्ति । भज्जा तस्स पियङ्गू विसाहनन्दी य ताण सुओ ॥ ४८ ॥
रण्णो तस्स कणिट्ठो भाया नामं विसाहभूइ त्ति । सो जुवरज्जे ठविओ तस्स पिया धारिणी देवी ॥ ४९ ॥
सो मिरिइजीवदेवो चविऊणं बम्भलोगकप्पाओ । धारिणिपुत्तो जाओ नामेणं विस्सभूइ त्ति ॥ १५० ॥
जणणिजणयाण इट्ठो पञ्चहिं धाईहिं लालियसरीरो । चन्दो इव वड्ढन्तो कमेण सो जोव्वणं पत्तो ॥ ५१ ॥
केरिसो य सो—
कुसलो सव्वकलासुं सूरो चाई य सत्तवन्तो य । धम्मप्पिओ अकूरो गुरुयणभत्तो अयसभीरू ॥ ५२ ॥
पुप्फकरण्डुज्जाणं तम्मि पुरे पवरतरुवरसमिद्धं । कीलइ सो तत्थ सुहं अन्तेउरपरिगओ निच्चिं ॥ ५३ ॥

१ व–परियायं । २ व–चइऊणं । ३ व–गुरूण भत्तो ।

इय भणिउं सो चलिओ नियखन्धावारपरिगओ सहसा । ओगच्छन्तं सोउं सम्मुहमाओ पुरिससीहो ॥ ६७ ॥
नीओ तेण सनयरं कयसम्माणो य भोयणाईहिं । वियरियसविसेसकरो विसज्जिओ विणयपणएणं ॥ ६८ ॥
परिभमिउं नियदेसं अद्दिट्ठउवद्दवो पडिनियत्तो । रण्णा विसाहनन्दी पवेसिओ तम्मि उज्जाणे ॥ ६९ ॥
सोऽवि य नियपुरपत्तो पुप्फकरण्डम्मि पविसमाणो उ । पडिहारेण निसिद्धो विसाहनन्दी पविट्ठो त्ति ॥१७०॥
इय सोउं सो रुट्ठो मायाए नीणिओ अहं पत्तो । तो मुट्ठिपहारेणं तप्पुरओ पहणइ कविट्ठिं ॥ ७१ ॥
पाडइ सव्वकविट्ठे भणइ य तुम्हं सिराइँ पाडन्तो । एवं तु तुज्झ पिउणो पावा जइ हं न लज्जन्तो ॥ ७२ ॥
इय भणिय निग्गओ सो पियव्वचेट्ठं चमुणियवुत्तन्तो । वेरग्गगओ चिन्तइ अहो! अणज्जाओ महिलाओ ॥७३॥

अवि य—

महिला कुडिलसहावा बन्धवकुलभेयकारिणी महिला । महिला निद्दयहियया पचक्खा रक्खसी महिला ७४
महिला आलकुलहरं महिला लोयम्मि दुचरियखेत्तं । महिला सकज्जनिट्ठा महिला जोणी अणत्थाणं ॥ ७५ ॥

किं च—

विसयासत्ता पुरिसा विडम्बणं तं जयम्मि पाँविन्ति । जं कहिउं पि न तीरइ धूलीवुक्कायणमहं व ॥७६ ॥

अवि य—

१ व–भागच्छन्तो । २ 'नीणिओ' इति गमितः । ३ अ–चुल्लपि° । ४ व–°पुग्रत्तं । ५ व–पावेन्ति । ६ अ–जह । ७ °मह व्व ।

इय भणिउं सो चलिओ नियखन्धावारपरिगओ सहसा । ओगच्छन्तं सोउं सम्मुहमाओ पुरिससीहो ॥ ६७ ॥
नीओ तेण सनयरं कयसम्माणो य भोयणाईहिं । वियरियसविसेसकरो विसज्जिओ विणयपणएणं ॥ ६८ ॥
परिभमिउं नियदेसं अक्खिठउवद्दवो पडिनियत्तो । रण्णा विसाहनन्दी पवेसिओ तम्मि उज्जाणे ॥ ६९ ॥
सोऽवि य नियपुरपत्तो पुप्फकरण्डम्मि पविसमाणो उ । पडिहारेण निसिद्धो विसाहनन्दी पविठो त्ति ॥१७०॥
इय सोउं सो रुट्ठो मायाए नीणिओ अहं पत्तो । तो मुट्ठिपहारेणं तप्पुरओ पहणइ कवित्थिं ॥ ७१ ॥
पाडइ सव्वकविट्ठे भणइ य तुम्हं सिराइँ पाडन्तो । एवं तु तुज्झ पिउणो पावा जइ हं न लज्जन्तो ॥ ७२ ॥
इय भणिय निग्गओ सो पियकुचेट्ठं चमुणियवुत्तन्तो । वेरग्गगओ चिन्तइ अहो! अणज्जाओ महिलाओ ॥७३॥

अवि य—

महिला कुडिलसहावा बन्धवकुलभेयकारिणी महिला । महिला निद्दयहियया पचक्खा रक्खसी महिला ७४
महिला आलकुलहरं महिला लोयम्मि दुच्चरियखेत्तं । महिला सकज्जनिठा महिला जोणी अणत्थाणं ॥ ७५ ॥

किं च—

विसयासत्ता पुरिसा विडम्बणं तं जयम्मि पाविन्ति । जं कहिउं पि न तीरइ धूलीवुक्कावणमहं व ॥७६ ॥

अवि य—

१ व–भागच्छन्तो । २ 'नीणिओ' इति गमितः । ३ अ–चुलपि° । ४ व–°पुघत्तं । ५ व–पावेन्ति । ६ अ–जह । ७ °मह व्व ।

पडणीयमन्तराइय उवघाए तप्पओसनिण्हवणे । बन्धइ णाणावरणं एवं चिय दंसणावरणं ॥ १९० ॥
भूयाणुकम्पजिणभत्तिसंजुओ खन्तिदाणविणयपरो । बन्धइ सायावेयं विवरीओ बन्धए इयरं ॥ ९१ ॥
अरहन्तसिद्धचेइयतित्थाइसु पडणीयजोगेहिं । मिच्छत्तमोहणीयं बन्धइ संसारवुड्ढिकरं ॥ ९२ ॥
तिव्वकसाओ बहुमोहपरिणओ चरणकरणपडणीओ । बन्धइ चरित्तमोहं दुविहं पि चरित्तगुणघाई ॥ ९३ ॥
कुणिमाइभक्खणरओ मिच्छत्तमहापरिग्गहारम्भो । नरयाउयं निबन्धइ पावमई रुद्दपरिणामो ॥ ९४ ॥
उम्मग्गदेसओ मग्गनासओ गूढहिययमाइल्लो । बहुनियडिसंपउत्तो तिरियाउं बन्धई जीवो ॥ ९५ ॥
पयईए तणुकसाओ दाणरओ पयइभद्दगविणीओ । मज्झिमगुणेहिं जुत्तो मणुयाउं बन्धई जीवो ॥ ९६ ॥
अणुव्वयमहव्वएहिं बालतवाकामनिज्जराईहिं । देवाउयं निबन्धइ सम्मद्दिट्ठी उ जो जीवो ॥ ९७ ॥
मणवयणकायवक्को गुणदोसी गारवेहिं पडिबद्धो । असुहं बन्धइ नामं तप्पडिवक्खो य सुहनामं ॥ ९८ ॥
अरहन्ताइसु भत्तो सुत्तरुई पयणुमाण गुणरागी । बन्धइ उच्चागोयं विवरीओ बन्धए इयरं ॥ ९९ ॥
पाणवहाईनिरओ जिणपूयादाणभोयविग्घकरो । अज्जेइ अन्तरायं न लहइ जेणिच्छियं लाभं ॥ २०० ॥
इय पावकम्मबन्धस्स हेउणो जाणिऊण सुविवेया । भवभमणभीरुणो जे पयत्तओ ते विवज्जन्ति ॥ १ ॥
णाणाइगुणवसेणं असेसकम्मक्खए य निव्वाणं । होइ जियाणं तम्हा णाणाइसु चेव जइयव्वं ॥ २ ॥

१ ब–विवरीए । २ ब–बन्धई । ३ ब–बन्धए । ४ अ–विवरीए । ५ ब–बन्धई । ६ °विग्घयरो ।

पडणीयमन्तराइय उवघाए तप्पओसनिण्हवणे । बन्धइ णाणावरणं एवं चिय दंसणावरणं ॥ १९० ॥
भूयाणुकम्पजिणभत्तिसंजुओ खन्तिदाणविणयपरो । बन्धइ सायावेयं विवरीओ बन्धए इयरं ॥ १९१ ॥
अरहन्तसिद्धचेइयतित्थाइसु पडणीयजोगेहिं । मिच्छत्तमोहणीयं बन्धइ संसारवुड्ढिकरं ॥ १९२ ॥
तिव्वकसाओ बहुमोहपरिणओ चरणकरणपडणीओ । बन्धइ चरित्तमोहं दुविहं पि चरित्तगुणघाई ॥ १९३ ॥
कुणिमाइभक्खणरओ मिच्छत्तमहापरिग्गहारम्भो । नरयाउयं निबन्धइ पावमई रुद्दपरिणामो ॥ १९४ ॥
उम्मग्गदेसओ मग्गनासओ अट्टज्झाणज्झाइल्लो । बहुनियडिसंपउत्तो तिरियाउं बन्धई जीवो ॥ १९५ ॥
पयईए तणुकसाओ दाणरओ पयइभद्दगविणीओ । मज्झिमगुणेहिं जुत्तो मणुयाउं बन्धई जीवो ॥ १९६ ॥
अणुव्वयमहव्वएहिं बालतवाकामनिज्जराईहिं । देवाउयं निबन्धइ सम्मद्दिट्ठी उ जो जीवो ॥ १९७ ॥
मणवयणकायवङ्को गुणदोसी गारवेहिं पडिबद्धो । असुहं बन्धइ नामं तप्पडिवक्खो य सुहनामं ॥ १९८ ॥
अरहन्ताइसु भत्तो सुत्तरुई पयणुमाण गुणरागी । बन्धइ उच्चागोयं विवरीओ बन्धए इयरं ॥ १९९ ॥
पाणवहाईनिरओ जिणपूयादाणभोयविग्घकरो । अज्जेइ अन्तरायं न लहइ जेणिच्छियं लाभं ॥ २०० ॥
इय पावकम्मबन्धस्स हेउणो जाणिऊण सुविवेया । भवभमणभीरुणो जे पयत्तओ ते विवज्जन्ति ॥ १ ॥
णाणाइगुणवसेणं असेसकम्मक्खए य निव्वाणं । होइ जियाणं तम्हा णाणाइसु चेव जइयव्वं ॥ २ ॥

१ व-विवरीए । २ व-बन्धई । ३ व-बन्धए । ४ अ-विवरीए । ५ व-बन्धई । ६ °विग्घयरो ।

गुरुअहिमाणवसेण य रोसुब्भाइयविवेगरयणेणं । चइउं तेण नियाणं धी धी कम्मस्स परिणामो ॥ १५ ॥

तं च केरिसं—

जइ होज्ज इमस्स फलं मएऽणुचिण्णस्स तवविसेसस्स । तोऽहं भविस्सकाले अणुवमबलसंजुओ होज्जा ॥ १६ ॥
वरकणगेणं रीरिं रासहमेरावणेण अइमूढो । कणगेण य छारं तेण नियाणं च कारवइ ॥ १७ ॥
गुञ्जाओ मोत्तिएहिं जह मग्गइ कोइ तह इमं तेण । मोक्खफलाइजणयस्स तवस्स बलमित्थियं अदं ॥ १८ ॥
काउं नियाणमेयं अपडिक्कन्तो य तस्स ठाणस्स । सो मासियभत्तेणं कोडीओ साउयं पाले ॥ १९ ॥
कप्पम्मि महासुक्के उक्कोसठिई य सुरवरो जाओ । कयसुकिओ भुञ्जइ तत्थ दिव्वभोगसुहं ॥ २० ॥

इओ य—

अत्थि इह भरहवासे णयरं पोयणपुरं परमरम्मं । तत्थ पडिसत्तुनामा नं भुञ्जइ निज्जियरिउपक्खो ॥ २१ ॥
भद्दा य तस्स भज्जा अयलो नामेण तीए परमसुओ । जाओ महासुमिणेहिं सूइयबलो समुप्पन्नो ॥ २२ ॥
भगिणी तस्स कणिट्ठा मिगावई पवरजोव्वणगुणड्ढा । सा परमजोव्वणगत्था सव्वालङ्कारपरिभूसा ॥ २३ ॥
पिउपायवन्दणत्थं जणणीए पेसिया वरनिमित्तं । निययरूवजणियचित्ता पलोइया तेण सा तत्थ ॥ २४ ॥
अज्झुववन्नो तीए रूवम्मि मणोरमम्मि पुच्छेइ । सामन्तामच्चवग्गं मेलेउं पउरलोगं च ॥ २५ ॥

---

१ अ—रिवुपडिसत्तू । २ व—°रूवस° ।

गुरुअहिमाणवसेण य रोसुच्छाइयविवेगनयणेणं । चइं तेण नियाणं धी धी कम्मस्स परिणामो ॥ १५ ॥

तं च केरिसं—

जइ होज्ज इमस्स फलं मए ऽणुचिण्णस्स तवविसेसस्स । तो ऽहं भविस्सकाले अणुत्तरपरक्कमो होज्जा ॥ १६ ॥
वरकणगेणं रीरिं रासहमेरावणेण अहमूढो । कप्पेइ व आरं चेकल्पिउं च जाणइ ॥ १७ ॥
गुञ्जाओ मोत्तिएहिं जह मग्गइ कोइ तह इमं तेण । मोक्खसुहाइगुणकरा हेऊणं पत्थियमसारं ॥ १८ ॥
काउं नियाणमेयं अपडिक्कन्तो य तस्स ठाणस्स । सो मासियभत्तेणं कालं काऊण ... ॥ १९ ॥
कप्पम्मि महासुक्के उक्कोसठिई य सुरवरो जाओ । कणयरुइरो भुञ्जइ तत्थ वि दिव्वभोगसुहे ॥ २० ॥

इओ य—

अत्थि इह भरहवासे णयरं पोयणपुरं परमरम्मं । तत्थ पडिसत्तुनामा नं भुञ्जइ विजियपडिवक्खो ॥ २१ ॥
भद्दा य तस्स भज्जा अयलो नामेण तीए परमसुओ । चउहिं महासुमिणेहिं सूइयजम्मो समुप्पन्नो ॥ २२ ॥
भगिणी तस्स कणिट्ठा मिगावई पवररूवसंपन्ना । सा पढमजोव्वणत्था सव्वालंकारभूसियंगा ॥ २३ ॥
पिउपायवन्दणत्थं जणणीए पेसिया वरनिमित्तं । निवइच्छन्ननिविट्ठा पलोइया तेण सयराहं ॥ २४ ॥
अज्झुववन्नो तीए रूवम्मि मणोरमम्मि पुच्छेइ । सामन्तमन्तिवग्गं मेलेउं पउरलोगं च ॥ २५ ॥

१ अ—रिवुपडिसत्तू । २ ब—°रूवस° ।

सो जोव्वणमणुपत्तो कलासु कुसलो य कीलइ जहिच्छं। [illegible] ॥

दूओ य—

अत्थि महामण्डलिओ आसग्गीवो पयण्डनरनाहो। सो पुच्छइ नेमित्तिं [illegible] ॥ १९ ॥

नेमित्तिएण भणियं—

जो चण्डमेहदूयं परिसेही तुज्झ नह य [illegible]। जो सीहं मारेही [illegible] ॥ २० ॥
इय कहिए सो भीओ दोऽवि पयावइसुए य। [illegible] ॥ २१ ॥
तं चण्डमेहदूयं पेच्छणए संठियाण सो पत्तो। [illegible] ॥ २२ ॥
पेच्छाभङ्गो जाओ दूयागमणेण आसगीवस्स। कुद्धा दोऽवि कुमारा [illegible] ॥ २३ ॥
कहियं च तेसि पिउणा जस्साणाकारिओ पहुनरिन्दा। [illegible] ॥ २४ ॥
सम्माणिओ य दूओ कयकज्जोपेल्लिओ सहत्थेनं। [illegible] ॥ २५ ॥
तप्पुरिसा य पलाणा सोऽवि य भीएण तेसि जणएणं। [illegible] ॥ २६ ॥
एएहिं कुमारेहिं अयाणुएहिं सिसुत्तदोसेणं। जं अवरद्धं तुज्झं सव्वं चिय खमसु तं [illegible] ॥ २७ ॥
ण य कहियव्वं एयं रण्णो दुच्चेट्ठियं कुमाराणं। सासोवयारगहिओ सो चिय [illegible] न कहिस्सं ॥ २८ ॥

---

१ ब-°हणायं। २ अ-पट्ठिओ। ३ 'दुं' देशीनाम्नोऽयम्[illegible]। ४ अ-नेट्ठियं।

सो जोव्वणमणुपत्तो कन्नासु कुमन्तो य कीलइ जहिच्छं । [illegible] ॥ १८ ॥

इओ य—

अत्थि महामण्डलिओ आसन्नो [illegible] । सो पुच्छइ नेमित्ति [illegible] ॥ १९ ॥

नेमित्तिएण भणियं—

जो चण्डमेहतुरंगं परिसेही तुज्झ नइ य [illegible] । जो धीरं [illegible] ॥ २० ॥

इय कहिए सो भीओ दोऽवि [illegible] । [illegible] ॥ २१ ॥

तं चण्डमेहतुरंगं पेच्छणए संठियाण सो [illegible] । [illegible] ॥ २२ ॥

पेच्छाभङ्गो जाओ दूयागमणेण आसगीवस्स । [illegible] दोऽवि कुमारा [illegible] ॥ २३ ॥

कहियं च तेसि पिउणा जस्साणाकारिणो बहुनरिन्दा । [illegible] ॥ २४ ॥

सम्माणिओ य दूओ कयकज्जोपेसिओ सयुक्केहिं । [illegible] ॥ २५ ॥

तप्पुरिसा य पलाणा सोऽवि य भीएण तेसि जणएणं । [illegible] ॥ २६ ॥

एएहिं कुमारेहिं अयाणुएहिं सिसुत्तदोसेणं । जं अवयरियं तुम्हं सव्वं निय खमसु तं [illegible] ॥ २७ ॥

ण य कहियव्वं एयं रण्णो दुच्चेट्ठियं कुमाराणं । सामोवयारगहिओ सो निय [illegible] न कहिस्सं ॥ २८ ॥

---

१ ब–°हणामं । २ अ–पहिओ । ३ 'तुं' देशीनस्त्वेऽपमस्तिन्यर्थः । ४ अ–°ट्ठियो ।

तं पेच्छिऊण सो कलिओउसो ! चाविई इमस्स [illegible]

इय चिंतिय अचवाणिवजणो [illegible]

जुण्णपडओ व्व सीहो [illegible] ॥ [illegible] ॥

रोसेण फुरफुरन्तो थाणुसमेणेव थाविओ [illegible]

पसुसीहो अह ! तुमं नरसीहो [illegible] कुमारो [illegible]

असवं पिव सन्तो सारहिवयणं [illegible]

अह सलिलियसुरेहिं [illegible] कुमरोवरिं कुसुमवरिसं । [illegible]

भणिया य कलिसगा [illegible] ॥ [illegible] ॥

कहियं च तेहिं गन्तुं वयणं नं आरसीनरायस्स । सोऽवि [illegible] ॥ [illegible] ॥

पेसेसु नियकुमारे जेणं पिच्छेमि [illegible] य । इय भणिए सो गन्तुं [illegible] ॥ [illegible] ॥

तो भणइ निविहुपिया सयमागच्छामि रायगेहम्मि । [illegible] ॥ [illegible] ॥

दूएण य हैंसिऊणं भणियं किं जम्पिएण इह [illegible] । अह [illegible] ॥ [illegible] ॥

इय भणिए सो दूओ कुमरेहिं थाडिओ गन्तु पेन्तुं । तेण य नं [illegible] ॥ [illegible] ॥

---

१ अ-दोणवि । २ अ-होड़े । ३ च-काढिओ । ४ अ-[illegible] । ५ च-[illegible] । ६ च-[illegible] । ७ अ-[illegible] । ८ च-[illegible] । ९ च-[illegible]

तं पेच्छिऊण सो कलिओड्ढो ! पारिंदं इमस्स कुविअस्स ! [illegible]
इय चिंतिय अवहरियवयणो कुमरस्स देइ ओमड्डं । [illegible]
जुण्णपक्खो व्व सीहो हेलाए कोलिओ स कुडुगा । जो [illegible]
रोसेण फुरफुरंतो पाउसमेहेण चारिओ इय त्ति । [illegible]
पसुसीहो भद्द ! तुमं नरसीहो पुण तुम कुमारो त्ति । [illegible]
अमयं पिव मज्जंतो मारहियवयणं सुणेऊण विजयो । [illegible]
अह खलियसुरेहिं मुक्कं कुमरोवरिं कुसुमवरिसं । [illegible]
भणिया य करिसगा ते गोउरगीवस्स कहह गन्तुणं । किं तुमं [illegible]
कहियं च तेहिं गन्तुं वयणं तं आसगीववरायस्स । सोऽवि विसाहिय हूवे जेणं [illegible]
पेसेसु नियकुमारे जेणं पिच्छेमि देवि देवे य । इय भणिए सो गन्तुं [illegible]
तो भणइ निविडुपिया सयमागच्छामि रायरायरिस । भणति [illegible]
दूएण य हसिऊणं भणियं किं जंपिएण इह बहुणा । अह पेसेसु कुमारे [illegible]
इय भणिए सो दूओ कुमरेहिं चाडिओ गलेपेत्तुं । तेन य तं सविसेसं [illegible]

१ अ-दोणवि। २ अ-होहे। ३ च-काढिओ। ४ अ-कुट्ट। ५ च-[illegible]

तेणवि तं चिग घेत्तुं छिन्नं सीसं तु गुरुयगीवस्स । भणियव्वनाणिजोगो न सीसं [illegible] ॥ [illegible] ॥
जइ पविसइ पायालं दुग्गगिरिं विसइ लङ्घइ समुद्दं । कुणइ य वङ्कतिरियं तडि न पविसइ [illegible] ॥ [illegible] ॥
उक्किट्ठिनायगुरुयं देवेहिं निवाडियं कुसुमवरिसं । भणियं च ववमक्केसी उववन्नो [illegible] ॥ [illegible] ॥
कोडिसिला सीसोवरि धरिया छत्तं व वासुदेवेहिं । सुव्वनगवरेहिं निविट्ठा [illegible] ॥ [illegible] ॥
परिहायन्तम्मि बले सेसेहिं ऊणमूणमुक्खित्ता । जा चरिमकेसवेणं निगडा [illegible] ॥ [illegible] ॥

जओ केसवबलं—

सोलसरायसहस्सा सव्वबलेणं तु संकलनिबद्धं । अञ्छन्ति वासुदेवं अगडतडम्मि ठियं सन्तं ॥ [illegible] ॥
घेत्तूण संकलं सो वामगहत्थेण अञ्छमाणाणं । भुञ्जेज विलिम्पेज व महुमहणं ते न चायन्ति ॥ [illegible] ॥
पढमो एस दसारो जाओ इय सुणिय सव्वसामन्ता । आगासगामी जाया नमिऊण [illegible] निविट्ठस्स ॥ [illegible] ॥
ओयवियं भरहद्धं सत्त य रयणाणि तस्स जायाणि । चक्कं छत्तं धणुयं मणि माला [illegible] ॥ [illegible] ॥
सोलससाहस्सीणं जाओ सो मउडबद्धराईणं । सामी पत्तीसाए अन्तेउरसहस्साणं ॥ [illegible] ॥
पालन्ताण य रज्जं अयलतिविट्ठूण गरुयनेहाणं । सेज्जंसजिणसमीवे [illegible] ॥ [illegible] ॥
वोलीणो बहुकालो अप्पडिहयसासणाण भरहद्धे । अह अन्नया निविट्ठस्स [illegible] ॥ [illegible] ॥

१ व—०इ बहु० । २ 'अञ्छन्ति' इति भाति । ३ व—अञ्छ० । ४ व—०इ गया ।

तेणवि तं निग घेत्तुं छिन्नं सीसं तु तुरयगीवस्स । भणियमणा[illegible] ॥ ८५? ॥
जइ पविसइ पायालं दुग्गगिरिं विसइ लङ्घइ समुद्दं । कुणइ य बहुविहाणे तहवि न [illegible] ॥ ८६? ॥
उक्किट्ठिनायपुव्वं देवेहिं निवाडियं कुसुमवरिसं । भणियं च [illegible] ॥ ८७? ॥
कोडिसिला सीसोवरि धरिया छत्तं व वासुदेवेहिं । [illegible] निविठ्ठ [illegible] ॥ ८८? ॥
परिहायन्तम्मि बले सेसेहिं ऊणमूणमुक्खित्ता । जा [illegible] ॥ ८९? ॥

जओ केसवबलं—

सोलसरायसहस्सा सव्वबलेणं तु संकलनिबद्धं । अञ्छन्ति वासुदेवं अगडतडम्मि ठियं [illegible] ॥ ९०? ॥
घेत्तूण संकलं सो वामगहत्थेण अञ्छमाणाणं । भुञ्जेज विलिम्पेज व महुमहणं ते न चायन्ति ॥ ९१? ॥
पढमो एस दसारो जाओ इय मुणिय सव्वसामन्ता । आणाकारी जाया [illegible] निविठ्ठस्स ॥ ९२? ॥
ओयवियं भरहद्धं सत्त य रयणाणि तस्स जायाणि । चक्कं छत्तं धणुयं मणि माला [illegible] ॥ ९३? ॥
सोलससाहस्सीणं जाओ सो मउडबद्धराईणं । सामी बत्तीसाए अन्तेउरबहुसहस्साणं ॥ ९४? ॥
पालन्ताण य रज्जं अयलतिविट्ठूण गरुयनेहाणं । सेज्जंसजिणसमीवे [illegible] ॥ ९५? ॥
वोलीणो बहुकालो अप्पडिहयसासणाण भरहद्धे । अह अन्नया निविठ्ठस्स [illegible] ॥ ९६? ॥

१ च–०इ बहु० । २ 'अञ्छन्ति' इति भाति । ३ च–अञ्छ० । ४ च–०इ गया ।

तरुणत्तुडियकुसुमलायन्नसरिसं इन्दियाण जणमणहरं । गन्धव्वपुरसरिच्छं जोव्वणमथिरं मणुयाणं ॥ ८ ॥
जह रयणीए सउणाण सङ्गमो जह पहे य पहियाणं । तह सुमिणे निच्छिओ तह सहिएहिं पडिस्सेहो ॥ ९ ॥
असुहनिहाणं देहं बहुवाहीवसणवेयणाविहुरं । जरकयं च कुणेवं पुणिजइ तणयं मणुयाणं ॥ १० ॥
मच्चू कुणइ अकाले बहुआसापासमोहियमणाणं । अणिवारियनियपसरो आयासंहो मणुयाणं ॥ ११ ॥
अन्नं च—
भवन्ति विसयसुक्खं जं पि य मूढा मणोरमं रम्मं । तं पि महुबिन्दुसरिसं न सुहं परमत्थओ होइ ॥ १२ ॥
सुणसु एत्थ दिट्ठन्तं—
एगो दरिद्दपुरिसो उक्कन्तकुलो सुदुक्खिओ दीणो । देसन्तरं पयट्टो गणाणं जेह बुद्धाणं ॥ १३ ॥
वच्चन्तो य अरण्णे अणोरपारम्मि पिट्ठओ नियइ । आगच्छन्ती भिसकलिया कर्म गन्धपसिद्धिं ॥ १४ ॥
अन्नो रुट्ठवणकरी आगच्छइ तं करेण घेत्तुमणो । ते पेच्छिय सो भीओ नासइ वेगेण तेऊ वि नरा ॥ १५ ॥
दिट्ठो तत्थ महन्तो वडरुक्खो हत्थिरुक्खलिअगम्मो । तम्मि य सो आरुहिउं न तरइ तो वेढओ निवडइ ॥ १६ ॥
पेच्छइ य अन्धकूवं तम्मज्झे तेण घत्तिया झम्पा । तडसंठियसरत्थम्भे लग्गो चिट्ठइ लम्बन्तो ॥ १७ ॥

१ अ—°वारिज° । २ ब—°मजं । ३ ब—°जोवतं । ४ ब—पुण । ५ ब—अजुइ° । ६—७ इत्यादयः कुपहिमोचनम् ।
८ ब—एगा ।

[illegible] ॥ ८ ॥
जह रयणीए सउणाण सङ्गमो जह पहे य पहियाणं । जह सुमिणे मिलिओ तह सहिणं [illegible] ॥ ९ ॥
असुइनिदाणं देहं बहुनाडीबसणवेगयानिद्धं । जरकट्ठं व घुणेहं घुणिज्जइ [illegible] ॥ १० ॥
मच्चू कुणइ अकाले बहुआसापासमोहियमणाणं । अगिणेहरिणं [illegible] ॥ ११ ॥

अन्नं च—

मन्नन्ति विसयसुक्खं जं पि य मूढा मणोरमं रम्मं । तं पि महुबिन्दुसरिसं व सुहं [illegible] ॥ १२ ॥

सुणसु एत्थ दिट्ठन्तं—

एगो दरिद्दपुरिसो उक्कण्ठकुलो सुदुक्खिओ दीणो । देसन्तरं पयट्टो [illegible] ॥ १३ ॥
वच्चन्तो य अरण्णे अणोरपारम्मि निठ्ठओ निवडइ । आगच्छन्ती मिगकलिया [illegible] ॥ १४ ॥
अन्नो कट्ठवणकरी आगच्छइ तं करेण घेत्तुमणो । ते पेच्छिय सो भीओ नासइ वेगेण [illegible] ॥ १५ ॥
दिट्ठो तत्थ महन्तो वडरुक्खो हत्थिदप्पसिअगम्मो । तम्मि य सो आरुहिउं न तरइ तो [illegible] ॥ १६ ॥
पेच्छइ य अन्धकूवं तम्मज्झे तेण वत्तिया झम्पा । तडसंठियसरथम्बे लग्गो चिट्ठइ [illegible] ॥ १७ ॥

१ अ—°वारिज्ज° । २ ब—°मज्जं । ३ ब—°ओवत्ते । ४ ब—दुम । ५ ब—अणुहुइ° । ६–७ [illegible] । ८ ब—एगा ।

चुलसी करिरहलक्खा अट्ठारस वरतुरङ्गकोडीओ । [illegible] ॥ ५५ ॥
सो चक्कवट्टिभोए भुञ्जन्तो संठिओ चिरं कालं । अह अन्नया कयाई [illegible] ॥ ५६ ॥
संपत्तो मुणिजुत्तो पोट्टिलसूरी सुणाणनरनाहो । [illegible] ॥ ५७ ॥
वन्दित्तु सुहनिसण्णस्स तस्स सूरी परेहि दियनिरओ । [illegible] ॥ ५८ ॥
अइदुलहं मणुयत्तं जीवाणं कम्मपरिणई चित्ता । [illegible] ॥ ५९ ॥

तत्थ इमेहिं दिट्ठन्तेहिं दुलहं मणुयत्तं—

चोल्लग पासग धन्ने जूए रयणे य सुमिण चक्के य । चम्म जुगे परमाणू दस दिट्ठन्ता मणुयलम्भे ॥६१॥ [illegible]
चोल्ल त्ति भोयणं चक्कवट्टिपरियारभरहगेहेसु । भोत्तुं [illegible] पुण [illegible] नरत्तं ॥ ६२ ॥
वरलद्धिच्छियपासयपडणे दीणारपत्तिजूयम्मि । अप्पगस्स [illegible] दुलहं ॥ ६३ ॥
धन्ने त्ति भरहधन्ने सिद्धत्थगपत्थयस्स खेवम्मि । थेरीए अवलोढ़िय [illegible] ॥ ६४ ॥
जूयम्मि रज्जकङ्खिस्स जह जओ थेरनिवइपुत्तस्स । [illegible] दुलहो मणुयजम्मो ॥ ६५ ॥
रयणे त्ति भिन्नपोयस्स रयणनासे समुद्दमज्झम्मि । [illegible] माणुसं जम्मं ॥ ६६ ॥
सुमिणम्मि चन्दगिलणे रज्जफलं नियमुयस्स सोऊणं । [illegible] नरत्तं ॥ ६७ ॥

१ अ–पुट्टि° । २ व–तो । ३ अ–°मग्गी ।

चुलसी करिरहलक्खा अड्ढारस वरतुरङ्गकोडीओ । छन्नवइ गामकोडी सिरी पयाइयाण तहय ॥ २६ ॥
सो चक्कवट्टिभोए भुञ्जन्तो संठिओ चिरं कालं । अह अन्नया कयाई निक्खन्तो तस्स इह राओ ॥ २७ ॥
संपत्तो मुणिजुत्तो पोट्टिलसूरी सुणाणवरनाहो । चक्की य वन्दणत्थं तस्स गओ पुरवरुज्जाणे ॥ २८ ॥
वन्दित्तु सुहनिसण्णस्स तस्स सूरी परेहि हियनिरओ । संसारुक्खेयकरिं धम्मकहं भावियजणो ॥ २९ ॥
अइदुलहं मणुयत्तं जीवाणं कम्मपरिणईं निच्चा । तो पाविय जायंति भविय जिणसासणे धम्मे ॥ ३० ॥
तत्थ इमेहिं दिट्ठन्तेहिं दुल्लहं मणुयत्तं—
चोल्लग पासग धन्ने जूए रयणे य सुमिण चक्के य । चम्म जुगे परमाणू दस दिट्ठन्ता मणुयजम्मे ॥३२॥ इय दृष्टान्ताः॥
चोल्ल त्ति भोयणं चक्कवट्टिपरियारभरहगेहेसु । भोत्तुं थियस्स दुल्लहं पुण नव नवदिणे भोत्तुं ॥ ३३ ॥
वरलद्धिकिच्छयपासयपडणे दीणारपत्तिजूयम्मि । अण्णस्स जओ दुल्लहो जह तह मणुयत्तणं दुलहं ॥ ३४ ॥
धन्ने त्ति भरहधन्ने सिद्धत्थगपत्थयस्स खेवम्मि । थेरीए अवलोइय तं वेणउ दुल्लहं पुणं ॥ ३५ ॥
जूयम्मि रज्जकङ्खिस्स जह जओ थेरनिवइपुत्तस्स । थम्भट्ठसयंसीणं तहेव दुल्लहो मणुयजम्मो ॥ ३६ ॥
रयणे त्ति भिन्नपोयस्स रयणनासे समुद्दमज्झम्मि । अन्नेसणम्मि तहा य दुल्लहं माणुसं जम्मं ॥ ३७ ॥
सुमिणम्मि चन्दगिलणे रज्जफलं नियसुयस्स सोऊणं । दुग्गयस्सेव्विवत्तसुमिणदंसणोवमभिह नरत्तं ॥ ३८ ॥

१ अ–पुट्टि° । २ व–तो । ३ अ–°मग्गी ।

छट्ठं च नारित्थीओ मच्छा मणुया य सत्तमं नरयं। उक्कोसेणं एसा भणिया नरयम्मि उप्पत्ती ॥ ७८ ॥
अट्टज्झाणोवगया परदुक्खुप्पायगा नियडिबहुला। बहुमोहन्नाणपरा जीवा तिरियत्तणमुवेन्ति ॥ ७९ ॥
अप्पकसाया दाणुज्जया य खमविणयमद्दवपहाणा। दक्खिण्णपरा पयईए भद्दगा जन्ति मणुयत्तं ॥ ३८० ॥
जे य महव्वयधारी अविरयसम्मा य देसविरया य। जिणपूयणदाणरया बालतवाऽकामनिज्जरणा ॥ ८१ ॥
परिणामविसुद्धीए देवाउयकम्मबन्धजोगाए। नरपञ्चिन्दियतिरिया सुरगइगमणं समज्जिनन्ति ॥ ८२ ॥

अवि य—

साहू जा सव्वट्ठं सोहम्मा जाव अच्चुयं[3] सड्ढो। वावन्नदंसणो वि हु मुणिलिङ्गी जाव गेवेज्जे ॥ ८३ ॥
पञ्चिन्दिओ तिरिक्खो गुणधारी जाइ जा सहस्सारं। परिवायगा य बम्भे जोइसिए तावसा जन्ति ॥ ८४ ॥
बालतवे पडिबद्धा उक्कडरोसा तवेण गारविया। वेरेण य पडिबद्धा मरिउं असुरेसु गच्छन्ति ॥ ८५ ॥
रज्जुग्गहणे विसभक्खणे य जलणे य जलपवेसे य। तण्हाछुहाकिलन्ता मरिऊणं होन्ति वन्तरिया ॥ ८६ ॥
असढा विणयपहाणा सुसहावा अप्पलोह खमजुत्ता। सच्चवया अचवला महिला पुरिसत्तणमुवेइं ॥ ८७ ॥
अलियब्भक्खाणरओ असच्चभासी य चञ्चलसहावो। साहसकारी परवञ्चणो य पुरिसो हवइ महिला ॥ ८८ ॥
जो तुरयवसहमहिसाइयाण निल्लञ्छणं कुणइ कूरो। उक्कडमोहो य तहा जीवो संढत्तणमुवेइ ॥ ८९ ॥

१ अ—छट्ठिं। २ व—°हिला य णरा। ३ अ—अच्चुए। ४ अ—°वेंति।

छंट्ठं[1] च नरित्थीओ मच्छा मणुया य सत्तमं नरयं। उक्कोसेणं एसा भणिया नरयम्मि उप्पत्ती ॥ ७८ ॥
अट्टज्झाणोवगया परदुक्खुप्पायगा नियडिबहुला। बहुमोहन्नाणपरा जीवा तिरियत्तणमुवेन्ति ॥ ७९ ॥
अप्पकसाया दाणुज्जया य खमविणयमद्दवपहाणा। दक्खिण्णपरा पयईए[2] भद्दगा जन्ति मणुयत्तं ॥ ३८० ॥
जे य महव्वयधारी अविरयसम्मा य देसविरया य। जिणपूयणदाणरया बालतवाऽकामनिज्जरणा ॥ ८१ ॥
परिणामविसुद्धीए देवाउयकम्मबन्धजोगाए। नरपञ्चिन्दियतिरिया सुरगइगमणं समज्जिनन्ति ॥ ८२ ॥
अवि य—
साहू जा सव्वट्ठं सोहम्मा जाव अच्चुयं[3] सड्ढो। वावन्नदंसणो वि हु मुणिलिङ्गी जाव गेवेज्जे ॥ ८३ ॥
पञ्चिन्दिओ तिरिक्खो गुणधारी जाइ जा सहस्सारं। परिवायगा य बम्भे जोइसिए तावसा जन्ति ॥ ८४ ॥
बालतवे पडिबद्धा उक्कडरोसा तवेण गारविया। वेरेण य पडिबद्धा मरिउं असुरेसु गच्छन्ति ॥ ८५ ॥
रज्जुग्गहणे विसभक्खणे य जलणे य जलपवेसे य। तण्हाछुहाकिलन्ता मरिऊणं होन्ति वन्तरिया ॥ ८६ ॥
असढा विणयपहाणा सुसहावा अप्पलोह खमजुत्ता। सच्चवया अचवला महिला पुरिसत्तणमुवेइं ॥ ८७ ॥
अलियब्भक्खाणरओ असच्चभासी य चञ्चलसहावो। साहसकारी परवञ्चणो य पुरिसो हवइ महिला ॥८८॥
जो तुरयवसहमहिसाइयाण निल्लञ्छणं कुणइ कूरो। उक्कडमोहो य तहा जीवो संढत्तणमुवेइ[4] ॥ ८९ ॥

१ अ—छट्ठिं। २ ब—°हिला य णरा। ३ अ—अच्चुए। ४ अ—°वेति।

महुघाय अग्गिदाहं चऊणं जो कुणइ इत्थियाईणं । मायावणम्मइयाई कुडी सो जायए दुहिओ ॥ ३ ॥
जो महिस खरं करहं अइभारारोवणेण पीडेइ । अहवा मणुस्सजाई सो दुहिओ पंगुओ होइ ॥ ४ ॥
मण्टा वेडभा य सगा साहूणमणज्जकारिणो होंति । जिनलोइकारयाणं न [illegible] होइ ॥ ५ ॥
तवसीलसंजुयाणं जो जम्पइ विप्पियं असच्चं वा । सो पङ्गुलो जायइ कुण्ठो दुह वहियाणं ॥ ६ ॥

तो सामग्गिं पावियत्ति संपइ वण्णिज्जइ—

माणुसखेत्तजाई कुलरूवारोगमाउयं बुद्धिं । धम्मसुइअवधारणसद्धा [illegible] ॥ ७ ॥

तत्थ मणुयत्तं पढमं साहणं धम्मस्स—

जं माणुसजम्मे च्चिय पडिपुन्नो संजमो तवो होइ । दुक्खक्खओ य परमो निव्वुइगमणोऽणन्तो य ॥ ८ ॥
तत्थवि आरियखेत्ते मगहादेसाइए मुणिविहारे । न उ सगजवणाइए मिलिक्खए धम्मवज्जेए ॥ ९ ॥
रायगिह मगह चम्पा अङ्गा तह तामलित्ति वङ्गा य । कञ्चणपुरं कलिङ्गा वाणारसि चेव कासी य ॥ १० ॥
साएय कोसला गयपुरं च कुरु सोरियं कुसट्टा य । कम्पिल्लं पञ्चाला अहिछत्ता जङ्गला चेव ॥ ११ ॥
बारवई य सुरट्ठा मिहिल विदेहा य वच्छ कोसम्बी । नन्दिपुरं सण्डिल्ला भद्दिलपुरमेव मलया य ॥ १२ ॥

१ अ–मण्ठा अनृजवः । २ 'वडभा' इति वामनाः । ३ अनाज्ञाकारिणः । ४ ब–°नाए । ५ ब–°केण । ६ ब–°रए य ।

मधुघाय अग्गिदाहं बहुणं जो कुणइ इत्थियाईणं । बालवयाणाइयाई कुट्ठी सो जायए पुरिसो ॥ ३ ॥
जो मद्दिस ण्वरं करइ अइभारारोवणेण पीडेइ । अहवा मणुस्सजाई सो दुहिओ जायओ होइ ॥ ४ ॥
मण्ठा वडभा य सगा साहूणमणज्जकारिणो होन्ति । जिणलोइकाणयाणं न [illegible] होइ ॥ ५ ॥
तवसीलसंजुयाणं जो जम्पइ विप्पियं असच्चं वा । सो मूइमुहो जायइ कुट्ठी पुण [illegible] ॥ ६ ॥

तो सामग्गिं पाविय[illegible] संपइ वण्णिज्जइ—

माणुसखेत्तजाई कुलरूवारोगमाउयं बुद्धिं । धम्मसुइअवगाहगसद्धा [illegible] ॥ ७ ॥

तत्थ मणुयत्तं पढमं साहणं धम्मस्स—

जं माणुसजम्मे चिय पडिपुन्नो संजमो तवो होइ । दुल्लहओ य परमो [illegible] य ॥ ८ ॥
तत्थवि आरियखेत्ते मगहादेसाइए मुणिविहारे । न उ सगजवणाइए निवज्जिए धम्मसद्देण ॥ ९ ॥
रायगिह मगह चम्पा अङ्गा तह तामलित्ति वङ्गा य । कञ्चणपुरं कलिङ्गा वाणारसि चेव कासी य ॥ १० ॥
साएय कोसला गयपुरं च कुरु सोरियं कुसट्टा य । कम्पिल्लं पञ्चाला अहिछत्ता जङ्गला चेव ॥ ११ ॥
बारवई य सुरट्ठा मिहिल विदेहा य वच्छ कोसम्बी । नन्दिपुरं सण्डिब्भा भद्दिलपुरमेव मलया य ॥ १२ ॥

---

१ अ–मण्ठा अनमुलयः । २ 'वडभा' इति वामनाः । ३ अनाज्ञाकारिणः । ४ ब–°ज्जइ । ५ ब–°केण । ६ ब–°सद्द य ।

हेयमुवाएयं वा न जाणए विमलबुद्धिपरिहीणो । न य धम्माइपरिक्खं कुणई ता धम्मजोग्ग त्ति ॥ २६ ॥
संवेगो निव्वेओ नाणावरणस्स तह खओवसमो । तत्तोहिगमो जायइ गुरुजणसयास सवणगुणा ॥ २७ ॥
निसुयं पि छिद्दकुडसंनिभस्स न हवइ विसिट्ठगुणहेऊ । अवधारणरहियस्स य नवरा अवधारणा तम्हा ॥ २८ ॥
निसुयमवधारियं वा सद्धारहियस्स कं गुणं कुणइ । देवगुरुधम्मतत्ते सद्धा ता सवणगुणहेऊ ॥ २९ ॥
इय एसा सामग्गी दुलहा जीवाण भवसमुद्दम्मि । धम्मरहियाण जायइ निरत्थिया ता नरं कुणइ ॥ ३० ॥
भवकूवे निवडन्तं हत्थालम्बो व धरइ जो जीवं । सो धम्मो त्ति पवुच्चइ सो पुण जिणभासिओ चेव ॥ ३१ ॥
रुक्खेसु कप्परुक्खो मणीसु चिन्तामणी जह पहाणो । अमयं रसेसु गोसीसचन्दणं चन्दणेसु जहा ॥ ३२ ॥
तह पावकम्ममहणो सयलदुहनिवारणो सुहनिहाणं । सव्वेसिं धम्माणं जिणधम्मो चेव सुपहाणो ॥ ३३ ॥
सव्वेसिं जीवाणं अहिंसणं चेव थावरतसाणं । सच्चवइभासणं तह अदिन्नपरवत्थुपरिहरणं ॥ ३४ ॥
अब्बम्भवज्जणं तह सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं । राईभोयणविरई समिईओ तिन्नि गुत्तीओ ॥ ३५ ॥
समसत्तुमित्तभावो समतिणमणिलेट्ठुकञ्चणत्तं च । सव्वत्थ निम्ममत्तं असन्निहीसंचओ चेव ॥ ३६ ॥
खन्तीमद्दवअज्जवमुत्तीतवनियमबम्भगुत्तीओ । पडिलेहणापमज्जणसज्झाओ झाणजोगो य ॥ ३७ ॥
दसहा सामायारी इच्छाकारो य मिच्छकारो य । तइओ य तहक्कारो निसीहियावस्सिया चेव ॥ ३८ ॥

१ अ–°ताभि° । २ व–तहा ।

हेयमुवाएयं वा न जाणए विमलबुद्धिपरिहीणो । न य धम्माइपरिक्खं तुली ता धम्मकेव त्ति ॥ २६ ॥
संवेगो निव्वेओ नाणावरणस्स तह खओवसमो । तत्तोहिगमो जायइ गुरुवयणस्स सवणगुणा ॥ २७ ॥
निसुयं पि छिड्डकुडसंनिभस्स न हवइ विसिट्ठगुणहेऊ । अवधारणरहियस्स य तम्हा अवधारणा तम्हा ॥ २८ ॥
निसुयमवधारियं वा सद्धारहियस्स कं गुणं कुणइ । देवगुरुधम्मतत्ते सद्धा ता सव्वगुणहेऊ ॥ २९ ॥
इय एसा सामग्गी दुलहा जीवाण भवसमुद्दम्मि । धम्मरहियाण जायइ निरत्थिया ता तयं कुणह ॥ ३० ॥
भवकूवे निवडन्तं हत्थालम्बो व धरइ जो जीवं । सो धम्मो त्ति पवुच्चइ सो पुण जिणभासिओ चेव ॥ ३१ ॥
रुक्खेसु कप्परुक्खो मणीसु चिन्तामणी जह पहाणो । अमयं रसेसु गोसीसचन्दणं चन्दणेसु जहा ॥ ३२ ॥
तह पावकम्ममहणो सयलदुहनिवारणो सुहनिहाणं । सव्वेसिं धम्माणं जिणधम्मो चेव सुपहाणो ॥ ३३ ॥
सव्वेसिं जीवाणं अहिंसणं चेव थावरतसाणं । सच्चवइभासणं तह अदिन्नपरवत्थुपरिहरणं ॥ ३४ ॥
अव्वम्भवज्जणं तह सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं । राईभोयणविरई समिईओ तिन्नि गुत्तीओ ॥ ३५ ॥
समसत्तुमित्तभावो समतिणमणिलेट्ठुकञ्चणत्तं च । सव्वत्थ निम्ममत्तं असन्निहीसंचओ चेव ॥ ३६ ॥
खन्तीमद्दवअज्जवमुत्तीतवनियमबम्भगुत्तीओ । पडिलेहणापमज्जणसज्झाओ झाणजोगो य ॥ ३७ ॥
दसहा सामायारी इच्छाकारो य मिच्छकारो य । तइओ य तहकारो निसीहियावस्सिया चेव ॥ ३८ ॥

१ अ—°त्ताभि° । २ व—तहा ।

साहुसगासे सवणं पच्चक्खाणं अपुव्वपढणं च । दाणं च साहुवग्गे तित्थस्स पभावणं कुज्जा ॥ ४८ ॥
तित्थाण वन्दणं सुहभावणनवकारचिन्तणाईयं । एमाइ सावयाणं नरिन्द ! धम्मो समक्खाओ ॥ ४९ ॥
इय सोउं सो चक्की परमं संवेगमागओ खिप्पं । अट्ठाहियमहिमाओ काऊण जिणिन्दभवणेसु ॥ ४५० ॥
दाऊण महादाणं रज्जे संठाविऊण नियपुत्तं । निक्खन्तो सुपसन्तो पोट्टिलसूरिस्स पासम्मि ॥ ५१ ॥
वासकोडिं पालिय सामण्णं निक्कलं महासत्तो । चुलसीइ पुव्वलक्खा सव्वाउं पालइत्ता णं ॥ ५२ ॥
अणसणविहिणा कालं काउं सुहझाणभावणाजुत्तो । सव्वट्ठविमाणम्मि उववन्नो सुक्ककप्पम्मि ॥ ५३ ॥
सत्तरस सागराऊ तम्मि य सो दिव्वभोगदुल्ललिओ । नियमाउयमणुपालिय आयाओ मणुयलोगम्मि ॥५४॥
नयरीए छत्तगाए जियसत्तू नरवई महिड्ढीओ । भद्दा य तस्स भज्जा सव्वन्तेउरपहाणा उ ॥ ५५ ॥
सो तेसि सुओ जाओ परममहासुमिणसूइओ सुहओ । रूवंस्सी वन्धुपिओ नन्दणनामो सुकयपुन्नो ॥ ५६ ॥
सो पञ्चधाइकलिओ कलाकलावेण तणुउवचएणं । वड्ढन्तो चन्दो इव मणुण्णतारुण्णमणुपत्तो ॥ ५७ ॥
परिणाविओ य पिउणा वहुयाओ पवररायकन्नाओ । रज्जे य तयणु ठविओ पव्वज्जं घेत्तुकामेणं ॥ ५८ ॥
कयसव्वपयारक्खं रज्जमुदग्गं च विजियपडिवक्खं । वहु समईओ कालो नाएणं पालमाणस्स ॥ ५९ ॥
न य परचक्कपवेसो न य वन्दिगहो न तक्करप्पसरो । न य किंपि य उड्डमरं संजायं जस्स रज्जम्मि ॥ ४६० ॥

१ व-रूवंसी । २ व-°रज्जे तयणु ठ° ।

साहुसगासे सवणं पच्चक्खाणं अपुव्वपढणं च। दाणं च साहुवग्गे तित्थस्स पभावणं कुज्जा ॥ ४८ ॥
तित्थाण वन्दणं सुहभावणनवकारचिन्तणाईयं। एमाइ सावयाणं नरिन्द ! धम्मो समक्खाओ ॥ ४९ ॥
इय सोउं सो चक्की परमं संवेगमागओ खिप्पं। अट्ठाहियमहिमाओ काऊण जिणिन्दभवणेसु ॥ ४५० ॥
दाऊण महादाणं रज्जे संठाविऊण नियपुत्तं। निक्खन्तो सुपसन्तो पोट्टिलसूरिस्स पासम्मि ॥ ५१ ॥
वासक्कोडिं पालिय सामण्णं निक्कलं महासत्तो। चुलसीइ पुव्वलक्खा सव्वाउं पालइत्ता णं ॥ ५२ ॥
अणसणविहिणा कालं काउं सुहझाणभावणाजुत्तो। सव्वट्ठविमाणम्मि उववन्नो सुक्ककप्पम्मि ॥ ५३ ॥
सत्तरस सागराऊ तम्मि य सो दिव्वभोगदुल्ललिओ। नियमाउयमणुपालिय आयाओ मणुयलोगम्मि ॥५४॥
नयरीए छत्तगाए जियसत्तू नरवई महिड्ढीओ। भद्दा य तस्स भज्जा सव्वन्तेउरपहाणा उ ॥ ५५ ॥
सो तेसि सुओ जाओ परममहासुमिणसूइओ सुहओ। रूवंस्सी वन्धुपिओ नन्दणनामो सुकयपुन्नो ॥ ५६॥
सो पञ्चधाइकलिओ कलाकलावेण तणुउवचएणं। वड्ढन्तो चन्दो इव मणुण्णतारुण्णमणुपत्तो ॥ ५७ ॥
परिणाविओ य पिउणा वहुयाओ पवररायकन्नाओ। रेज्जे य तयणु ठविओ पव्वज्जं घेत्तुकामेणं ॥ ५८ ॥
कयसव्वपयारक्खं रज्जमुदग्गं च विजियपडिवक्खं। वहु समईओ कालो नाएणं पालमाणस्स ॥ ५९ ॥
न य परचक्कपवेसो न य वन्दिग्गहो न तक्करप्पसरो। न य किं पि य उड्डमरं संजायं जस्स रज्जम्मि ॥ ४६० ॥

१ व-रूवंसी। २ व-°रज्जे तयणु ठ°।

उण्हनरयाउ गिम्हे पज्जलियचियाएँ नारगो सित्तो। देवेण सुहं सवइ अइउण्हं उण्हनरएसु ॥ ७२ ॥
कत्थइ य गाढसीयं इहच्चसीयाउ तं असंखगुणं। अयभारसहस्समओ गोलो जेणं विलिज्जेज्जा ॥ ७३ ॥
केइवि कुम्भीपागं भडित्तपागं च भट्ठपागं च। केइवि लोहीपागं कुणन्ति इय अग्गिविगलाओ ॥ ७४ ॥
कुव्वन्ति जन्तपीलं केइवि करवत्तदारूणं घोरं। केइवि सिलायलम्मी अच्छोडणमवरसत्तेव ॥ ७५ ॥
कुव्वन्तसिपत्तवणं पडन्तपत्तेहिं लुणइ अङ्गाइं। जं चक्कासिसमेहिं केइवि सूलासु रोवेन्ति ॥ ७६ ॥
तिक्खेहिं वासिपरसूकप्पणिचक्कासिछुरियमाईहिं। कण्णोट्ठनासिकरचरणनालुगीवाओ छिन्दन्ति ॥ ७७ ॥
जीहच्छिमुक्खणंति उ कुच्छीहियओदराणि भिन्दन्ति। सेल्लेहिं तिसूलेहिं य पहरन्ति य मोग्गरेहिं सिरं ॥ ७८ ॥
कुव्वन्ति कण्टयाउलसिम्बलिरुक्खावरुण्डणं करिउं। कड्ढोकड्ढीदुक्खं उक्कत्तन्ती य तणुमहलं ॥ ७९ ॥
तम्बतउसीसयाइं केइवि पाइन्ति कढकढिन्ताइं। तिसिए परमाहम्मी नेरइए कन्दमाणे उ ॥ ४८० ॥
वेयरणीएँ णईए जलन्तवसरुहिरपूयपुन्नाए। बोलन्ति यँ लोलन्ति य अइतत्ते वालुयापुलिणे ॥ ८१ ॥
खावन्ति समंसाइं खण्डेहिं जे भविंसु मंसासी। तत्तायसमहिलाओ आलिङ्गाविन्ति परदारी ॥ ८२ ॥
जोइत्तिय लोहरहे जलन्तसमिलाजुगम्मि महिसे व्व। अवहन्ते पुण कसिउं कुट्टन्ति य लउडघाएहिं ॥ ८३ ॥
कत्थइ य रिञ्छचित्तयवराहसद्दूलसुणयमाईहिं। वेउव्वियरूवेहिं खायन्ति सुतिक्खतुण्डेहिं ॥ ८४ ॥

१ अ–इय उ°। २ व–°प्पण च°। ३ व–°हण°। ४ व–तउतम्ब°। ५ व–य अतितत्ते अने पुण वा°। ६ व–हु°। ७ अ–°गड°।

उण्हनरयाउ गिम्हे पज्जलियचियाएँ नारगो खित्तो । देवेण सुहं सयइ अइउण्हं उण्हनरएसु ॥ ७२ ॥
कत्थइ य गाढसीयं इहच्चसीयाउ तं असंखगुणं । अयभारसहस्समओ गोलो जेणं विलिज्जेज्जा ॥ ७३ ॥
केइवि कुम्भीपागं भडित्तपागं च भट्ठपागं च । केइवि लोहीपागं कुणन्ति इय अग्गिनिवगाओ ॥ ७४ ॥
कुव्वन्ति जन्तपीलं केइवि करवत्तदारुणं घोरं । केइवि सिलायलम्मी अच्छोडणमप्फरस्सेन ॥ ७५ ॥
कुव्वन्तसिपत्तवणं पडन्तपत्तेहिं लुणइ अङ्गाइं । जं चक्कासिसमेहिं केइवि सूलासु रोवेन्ति ॥ ७६ ॥
तिक्खेहिं वासिपरसूकप्पणिचक्कासिछुरियमाईहिं । कण्णोट्ठनासिकरचरणबाहुगीवाओ छिन्दन्ति ॥ ७७ ॥
जीहच्छिमुक्खणंति उ कुच्छीहियओदराणि भिन्दन्ति । सेल्लेहिं तिसूलेहिं य पहरन्ति य मोग्गरेहिं सिरं ॥ ७८ ॥
कुव्वन्ति कण्टयाउलसिम्बलिरुक्खावरुण्डणं करिउं । कड्ढोकड्ढीदुक्खं उक्कत्तन्ती य तणुमहलं ॥ ७९ ॥
तम्बतउसीसयाइं केइवि पाइन्ति कढकढिन्ताइं । तिसिए परमाहम्मी नेरइए कन्दमाणे उ ॥ ४८० ॥
वेयरणीएँ णईए जलन्तवसरुहिरपूयपुण्णाए । बोलन्ति यँ लोलन्ति य अइतत्ते वालुयापुलिणे ॥ ८१ ॥
खावन्ति समंसाइं खण्डेहिं जे भैविसु मंसासी । तत्तायसमहिलाओ आलिङ्गाविन्ति परदारी ॥ ८२ ॥
जोइत्तिय लोहरहे जलन्तसमिलाजुगम्मि महिसे व्व । अवहन्ते पुण कसिउं कुट्टन्ति य लउडघाएहिं ॥ ८३ ॥
कत्थइ य रिञ्छचित्तयवराहसद्दूलसुणयमाईहिं । वेउव्वियरूवेहिं खायन्ति सुतिक्खतुण्डेहिं ॥ ८४ ॥

१ अ—इय उ० । २ व—०प्पण च० । ३ व—०हण० । ४ व—तउतम्ब० । ५ व—य अतितचे अने पण वा० । व—६ ह० । ७ अ—०णहु० ।

भणियं च—

अग्गिवन्नाहिं सूईहिं संभिन्नस्स निरन्तरं । जावतियं जायए दुक्खं गब्भे अट्ठगुणं तओ ॥ ९८ ॥
गब्भाओ नीहरन्तस्स जोणीजन्तनिपीलणे । जं तं सयगुणं तत्तो सहस्सगुणमेव वा ॥ ९९ ॥
दन्तुब्भेयाईसुं दुक्खं बालत्तणे जुवत्ते य । इच्छियवत्थुअलाभे अहवा पियविप्पओगम्मि ॥ १०० ॥
इन्दियहाणीकम्पणपरिभवणाई दुहं च थेरत्ते । मरणदुहं पुण सो चिय जाणइ अहवा वि सव्वन्नू ॥ १ ॥
दारिद्दं दोहग्गं इट्ठवियोगं च अत्थणासो य । दासत्तं पेसत्तं परसेवा आवईओ य ॥ २ ॥
चिन्ता सोगो बहुवाहिवेयणा तह कुभोयण कुवासो । कुकलत्त कुपुत्ताणं सयणं नरयाणुगामाणो ॥ ३ ॥
सयणविरोहो कन्नापेहुत्तणं सीयतावछुहतण्हा । एमाइमणुयलोए पयडं चिय दीसए दुक्खं ॥ ४ ॥
देवाणवि णत्थि सुहं कोहाइकसायकलुसियमणाणं । समयम्मि जओ एए निद्दंसिया दुक्खहेउ त्ति ॥ ५ ॥

तथाहि—

सपरोभयाण संतावकारओ कुगइगमणहेऊ य । पीईविच्छेयकरो कोहो ता दुक्खहेउ त्ति ॥ ६ ॥
माणोऽवमाणहेऊ मन्नस्सवि कुणइ माणिणोऽवन्नं । गुरुविणयभंसकारी माणो इय दुक्खहेउ त्ति ॥ ७ ॥
माया कुविगप्पेहिं भवमाणेहिं परवञ्चणनिमित्तं । चित्तस्स वाउलत्तं कुणइ अओ दुक्खहेउ त्ति ॥ ८ ॥

१ व-तयं । २ व-°बहु° । ३ व-माणओ ।

भणियं च—

अग्गिवन्नाहिं सूईहिं संभिन्नस्स निरन्तरं । जावतियं जायए दुक्खं गब्भे अट्ठगुणं तओ ॥ २८ ॥
गब्भाओ नीहरन्तस्स जोणीजन्तनिपीलणे । जं तं सयगुणं तत्तो सहस्सगुणमेव वा ॥ २९ ॥
दन्तुब्भेयाईसुं दुक्खं बालत्तणे जुवत्ते य । इच्छियवत्थुअजोगे अहवा तिव्वविओगम्मि ॥ ३० ॥
इन्दियहाणीकम्पणपरिभवणाई दुहं च थेरत्ते । मरणदुहं पुण सो च्चिय जाणइ अहवा सव्वन्नू ॥ १ ॥
दारिद्दं दोहग्गं इट्ठवियोगं च अत्थणासो य । दासत्तं पेसत्तं परसेवा आवईओ य ॥ २ ॥
चिन्ता सोगो बहुवाहिवेयणा तह कुभोयण कुवासो । कुकलत्त कुपुत्तत्तं मयणं नरनाहमाणो ॥ ३ ॥
सयणविरोहो कन्नापेहुत्तणं सीयतावबहुतण्हा । एमाइमणुयलोए पयडं चिय दीसए दुक्खं ॥ ४ ॥
देवाणवि णत्थि सुहं कोहाइकसायकलुसियमणाणं । समयम्मि जओ एए निद्दंसिया दुक्खहेउ त्ति ॥ ५ ॥

तथाहि—

सपरोभयाण संतावकारओ कुगइगमणहेऊ य । पीईविच्छेयकरो कोहो ता दुक्खहेउ त्ति ॥ ६ ॥
माणोऽवमाणहेऊ मन्नस्सवि कुणइ माणिणोऽवन्नं । गुरुविणयभंसकारी माणो इय दुक्खहेउ त्ति ॥ ७ ॥
माया कुविगप्पेहिं भवमाणेहिं परवञ्चणनिमित्तं । चित्तस्स वाउलत्तं कुणइ अओ दुक्खहेउ त्ति ॥ ८ ॥

---

१ ब–तयं । २ ब–°बहु° । ३ ब–माणओ ।

उसभाईतित्थयरे चउवीसं सुरनए नमंसामि । भरहेरवयविदेहे जे केई ते य वन्दामि ॥ ६८ ॥
अरहन्तणमोक्कारो जीवं मोएइ भवसहस्साओ । भावेण कीरमाणो होइ पुणो बोहिलाभाए ॥ ६९ ॥
सिद्धाण णमोक्कारं करेमि भावेण निट्ठियट्ठाणं । भवसयसहस्सबद्धं दड्ढं कम्मिन्धणं जेहिं ॥ ७० ॥
पञ्चविहं आयारं आयरमाणाण पन्नवेन्ताणं । आयरियाणं पि णमो धारिज्जइ पवयणं जेहिं ॥ ७१ ॥
उवज्झायाणं पि णमो सज्झोवज्झं सुयं धरेन्ताणं । सीसगणस्स हियट्ठा झरमाणाणं तयं चेव ॥ ७२ ॥
साहूण णमोक्कारं करेमि सीलव्वए धरन्ताणं । भवसयसहस्स बद्धं जे किर निन्नासए पावं ॥ ७३ ॥

अणसणं चेमं—

सव्वं चिय सावज्जं जोगं उवहिं च बाहिरन्तरयं । तिविहेण वोसिरामी तिविहमहं जाव जीवाए ॥ ७४ ॥
असणं पाणं खादिम साइमयं वोसिरामि सव्वं पि । संपइ जावज्जीवं चरिमुस्सासेहि देहं पि ॥ ७५ ॥
इय आराहणमिणमो आराहेऊण नन्दणो भयवं । धम्मायरियं समणे समणीओ खामेए सम्मं ॥ ७६ ॥
वासाण सयसहस्सं परियायं पालिऊण सुहझाणो । पणुवीससयसहस्से सव्वाउं अणुभवेऊणं ॥ ७७ ॥
संपुन्नकयाणसणो णिप्पडिकम्मो य निम्ममत्तो य । आलोइयपडिकन्तो विहिणा कालं गतो धीरो ॥ ७८ ॥

---

१ अ–दड्ढं । २ व–धरं० । ३ अ–०भय० । ४ व–०से य दे० । ५ व–०मिउं ।

उसभाईतित्थयरे चउवीसं सुरनए नमंसामि । भरहेरवयविदेहे जे केई ते य वन्दामि ॥ ६८ ॥
अरहन्तणमोक्कारो जीवं मोएइ भवसहस्साओ । भावेण कीरमाणो होइ पुणो बोहिलाभाए ॥ ६९ ॥
सिद्धाण णमोक्कारं करेमि भावेण निट्ठियट्ठाणं । भवसयसहस्सबद्धं दड्ढं कम्मिन्धणं जेहिं ॥ ७० ॥
पञ्चविहं आयारं आयरमाणाण पन्नवेन्ताणं । आयरियाणं पि णमो धारिज्जइ पवयणं जेहिं ॥ ७१ ॥
उवज्झायाणं पि णमो सज्झोवङ्गं सुयं धरेन्ताणं । सीसगणस्स हियट्ठा झरमाणाणं तयं चेव ॥ ७२ ॥
साहूण णमोक्कारं करेमि सीलव्वए धरन्ताणं । भवसयसहस्स[3] बद्धं जे किर निन्नासए पावं ॥ ७३ ॥

अणसणं चेमं—

सव्वं चिय सावज्जं जोगं उवहिं च बाहिरन्तरयं । तिविहेण वोसिरामी तिविहमहं जाव जीवाए ॥ ७४ ॥
असणं पाणं खादिम साइमयं वोसिरामि सव्वं पि । संपइ जावज्जीवं चरिमुस्सासेहि देहं पि ॥ ७५ ॥
इय आराहणमिणमो आराहेऊण नन्दणो भयवं । धम्मायरियं समणे समणीओ खामेए सम्मं ॥ ७६ ॥
वासाण सयसहस्सं परियायं पालिऊण सुहझाणो । पणुवीससयसहस्से सव्वाउं अणुभवेऊणं ॥ ७७ ॥
संपुन्नकयाणसणो णिप्पडिकम्मो य निम्ममत्तो य । आलोइयपडिकन्तो विहिणा कालं गतो धीरो ॥ ७८ ॥

---

१ अ–दड्ढं । २ व–धरं० । ३ अ–०भय० । ४ व–०से य दे० । ५ व–०मिदं ।

निवसेइ देवदूसे वरहरियन्दणविलेवणं कुणइ । बन्धइ सिरोहराए[1] सुरपायवकुसुममालाओ ॥ ९१ ॥
केऊरकडयकुण्डलहारलयामउडसाइयाभरणं[2] । सव्वङ्गेसु पिणिन्धइ रेहइ नं कप्परुक्खो व्व ॥ ९२ ॥
ववसायसहं गन्तुं पोत्थयरयणं च[3] वायए पवरं । पुप्फाई पूयङ्गं घेत्तुं सिद्धालयं विसइ ॥ ९३ ॥
अट्ठोत्तरपडिमसयं[4] ण्हावइ पूएइ वन्दइ थुणेइ । तो सोहम्मसहाए अत्थाणं देइ सुरमज्झे ॥ ९४ ॥
पेक्खणयगीयवाइयमहूसवं अणुहवेइ गुरुहरिसो । दिव्वे य कामभोए जहिच्छिए माणए[5] तत्थ ॥ ९५ ॥
कल्लाणएँ जिणाणं आगच्छइ एत्थ तह विदेहेसु । वन्दइ जिणिन्दचन्दे निम्मलसम्मत्तगुणधारी[6] ॥ ९६ ॥
वीसं च सागराइं आउठिइं पालिउं तओ चविओ । तिहिँ नाणेहिँ समग्गो अवयरिओ एत्थ भरहम्मि ॥९७॥
हत्थुत्तरजोगेणं आसाढे सुद्धपक्खछट्ठीए । विगए य अड्ढरत्ते अग्गाहारे दियवराणं ॥ ९८ ॥
माहणकुण्डग्गामे कोडालसगोत्तमाहणो आसि । नामेण उसहदत्तो उववन्नो तस्स गेहम्मि ॥ ९९ ॥
गयमाइमहासुमिणेहिँ सूइओ माहणीएँ चोद्दसहिँ । देवाणन्दाएँ जिणो कुच्छीए कुलमदवसेणं ॥ ३०० ॥
तुट्ठो य उसहदत्तो देवाणन्दा य पवरसुमिणेहिँ । होही सुओ त्ति अम्हं वेदविऊ दियकुलपहाणो ॥ १ ॥
अह दिवसे बासीई वसइ तहिँ माहणीए कुच्छिंसि । सक्को आसणकम्पे जाए तो ओहिणा नियइ ॥ २ ॥
पेच्छइ जिणमुववन्नं चिन्तइ अ अहो ! अजुत्तमावन्नं । जं एसो चरिमजिणो उववन्नो माहणकुलम्मि ॥ ३ ॥

---

१ व–सिरे वराओ । २ व–°हारस° । ३ व–पवायए । ४ व–अट्ठुत्त° । ५ व–°णगे । ६ व–निचलस° ।

निवसेइ देवदूसे वरहरियन्दणविलेवणं कुणइ । वन्धइ सिरोहराए[1] सुरपायवकुसुममालाओ ॥ ९१ ॥
केऊरकडयकुण्डलहारलयामउडसाइयाभरणं । सव्वङ्गेसु पिणिन्धइ रेहइ नं कप्परुक्खो व्व ॥ ९२ ॥
ववसायसहं गन्तुं पोत्थयरयणं च[3] वायए पवरं । पुप्फाई पूयङ्गं घेत्तुं सिद्धालयं विसइ ॥ ९३ ॥
अट्ठोत्तर[4]पडिमसयं ण्हावइ पूएइ वन्दइ थुणेइ । तो सोहम्मसहाए अत्थाणं देइ सुरमज्झे ॥ ९४ ॥
पेक्खणयगीयवाइयमहूसवं अणुहवेइ गुरुहरिसो । दिव्वे य कामभोए जहिच्छिए माणए तत्थ ॥ ९५ ॥
कल्लाणए जिणाणं आगच्छइ एत्थ तह विदेहेसु । वन्दइ जिणिन्दचन्दे निम्मल[6]सम्मत्तगुणधारी ॥ ९६ ॥
वीसं च सागराइं आउठिइं पालिउं तओ चविओ । तिहिं नाणेहिं समग्गो अवयरिओ एत्थ भरहम्मि ॥९७॥
हत्थुत्तरजोगेणं आसाढे सुद्धपक्खछट्ठीए । विगए य अद्धरत्ते अग्गाहारे दियवराणं ॥ ९८ ॥
माहणकुण्डग्गामे कोडालसगोत्तमाहणो आसि । नामेण उसहदत्तो उववन्नो तस्स गेहम्मि ॥ ९९ ॥
गयमाइमहासुमिणेहिं सूइओ माहणीएँ चोद्दसहिं । देवाणन्दाएँ जिणो कुच्छीए कुलमदवसेणं ॥ ३०० ॥
तुट्ठो य उसहदत्तो देवाणन्दा य पवरसुमिणेहिं । होही सुओ त्ति अम्हं वेदविऊ दियकुलपहाणो ॥ १ ॥
अह दिवसे वासीई वसइ तहिं माहणीए कुच्छिंसि । सक्को आसणकम्पे जाए तो ओहिणा नियइ ॥ २ ॥
पेच्छइ जिणमुववन्नं चिन्तइ अ अहो ! अजुत्तमावन्नं । जं एसो चरिमजिणो उववन्नो माहणकुलम्मि ॥ ३ ॥

१ व–सिरे वराओ । २ व–°हारस° । ३ व–पवायए । ४ व–अट्ठुत्त° । ५ व–°णगे । ६ व–निचलस° ।

सरयब्भखण्डपण्डुरपासायसएहिँ तुङ्गसिहरेहिँ । जत्थ खलिज्जइ मज्झे रविणो रहतुरयसंचारो ॥ १४ ॥
कस्मीरमलयगिरिणो उवहसइ घुसिणचन्दणोहेणं । घणसारदीवमणुहरइ पवरकप्पूरपूरेणं ॥ १५ ॥
बहुसुरहिदव्वपब्भारपरिमलुग्गारवासियदियन्ता । आणन्दइ जत्थ जणं गन्धियहट्टी बहुधणड्ढा ॥ १६ ॥
तत्थुब्भवेहिँ देसागएहिँ वत्थेहिँ पञ्चवन्नेहिँ । जत्थ विरायइ अइघणदोसियहट्टाण रिञ्छोली ॥ १७ ॥
तत्थ य रुप्पसुवन्नयपवालमुत्ताहलेहिँ अइरम्मा । रेहइ वियड्ढतुङ्गा सोवन्नियहट्टिया पन्ती ॥ १८ ॥
कत्थइ कइगजणघणा पूगीफलनालिएरनियरेहिं । बहुपडिपुन्ना हट्टा तप्फलदीव व्व रेहन्ति ॥ १९ ॥
कत्थइ जा सुयणोवमकुसुम्भसम्भारभरियभूमितला । कत्थइ सुगन्धविक्किज्जमाणअणवरयघयतेल्ला ॥ ३२० ॥
कत्थइ गिरिगुरुकरडिप्पयरा रेहन्ति विञ्झदेस व्व । कत्थइ उडुनियरोवमउज्जलकप्पासपब्भारा ॥ २१ ॥
कड्ढिज्जमाणवलयाइकम्मपरिकम्ममाणकरिदसणा । कत्थइ सुगन्धगन्धाइदव्वसुरभा विवणिपन्ती ॥ २२ ॥
कत्थइ जिणसमया इव बहुविहसुत्तत्थसारपरिकलिया । कत्थइ सुकट्ठपउरा दारिद्दक्कन्तसेणि व्व ॥ २३ ॥
सतरसविहधन्नाणं कुसुमाण फलाण पत्तसागाणं । दहिखीराणं दीसन्ति विक्कया ठाणठाणेसु ॥ २४ ॥
सालिजववीहिकोद्दवरालयतिलमुग्गमासचवलचणा । तुवरिमसूरकुलत्था गोहुमनिप्फावअयसिसणा ॥ २५ ॥
इय केत्तियं व भन्नइ जहट्ठियं विवणिमग्गवन्नणयं । उक्कोसहीणमज्झिमविक्कयदव्वायरे तम्मि ॥ २६ ॥

---

१ अ–°वन्ना । २ अ–तरुफलदीवो वं । ३ अ–°त्थय । ४ व–दधाइ° ।

... रहतुरयसचारा ॥ १४ ॥
कम्हीरमलयगिरिणो उवहसइ घुसिणचन्दणोहेणं । घणसारदीवमणुहरइ पवरकप्पूरपूरेणं ॥ १५ ॥
बहुसुरहिदव्वपब्भारपरिमलुग्गारवासियदियन्ता । आणन्दइ जत्थ जणं गन्धियहट्टी बहुघणड्ढा ॥ १६ ॥
तत्थुब्भवेहिँ देसागएहिँ वत्थेहिँ पञ्चवन्नेहिँ । जत्थ विरायइ अइघणदोसियहट्टाण रिञ्छोली ॥ १७ ॥
तत्थ य रुप्पसुवन्नयपवालमुत्ताहलेहिँ अइरम्मा । रेहइ वियडतुङ्गा सोवन्नियहट्टिया पन्ती ॥ १८ ॥
कत्थइ कइगजणघणा पूगीफलनालिएरलियरेहिं । बहुपडिपुन्ना हट्टा तप्फलदीव व्व रेहन्ति ॥ १९ ॥
कत्थइ जा सुयणोवमकुसुम्भसम्भारभरियभूमितला । कत्थइ सुगन्धविक्किज्जमाणअणवरयघयतेल्ला ॥ २० ॥
कत्थइ गिरिगुरुकरडिप्पयरा रेहन्ति विञ्झदेस व्व । कत्थइ उडुनियरोवमउज्जलकप्पासपब्भारा ॥ २१ ॥
कड्ढिज्जमाणवलयाइकम्मपरिकम्ममाणकरिदसणा । कत्थइ सुगन्धगंन्धाइदव्वसुरभा विवणिपन्ती ॥ २२ ॥
कत्थइ जिणसमया इव बहुविहसुत्तत्थसारपरिकलिया । कत्थइ सुकट्ठपउरा दारिद्दक्कन्तसेणि व्व ॥ २३ ॥
सतरसविहधन्नाणं कुसुमाण फलाण पत्तसागाणं । दहिखीराणं दीसन्ति विक्कया ठाणठाणेसु ॥ २४ ॥
सालिजववीहिकोद्दवरालयतिलमुग्गमासचवलचणा । तुवरिमसूरकुलत्था गोहुमनिप्फावअयसिसणा ॥ २५ ॥
इय केत्तियं व भन्नइ जहट्ठियं विवणिमग्गवन्नणयं । उक्कोसहीणमज्झिमविक्कयदव्वायरे तम्मि ॥ २६ ॥

१ अ—°यन्ना । २ अ—तरुफलदीवो वं । ३ अ—°त्थय । ४ व—दघाइ° ।

तम्मि पुरे सुपसिद्धो णायनरिन्दकुलणहयलमियङ्को। पणिवइयचक्कलो वित्थरन्तनिवलच्छिपरिकलिओ ॥३९॥
सिरिसिद्धत्थनरिन्दो उद्दण्डपयावनिहयपडिवक्खो। गरुयपरक्कमसामन्तनमिरसिरमुक्कागजुयल्लो ॥ ४० ॥
तरणि व्व पयावेणं भीमो व्व परक्कमेण गरुएणं। पणयजणकप्पक्क्खो कन्नो विव चायसोडीरो ॥ ४१ ॥
सच्चपइन्नो नीईवियक्खणो परकलत्तविमुहो य। दुट्ठजणनिग्गहपरो सव्वपयापालणेक्करसो ॥ ४२ ॥
दट्ठुं जं गयखन्धे रूवक्खेत्ताओ पउरजुवईओ। सुन्नमणाओ दिवसं पि गेहकम्माइँ न कुणन्ति ॥ ४३ ॥
[2]देन्तपहारुप्पेल्लियभूमीभारेण सेसफणनिवहं[3]। जस्सोनामिन्ति दढं चलवन्तो मत्तमायङ्गा ॥ ४४ ॥
निट्ठुरखुरक्खएणं भूमिरओहेण जस्स वियरन्ता। अन्धारयन्ति गयणं दप्पुद्धुरतुरयसङ्घाया ॥ ४५ ॥
चक्कासिकुन्तकुन्तीकोदण्डपयण्डसेन्नविगराले। दट्ठुं जस्स भडे नणु वेयालगणावि णासन्ति ॥ ४६ ॥
जम्मि य जत्ताभिमुहे उग्गपयावे भएण विहुराइं। पडिवक्खमण्डलाइं खलहलयं जन्ति सव्वदिसिं ॥ ४७ ॥
तस्स य तिसला भज्जा रम्भा इव [6]पवररूयलायन्ना। कामकरिकुम्भविब्भमपओहरा सरयससिवयणा ॥ ४८ ॥
वियसियकुवलयनयणा रम्भाखम्भसुकुमालसव्वङ्गा। गुरुखमदमविणयज्जवसच्चदयादाणसीलगुणा ॥ ४९ ॥
अह भणइ नेगमेसिं देविन्दो एस एत्थ तित्थयरो। लोगुत्तमो महप्पा उववन्नो माहणकुलम्मि ॥ ५० ॥
खत्तियकुण्डग्गामे सिद्धत्थो नाम खत्तिओ अत्थि। तस्स घरे तं साहर तिसलादेवीएँ कुच्छिसि ॥ ५१ ॥

१ अ—°सन्तगे° । २ अ—दत्त° । ३ व—°वहो । ४ अ—°जुन्नी । ५ अ—तास° । ६ व—परम° ।

तम्मि पुरे सुपसिद्धो णायनरिन्दकुलणहयलमियङ्को। पणिवइयचक्कलो चित्थरन्ननिवलकित्तिपरिकलिओ ॥३९॥
सिरिसिद्धत्थनरिन्दो उद्दण्डपयावनिहयपडिवक्खो । गरुयपरक्कमसामन्तनमिरसिरचुम्बियजुयलो ॥ ३४० ॥
तरणि व्व पयावेणं भीमो व्व परक्कमेण गरुएणं । पणयजणकप्परुक्खो कन्नो विव चायसोडीरो ॥ ४१ ॥
सच्चपइन्नो नीईवियक्खणो परकलत्तविमुहो य । दुट्ठजणनिग्गहपरो सव्वपयापालणेक्करसो ॥ ४२ ॥
दट्ठुं जं गयखन्धे रूवक्खित्ताओं पउरजुवईओ । सुन्नमणाओ दिवसं पि गेहकम्माइँ न कुणन्ति ॥ ४३ ॥
दन्तपहारुप्पेल्लियभूमीभारेण सेसफणनिवहं । जस्सोनामिन्ति दढं चलवन्तो मत्तमायङ्गा ॥ ४४ ॥
निट्ठुरखुरक्खएणं भूमिरओहेण जस्स वियरन्ता । अन्धारयन्ति गयणं दप्पुद्धुरतुरयसङ्घाया ॥ ४५ ॥
चक्कासिकुन्तकुन्तीकोदण्डपयण्डसेन्नविगराले। दट्ठुं जस्स भडे नणु वेयालगणावि णासन्ति ॥ ४६ ॥
जम्मि य जत्ताभिमुहे उग्गपयावे भएण विहुराइं । पडिवक्खमण्डलाइं खलहलयं जन्ति सव्वदिसिं ॥ ४७ ॥
तस्स य तिसला भज्जा रम्भा इव पवररूवलायन्ना । कामकरिकुम्भविब्भमपओहरा सरयससिवयणा ॥ ४८ ॥
वियसियकुवलयनयणा रम्भाखम्भसुकुमालसव्वङ्गा । गुरुखमदमविणयजवसच्चदयादाणसीलगुणा ॥ ४९ ॥
अह भणइ नेगमेसिं देविन्दो एस एत्थ तित्थयरो। लोगुत्तमो महप्पा उववन्नो माहणकुलम्मि ॥ ३५० ॥
खत्तियकुण्डग्गामे सिद्धत्थो नाम खत्तिओ अत्थि। तस्स घरे तं साहर तिसलादेवीएँ कुच्छिंसि ॥ ५१ ॥

१ अ—°सन्तगे° । २ अ—दत्त° । ३ व—°वहो । ४ अ—°जुन्नी । ५ अ—तास° । ६ व—परग° ।

ता तिसिला तित्थयरं चक्कहरं चावि पसविही नियमा। इय भणिय उवज्झाया कयपूया ते गया सगिहं ॥ ६५ ॥
तं सोउं सा तिसिला अइसयहरिसुल्लसन्तरोमञ्चा। तं गब्भं परिपालइ भोजेहिं हियसुहकरेहिं ॥ ६६ ॥
भयवं तिनाणसहिओ जणणीए पीडरक्खणनिमित्तं। संकोडियङ्गमङ्गो अच्छइ अणुकम्पगयचित्तो ॥ ६७ ॥
तं निप्फन्दं नाउं भीयमणा परमसोयमावन्ना। चिन्तइ गलिओ गब्भो मतो व्व हरिओ व्व केणावि ॥ ६८ ॥
तो सा पणट्ठनिद्दा अजम्पिरी चत्तभोयणविलासा। चिट्ठइ नं गयजीवा हियरज्जा नट्ठसव्वस्सा ॥ ६९ ॥
हा पेच्छ अहन्नाए विहिणा चिन्तामणी ममं दाउं। हरिओ विडम्बणट्ठा धिरत्थु ता मज्झ जीवस्स ॥ ७० ॥
इय सोगमक्कडयं जणणिं दट्ठुं जिणेण संचलियं। निरुवहओ मे गब्भो त्ति सावि पुण हरिसमावन्ना ॥ ७१ ॥
भयवं पि अदिट्ठस्सवि अहो इमाए ममोवरिं नेहो। ता जइ जीवन्तीए दिक्खागहणं करेमि अहं ॥ ७२ ॥
ता मोहमोहियमणा मम विरहुप्पन्नसोयसन्तत्ता। अट्टज्झाणोवगया बन्धइ असुहं बहुं कम्मं ॥ ७३ ॥
दुप्पडियाराणि दढं अम्मापियरो हवन्ति लोगम्मि। ता एएसिं मंधिई रक्खेयव्वा मएऽवस्सं ॥ ७४ ॥
इय चिन्तियमभिगिण्हइ अभिग्गहं सत्तमम्मि मासम्मि। नाहं समणो होहं अम्मापियरम्मि जीवन्ते ॥ ७५ ॥
तिसिला गब्भगयम्मी भयवंते निरियजम्भगा देवा। सक्कस्स समाएसा खिवन्ति सिद्धत्थभवणम्मि ॥ ७६ ॥
वच्छमगामियाइं गामारन्नपुरपच्चयगयाइं। विविहाइं निहाणाइं जिणवरपुन्नाणुभावेणं ॥ ७७ ॥

---

१ व–न्नूणं। २ व–उवज्झाया सम्माणिय क०। ३ व– मई। ४ व–०वं अदि०। ५ मकारोऽलाक्षणिकस्ततोऽनुतिरिर्थः।

ता निसिला तित्थयरं चक्कहरं वावि पसविही नियमा। इय भणिय उवज्झाया कयपूया ते गया सगिहं ॥ ६५ ॥
तं सोउं सा तिसिला अइसयहरिसुल्लसन्तरोमञ्चा। तं गब्भं परिपालइ भोजेहिं हियसुहकरेहिं ॥ ६६ ॥
भयवं तिनाणसहिओ जणणीए पीडरक्खणनिमित्तं। संकोडियङ्गमङ्गो अच्छइ अणुकम्पगयचित्तो ॥ ६७ ॥
तं निप्फन्दं नाउं भीयमणा परमसोयमावन्ना। चिन्तइ गलिओ गब्भो मतो व्व हरिओ व्व केणावि ॥ ६८ ॥
तो सा पणट्ठनिद्दा अजम्पिरी चत्तभोयणविलासा। चिट्ठइ नं गयजीवा हियरज्जा नट्ठसव्वस्सा ॥ ६९ ॥
हा पेच्छ अहन्नाए विहिणा चिन्तामणी ममं दाउं। हरिओ विडम्बणट्ठा धिरत्थु ता मज्झ जीवस्स ॥ ७० ॥
इय सोगसकलुसइयं जणणिं दट्ठुं जिणेण संचलियं। निरुवहओ मे गब्भो त्ति सावि पुण हरिसमावन्ना ॥ ७१ ॥
भयवं पि अदिट्ठस्सवि अहो इमाए ममोवरिं नेहो। ता जइ जीवन्तीए दिक्खागहणं करेमि अहं ॥ ७२ ॥
ता मोहमोहियमणा मम विरहुप्पन्नसोयसन्तत्ता। अट्टज्झाणोवगया बन्धइ असुहं बहुं कम्मं ॥ ७३ ॥
दुप्पडियाराणि दढं अम्मापियरो हवन्ति लोगम्मि। ता एएसिं संविहिं रक्खेयव्वा मए ऽवस्सं ॥ ७४ ॥
इय चिन्तियमभिगिण्हइ अभिग्गहं सत्तमम्मि मासम्मि। नाहं समणो होहं अम्मापियरम्मि जीवन्ते ॥ ७५ ॥
निष्पिच्छा गब्भगयम्मी भयवंते निरियजम्भगा देवा। सक्कस्स समाएसा खिवन्ति सिद्धत्थभवणम्मि ॥ ७६ ॥
वच्छछुसामियाइं गामागरनगरपच्चयगयाइं। विविहाइँ निहाणाइं जिणवरपुन्नाणुभावेणं ॥ ७७ ॥

१ ब–त्रूणं। २ ब–उवज्झाया सम्माणिय क०। ३ ब– मइं। ४ ब–०वं अदि०। ५ मकारोऽलाक्षणिकस्ततोऽनुतिरिर्थः।

हरिचन्दणाणुलेवं सव्वालङ्कारमणहरं काउं । रक्खाकम्मं विविहं आसीसाएऽभिनन्दन्ति ॥ ६९० ॥
एवं किच्चं काउं सयणिज्जे ठाविउं जिणं जणणिं । गायन्ति मङ्गलाइं सव्वाओ महुरसद्देणं ॥ ९१ ॥
एत्थन्तरम्मि हरिणो सोहम्मपहुस्स आसणं चलियं । सो नियइ पउत्तोही कुण्डग्गामे जिणं जायं ॥ ९२ ॥
अब्भुट्ठइ संभन्तो घोलिरहारो पलम्बवणमालो । कुण्डलविलिहियगण्डो हरिसाडोवेण चलमउडो ॥ ९३ ॥
सत्तट्ठपए गन्तुं पञ्चङ्गपणामपुव्वयं वामं । भूमिं निहित्तु जाणुं दाहिणमञ्चेवि पञ्जलिओ ॥ ९४ ॥
हरिसुल्लसन्तपुलओ सक्कथयं पढइ एगवयणेण । भणइ य वन्दामि जिणं तत्थगयं नियउ मं भयवं ॥ ९५ ॥
पच्चुट्ठिओ य सीहासणम्मि उवविसिय सुरविबोहट्ठा । ताडावेइ सुघोसं घण्टं हरिणेगमेसिसुरं ॥ ९६ ॥
तीए य ताडियाए तस्सद्देणं च काउमाढत्ता । बत्तीसघण्टलक्खा एगूणा कणकणारावं ॥ ९७ ॥
घण्टासद्दं सोउं मिलिया सव्वे सुरा सदेवीया । सक्कोऽवि हु संचलिओ आरूहिउं पालगविमाणं ॥ ९८ ॥
तस्सट्ठ अग्गमहिसी परिसाओ तिन्नि तह य चउरासी । सामाणियसाहस्सी चउग्गुणा आयरक्खा उ ॥ ९९ ॥
सत्तेव अणीयाइं एमाइदिव्वरिद्धिसंजुत्तो । महया विच्छड्डेणं कुण्डग्गामे य संपत्तो ॥ ७०० ॥
भयवं पयक्खिणेउं वन्दित्ता भत्तिनिब्भरसरीरो । ओसोयणिं च दाउं पडिरूवं तत्थ ठविऊणं ॥ १ ॥
हरिणेगमेसिसमप्पियमह भयवन्तं सकरयले धरिउं । पञ्चविउव्वियरूवो मेरुं संपत्थिओ सक्को ॥ २ ॥

१ ब–सिया° । २ अ–°हिओ । ३ अ–°सातो । ४ ब–°गवे° ।

हारचन्दणाणुलेव सव्वालङ्कारमणहरं काउं। रक्खाकम्मं विविहं आसीसाएऽभिनन्दन्ति ॥ ६९० ॥
एवं किच्चं काउं सयणिज्जे ठाविउं जिणं जणणिं। गायन्ति मङ्गलाइं सव्वाओ महुरसद्देणं ॥ ९१ ॥
एत्थन्तरम्मि हरिणो सोहम्मपहुस्स आसणं चलियं। सो नियइ पउत्तोही कुण्डग्गामे जिणं जायं ॥ ९२ ॥
अब्भुट्ठइ संभन्तो घोलिरहारो पलम्बवणमालो। कुण्डलविलिहियगण्डो हरिसाडोवेण चलमउडो ॥ ९३ ॥
सत्तट्ठपए गन्तुं पञ्चङ्गपणाममुव्वयं वामं। भूमिं निहित्तु जाणुं दाहिणमङ्गेवि पञ्जलिओ ॥ ९४ ॥
हरिसुल्लसन्तपुलओ सक्कथयं पढइ एगवयणेण। भणइ य वन्दामि जिणं तत्थगयं नियउ मं भयवं ॥ ९५ ॥
पच्चुट्ठिओ य सीहासणम्मि उवविसिय सुरविबोहट्ठा। ताडावेइ सुघोसं घण्टं हरिणेगमेसिसुरं ॥ ९६ ॥
तीए य ताडियाए तस्सद्देणं च काउमाहत्ता। बत्तीसघण्टलक्खा एगूणा कणकणारावं ॥ ९७ ॥
घण्टासद्दं सोउं मिलिया सव्वे सुरा सदेवीया। सक्कोऽवि हु संचलिओ आरुहिउं पालगविमाणं ॥ ९८ ॥
तस्सट्ठ अग्गमहिसी परिसाओ तिन्नि तह य चउरासी। सामाणियसाहस्सी चउग्गुणा आयरक्खा उ ॥ ९९ ॥
सत्तेव अणीयाइं एमाइदिव्वरिद्धिसंजुत्तो। महया विच्छड्डेणं कुण्डग्गामे य संपत्तो ॥ ७०० ॥
भयवं पयक्खिणेउं वन्दित्ता भत्तिनिब्भरसरीरो। ओसोयणिं च दाउं पडिरूवं तत्थ ठविऊणं ॥ १ ॥
हरिणगमेसिसमप्पियमह भयवन्तं सकरयले धरिउं। पञ्चविउव्वियरूवो मेरुं संपत्थिओ सक्को ॥ २ ॥

१ ब–°गिया° । २ अ–°हिओ । ३ अ–°नखातो । ४ ब–°गवे° ।

हरियन्दणाणुलेवं सव्वालङ्कारमणहरं काउं । रक्खाकम्मं विविहं आसीसाएऽभिनन्दन्ति ॥ ६९० ॥
एवं किच्चं काउं सयणिज्जे ठाविउं जिणं जणणिं । गायन्ति मङ्गलाइं सव्वाओ महुरसद्देणं ॥ ९१ ॥
एत्थन्तरम्मि हरिणो सोहम्मपहुस्स आसणं चलियं । सो नियइ पउत्तोही कुण्डग्गामे जिणं जायं ॥ ९२ ॥
अब्भुट्ठइ संभन्तो घोलिरहारो पलम्बवणमालो । कुण्डलविलिहियगण्डो हरिसाडोवेण चलमउडो ॥ ९३ ॥
सत्तट्ठपए गन्तुं पञ्चङ्गपणामपुव्वयं वामं । भूमिं निहित्तु जाणुं दाहिणमङ्गेवि पञ्जलिओ ॥ ९४ ॥
हरिसुल्लसन्तपुलओ सक्कथयं पढइ एगवयणेण । भणइ य वन्दामि जिणं तत्थगयं नियउ मं भयवं ॥ ९५ ॥
पच्चुट्ठिओ य सीहासणम्मि उवविसिय सुरविबोहट्ठा । ताडावेइ सुघोसं घण्टं हरिणेगमेसिसुरं ॥ ९६ ॥
तीए य ताडियाए तस्सद्देणं च काउमाढत्ता । बत्तीसघण्टलक्खा एगूणा कणकणारावं ॥ ९७ ॥
घण्टासद्दं सोउं मिलिया सव्वे सुरा सदेवीया । सक्कोऽवि हु संचलिओ आरुहिउं पालगविमाणं ॥ ९८ ॥
तस्सट्ठ अग्गमहिसी परिसाओ तिन्नि तह य चउरासी । सामाणियसाहस्सी चउग्गुणा आयरक्खाउ ॥ ९९ ॥
सत्तेव अणीयाइं एमाईदिव्वरिद्धिसंजुत्तो । महया विच्छड्डेणं कुण्डग्गामे य संपत्तो ॥ ७०० ॥
भयवं पयक्खिणेउं वन्दित्ता भत्तिनिब्भरसरीरो । ओसोयणिं च दाउं पडिरूवं तत्थ ठविऊणं ॥ १ ॥
हरिणगमेसिसमप्पियमह भयवन्तं सकरयले धरिउं । पञ्चविउव्वियरूवो मेरुं संपत्थिओ सक्को ॥ २ ॥

१ व–सिंघा० । २ अ–०हिओ । ३ अ–क्खातो । ४ व–०गवे० ।

हरियन्दणाणुलेवं सव्वालङ्कारमणहरं काउं । रक्खाकम्मं विविहं आसीसाएऽभिनन्दन्ति ॥ ६९० ॥
एवं किच्चं काउं सयणिज्जे ठाविउं जिणं जणणिं । गायन्ति मङ्गलाइं सव्वाओ महुरसद्देणं ॥ ९१ ॥
एत्थन्तरम्मि हरिणो सोहम्मपहुस्स आसणं चलियं । सो नियइ पउत्तीही कुण्डग्गामे जिणं जायं ॥ ९२ ॥
अब्भुट्ठइ संभन्तो घोलिरहारो पलम्बवणमालो । कुण्डलविलिहियगण्डो हरिसाडोवेण चलमउडो ॥ ९३ ॥
सत्तट्ठपए गन्तुं पञ्चङ्गपणामपुव्वयं वामं । भूमिं निहित्तु जाणुं दाहिणमञ्चेवि पञ्जलिओ ॥ ९४ ॥
हरिसुल्लसन्तपुलओ सक्कथयं पढइ एगचयणेण । भणइ य वन्दामि जिणं तत्थगयं नियउ मं भयवं ॥ ९५ ॥
पच्चुट्ठिओ य सीहासणम्मि उववितिय सुरविबोहट्ठा । ताडावेइ सुघोसं वण्टं हरिणेगमेसिसुरं ॥ ९६ ॥
तीए य ताडियाए तस्सद्देणं च काउमाढत्ता । बत्तीसघण्टलक्खा एगूणा कणकणारावं ॥ ९७ ॥
घण्टासद्दं सोउं मिलिया सव्वे सुरा सदेवीया । सक्कोऽवि हु संचलिओ आरुहिउं पालगविमाणं ॥ ९८ ॥
तस्सट्ठ अग्गमहिसी परिसाओ तिन्नि तह य चउरासी । सामाणियसाहस्सी चउग्गुणा आयरक्खा उ ॥ ९९ ॥
सत्तेव अणीयाइं एमाईदिव्वरिद्धिसंजुत्तो । महया विच्छड्डेणं कुण्डग्गामे य संपत्तो ॥ ७०० ॥
भयवं पयक्खिणेउं वन्दित्ता भत्तिनिब्भरसरीरो । ओसोयणिं च दाउं पडिरूवं तत्थ ठविऊणं ॥ १ ॥
हरिणगॅमेसिसमप्पियमह भयवन्तं सकरयले धरिउं । पञ्चविउव्वियरूवो मेरुं संपत्थिओ सक्को ॥ २ ॥

१ व–सिंघा° । २ अ–°हिओ । ३ अ–क्खातो । ४ व–°गवे° ।

जिणघरमज्जणकज्जे उक्खिसा भत्तिनिब्भरमणेहिं । चन्दणचच्चियकलसा अच्चुयइन्दाइअमरेहिं ॥ १५ ॥
तं कलसभरं दट्ठुं सक्को चिन्तेइ संकसावन्नो । लहुयसरीरो भयवं विसहिस्सइ किं व समकालं ॥ १६ ॥
बहुकलससहस्सजलं सुरखित्तं मह इमा गरुयचिन्ता । भयवं पि य तं नाउं ओहीनाणेण सक्कस्स ॥ १७ ॥
चलणग्गेणं चालइ मेरुगिरिं लेट्ठुयं व्व लीलाए । इन्दस्स अलियसङ्काअवणयणत्थं अतुलथामो ॥ १८ ॥
चलमाणेण समन्ता सुरगिरिणा वसुमईवि हलहलिया । टलटलिया धरणिधरा चलन्तगुरुगण्डसेलोहा ॥ १९ ॥
उच्छलिया मयरहरा महल्लकल्लोलहल्लिरजलोहा । संखुहियमच्छमयरा णइप्पवाहा य उत्थल्ला ॥ ७२० ॥
उत्तत्था थलचारी दिसोदिसिं सव्वओ पलायन्ति । तडुवियकन्नजुयला[1] णासन्ति दिसागइन्दावि ॥ २१ ॥
थरथरथरन्ति वाढं देउलपायारतुङ्गधवलहरा । भज्जन्ति कडयडन्ता फलफुल्लभरोणया तरुणो ॥ २२ ॥
भुवणं हल्लोहलियं सुरअसुरतिरिक्खखयरणरकलियं । चिन्तइ किं किं एयं अकण्डविड्डुरमहो जायं ॥ २३ ॥
किं एस पलयकालो किं कोइ महिड्ढिओ सुरो कुविओ । खलियारियस्स रिसिणो किं कोवविर्यंभियं एयं ॥ २४ ॥
आभग्गो फणनिवहो वसुमइभारेण किं फणिन्दस्स । जिन्नत्तणेण भग्गा आइवराहस्स किं दाढा ॥ २५ ॥
इय एवमाइ जाए संखोभे सुरवई वि चिन्तेइ । हा किं सन्तिविहाणे वेयालो उट्ठिओ एसो ॥ २६ ॥
तो किं विड्डुरमेयं ति जाव जोएइ अवहिणा सम्मं । पेच्छइ य ताव जिणचलणकोडिसंचालियं मेरुं ॥ २७ ॥

---

१ ताण्डवितकर्णयुगला इत्यर्थः । २ ब–°कोडिसं° ।

जिणघरमज्जणकज्जे उक्खित्ता भत्तिनिब्भरमणेहिं । चन्दणचच्चियकलसा अच्चुयइन्दाइअमरेहिं ॥ १५ ॥
तं कलसभरं दट्ठुं सक्को चिन्तेइ संकमावन्नो । लहुयसरीरो भयवं विसहिस्सइ किं व समकालं ॥ १६ ॥
बहुकलससहस्सजलं सुरखित्तं मह इमा गरुयचिन्ता । भयवं पि य तं नाउं ओहीनाणेण सक्कस्स ॥ १७ ॥
चलणग्गेणं चालइ मेरुगिरिं लेट्ठुयं व्व लीलाए । इन्दस्स अलियसङ्काअवणयणत्थं अतुलथामो ॥ १८ ॥
चलमाणेण समन्ता सुरगिरिणा वसुमईवि हलहलिया । टलटलिया धरणिधरा चलन्तगुरुगण्डसेलोहा ॥ १९ ॥
उच्छलिया मयरहरा महल्लकल्लोलहल्लिरजलोहा । संखुहियमच्छमयरा णइप्पवाहा य उत्थल्ला ॥ ७२० ॥
उत्तत्था थलचारी दिसोदिसिं सव्वओ पलायन्ति । तंडुविय[1]कन्नजुयला णासन्ति दिसागइन्दावि ॥ २१ ॥
थरथरथरन्ति वाढं देउलपायारतुङ्गधवलहरा । भज्जन्ति कडयडन्ता फलफुल्लभरोणया तरुणो ॥ २२ ॥
भुवणं हल्लोहलियं सुरअसुरतिरिक्खखयरणरकलियं । चिन्तइ किं किं एयं अकण्डविड्डुरमहो जायं ॥ २३ ॥
किं एस पलयकालो किं कोइ महिड्ढिओ सुरो कुविओ । खलियारियस्स रिसिणो किं कोवविंयंभियं एयं ॥ २४ ॥
आभग्गो फणनिवहो वसुमइभारेण किं फणिन्दस्स । जिन्नत्तणेण भग्गा आइवराहस्स किं दाढा ॥ २५ ॥
इय एवमाइ जाए संखोभे सुरवई वि चिन्तेइ । हा किं सन्तिविहाणे वेयालो उट्ठिओ एसो ॥ २६ ॥
तो किं विड्डुरमेयं ति जाव जोएइ अवहिणा सम्मं । पेच्छइ य ताव जिणचलणंग्गकोडि[2]संचालियं मेरुं ॥ २७ ॥

१ ताण्डवितकर्णयुगला इत्यर्थः । २ व–°कोडिसं° ।

एवं कमेण सव्वे करेन्ति जिणमज्जणं सुरवरिन्दा । अन्ते य कुणइ सक्को ईसाणो पञ्चरूवो य ॥ ४१ ॥
धरइ जिणं उच्छङ्गे छत्तं धारेइ ढालए चमरे । एक्को य सूलपाणी चिट्ठइ पुरओ जिणवरस्स ॥ ४२ ॥
चत्तारि धवलवसहे सक्को विउरुव्विऊण चउपासे । अट्ठविसाणेहिंतो निस्सारइ वारिधाराओ ॥ ४३ ॥
गोखीरसन्निभाओ उद्दं ता उप्पइत्तु एगत्थ । मिलिउं निवडन्ति सिरे वीरस्स भवारिमहणस्स ॥ ४४ ॥
काऊण विहिं एयं कप्पो त्ति तओ य अच्चुइन्दो व्व । सव्वं करेइ ण्हाणं रुप्पसुवन्नाइकलसेहिं ॥ ४५ ॥
हरियन्दणाणुलेवणमल्लालङ्कारमण्डणविहीए । मण्डित्तु जिणं वन्दइ गुरुआणन्दो थुइं कुणइ ॥ ४६ ॥
जय जय तिहुयणसामिय ! सिद्धत्थणरिन्दकुलनहमियङ्क ! ॥ जय जय निन्नासियपावपङ्क ! अकलङ्क ! जिणवीर ! ॥४७॥
जय परमरूव ! कारुन्नपुन्न ! लावन्नविजियतियलोक ! ॥ जगदप्पभञ्जणुद्धुरमयरद्धयमाणनिम्महण ! ॥ ४८ ॥
कमलदलदीहलोयण ! पडिपुन्नमयङ्कसरिसमुहसोह ! ॥ सिरिवच्छवच्छलञ्छिय ! जयभूसण ! जयपहु ! नमो ते ॥
जगचिन्तामणि ! जयगुरु ! जगबन्धव ! जगपईव ! जगनाह ! ॥ सयलजगजन्तुरक्खण ! तारसु मं भवसमुद्दाओ ॥
ते वञ्चिया वराया विहलं चिय तेसि माणुसं जम्मं । सयलसुहाण निहाणं णाह ! न दिट्ठो तुमं जेहिं ॥ ५१ ॥
ताव जरजम्ममच्चू ताव चिय रोयसोयसंतावा । होन्ति जियाणं सामिय ! जाव न पत्तो पहु तं सि ॥ ५२ ॥
भवचारयम्मि भीमे देव ! अहं रोददुहसयाइन्ने । वसिओ कालमणन्तं कम्ममहासङ्कलनिबद्धो ॥ ५३ ॥

---

१ व–दोहि सियच° । २ व–उड्ढेणं उ° । ३ व–°मज्जा° । ४–व–°रूव° । ५ व–°यतेलो° ।

एवं कमेण सव्वे करेन्ति जिणमज्जणं सुरवरिन्दा । अन्ते य कुणइ सक्को ईसाणो पञ्चरूवो य ॥ ४१ ॥
धरइ जिणं उच्छङ्गे छत्तं धारेइ ढालए चमरे । एक्को य सूलपाणी चिट्ठइ पुरओ जिणवरस्स ॥ ४२ ॥
चत्तारि धवलवसहे सक्को विउरुव्विऊण चउपासे । अट्ठविसाणेहिंतो निस्सारइ वारिधाराओ ॥ ४३ ॥
गोखीरसन्निभाओ उड्ढं ता उप्पइत्तु एगत्थ । मिलिउं निवडन्ति सिरे वीरस्स भवारिमहणस्स ॥ ४४ ॥
काऊण विहिं एयं कप्पो त्ति तओ य अच्चुइन्दो व्व । सव्वं करेइ ण्हाणं रुप्पसुवण्णाइकलसेहिं ॥ ४५ ॥
हरियन्दणाणुलेवणमल्लालङ्कारमण्डणविहीए । मण्डित्तु जिणं वन्दइ गुरुआणन्दो थुइं कुणइ ॥ ४६ ॥
जय जय तिहुयणसामिय ! सिद्धत्थणरिन्दकुलनहमियङ्क ! । जय जय निन्नासियपावपङ्क ! अकलङ्क ! जिणवीर ! ॥४७॥
जय परमरूव ! कारुन्नपुन्न ! लावन्नविजियतियलोक ! । जगदप्पभञ्जणुद्धुरमयरद्धयमाणनिम्महण ! ॥ ४८ ॥
कमलदलदीहलोयण ! पडिपुन्नमयङ्कसरिसमुहसोह ! । सिरिवच्छवच्छलञ्छिय ! जयभूसण ! जयपहु ! नमो ते ॥
जगचिन्तामणि ! जयगुरु ! जगबन्धव ! जगपईव ! जगनाह ! । सयलजगजन्तुरक्खण ! तारसु मं भवसमुद्दाओ ॥
ते वञ्चिया वराया विहलं चिय तेसि माणुसं जम्मं । सयलसुहाण निहाणं णाह ! न दिट्ठो तुमं जेहिं ॥ ७८१ ॥
ताव जरजम्ममच्चू ताव चिय रोयसोयसंतावा । होन्ति जियाणं सामिय ! जाव न पत्तो पहु तं सि ॥ ५२ ॥
भवचारयम्मि भीमे देव ! अहं रोद्ददुहसयाइन्ने । वसिओ कालमणन्तं कम्ममहासङ्कलनिबद्धो ॥ ५३ ॥

१ व–दोहि सियच° । २ व–उड्ढं उ° । ३ व–°मज्जा° । ४–व–°रूव° । ५ व–°यतेलो° ।

ऊसियधयप्पडायं वरतोरणहट्टसोहरेहिल्लं । कुण्डग्गामं नयरं सुरलोयसमं तहिं जायं ॥ ६६ ॥

किं च—

तुट्ठाओ देवीओ देवा आणन्दिया सपरिसागा । भयवम्मि वद्धमाणे तेलोगसुहावहे जाए ॥ ६७ ॥
सिद्धत्थो य नरिन्दो तिसिलादेवी य रायलोओ य । सव्वो तया पुरजणो हरिसेण न माइ अङ्गेसु ॥ ६८ ॥
वित्ते वद्धावणए कए य सव्वम्मि जायकम्मम्मि । नामं बारसमदिणे गुणनिप्फन्नं जिणस्स कयं ॥ ६९ ॥
गब्भप्पभिई वड्ढइ अम्हगिहं कणयरयणमाईहिं । तम्हा उ वद्धमाणो त्ति नामओ होउ अम्हसुओ ॥ ७७० ॥
बालत्तणेऽवि सूरो पयईए गुरुपरक्कमो भयवं । वीरो त्ति कयं नामं सक्केण य तुट्ठचित्तेणं ॥ ७१ ॥
अह वड्ढइ सो भयवं दियलोयचुओ अणोवमसिरीओ । दासीदासपरिवुडो परिकिन्नो पीढमद्देहिं ॥ ७२ ॥
असियसिरओ सुनयणो बिम्बोट्ठो धवलदन्तपन्तीओ । वरपउमगब्भगोरो फुल्लुप्पलगन्धनीसासो ॥ ७३ ॥
जाईसरो उ भयवं अप्परिवडिएहिँ तिहिँ उ नाणेहिं[1] । कन्तीए बुद्धीए अब्भहिओ तेहिँ मणुएहिं ॥ ७४ ॥
अह ऊणअट्ठवासो भयवं कीलइ कुमारएहिँ समं । आमलियाखेल्लेणं[2] लोयपसिद्धेण पुरवाहिं ॥ ७५ ॥
तत्थ य खेड्डे रुक्खं आरुहियव्वं तु खेलयनरेहिं[3] । एत्थन्तरे य सक्को सोहम्मसहाए उवविट्ठो ॥ ७६ ॥
सन्तगुणकित्तणयं करेइ वीरस्स अमरमज्झम्मि । वीरत्तगुणवियारे[4] परगुणगहणम्मि तल्लिच्छो ॥ ७७ ॥

१ व–नाणाहिं । २ अ–°खेड्डेणं । ३ अ–लणं° । ४ व–धीर° ।

ऊसियधयप्पडायं वरतोरणहट्टसोहरेहिल्लं । कुण्डग्गामं नयरं सुरलोयसमं तहिं जायं ॥ ६६ ॥

किं च—

तुट्ठाओ देवीओ देवा आणन्दिया सपरिसागा । भयवम्मि वद्धमाणे तेलोगसुहावहे जाए ॥ ६७ ॥
सिद्धत्थो य नरिन्दो तिसिलादेवी य रायलोओ य । सव्वो तया पुरजणो हरिसेण न माइ अङ्गेसु ॥ ६८ ॥
वित्ते वद्धावणए कए य सव्वम्मि जायकम्मम्मि । नामं बारसमदिणे गुणनिप्फन्नं जिणस्स कयं ॥ ६९ ॥
गब्भप्पभिई वड्ढइ अम्हगिहं कणयरयणमाईहिं । तम्हा उ वद्धमाणो त्ति नामओ होउ अम्हसुओ ॥ ७७० ॥
बालत्तणेऽवि सूरो पयईए गुरुपरक्कमो भयवं । वीरो त्ति कयं नामं सक्केण य तुट्ठचित्तेणं ॥ ७१ ॥
अह वड्ढइ सो भयवं दियलोयचुओ अणोवमसिरीओ । दासीदासपरिवुडो परिकिन्नो पीढमद्देहिं ॥ ७२ ॥
असियसिरओ सुनयणो बिम्बोट्ठो धवलदन्तपन्तीओ । वरपउमगब्भगोरो फुल्लुप्पलगन्धनीसासो ॥ ७३ ॥
जाईसरो उ भयवं अप्परिवडिएहिँ तिहिँ उ नाणेहिं[1] । कन्तीए बुद्धीए अब्भहिओ तेहिँ मणुएहिं ॥ ७४ ॥
अह ऊणअट्ठवासो भयवं कीलइ कुमारएहिँ समं । आमलियाखेल्लेणं[2] लोयपसिद्धेण पुरबाहिं ॥ ७५ ॥
तत्थ य खेड्डे रुक्खं आरुहियव्वं तु खेलयनरेहिं[3] । एत्थन्तरे य सक्को सोहम्मसहाए उवविट्ठो ॥ ७६ ॥
सन्तगुणकित्तणयं करेइ वीरस्स अमरमज्झम्मि । वीरत्तगुणवियारे[4] परगुणगहणम्मि तल्लिच्छो ॥ ७७ ॥

१ व–नाणाहिं । २ अ–°खेड्डेणं । ३ अ–लणं° । ४ व–धीर° ।

मुज्जो मुज्जो खामिय पणमिय वीरं गओ स सोहम्मं । भयवं पि गिहे चिट्ठइ विविहकीलाविणोएणं ॥ ३९१ ॥
मोहेणम्मापियरो जाणित्ता अहियअट्ठवासं तु । पढणं निमित्तदेंतं कयकोउयमङ्गलं वीरं ॥ ३९२ ॥
सव्वालंकारधरं सोहणदिवसे कलाण गहणत्थं । कणयमयासणरम्मे उवज्झायस्स उवणिन्ति ॥ ३९३ ॥
एत्थन्तरम्मि सक्को आसणकम्पेण संपउत्तोही । चिन्तइ अहो! महन्तो मोहो पिउमायरस्स ॥ ३९४ ॥
तिहिं नाणेहिं समग्गो तित्थयरो सव्वसत्थतत्तन्नू । जं उवणिज्जइ पाढगणरस्स अप्पविन्नाणस्स ॥ ३९५ ॥
विज्जागहणनिमित्तं इय चिन्तिय आगओ तहिं तुरियं । उवज्झायस्स निमित्तं रइए सीहासणे पवरे ॥ ३९६ ॥
तस्सेव य पच्चक्खं वीरकुमारं निवेसइ पहट्ठो । वन्दित्तु सद्दलक्खणमह पुच्छइ मउलकरकमलो ॥ ३९७ ॥
भयवं पि वागरेई जहट्ठियमसेसियं तयं तुट्ठो । उवज्झाओऽवि पमुइओ निसुणइ परमेण विणएणं ॥ ३९८ ॥
पेच्छ अहो! अच्छरियं बालोऽवि हु पढणगुणणरहिओऽवि । सव्वन्नू विव साहइ जहट्ठियं सद्दसत्थत्थं ॥ ३९९ ॥
तुट्ठा अम्मापियरो एवं नाउं वियक्खणं वीरं । सक्कोऽवि य सट्ठाणं वन्दिय वीरं गओ खिप्पं ॥ ४०० ॥
वीरजिणस्स सगासे अवधारिय सद्दलक्खणलवेणं । उवज्झाएणवि रइयं वागरणं किर अइन्दं ति ॥ १ ॥
उम्मुक्कबालभावं कमेण नवजोव्वणं समणुपत्तं । भोगसमत्थं नाउं अम्मापियरो महावीरं ॥ २ ॥
तिहिरिक्खम्मि पसत्थे महन्तसामन्तकुलपसूयाए । कारिन्ति पाणिगहणं जसोयवररायकन्नाए ॥ ३ ॥

---

१ ब—°वणेन्ति । २ ब—उवज्झा° । ३ ब—उवज्झा° ।

भुज्जो भुज्जो खामिय पणमिय वीरं गओ स सोहम्मं । भयवं पि गिहे चिट्ठइ निमित्तमीलाविमोहाणं ॥ ७९१ ॥
मोहेणम्मापियरो जाणित्ता अहियअट्ठवासं तु । पढणं निन्तिरादेवं कयकोउयमङ्गलं वीरं ॥ ७९२ ॥
सव्वालंकारधरं सोहणदिवसे कलाण गहणत्थं । कयपूयासक्कारस्स उवज्झायस्स उवणिन्ति ॥ ७९३ ॥
एत्थन्तरम्मि सक्को आसणकम्पेण संपउत्तोही । चिन्तइ अहो! महन्तो मोहो पिउजणरागस्स ॥ ७९४ ॥
तिहिं नाणेहिं समग्गो तित्थयरो सव्वसत्थतत्तन्नू । जं उवणिज्जइ पाढगनरस्स अण्णाणनिहयस्स ॥ ७९५ ॥
विज्जागहणनिमित्तं इय चिन्तिय आगओ तहिं तुरियं । उवज्झायस्स निमित्तं रइए सीहासणे पवरे ॥ ७९६ ॥
तस्सेव य पच्चक्खं वीरकुमारं निवेसइ पहट्ठो । वन्दित्तु सद्दलक्खणमइ पुच्छइ मउलियकरकमलो ॥ ७९७ ॥
भयवं पि वागरेई जहट्ठियमसक्कियं तयं पुट्ठो । उवज्झाओऽवि पमुइओ निसुणइ परमेण विणएणं ॥ ७९८ ॥
पेच्छ अहो! अच्छरियं बालोऽवि हु पढणगुणरहिओऽवि । सव्वन्नू विव साहइ जहट्ठियं सद्दसत्थत्थं ॥ ७९९ ॥
तुट्ठा अम्मापियरो एवं नाउं वियक्खणं वीरं । सक्कोऽवि य सट्ठाणं वन्दिय वीरं गओ खिप्पं ॥ ८०० ॥
वीरजिणस्स सगासे अवधारिय सद्दलक्खणलवेणं । उवज्झाएणवि रइयं वागरणं किर अइन्दं ति ॥ १ ॥
उम्मुक्कबालभावं कमेण नवजोव्वणं समणुपत्तं । भोगसमत्थं नाउं अम्मापियरो महावीरं ॥ २ ॥
तिहिरिक्खम्मि पसत्थे महन्तसामन्तकुलपसूयाए । कारिन्ति पाणिगहणं जसोयवररायकन्नाए ॥ ३ ॥

१ ब-°वणेन्ति । २ ब-उवज्झा° । ३ ब-उवज्झा° ।

एवं चोवरूवेण भणियं वीरेण—

एवं होउ नरीसर! किन्तु महेट्ठा ण कोइ आरम्भो । कायव्वोऽहं फग्गुणमासगयाणेण निद्दिट्ठं ॥ १५ ॥
एवं ति य पडिवन्ने चिट्ठइ सुहझाणभावणो वीरो । विसयसुहनिप्पिवासो दयावरो सव्वजीवेसु ॥ १६ ॥
संवच्छरेण होही अभिनिक्खमणं तु मुणिय जिणचन्दो । आढत्तो दाउं जे संवच्छरियं महादाणं ॥ १७ ॥
एगा हिरन्नकोडी अट्ठेव अणूणगा सयसहस्सा । सूरोदयाउ दिज्जइ जाव य मज्झण्हसमओ त्ति ॥ १८ ॥
वरह वरं वरह वरं इय घोसिज्जइ महन्तसद्देण । पुरतियचउक्कचच्चररच्छारायपहाईसु ॥ १९ ॥
जो जं वरेइ तं तस्स दिज्जए हेमवत्थमाईयं । वियरन्ति तत्थ नियमा सक्काएसेण सव्वं पि ॥ ८२० ॥
तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीइं च होन्ति कोडीओ । असिइं च सयसहस्सा एयं संवच्छरे दिन्नं ॥ २१ ॥

एत्थन्तरम्मि य—

सारस्सय माइच्चा वण्ही वरुणा य गद्दतोया य । तुसिया अव्वाबाहा अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य ॥ २२ ॥
एए समयं नाउं निययं लोगन्तिया सुरा पत्ता । पभणन्ति विणयपणया वन्दित्ता महुरवग्गूहिं ॥ २३ ॥
हत्थालम्बोऽसि तुमं सामिय! निवडन्तयाण भवकूवे । सव्वजगज्जीवहियं ता पहु! तित्थं पवत्तेहि ॥ २४ ॥
पुट्ठो य पुणो माया जिणेण वीरेण विगयमोहेणं । तुह सन्तिओ हुं अवही पुन्नो गिण्हामि दिक्खमहं ॥ २५ ॥

१ व–णरेस° । २ व–ममट्ठा । ३ व–°मउ । ४ व–°सियं । ५ अ–य ।

एवं चोवरुद्धेण भणियं वीरेण—

एवं होउ नरीसर! किन्तु महेड्ढा ण कोइ आरम्भो । कायव्वोऽहं फग्गुणमोयगणणेण निक्खिस्सं ॥ १५ ॥
एवं ति य पडिवन्ने चिट्ठइ सुहझाणभावणो वीरो । विसयसुहनिष्पिवासो दयावरो सव्वजीवेसु ॥ १६ ॥
संवच्छरेण होही अभिनिक्खमणं तु मुणिय जिणचन्दो । आढत्तो दाउं जे संवच्छरियं महादाणं ॥ १७ ॥
एगा हिरन्नकोडी अट्ठेव अणूणगा सयसहस्सा । सूरोदयाउ दिज्जइ जाव य मज्झण्हसमंओ त्ति ॥ १८ ॥
वरह वरं वरह वरं इय घोसिज्जइ महन्तसद्देण । पुरतियचउक्कचच्चररच्छारायपहाईसु ॥ १९ ॥
जो जं वरेइ तं तस्स दिज्जए हेमवत्थमाईयं । वियरन्ति तत्थ नियमा सक्काएसेण सव्वं पि ॥ ८२० ॥
तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीइं च होन्ति कोडीओ । असिइं च सयसहस्सा एयं संवच्छरे दिन्नं ॥ २१ ॥

एत्थन्तरम्मि य—

सारस्सय माइच्चा वण्ही वरुणा य गद्दतोया य । तुसिया अव्वाबाहा अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य ॥ २२ ॥
एए समयं नाउं निययं लोगन्तिया सुरा पत्ता । पभणन्ति विणयपणया वन्दित्ता महुरवग्गूहिं ॥ २३ ॥
हत्थालम्बोऽसि तुमं सामिय! निवडन्तयाण भवकूवे । सव्वजगज्जीवहियं ता पहु! तित्थं पवत्तेहि ॥ २४ ॥
पुट्ठो य पुणो भाया जिणेण वीरेण विगयमोहेणं । तुह सन्तिओ हुं अवही पुन्नो गिण्हामि दिक्खमहं ॥ २५ ॥

१ व–णरेस° । २ व–ममड्ढा । ३ व–°मउ । ४ व–°सियं । ५ अ–य ।

एवं चोवक्केण भणियं वीरेण—

एवं होउ नरीसर! किन्तु महेहा ण कोइ आरम्भो । कायव्वोऽहं फासुगभोयणपाणेण विहिसयं ॥ १५ ॥
एवं ति य पडिवन्ने चिट्ठइ सुहझाणभावणो वीरो । विसयसुहनिप्पिवासो दयावरो सव्वजीवेसु ॥ १६ ॥
संवच्छरेण होही अभिनिक्खमणं तु मुणिय जिणचन्दो । आढत्तो दाउं जे संवच्छरियं महादाणं ॥ १७ ॥
एगा हिरण्णकोडी अट्ठेव अणूणगा सयसहस्सा । सूरोदयाउ दिज्जइ जाव य मज्झण्हसमओ त्ति ॥ १८ ॥
वरह वरं वरह वरं इय घोसिज्जइ महन्तसद्देण । पुरतियचउक्कचच्चररच्छारायप्पहाईसु ॥ १९ ॥
जो जं वरेइ तं तस्स दिज्जए हेमवत्थमाईयं । वियरन्ति तत्थ नियमा महापसेण सव्वं पि ॥ ८२० ॥
तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीइं च होन्ति कोडीओ । असिइं च सयसहस्सा एवं संवच्छरे दिन्नं ॥ २१ ॥

एत्थन्तरम्मि य—

सारस्सय माइच्चा वण्ही वरुणा य गद्दतोया य । तुसिया अव्वाबाहा अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य ॥ २२ ॥
एए समयं नाउं निययं लोगन्तिया सुरा पत्ता । पभणन्ति विणयपणया वन्दित्ता महुरवग्गूहिं ॥ २३ ॥
हत्थालम्बोऽसि तुमं सामिय! निवडन्तयाण भवकूवे । सव्वजगजीवहियं ना पहु! तित्थं पवत्तेहि ॥ २४ ॥
पुट्ठो य पुणो भाया जिणेण वीरेण विगयमोहेणं । तुह सन्तिओ हुं अवही पुत्तो गिण्हामि दिक्खमहं ॥ २५ ॥

१ व–णरेस° । २ व–समद्दा । ३ व–°गउ । ४ व–°सियं । ५ अ–य ।

एवं लोयन्तेण भणियं वीरेण—

एवं होउ नरीसर! किन्तु मएट्ठा ण कोइ आरम्भो । कायव्वोऽहं फासुयभोयणपाणेण निच्चियं ॥ १५ ॥
एवं ति य पडिवन्ने चिट्ठइ सुहझाणभावणो वीरो । विसयसुहनिप्पिवासो दयावरो सव्वजीवेसु ॥ १६ ॥
संवच्छरेण होही अभिनिक्खमणं तु मुणिय जिणचन्दो । आढत्तो दाउं जे संवच्छरियं महादाणं ॥ १७ ॥
एगा हिरण्णकोडी अट्ठेव अणूणगा सयसहस्सा । सूरोदयाउ दिज्जइ जाव य मज्झण्हसमओ त्ति ॥ १८ ॥
वरह वरं वरह वरं इय घोसिज्जइ महन्तसद्देण । पुरतियचउक्कचच्चररच्छारायप्पहाईसु ॥ १९ ॥
जो जं वरेइ तं तस्स दिज्जए हेमवत्थमाईयं । वियरन्ति तत्थ नियमा सक्काएसेण सव्वं पि ॥ ८२० ॥
तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीइं च होन्ति कोडीओ । असिइं च सयसहस्सा एयं संवच्छरे दिन्नं ॥ २१ ॥

एत्थन्तरम्मि य—

सारस्सय माइच्चा वण्ही वरुणा य गद्दतोया य । तुसिया अव्वाबाहा अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य ॥ २२ ॥
एए समयं नाउं नियय लोगन्तिया सुरा पत्ता । पभणन्ति विणयपणया वन्दित्ता मउडयग्गेहिं ॥ २३ ॥
हत्थालम्बोऽसि तुमं सामिय! निवडन्तयाण भवकूवे । सव्वजगजीवहियं ता पहु! तित्थं पवत्तेहि ॥ २४ ॥
पुट्ठो य पुणो भाया जिणेण वीरेण विगयमोहेणं । तुह सन्तिओ हं अवही पुत्तो गिण्हामि दिक्खमहं ॥ २५ ॥

१ व–णरेस॰ । २ व–ममट्ठा । ३ व–॰गउ । ४ व–॰सियं । ५ अ–य ।

किं किं न कयं को को न पत्थिओ कत्थ कत्थ न य भमिओ। कुम्भरउंयरस्स कए तं पि कयं जं न कायव्वं ॥ ३१ ॥
दिन्नं च तए दाणं सव्वस्स जहिच्छियं चिरं कालं। नासि तया एत्थाहं ता सामि! करेवि कारुन्नं ॥ ३२ ॥
देसु मह किंचि दाणं सव्वस्स जगस्स तं सि कारुणिओ। इय विन्नत्तो भयवं करुणेकरसोऽणुकम्पाए ॥ ३३ ॥
वियरइ सुरदूसद्धं अन्नं मह नत्थि किं पि इय भणिउं। सोऽवि गओ पणमित्ता महापसाओ त्ति तं गहिउं ॥३४॥
तुन्नागस्सुवणीयं दसियाकज्जम्मि तेण सो भणिओ। भमसु जिणमग्गओ तं सन्धाउ पडिस्सइ नमद्धं ॥ ३५ ॥
न य घेच्छी सो भयवं निस्संगो तो तुमं तमाणेज्ज। दोऽवि अहं तुज्झेउं अद्धे सगलं करिस्सामि ॥ ३६ ॥
दीणारसयसहस्सं लहिही तं विक्कयम्मि तो तुज्झं। मज्झं च अद्धमद्धं होही भणिओ इय गओ सो ॥ ३७ ॥
भयवं पि महावीरो तीसं वासाइँ वसिय गिहवासे। पडिवज्जिऊण दिक्खं विहरन्तो तम्मि चेव दिणे ॥ ३८॥
संज्झाए संपत्तो कुमारगामम्मि तस्स बाहिम्मि। पडिमाएँ ठिओ भयवं धम्मज्झाणं झियायन्तो ॥ ३९ ॥
गोवो य तत्थ एगो दिवसं सव्वं हलम्मि वाहेउं। निययबइल्ले घेत्तुं संपत्तो वीरपासम्मि ॥ ४७० ॥
तस्सासन्ने मोत्तुं गामस्सब्भन्तरं पविट्ठो सो। गोदोहाइनिमित्तं तेऽवि चरन्ता गया रन्नं ॥ ७१ ॥
गोवो तत्थाआओ न वइल्ले तत्थ पेच्छइ तओ य। सामी पुच्छइ वसहे कत्थ गया ते इसी कहसु ॥ ७२ ॥
सामी मोणेणच्छइ न सुणइ एसो त्ति सव्वराइं पि। सो मग्गिउं पवत्तो न य लद्धा तो विसन्नमणो ॥ ७३ ॥

१ व–मगियं। २ व–°पेट्टस्स। ३–व–जं ग°। ४ अ–पेच्छी। ५ व–धीगं। ६ व–पयचो।

किं किं न कयं को को न पत्थिओ कत्थ कत्थ न य भमिओ । कुम्भरउयरस्स कए तं पि कयं जं न कायव्वं ॥ ६१ ॥
दिन्नं न तए दाणं सव्वस्स जहिच्छियं चिरं कालं । नासि तया एत्थाहं ता सामि ! करेवि कारुन्नं ॥ ६२ ॥
देसु मह किंचि दाणं सव्वस्स जगस्स तं सि कारुणिओ । इय विन्नत्तो भयवं करुणेक्करसोऽणुकम्पाए ॥ ६३ ॥
वियरइ सुरदूसद्धं अन्नं मह नत्थि किं पि इय भणिउं । सोऽवि गओ पणमित्ता महापसाओ त्ति तं गहिउं ॥ ६४ ॥
तुन्नागस्सुवणीयं दसियाकज्जम्मि तेण सो भणिओ । भमसु जिणमग्गओ तं खन्धाउ पडिस्सइ नमद्धं ॥ ६५ ॥
न य घेच्छी सो भयवं निस्संगो तो तुमं तमाणेज्ज । दोऽवि अहं तुन्नेउं अद्धे सगलं करिस्सामि ॥ ६६ ॥
दीणारसयसहस्सं लहिही तं विक्कयम्मि तो तुज्झं । मज्झं च अद्धमद्धं होही भणिओ इय गओ सो ॥ ६७ ॥
भयवं पि महावीरो तीसं वासाइँ वसिय गिहवासे । पडिवज्जिऊण दिक्खं विहरन्तो तम्मि चेव दिणे ॥ ६८ ॥
संज्झाए संपत्तो कुमारगामम्मि तस्स बाहिम्मि । पडिमाएँ ठिओ भयवं धम्मज्झाणं झियायन्तो ॥ ६९ ॥
गोवो य तत्थ एगो दिवसं सव्वं हलम्मि वाहेउं । नियवइल्ले घेत्तुं संपत्तो वीरपासम्मि ॥ ८७० ॥
तस्सासन्ने मोत्तुं गामस्सब्भन्तरं पविट्ठो सो । गोदोहाइनिमित्तं तेऽवि चरन्ता गया रन्नं ॥ ७१ ॥
गोवो तत्थागयाओ न वइल्ले तत्थ पेच्छइ तओ य । सामी पुच्छइ वसहे कत्थ गया ते इमी कहसु ॥ ७२ ॥
सामी मोणेणच्छइ न सुणइ एसो त्ति सव्वराइं पि । सो मग्गिउं पयत्तो न य लद्धा तो विसन्नमणो ॥ ७३ ॥

१ ब–भमियं । २ ब–°पेट्टस्स । ३–ब–जं म° । ४ अ–पेच्छी । ५ ब–धीमं । ६ ब–पयचो ।

घयमहुसंजुत्तेणं परमन्नेण पडिलाभिओ तेणं । हरिसुद्धुरेण पञ्च य पाउब्भूयाणि दिव्वाणि ॥ ८६ ॥
गन्धजलकुसुमवुट्ठी हिरन्नवुट्ठी पभूयकोडीओ । चेलुक्खेवो सुरदुन्दुही य घुट्ठं अहो ! दाणं ॥ ८७ ॥
बहुलेण तेण तइया दाणेणं गाहगाढसुद्धेणं । देवाउयं निबद्धं कओ परित्तो य संसारो ॥ ८८ ॥
सामी तं पारेउं विहरइ गामनयराउलं पुहइं । पञ्चसमिओ तिगुत्तो जिइन्दिओ जियकसाओ य ॥ ८९ ॥
अममो विसुद्धलेसो उवसग्गपरीसहाण य अभीओ । वाउ व्व अपडिबद्धो निक्कम्पो मन्दरगिरि व्व[1] ॥ ९० ॥
सीहो व्व भयविमुक्को सोडीरो कुञ्जरो व्व मयमुक्को । चन्दो व्व सोमसुत्ती तवतेएणं दिणयरो व्व ॥ ९१ ॥
गयणमिव निरुवलेवो संखो व्व निरञ्जणोऽविगारेहिं । धरणिं पिव सव्वसहो महासमुद्दो व्व गम्भीरो ॥ ९२ ॥
लाभम्मि अलाभम्मि य जीवियमरणे सुहे य दुक्खे य । सव्वत्थवि समभावो समो य माणावमाणेसु ॥ ९३ ॥
दुक्करतवचरणरओ खन्तिखमो उग्गबम्भचेरो य । अप्पपरतुल्लचित्तो मोणव्वय पाणिभोई य ॥ ९४ ॥
दूइज्जन्त[2]गतावसगामम्मि गओ य विहरमाणो उ । तत्थच्छइ पीमित्तो[3] जयपहुणो तावसाहिवई ॥ ९५ ॥
दट्ठूण जिणं सो साइयत्थ[4]मब्भुट्ठिओ गरुयनेहं । कइवि दिणे तत्थच्चिय वसन्तो तेणिमं भणिओ ॥ ९६ ॥
आगच्छेज्जह एत्थं वासावासत्थमम्हमुवरोहा । सामी वि विहरिऊणं वासासमए समायाओ ॥ ९७ ॥
तग्गामे कुलवइणा समप्पिए तणगिहम्मि तत्थठिओ । चारिमपावन्ताइं तणाइं उडयाण कहन्ति ॥ ९८ ॥

१ व-व । २ व-दूई° । ३ व-पिइमि° पितृमित्रम् । ४ स्वागतार्थमित्यर्थः ।

घयमहुसंजुत्तेणं परमन्नेण पडिलाभिओ तेणं । हरिसुद्धुरेण पञ्च य पाउब्भूयाणि दिव्वाणि ॥ ८६ ॥
गन्धजलकुसुमवुट्ठी हिरन्नवुट्ठी पभूयकोडीओ । चेलुक्खेवो सुरदुन्दुही य घुट्ठं अहो ! दाणं ॥ ८७ ॥
बहुलेण तेण तइया दाणेणं गाहगाढसुद्धेणं । देवाउयं निबद्धं कओ परित्तो य संसारो ॥ ८८ ॥
सामी तं पारेउं विहरइ गामनयराउलं पुहइं । पञ्चसमिओ तिगुत्तो जिइन्दिओ जियकसाओ य ॥ ८९ ॥
अममो विसुद्धलेसो उवसग्गपरीसहाण य अभीओ । वाउ व्व अपडिबद्धो निक्कम्पो मन्दरगिरि व्व ॥ ९० ॥
सीहो व्व भयविमुक्को सोडीरो कुञ्जरो व्व मयमुक्को । चन्दो व्व सोममुत्ती तवतेएणं दिणयरो व्व ॥ ९१ ॥
गयणमिव निरुवलेवो संखो व्व निरञ्जणोऽविगारेहिं । धरणिं पिव सव्वसहो महासमुद्दो व्व गम्भीरो ॥ ९२ ॥
लाभम्मि अलाभम्मि य जीवियमरणे सुहे य दुक्खे य । सव्वत्थवि समभावो समो य माणावमाणेसु ॥ ९३ ॥
दुक्करतवचरणरओ खन्तिखमो उग्गबम्भचेरो य । अप्पपरतुल्लचित्तो मोणव्वय पाणिभोई य ॥ ९४ ॥
दूइज्जन्तगतावसगामम्मि गओ य विहरमाणो उ । तत्थच्छइ पीमित्तो जयपहुणो तावसाहिवई ॥ ९५ ॥
दट्ठूण जिणं सो साइयत्थमब्भुट्ठिओ गरुयनेहं । कइवि दिणे तत्थच्छिय वचन्तो तेणिमं भणिओ ॥ ९६ ॥
आगच्छेज्जह एत्थं वासावासत्थमम्हमुवरोहा । सामी वि विहरिऊणं वासासमए समायाओ ॥ ९७ ॥
तग्गामे कुलवइणा समप्पिए तणगिहम्मि तत्थठिओ । चारिमपावन्ताइं तणाइं उडयाण कहन्ति ॥ ९८ ॥

---

१ व-व । २ व-दूई° । ३ व-पिइमि° पितृमित्रम् । ४ स्वागतार्थमित्यर्थः ।

जाओ य सूलपाणी रुद्दो उवरिं च तस्स गामस्स । मारिं विउव्विऊणं निवाइओ बहुजणो तेणं ॥ ९ ॥
लोगेणं विन्नत्तो तव्वयणेणं च देउलं काउं । तप्पडिमा कारविया जत्तं पूयं च कारेन्ति ॥ ९१० ॥
तम्मारियजणअट्ठीनियरो दीसइ पए पए तत्थ । तो सो अट्ठियगामो त्ति लोयमज्झम्मि विक्खाओ ॥ ११ ॥
तस्सेव बोहणत्थं भयवं पडिमाए संठिओ रत्तिं । तस्सायर्यणे सो चिय दट्ठुं रुद्दो जिणस्सुवरिं ॥ १२ ॥
उवसग्गिउमाढत्तो संज्झाए कुणइ भूमिभेयकरं । अट्टट्टहासस‌द्दं मणुयतिरिक्खाण तासणयं ॥ १३ ॥
तत्तो य हत्थिरूवं पिसायरूवं च नागरूवं च । काउं उवसग्गेई खुहइ मणागं पि नो भयवं ॥ १४ ॥
सिरकन्ननासनहअच्छिदन्तपट्ठीसु वेयणं कुणइ । एक्केक्का जा जीवियहरणे अन्नस्स सुसमत्था ॥ १५ ॥
जाहे य सव्वरयणिं भयवं उवसग्गिओऽवि नो खुहिओ । तो उवसन्तो खामइ संथुणइ य गरुयसद्दं सो ॥१६॥
अट्ठङ्गनिमित्तविऊ पासावच्चिज्जओ तहिं गामे । चिट्ठइ आगमकुसलो उप्पलओ सिद्धपुत्तो त्ति ॥ १७ ॥
सो देवचयकहियं सामिसरूवं सुणेइ उव्विग्गो । मन्ने वीरजिणिन्दो छउमत्थो एत्थ आयाओ ॥ १८ ॥
सुम्मइ य किलिंकिलरवो जक्खाययणम्मि ता न नज्जेज्जा । किं पि अवत्थं जक्खो सो दुट्ठो कुणइ सामिस्स ॥१९॥
समइक्कन्ता रयणी इय चिन्ताए अलद्धनिद्दस्स । तस्स पहाए य गओ जक्खाययणे जिणं दट्ठुं ॥ ९२० ॥
भयवं पि सव्वरयणिं सुरेण संताविओ पहायम्मि । उवसन्तसव्ववियणो मुहुत्तमेत्तं गओ निद्दं ॥ २१ ॥

---

१ व–वित्रविओ । २ अ–°यणं । ३ व–ताहे सव्वं रयणिं । ४ व–चलइ । ५ व–ता । ६ व–सुणेवि । ७ व–किलिकिलि° ।

जाओ य सूलपाणी रुद्दो उवरिं च तस्स गामस्स । मारिं विउव्विऊणं निवाइओ बहुजणो तेणं ॥ ९ ॥
लोगेणं विन्नत्तो[1] तव्वयणेणं च देउलं काउं । तप्पडिमा कारविया जत्तं पूयं च कारेन्ति ॥ १० ॥
तम्मारियजणअट्ठीनियरो दीसइ पए पए तत्थ । तो सो अट्ठियगामो त्ति लोयमज्झम्मि विक्खाओ ॥ ११ ॥
तस्सेव बोहणत्थं भयवं पडिमाएँ सण्ठिओ रत्तिं । तस्सायय्णे सो चिय दट्ठुं रुद्दो जिणस्सुवरिं ॥ १२ ॥
उवसग्गिउमाढत्तो संज्झाए कुणइ भूमिभेयकरं । अट्टट्टहाससद्दं मणुयतिरिक्खाण तासणयं ॥ १३ ॥
तत्तो य हत्थिरूवं पिसायरूवं च नागरूवं च । काउं उवसग्गेई खुहइ मणागं पि नो भयवं ॥ १४ ॥
सिरकन्ननासनहअच्छिदन्तपट्ठीसु वेयणं कुणइ । एक्केक्का जा जीवियहरणे अन्नस्स सुसमत्था ॥ १५ ॥
जाहे[3] य सव्वरयणिं भयवं उवसग्गिओऽवि नो खुहिओ[4] । तो[5] उवसन्तो खामइ संथुणइ य गरुयसद्दं सो ॥१६॥
अट्ठङ्गनिमित्तविऊ पासावच्चिज्जओ तहिं गामे । चिट्ठइ आगमकुसलो उप्पलओ सिद्धपुत्तो त्ति ॥ १७ ॥
सो देवचयकहियं सामिसरूवं सुणेइ[6] उव्विग्गो । मन्ने वीरजिणिन्दो छउमत्थो एत्थ आयाओ ॥ १८ ॥
सुम्मइ य किलिकिलरवो[7] जक्खाययणम्मि ता न नज्जेज्जा । कं पि अवत्थं जक्खो सो दुट्ठो कुणइ सामिस्स ॥१९॥
समइक्कन्ता रयणी इय चिन्ताए अलद्धनिद्दस्स । तस्स पहाए य गओ जक्खाययणे जिणं दट्ठुं ॥ २० ॥
भयवं पि सव्वरयणिं सुरेण संताविओ पहायम्मि । उवसन्तसव्वविघणो मुहुत्तमेत्तं गओ निद्दं ॥ २१ ॥

---

१ व–विन्नविओ । २ अ–°यणं । ३ व–ताहे सव्वं रयणिं । ४ व–चलइ । ५ व–ता । ६ व–सुणेवि । ७ व–किलिकिलि° ।

जक्खेण थुव्वमाणो निच्चं चिय अट्ठमासखवणेहिं । सरयन्ते निग्गन्तुं गओ य सोरागसागरम्मि ॥ ३४ ॥
उज्जाणे तत्थ ठिओ अच्छन्दो नाम तत्थ पासण्डी । जोइसमन्तनिमित्तेहिं जीवए लोगनिस्साओ ॥ ३५ ॥
तस्स विणोयणकज्जे केलिपियत्तेण तइ जिणिन्दस्स । एगाए जणगन्थं सिद्धत्थो वाहरेऊण ॥ ३६ ॥
आसन्ने गच्छन्तं एगं गोवं च कहइ जिणरूवो । जं तेण कयं भुत्तं दिट्ठं संपत्थिओ जत्थ ॥ ३७ ॥
एमाइं नियं चिट्ठं सोउं सो रञ्जिओ गओ गामे । सव्वजणाणं साहइ तीयागयनिमित्तनिउणं ॥ ३८ ॥
उज्जाणगओ चिट्ठइ एगो देवज्जगो तओ लोगो । सव्वोऽवि समागन्तुं पुच्छइ सोऽवि य परिकहइ ॥ ३९ ॥
सो आउट्टो वीरं वन्दइ पूएइ पज्जुवासेइ । कहइ य एत्थवि चिट्ठइ अच्छन्दो जाणओ एगो ॥ ४० ॥
सिद्धत्थेण य भणियं न किं पि सो मुणइ वञ्चए लोगं । एमेव तओ लोगो गन्तूणं तस्स तं कहइ ॥ ४१ ॥
सो अमरिसिओ पभणइ जइ पुरओ मज्झ मुणइ तो सव्वं । जाणइ सो देवज्जो गओ य जणसंजुओ तत्थ ॥ ४२ ॥
ठाउं जिणस्स पुरओ तणं च घेत्तूण दोहिं वि करेहिं । भणइ इमं भज्जिस्सइ न व त्ति सो चिन्तइ इमं ति ॥ ४३ ॥
जं एस किं पि भणिही विवरीयं चेव तं करिस्सामि । सिद्धत्थेण य भणियं न भज्जिही सोऽवि आढत्तो ॥ ४४ ॥
भञ्जेउं सक्केणवि दिन्नुवओगेण पक्खिवियं वज्जं । अच्छन्दगस्स छिन्ना करङ्गुलीओ दसवि कसिणं ॥ ४५ ॥
इय विग्गुत्तो लोएण खिसिओ आगओ य वेलक्खं । सामी परमपसिद्धिं संपत्तो परमपुज्जं च ॥ ४६ ॥

१ अ—थामंमि । २ ब—अच्छन्तं । ३ अ—संपत्थिओ त॰ । ४ ब—ई नियनि॰ । ५ ब—नि । ६ ब—लोगं ।

जक्खेण थुव्वमाणो निच्चं चिय अट्ठमासखवणेहिं । सरयन्ते निग्गन्तुं गओ य मोरागसन्निवेसम्मि ॥ ३५ ॥
उज्जाणे तत्थ ठिओ अच्छन्दो नाम तत्थ पासण्डी । जोइसमन्तनिमित्तेहिं जीवए लोगनिवहाओ ॥ ३६ ॥
तस्स विगोवणकज्जे केलिपियत्तेण तह जिणिन्दस्स । एगाए जणगन्थं सिद्धत्थो वाहरेऊण ॥ ३७ ॥
आसन्ने गेच्छन्तं एगं गोवं च कहइ जिणरूवो । जं तेण कयं भुत्तं दिट्ठं संपत्तिओ जत्थ ॥ ३८ ॥
एमाइँ नियं चिट्ठं सोउं सो रञ्जिओ गओ गामे । सव्वजणाणं साहइ तीयाणागयनिमित्तनिउं ॥ ३९ ॥
उज्जाणगओ चिट्ठइ एगो देवज्जगो तओ लोगो । सव्वोऽवि समागन्तुं पुच्छइ सोऽवि य परिकहइ ॥ ४० ॥
सो आउट्टो वीरं वन्दइ पूएइ पज्जुवासेइ । कहइ य एत्थवि चिट्ठइ अच्छन्दो जाणओ एगो ॥ ४१ ॥
सिद्धत्थेण य भणियं न किं पि सो मुणइ वञ्चए लोगं । एमेव तओ लोगो गन्तूणं तस्स तं कहइ ॥ ४२ ॥
सो अमरिसिओ पभणइ जइ पुरओ मज्झ मुणइ तो सव्वं । जाणइ सो देवज्जो गओ य जणसंजुओ तत्थ ॥ ४३ ॥
ठाउं जिणस्स पुरओ तणं च घेत्तूण दोहिँ वि करेहिं । भणइ इमं भज्जिस्सइ न व त्ति सो चिन्तइ इमं ति ॥ ४४ ॥
जं एस किं पि भणिही विवरीयं चेव तं करिस्सामि । सिद्धत्थेण य भणियं न भज्जिही सोऽवि आढत्तो ॥ ४५ ॥
भञ्जेउं सक्केणवि दिन्नुवओगेण पक्खित्तविय वज्जं । अच्छन्दगस्स छिन्ना करङ्गुलीओ दसवि कसिणं ॥ ४६ ॥
इय विग्गुत्तो लोएण खिंसिओ आगओ य वेलक्खं । सामी परमपसिद्धिं संपत्तो परमपुज्जं च ॥ ४७ ॥

१ अ—थामंमि । २ ब—अक्कन्तं । ...

तुल्लागसस्सुवणीयं तुच्चियमेएण लक्खमोल्लं च । जायं अक्खेण य दव्वं दोहिं पि तं गहियं ॥ ६१ ॥
संपत्थिओ य भयवं उत्तरचावालसन्निवेसम्मि । तत्थ य उज्जू वक्को दो मग्गा उज्जुगा चण्डिओ ॥ ६२ ॥
गोवालेहिं निसिद्धो एत्थच्छइ दिट्ठिविसहरो भुयगो । तप्पडिबोहणहेउं गन्तुं तेणेव कणगखले ॥ ६३ ॥
आसमपयम्मि पत्तो मण्डवियाए य जक्खभवणस्स । पडिमाएँ ठिओ दिट्ठीविसस्स सप्पस्स आसन्ने ॥ ६४ ॥

सो य पुव्वभवे को आसी—

एगम्मि सन्निवेसे मुणिगच्छे आसि खमरिसी एगो । भिक्खट्ठा य पविट्ठो पारणए खुड्डएण समं ॥ ६५ ॥
खमरिसिणा अक्कन्ता एगा मण्डुक्किया मया तत्थ । खुड्डेण तस्स कहिया सो भणइ इमा न मे वहिया ॥ ६६ ॥
किं दुट्ठसेह ! अक्खसि जणेण एयाउ पेच्छ वहियाओ । खुड्डो चिन्तइ छुहिओ एसो ता गोयरेऽमग्गओ ॥ ६७ ॥
पुण पडिक्कमणे सारइ खुड्डो मण्डुक्कियं खमरिसिस्स । सो रुट्ठो आहन्तुं पहाविओ खुड्डयस्सुवरिं ॥ ६८ ॥
खम्भम्मि समावडिओ पडिओ य मओ य रोसमावन्नो । जोइसियसुरो जाओ तओ चुओ कणयखलयम्मि ॥
कुलवइणो संजाओ पुत्तो पञ्चण्हतावससयाणं । अहिवइणो तस्स तहिं नामं पुण कोसिओ त्ति कयं ॥६९-७०॥
सो पुव्वसहावेणं चण्डो तो चण्डकोसिओ जाओ । पियरम्मि य कालगए सो तेसिं कुलवई जाओ ॥ ७१ ॥
न य देइ तावसाणवि वणसण्डे मुच्छिओ फले घेत्तुं । तेऽवि य अन्नत्थ गया अलहन्ता सो य एगागी ॥ ७२ ॥
हिण्डइ वणं समन्ता गोवाईयं पि तत्थ पविसन्तं । धाडेइ फरसुहत्थो कोहन्धो निद्दयसहावो ॥ ७३ ॥

तुन्नागसुवणीयं तुन्नियमेण्ण लक्खमोल्लं च । जायं अद्धद्धेण य दुव्वं दोहिं पि तं गहियं ॥ ६१ ॥
संपत्थिओ य भयवं उत्तरचावालसन्निवेसम्मि । तत्थ य उज्जू पन्थो दो मग्गा उज्जुगा वन्निओ ॥ ६२ ॥
गोवालेहिं निसिद्धो एत्थच्छइ दिट्ठिविसहरो भुयगो । तप्पडिबोहणहेउं गन्तुं तेणेव कणगखले ॥ ६३ ॥
आसमपयम्मि पत्तो मण्डवियाए य जक्खभवणस्स । पडिमाएँ ठिओ दिट्ठीविसस्स सप्पस्स आसन्ने ॥ ६४ ॥

सो य पुव्वभवे को आसी—

एगम्मि सन्निवेसे मुणिगच्छे आसि खमरिसी एगो । भिक्खट्ठा य पविट्ठो पारणए खुड्डुएण समं ॥ ६५ ॥
खमरिसिणा अक्कन्ता एगा मण्डुक्किया मया तत्थ । खुड्डेण तस्स कहिया सो भणइ इमा न मे वहिया ॥ ६६ ॥
किं दुट्ठसेह ! अक्खसि जणेण एयाउ पेच्छ वहियाओ । खुड्डो चिन्तइ कुविओ एसो ता वोयणेऽस्समओ ॥ ६७ ॥
पुण पडिकमणे सारइ खुड्डो मण्डुक्कियं खमरिसिस्स । सो रुट्ठो आहन्तुं पहाविओ खुड्डयस्सुवरिं ॥ ६८ ॥
खम्भम्मि समावडिओ पडिओ य मओ य रोसमावन्नो । जोइसियसुरो जाओ तओ चुओ कणगखलयम्मि ॥
कुलवइणो संजाओ पुत्तो पञ्चण्हतावससयाणं । अहिवइणो तस्स तहिं नामं पुण कोसिओ त्ति कयं ॥६९-७०॥
सो पुव्वसहावेणं चण्डो तो चण्डकोसिओ जाओ । पियरम्मि य कालगए सो तेसिं कुलवई जाओ ॥ ७१ ॥
न य देइ तावसाणवि वणसण्डे मुच्छिओ फले घेत्तुं । तेऽवि य अन्नत्थ गया अलहन्ता सो य एगागी ॥ ७२ ॥
हिण्डइ वणं समन्ता गोवाईयं पि तत्थ पविसन्तं । धाडेइ फरसुहत्थो कोहन्धो निद्दयसहावो ॥ ७३ ॥

तं चिय जन्तुं पढमं कोवो निद्दहइ जत्थ उववन्नो । जत्थुप्पन्नो तं चेव इन्धणं धूमकेउ व्व ॥ ८६ ॥
सुहसंपयाण विग्घो अणत्थमूलं विवेयपडिवक्खो । कोहो दुग्गइहेऊ तवसंजमनेहखयकारी ॥ ८७ ॥
सुमरसु तं खमगभवे कोवफलं चण्डकोसियभवे य । इय एवमाइ सोउं ईहापोहं करेन्तस्स ॥ ८८ ॥
जायं जाईसरणं संवेगं आगओ य सो परमं । तिक्खुत्तो भत्तीए पयाहिणं भगवओ कुणइ ॥ ८९ ॥
पच्चक्खिऊण भत्तं सुहपरिणामो बिले मुहं छोढुं । नवकारपरो चिट्ठइ जिणोणुकम्पाएँ तत्थ ठिओ ॥ ९९० ॥
सामिं दट्ठुं गोवाइयावि तत्थागया सुविम्हइया । पाहाणखिवणकट्ठाइघट्टणेहिं परिक्खन्ति ॥ ९१ ॥
जाहे कहवि न फन्दइ ताहे लोगस्स कहियमेएहिं । सो आगन्तुं सामिं वन्दइ सप्पं च पूएइ ॥ ९२ ॥

भणइ य—

पेच्छ रिसिणो पहावो इमस्स जं एरिसो फणी दुट्ठो । उवसमिओ नत्थि तवस्स अहव इह किंचि वि असज्झं ॥ ९३ ॥
मक्खन्ति घयाईहिं वल्लमाणेणं च गोउलित्थीओ । तग्गन्धेण य घेप्पइ नियरेण पिपीलियाणं सो ॥ ९४ ॥
तं वेयणमहियासिय सम्मं मासद्धमणसणं काउं । सहसारे उववन्नो मरिऊण महिड्ढिओ देवो ॥ ९५ ॥
संपत्थिओ य भयवं सुरहिपुरं तत्थ अन्तरे गङ्गा । तो सिद्धदत्तनावं आरूढो लोगमज्झम्मि ॥ ९६ ॥
रविए य कोसिएणं खेमिलओ सउणजाणओ भणइ । पाणन्तियमुवसग्गं कहइ इमो अम्ह जलमज्झे ॥ ९७ ॥

१ व–°हेऊ । २ व–करि° । ३ व–किं पिवि । ४ अ–व । ५ अ–°णअहि° ।

तं चिय जन्तुं पढमं कोवो निद्दहइ जत्थ उववन्नो । जत्थुप्पन्नो तं चेव इन्धणं धूमकेउ व्व ॥ ८६ ॥
सुहसंपयाण विग्घो अणत्थमूलं विवेयपडिवक्खो । कोहो दुग्गईहेऊ तवसंजमनेहखयकारी ॥ ८७ ॥
सुमरसु तं खमगभवे कोवफलं चण्डकोसियभवे य । इय एवमाइ सोउं ईहापोहं करेन्तस्स ॥ ८८ ॥
जायं जाईसरणं संवेगं आगओ य सो परमं । तिक्खुत्तो भत्तीए पयाहिणं भगवओ कुणइ ॥ ८९ ॥
पचक्खिऊण भत्तं सुहपरिणामो बिले मुहं छोढुं । नवकारपरो चिट्ठइ जिणोणुकम्पाएँ तत्थ ठिओ ॥ ९९० ॥
सामिं दट्ठुं गोवाइयावि तत्थागया सुविम्हइया । पाहाणखिवणकट्ठाइघट्टणेहिं परिक्खन्ति ॥ ९१ ॥
जाहे कहवि न फन्दइ ताहे लोगस्स कहियमेएहिं । सो आगन्तुं सामिं वन्दइ सप्पं च पूएइ ॥ ९२ ॥

भणइ य—

पेच्छ रिसिणो पहावो इमस्स जं एरिसो फणी दुट्ठो। उवसमिओ नत्थि तवस्स अहव इह किंचि वि असज्झं॥९३॥
मक्खिन्ति वयाईहिं वड्ढमाणेणं चँ गोउलित्थीओ । तग्गन्धेण य घेप्पइ नियरेण पिपीलियाणं सो ॥ ९४ ॥
तं वेयणमँहियासिय सम्मं मासद्धमणसणं काउं । सहसारे उववन्नो मरिऊण महिड्ढिओ देवो ॥ ९५ ॥
संपत्थिओ य भयवं सुरहिपुरं तत्थ अन्तरे गङ्गा । तो सिद्धदत्तनावं आरूढो लोगमज्झम्मि ॥ ९६ ॥
रविए य कोसिएणं खेमिलओ सउणजाणओ भणइ । पाणन्तियमुवसग्गं कहइ इमो अम्ह जलमज्झे ॥ ९७ ॥

१ व–°ह्केऊ । २ व–करि° । ३ व–किं पिवि । ४ अ–व । ५ अ–°णअहि° ।

सोऽवि य सड्ढो चिन्तइ बाहिं मुक्का इमे हु लोगेहिं । वाहिज्जन्ति चरन्ति य अफासुयहरियमाईयं ॥ ११ ॥
ताहे गिहट्ठियाणं फासुयचारीएँ गलियमुदएणं । खाणेण य सो तेसिं करेइ सव्वं पि अक्खूणं ॥ १२ ॥
अट्ठमिचउद्दसीसु य उववासं करिय धम्मसत्थाइं । वाएइ तेसि पुरओ ते सन्नी ताणि सोऊणं ॥ १३ ॥
भद्दयचित्ता जाया जद्दिवसं सावओ न जीवेइ । तद्दिवसं सुहभावा आहारं तेऽवि वज्जन्ति ॥ १४ ॥
सड्ढस्स तेसु जाओ बहुमाणो समहिओ सिणेहो य । एए उवसन्तप्पा भावियचित्त त्ति नाऊणं ॥ १५ ॥
भण्डीरमणे जत्ता जाया नीया य ते अपुच्छाए । सावगमेत्तेण तहिं जोएत्ता नियफिरिक्काए ॥ १६ ॥
अन्नस्स परिसा णत्थि एव सिङ्गारमुव्वहन्तेणं । अन्नेहिं य सद्धिं धवाडिया तेण वसहेहिं ॥ १७ ॥
ते य मिलाणा छिन्ना सड्ढगिहे तेण आणिउं बद्धा । न चरन्ति नेय उदगं पिबन्ति अइविहुरसव्वङ्गा ॥ १८ ॥
चिन्नायवइयरेणं सड्ढेण य खिज्जियं बहुपयारं । भत्तं पच्चक्खाविय दिन्नो तेसिं नमोक्कारो ॥ १९ ॥
तो मरिउं सुहभावा नागकुमारा महिड्ढिया जाया । पेच्छन्ति य ओहीए उवसग्गं वद्धमाणस्स ॥ १०२० ॥
तुरियं तत्थागन्तुं जिणवरभत्तीए गिण्हए नावं । बीओ य तं सुदाढं निज्जिणइ महिड्ढियत्तेणं ॥ २१ ॥
जं तस्स चवणकालो नवजाया ते य सो तओ नट्ठो । पणमन्ति ते य चलणे महिमं च करिन्ति वीरस्स ॥२२॥
लोगोऽवि तह करेई सुरेहिं वुट्ठं च कुसुमजलवरिसं । नावाए उत्तिन्नो वीरो असुरा पेडिगया य ॥ २३ ॥

१ अ-अनवेहिं । २ अ-॰मित्ते॰ । ३ ब-तेय । ४ ब-मिम॰ । ५ ब-॰यन्ति । ६ अ-॰ए । ७ ब-य ते । ८ ब-करे॰ । ९ ॰परिग॰ ।

सोऽवि य सड्ढो चिन्तइ वाहिं मुक्का इमे हु लोगेहिं । वाहिज्जन्ति चरन्ति य अफासुयहरियमाईयं ॥ ११ ॥
ताहे गिहट्ठियाणं फासुयचारीएँ गलियमुदएणं । खाणेण य सो तेसिं करेइ सव्वं पि अक्खूणं ॥ १२ ॥
अट्ठमिचउद्दसीसु य उववासं करिय धम्मसत्थाइं । वाएइ तेसि पुरओ ते सन्नी ताणि सोऊणं ॥ १३ ॥
भद्दयचित्ता जाया जद्दिवसं सावओ न जीवेइ । तद्दिवसं सुहभावा आहारं तेऽवि वज्जन्ति ॥ १४ ॥
सड्ढस्स तेसु जाओ वड्ढमाणो समहिओ सिणेहो य । एए उवसन्तप्पा भावियचित्त त्ति नाऊणं ॥ १५ ॥
भण्डीरमणे जत्ता जाया नीया य ते अपुच्छाए । सावगमेत्तेण तहिं जोएत्ता नियफिरिक्काए ॥ १६ ॥
अन्नस्स एरिसा णत्थि एव सिङ्गारमुव्वहन्तेणं । अन्नेहिं य सद्धिं धवाडिया तेण वसहेहिं ॥ १७ ॥
ते य मिलाणा छिन्ना सड्ढगिहे तेण आणिउं बद्धा । न चरन्ति नेय उदगं पिबन्ति अइविहुरसव्वङ्गा ॥ १८ ॥
चिन्नायवइयरेणं सड्ढेण य खिज्जियं बहुपयारं । भत्तं पच्चक्खाविय दिन्नो तेसिं नमोक्कारो ॥ १९ ॥
तो मरिउं सुहभावा नागकुमारा महिड्ढिया जाया । पेच्छन्ति य ओहीए उवसग्गं वद्धमाणस्स ॥ १०२० ॥
तुरियं तत्थागन्तुं जिणवरभत्तीए गिण्हए नावं । बीओ य तं सुदाढं निज्जिणइ महिड्ढियत्तेणं ॥ २१ ॥
जं तस्स चवणकालो नवजाया ते य सो तओ नट्ठो । पणमन्ति ते य चलणे महिमं च करिन्ति वीरस्स ॥२२॥
लोगोऽवि तह करेई सुरेहिं वुट्ठं च कुसुमजलवरिसं । नावाए उत्तिन्नो वीरो असुरा पेडिगया य ॥ २३ ॥

१ अ–अनतेहिं । २ अ–॰मित्ते॰ । ३ ब–तेय । ४ ब–मिम॰ । ५ ब–॰यन्ति । ६ अ–॰ए । ७ ब–य ते । ८ ब–करे॰ । ९ ॰परिग॰ ।

पत्तो य पाउसम्मी रायगिहे तन्तुवायसालाए। तत्थ ठिओ णालन्दाबाहिरियाए महावीरो ॥ ३६ ॥

इओ य—

मङ्खलिमङ्खस्स सुओ भद्दाए उयरसंभवो अत्थि। गोसालाएँ पसूओ तो सो गोसालनामो त्ति ॥ ३७ ॥
अब्भसियमङ्खसिप्पो जोव्वणपत्तो य चित्तफलगकरो। एगागी हिण्डन्तो रायगिहे सोऽवि संपत्तो ॥ ३८ ॥
वासावासनिमित्तं सामिं अणुनविय सालकोणम्मि। नियसिप्पदंसणपरो पुरलोयाणं ठिओ सोऽवि ॥ ३९ ॥
भयवं पि पढममासक्खमणस्स उ पारणम्मि भिक्खट्ठा। विजयस्स गिहं पविसइ सो पासिय एज्जमाणं तं ॥१०४०॥
अब्भुट्ठइ अभिगच्छइ सत्तट्ठपए पयाहिणं कुणइ। हिट्ठमणो पडिलाहइ विउलाए भोयणविहीए ॥ ४१ ॥

भणियं च—

"पडिलाहिस्सामि त्ति तुट्ठे पडिलाहेमाणे तुट्ठे पडिलाहिए वि तुट्ठे।"

एवं तिकालतुट्ठीसुद्धेणं परमपत्तदाणेणं। पुन्नं सुहाणुबन्धं उत्तममावज्जियं तेण ॥ ४२ ॥

किञ्च—

देवाउयं निबद्धं भवो परित्तीकओ य अन्नेसिं। जणियं च बोहिबीयं पसंसणाहेउभावेणं ॥ ४३ ॥

जओ—

---

१ ब–सामी। २ ब–ण्णं ति।

पत्तो य पाउसम्मी रायगिहे तन्तुवायसालाए। तत्थ ठिओ णालन्दावाहिरियाए महावीरो ॥ ३६ ॥

इओ य—

मङ्खलिमङ्खस्स सुओ भद्दाए उयरसंभवो अत्थि। गोसालाएँ पसूओ तो सो गोसालनामो त्ति ॥ ३७ ॥
अब्भसियमङ्खसिप्पो जोव्वणपत्तो य चित्तफलगकरो। एगागी हिण्डन्तो रायगिहे सोऽवि संपत्तो ॥ ३८ ॥
वासावासनिमित्तं सामिं[1] अणुनविय सालकोणम्मि। नियसिप्पदंसणपरो पुरलोयाणं ठिओ सोऽवि ॥ ३९ ॥
भयवं पि पढममासक्खमणस्स उ पारणम्मि[2] भिक्खट्ठा। विजयस्स गिहं पविसइ सो पासिय एज्जमाणं तं ॥१०४०॥
अब्भुट्ठइ अभिगच्छइ सत्तट्ठपए पयाहिणं कुणइ। हिट्ठमणो पडिलाहइ विउलाए भोयणविहीए ॥ ४१ ॥

भणियं च—

"पडिलाहिस्सामि त्ति तुट्ठे पडिलाहेमाणे तुट्ठे पडिलाहिए वि तुट्ठे।"

एवं तिकालतुट्ठीसुद्धेणं परमपत्तदाणेणं। पुन्नं सुहाणुवन्धं उत्तममावज्जियं तेण ॥ ४२ ॥

किञ्च—

देवाउयं निबद्धं भवो परित्तीकओ य अन्नेसिं। जणियं च बोहिवीयं पसंसणाहेउभावेणं ॥ ४३ ॥

जओ—

---

१ व–सामी। २ व–ण्णं ति।

सोऽवि तमसद्दहन्तो ते गोवे भणइ एस देवज्जो । तीयाणागयवेया थालीए भङ्गमाइसइ ॥ ९७ ॥
ता रक्खह जत्तेणं तेऽवि य वंसविदलेहिँ बन्धन्ति । रक्खन्ति तहवि फुट्टा बहुतन्दुलखेवपब्भारा ॥ ९८ ॥
गोवेहिँ कवल्लाइं गहियाइं तेण किं पि नो लद्धं । ताहे विलक्खचित्तो धाविय मिलिओ जिणवरस्स ॥ ९९ ॥
सावत्थिं संपत्तो कयाइ बाहिं ठिओ य पडिमाए । तो गोसालो पभणइ भिक्खावेल त्ति पविसामो ॥१०१०॥
नयरीए सिद्धत्थो जम्पइ भो अज्ज अन्तरं अम्ह । सो भणइ ममं साहसु अज्जाहं किं लहिस्सामि ॥ १०१ ॥
अज्ज तुमे भोत्तव्वं माणुसमंसं ति आह सिद्धत्थो । तमहं अज्ज गहिस्सं मंसस्स न संभवो जत्थ ॥ १०२ ॥
सो हिण्डिउमाढत्तो तत्थ य गाहावई उ पियदत्तो । तब्भज्जा सिरिदत्ता सा निन्दू पुच्छए एगं ॥ १०३ ॥
सिवदत्तं नेमित्तिं किह मे जीवेज्ज पुत्तभण्डाइं । सो भणइ नियं गब्भं पीसित्ता पायसं कुणह ॥ १०४ ॥
सुतवस्सिस्स पयच्छह नियघरदारं च अन्नओ कुत्तं । कायव्वं सो नाउं नियतवतेएण मा दहिही ॥ १०५ ॥
इय ते पयाथिरत्तं सोउं चेमं तहाकयं तीए । गोसालो हिण्डन्तो तीए पविट्ठो घरे कह वि ॥ १०६ ॥
तीए वि तस्स दिन्नो पुव्वुत्तो पायसो महुघयड्ढो । नत्थेत्थ नूण मंसं इय भुत्तो तुट्ठचित्तेणं ॥ १०७ ॥
आगन्तूण य जम्पइ वट्टइ नेमित्तियत्तणं तुज्झ । कुणमाणस्स उ सुइरं अज्जं चुक्कं तुह निमित्तं ॥ १०८ ॥
विहडइ मज्झ निमित्तं न कयाइ वि एवमाह सिद्धत्थो । पत्तियसि जइ न तो वमसु तेण वमियं तओ दिट्ठं ॥१०९॥

१ अ–°टले° । २ अ–°देवं । ३ अ–अवन्न° ।

ताहेव तमसद्दहन्ता त गावं भणइ एस देवज्जो । तीयाणागयवेया थालीए भङ्गमाइसइ ॥ ५७ ॥
ता रक्खह जत्तेणं तेऽवि य वंसविदे[1]लेहिँ वन्धन्ति । रक्खन्ति तहवि फुट्टा वहुतन्दुलखेवपब्भारा ॥ ५८ ॥
गोवेहिँ कवल्लाइं गहियाइं तेण किं पि नो लद्धं । ताहे विलक्खचित्तो धाविय मिलिओ जिणवरस्स ॥ ५९ ॥
सावत्थिं संपत्तो कयाइ वाहिं ठिओ य पडिमाए । तो गोसालो पभणइ भिक्खावेल त्ति पविसामो ॥१०६०॥
नयरीए सिद्धत्थो जम्पइ भो अज्ज अन्तरं अम्ह । सो भणइ ममं साहसु अज्जाहं किं लहिस्सामि ॥ ६१ ॥
अज्ज तुमे भोत्तव्वं माणुसमंसं ति आह सिद्धत्थो । तमहं अज्ज गहिस्सं मंसस्स न संभवो जत्थ ॥ ६२ ॥
सो हिण्डिउमाढत्तो तत्थ य गाहावई उ पियदत्तो । तब्भज्जा सिरिदत्ता सा निन्दू पुच्छए एगं ॥ ६३ ॥
सिवदत्तं[2] नेमित्तिं किह मे जीवेज्ज पुत्तभण्डाइं । सो भणइ नियं गब्भं पीसित्ता पायसं कुणह ॥ ६४ ॥
सुतवस्सिस्स पयच्छह नियघरदारं च[3] अन्नओ कुत्तं । कायव्वं सो नाउं नियतवतेएण मा दहिही ॥ ६५ ॥
इय ते पयाथिरत्तं सोउं चेमं तहाकयं तीए । गोसालो हिण्डन्तो तीए पविट्ठो घरे कह वि ॥ ६६ ॥
तीए वि तस्स दिन्नो पुव्वुत्तो पायसो महुघयड्ढो । नत्थेत्थ नूण मंसं इय भुत्तो तुट्ठचित्तेणं ॥ ६७ ॥
आगन्तूण य जम्पइ वट्टइ नेमित्तियत्तणं तुज्झ । कुणमाणस्स उ सुइरं अज्जं चुक्कं तुह निमित्तं ॥ ६८ ॥
विहडइ मज्झ निमित्तं न कयाइ वि एवमाह सिद्धत्थो । पत्तियसि जइ न तो वमसु तेण वमियं तओ दिट्ठं ॥६९॥

१ अ-०टले० । २ अ-०देवं । ३ अ-अवन्न० ।

नाओ तुम्ह पहावो छुट्टो एसो तुहाणुभावेणं । ता खमह मज्झ भयवं न याणिओ तुम्ह सीसो त्ति ॥ ८२ ॥
गोसालो पुण पुच्छइ किमेस जूयायरो भणइ भयवं ! । कहियं च तेउलेसासामत्थं सामिणा तस्स ॥ ८३ ॥
तो संभन्तो पुच्छइ किह एसा होइ जो उ गोसाला । छट्ठं छट्ठेण तवं करेइ आयावणानिरओ ॥ ८४ ॥
पारणए य नहन्तं भुञ्जइ कुम्मासपिण्डियं एगं । पियइ उदगस्स पसइं छम्मासं जाव तस्सेसा ॥ ८५ ॥
जायइ एवं कहिउं कुम्मग्गामम्मि विहरिओ वीरो । चलिओ तेण पहेणं तिलथंम्भो जत्थ दिट्ठो त्ति ॥ ८६ ॥
सो मङ्खसुओ पभणइ तिलथम्भो सामि! सो न निप्फन्नो । निप्फन्नो गोसाला पुप्फजिया तह तिला जाया ॥८७॥
उक्खणसि तुमं तइया मिच्छावाइत्तणं मम कुणन्तो । गोखुरनिहओ नवरं सुरकयवासेण सो लग्गो ॥ ८८ ॥
सो य असद्दहमाणो तत्थ गओ पेच्छए तहेव तयं । पक्खोडइ सुंगणियं करम्मि दिट्ठा य सत्त तिला ॥ ८९ ॥
कोद्दवियकूरभोयणपायसथालिनरसंसभोगम्मि । तिलनिप्फत्तीएँ तहा तेणं गहिओ नियईवाओ ॥ १०९० ॥
तो सामिसयासाओ फिट्टेउं सो गओ यँ सावत्थिं । साहेइ तेउलेसं कुलालसालाए पुव्वुत्तं ॥ ९१ ॥
छहिँ मासेहिँ य जाया दासीए परिक्खिया य कूवतडे । तो दिट्ठपचओ सो गुरुहरिसो दप्पमावन्नो ॥ ९२ ॥
मिलिया छ सिद्धपुत्ता अवितहनेमित्तिया तया तस्स । तेसि सयासेऽहीयं निमित्तमह लोयमोहणयं ॥ ९३ ॥
अजिणो जिणप्पलावी अकेवली केवलिप्पलावी य । सो हिण्डइ मयमत्तो बहुअन्तेवासिपरियरिओ ॥ ९४ ॥

---

१ व–तुह प्पहा° । २ व–तत्थ । ३ अ–°थुंवो । ४ अ–°तिवा° । ५ व–उ ।

नाओ तुम्ह पहावो छुट्टो एसो तुहाणुभावेणं । ता खमह मज्झ भयवं न याणिओ तुम्ह सीसो त्ति ॥ ८२ ॥
गोसालो पुण पुच्छइ किमेस जूयायरो भणइ भयवं ! । कहियं च तेउलेसासामत्थं सामिणा तेस्स[2] ॥ ८३ ॥
तो संभन्तो पुच्छइ किह एसा होइ जो उ गोसाला । छट्ठं छट्ठेण तवं करेइ आयावणानिरओ ॥ ८४ ॥
पारणए य नहन्तं भुञ्जइ कुम्मासपिण्डियं एगं । पियइ उदगस्स पसइं छम्मासं जाव तस्सेसा ॥ ८५ ॥
जायइ एवं कहिउं कुम्मग्गामम्मि विहरिओ वीरो । चलिओ तेण पहेणं तिलथंभो[3] जत्थ दिट्ठो त्ति ॥ ८६ ॥
सो मङ्खसुओ पभणइ तिलथम्भो सामि ! सो न निप्फन्नो । निप्फन्नो गोसाला पुप्फजिया तह तिला जाया ॥८७॥
उक्खणसि तुमं तइया मिच्छावाइत्तणं मम कुणन्तो । गोखुरनिहओ नवरं सुरकयवासेण सो लग्गो ॥ ८८ ॥
सो य असद्दहमाणो तत्थ गओ पेच्छए तहेव तयं । पक्खोडइ सुंगणियं करम्मि दिट्ठा य सत्त तिला ॥ ८९ ॥
कोद्दवियकूरभोयणपायसथालिनरमंसभोगम्मि । तिलनिप्फत्तीऍ तहा तेणं गहिओ नियईवाओ ॥ १०९० ॥
तो सामिसयासाओ फिट्टेउं सो गओ य सावत्थिं । साहेइ तेउलेसं कुलालसालाए पुव्वुत्तं ॥ ९१ ॥
छहिं मासेहिं य जाया दासीए परिक्खिया य कूवतडे । तो दिट्ठपचओ सो गुरुहरिसो दप्पमावन्नो ॥ ९२ ॥
मिलिया छ सिद्धपुत्ता अवितहनेमित्तिया तया तस्स । तेसि सयासेऽहीयं निमित्तमह लोयमोहणयं ॥ ९३ ॥
अजिणो जिणप्पलावी अकेवली केवलिप्पलावी य । सो हिण्डइ मयमत्तो बहुअन्तेवासिपरियरिओ ॥ ९४ ॥

१ व-तुह प्पहा° । २ व-तत्थ । ३ अ-°थुंभो । ४ अ-°तिवा° । ५ व-उ ।

जिणचलणन्तरमङ्गालरन्धओ विरइओ य सूयारो । एएहिं जा न खुहिओ ताहे रुट्ठो वहनिमित्तं ॥ ८ ॥
अयभारसहस्समयं सिरम्मि[1] गयणाओ मुयइ सो चक्कं[2] । पडिहाएणं जस्स हु चुन्निज्जइ पव्वयवरोऽवि ॥ ९ ॥
भयवं पि जाणुमेत्तं खुत्तो धरणीए वज्जकढिणाए । वालग्गं पि न भयवं झाणाओ चलइ धीरप्पा ॥ १११० ॥
दंसइ सूरस्सुदयं भणइ य देवज्जगा किं न वयसि । भयवं पि मुणइ अज्जवि वट्टइ रयणी इमा माया ॥ ११ ॥
वीसइमो उवसग्गो अणुकूलो एस होइ नायव्वो । अहवावि इमो भणणइ संगमओ भणइ जिणवीरं ॥ १२ ॥
तुट्ठोमि तुज्झ भयवं ! सग्गं तं नेमि अहव पाएसु । पाडेमि तुज्झ तिजगं अहवा जं मग्गियं देमि ॥ १३ ॥
इय वीसं उवसग्गा एक्कनिसाए कया उ पावेणं । छम्मासं जाव पुणो अन्ने अणुकूलपडिकूला[3] ॥ १४ ॥
जा चालिउं न सक्कइ सामी मणयंपि[4] धम्मझाणाओ । ताहे निव्विन्नमणो आउट्टो[5] पडइ पाएसु ॥ १५ ॥
खामेइ य अवराहं सच्चं तं सामि ! जं भणइ सक्को । तुम्हे सच्चपइन्ना भट्ठपइन्नो अहं जाओ ॥ १६ ॥
संपइ हिण्डह विहरह भुञ्जह न करेमि किञ्चि उवसग्गं[6] । इय भणिओ भणइ पहू हो संगमया ण कस्सावि ॥१७॥
होमि अहं वत्तव्वो नियइच्छाए अईमि चिट्ठामि । संगमओ य विलक्खो कयगुरुपणई गओ सग्गं ॥ १८ ॥

इओ य—

---

१ अ—°तिभा° । २ व—°रिम्मि । ३ व पुस्तके—अस्या गाथाया उत्तरार्द्धमग्रेतनगाथायाश्च पूर्वार्द्धं नास्ति । ४ अ—तह वि हु। ५ अ—°थंति । ६ व—णाउट्टो । ७ व—उवस° ।

जिणचलणन्तरमङ्गालरन्धओ विरइओ य सूयारो । एएहिं जा न खुहिओ ताहे रुट्ठो वहनिमित्तं ॥ ८ ॥
अयं[1]भारसहस्समयं सिरं[2]म्मि गयणाओ मुयइ सो चक्कं[3] । पडिहाएणं जस्स हु चुन्निज्जइ पव्वयवरोऽवि ॥ ९ ॥
भयवं पि जाणुमेत्तं खुत्तो धरणीए वज्जकढिणाए । वालग्गं पि न [4]भयवं झाणाओ चलइ धीरप्पा ॥ १११० ॥
दंसइ सूरस्सुदयं भणइ य देवज्जगा किं न वयसि । भयवं पि मुणइ अज्जवि वट्टइ रयणी इमा माया ॥ ११ ॥
वीसइमो उवसग्गो अणुकूलो एस होइ नायव्वो । अहवावि इमो भण्णइ संगमओ भणइ जिणवीरं ॥ १२ ॥
तुट्ठोमि तुज्झ भयवं ! सग्गं तं नेमि अहव पाएसु । पाडेमि तुज्झ तिजगं अहवा जं मग्गियं देमि ॥ १३ ॥
इय वीसं उवसग्गा एक्कनिसाए कया उ पावेणं । छम्मासं जाव पुणो अन्ने अणुकूलपडिकूला ॥ १४ ॥
जा चालिउं न सक्कइ सामी मणं[5]यंपि धम्मझाणाओ । ताहे निव्विन्नमणो आउट्टो[6] पडइ पाएसु ॥ १५ ॥
खामेइ य अवराहं सव्वं तं सामि ! जं भणइ सक्को । तुम्हे सच्चपइन्ना भट्ठपइन्नो अहं जाओ ॥ १६ ॥
संपइ हिण्डह विहरह भुञ्जह न करेमि किञ्चि उं[7]वसग्गं । इय भणिओ भणइ पहू हो संगमया ण कस्सावि ॥१७॥
होमि अहं वत्तव्वो नियइच्छाए अईमि चिट्ठामि । संगमओ य विलक्खो कयगुरुपणई गओ सग्गं ॥ १८ ॥

इओ य—

१ अ–°तिभा° । २ व–°रिम्मि । ३ व पुस्तके–अस्या गाथाया उत्तरार्द्धमग्रेतनगाथायाश्च पूर्वार्द्धं नास्ति । ४ अ–तह वि हु । ५ अ–°थंति । ६ व–णाउट्टो । ७ व–उवस° ।

तणु संछाइउ बहलधूलिसंभारनिवाइण खणिडउ तेण पयण्डतुण्डउद्दंसनिकाइण ।
पीवरनउलन्दुरेहिं दीहदाढग्गेहिं वियलिउ तहवि समाहिहि बहलक्खु तुह चित्तु न तरलिउ ॥ ३१ ॥
कुट्टपिपीलियकुलिसतुण्डघेहुमच्छिहिय केसरिकन्धररोमवन्नविच्छुयगणपेल्लिय ।
छिन्दिउ भिन्दिउ डसिउ तेहिं तुह देहु करालिउ सुहज्झाणह सोडीर वीर ! मणु तुज्झ न चालिउ ॥ ३२ ॥
सुण्डाडण्डेण लेवि गयणि तुह तणु उच्छालिउ पडिउ दन्तग्गेहिं गेएण महियलि अप्फालिउ ।
घोरतुरुआरोविवग्घरुवेहिं विहणिउउ धम्मज्झाणु पहाणु तोऽवि तुह णाह ! ण खणिडउ ॥ ३३ ॥
खुडियकयन्तसमाणु फुरियभासुरकत्तियकरु दीहरदसणकरालवयणु तिहुयणह भयंकरु ।
निरइउ गुरुवेयालु तेण तणु तुज्झ कयत्थिउ तुह मणु तोऽवि न वीर ! धीर ! उम्मग्गि पत्थिउ ॥ ३४ ॥
सक्करेणुहिं निचिढवाउ खरमारुउं ताडिउ मण्डलिवाउं कुलालचक्कु जिह अङ्गु भमाडिउ ।
तेहिं न खोभिउ वीर ! तंसि न य कुट्टसुयक्खिहिं खोहिज्जइ केसरिकिसोरु किं धंहिं वि कुरङ्गिहिं ॥ ३५ ॥
पुण गयणग्गह कालचक्कु सिरिसुरु ठुरुठिण गिरिगुरु तेण सुतिक्खधारु सुरनरह अणिट्ठिणें ।
तसु वाएण तुह जाणु जाव तणु धरणिहिं खुत्ताउ चलिउ न चित्तु समाहिमग्गि पसरन्तु निरुत्ताउ ॥ ३६ ॥
विहरिउ तणु छम्मासु जाव बहुविहउवसग्गेहिं झाणभङ्गु पारद्धु वीर ! तुह गोगेहिं मग्गेहिं ।

१ व—°रण । २ अ—वेल्भु° । ३ अ—गयणि । ४ व—°रान° । ५ अ—कहि । ६ व—ट्टेण । ७ व—°ट्टेण । ८ व—°गिहि ।

तणु संझाइउ वहलधूलिसंभारनिवाइण खणिडउ तेण पयण्डतुण्डउइंसन्निकाइंण ।
पीवरनउलन्दुरेहिं दीहदाढुग्गेहिं वियलिउ तहवि समाहिहि बहलक्खु तुह चित्तु न तरलिउ ॥ ३१ ॥
दुट्ठपिपीलियकुलिसतुण्डचेइडुमत्तिहिय केसरिकन्धररोमवन्नविंछुयगणपेल्लिय ।
छिन्दिउ भिन्दिउ डसिउ तेहिं तुह देहु करालिउ सुहज्झाणह सोंडीर वीर ! मणु तुज्झ न चालिउ ॥ ३२ ॥
सुण्डाडण्डेण लेवि गयणि तुह तणु उच्छालिउ पडिउ दन्तग्गेहिं गेण्ण महियलि अप्फालिउ ।
घोरतुरुक्खारविवरघस्सेहिं विहण्डिउ धम्मज्झाणु पहाणु तोऽवि तुह णाह ! ण खण्डिउ ॥ ३३ ॥
खुहियकयन्तसमाणु फुरियभासुरकत्तियकरु दीहरदसणकरालवयणु तिहुयणह भयंकरु ।
विरइउ गुरुवेयालु तेण तणु तुज्झ कयत्थिउ तुह मणु तोऽवि न वीर ! धीर ! उम्मग्गि पत्थिउ ॥ ३४ ॥
सयररेणुहिं निचिडवाउ खरमारुउं ताडिउ मण्डलियाइं कुलालचक्क जिह अंगु भमाडिउ ।
तेहिं न खोभिउ वीर ! तंसि न य दुट्ठसुयहिहिं खोहिज्जइ केसरिकिसोरु किं कंहिं वि कुरंगिहिं ॥ ३५ ॥
पुण गयणग्गह कालचक्कु सिरिमुकु सुरुद्धिण गिरिगुरु तेण सुतिक्खधारु सुरनरह अणिद्धिणं ।
तस्सु घाएण तुह जाणु जाव तणु धरणिहिं खुत्तउ चलिउ न चित्तु समाहिमग्गि पसरन्तु निरुत्तउ ॥ ३६ ॥
विहरिउ तणु छम्मासु जाव बहुविहउवसग्गेहिं झाणभङ्गु पारद्ध वीर ! तुह पोगेहिं मग्गेहिं ।

१ च—°रण । २ अ—चेच्चु° । ३ अ—गयणि । ४ च—°राम° । ५ अ—कहि । ६ च—ट्टेण । ७ च—°ट्टेण । ८ च—°गिहि ।

तणु संछाइउ बहलधूलिसंभारनिवाइण खण्डिउ तेण पयण्डतुण्डउड्डंसन्निकाइण ।
पीवरनउलन्दुरोहिं दीहदाढग्गेहिं वियलिउ तहवि समाहिहि बद्धलक्खु तुह चित्तु न तरलिउ ॥ ३१ ॥
दुट्ठपिपीलियकुलिसतुण्डघेहल्लमहिल्लिय केसरिकन्धररोमवन्नविञ्छुयगणपेल्लिय ।
छिन्दिउ भिन्दिउ डसिउ तेहिं तुह देहु करालिउ सुहज्झाणह सोडीर वीर ! मणु तुज्झ न चालिउ ॥ ३२ ॥
सुण्डाडण्डेण लेवि गयणि तुह तणु उल्लालिउ पहणिउ दन्तग्गेहिं गऍण महियलि अप्फालिउ ।
घोरघुरुक्कारॉवियग्घरूवेहिं विहण्डिउ धम्मज्झाणु पहाणु तोऽवि तुह णाह ! ण खण्डिउ ॥ ३३ ॥
खुहियकयन्तसमाणु फुरियभासुरकत्तियकरु दीहरदसणकरालवयणु तिहुयणह भयंकरु ।
विरइउ गुरुवेयालु तेण तणु तुज्झ कयत्थिउ तुह मणु तोऽवि न वीर ! धीर ! उम्मग्गि पत्थिउ ॥ ३४ ॥
सक्करेणुहिं निविडघाउ खरमारुइं ताडिउ मण्डलिवाइं कुलालचक्क जिह अङ्गु भमाडिउ ।
तेहिं न खोभिउ वीर ! तंसि न य दुट्ठभुयङ्गिहिं खोहिज्जइ केसरिकिसोरु किं कैंहिं वि कुरङ्गिहिं ॥ ३५ ॥
पुण गयणग्गह कालचक्कु सिरिमुक्कु सुकठिण गिरिगुरु तेण सुतिक्खधारु सुरनरह अणिट्ठिणं ।
तसु घाएण तुह जाणु जाव तणु धरणिहिं खुत्तउ चलिउ न चित्तु समाहिमग्गि पसरन्तु निरुत्तउ ॥ ३६ ॥
विहरिउ तणु छम्मासु जाव बहुविहउवसग्गेहिं झाणभङ्गु पारद्धु वीर ! तुह णेगेहिं मग्गेहिं ।

१ व—°रण । २ अ—वेव्भु° । ३ अ—गयणि । ४ व—°राव° । ५ अ—कहि । ६ व—ढेण । ७ व—°ढ्ढेण । ८ व—°णिहि ।

तणु संछाइउ बहलधूलिसंभारनिवाइण खण्डिउ तेण पयण्डतुण्डउड्डुंसनिकाइण ।
पीवरनउलन्दुरोहिं दीहदाढग्गेहिं वियलिउ तहवि समाहिहि बद्धलक्खु तुह चित्तु न तरलिउ ॥ ३१ ॥
दुट्ठपिपीलियकुलिसतुण्डघेइल्लमहिल्लिय केसरिकन्धररोमवन्नविच्छुयगणपेल्लिय ।
छिन्दिउ भिन्दिउ डसिउ तेहिं तुह देहु करालिउ सुहज्झाणह सोडीर वीर ! मणु तुज्झ न चालिउ ॥ ३२ ॥
सुण्डाडण्डेण लेवि गयणि तुह तणु उल्लालिउ पहणिउ दन्तग्गेहिं गैएण महियलि अप्फालिउ ।
घोरघुरुक्कारॉविरयघरूवेहिं विहणिउ धम्मज्झाणु पहाणु तोऽवि तुह णाह ! ण खण्डिउ ॥ ३३ ॥
खुड्डियकयन्तसमाणु फुरियभासुरकत्तियकरु दीहरदसणकरालवयणु तिहुयणह भयंकरु ।
विरइउ गुरुवेयालु तेण तणु तुज्झ कयत्थिउ तुह मणु तोऽवि न वीर ! धीर ! उम्मग्गि पत्थिउ ॥ ३४ ॥
सक्करेणुहिं निविडघाउ खरमारुइं ताडिउ मण्डलिवाइं कुलालचक्क जिह अङ्गु भमाडिउ ।
तेहिं न खोभिउ वीर ! तंसि न य दुट्ठभुयङ्गिहिं खोहिज्जइ केसरिकिसोरु किं कैहिं वि कुरङ्गिहिं ॥ ३५ ॥
पुण गयणग्गह कालचक्कु सिरिमुक्कु सुरुट्ठिण गिरिगुरु तेण सुतिक्खधारु सुरनरह अणिट्ठिणँ ।
तसु घाएण तुह जाणु जाव तणु धरणिहिं खुत्तउ चलिउ न चित्तु समाहिमग्गि पसरन्तु निरुत्तउ ॥ ३६ ॥
विहरिउ तणु छम्मासु जाव बहुविहउवसग्गेहिं झाणभङ्गु पारद्धु वीर ! तुह णेगेहिं मग्गेहिं ।

१ व—°रण । २ अ—वेव्भु° । ३ अ—गयणि । ४ व—°राव° । ५ अ—कहिं । ६ व—ट्ठेण । ७ व—°ट्ठेण । ८ व—°णिहि ।

तणु संछाइउ बहलधूलिसंभारनिवाइण खण्डिउ तेण पयण्डतुण्डउड्डुंसन्निकाइण ।
पीवरनउलुन्दुरोहिं दीहदाढग्गेहिं वियलिउ तहवि समाहिहि बद्धलक्खु तुह चित्तु न तरलिउ ॥ ३१ ॥
दुट्ठपिपीलियकुलिसतुण्डघेइल्लमहिल्लिय केसरिकन्धररोमवन्नविच्छुयगणपेल्लिय ।
छिन्दिउ भिन्दिउ डसिउ तेहिं तुह देहु करालिउ सुहज्झाणह सोडीर वीर ! मणु तुज्झ न चालिउ ॥ ३२॥
सुण्डाडण्डेण लेवि गयणि तुह तणु उल्लालिउ पहणिउ दन्तग्गेहिं गैएण महियलि अप्फालिउ ।
घोरघुरुक्काराविवग्घरूवेहिं विहणिडउ धम्मज्झाणु पहाणु तोऽवि तुह णाह ! ण खण्डिउ ॥ ३३ ॥
खुहियकयन्तसमाणु फुरियभासुरकत्तियकरु दीहरदसणकरालवयणु तिहुयणह भयंकरु ।
विरइउ गुरुवेयालु तेण तणु तुज्झ कयत्थिउ तुह मणु तोऽवि न वीर ! धीर ! उम्मग्गि पत्थिउ ॥ ३४ ॥
सक्करेणुहिं निविडघाउ खरमारुइं ताडिउ मण्डलिवाइं कुलालचक्क जिह अङ्गु भमाडिउ ।
तेहिं न खोभिउ वीर ! तंसि न य दुट्ठभुयङ्गिहिं खोहिज्जइ केसरिकिसोरु किं केहिं वि कुरङ्गिहिं ॥ ३५ ॥
पुण गयणग्गह कालचक्कु सिरिमुक्कु सुरुट्ठिण गिरिगुरु तेण सुतिक्खधारु सुरनरह अणिट्ठिण ।
तसु घाएण तुह जाणु जाव तणु धरणिहिं खुत्तउ चलिउ न चित्तु समाहिमग्गि पसरन्तु निरुत्तउ ॥ ३६ ॥
विहरिउ तणु छम्मासु जाव बहुविहउवसग्गेहिं झाणभङ्गु पारद्धु वीर ! तुह णेगेहिं मग्गेहिं ।

१ व—°रण । २ अ—वेव्मु° । ३ अ—गयणि । ४ व—°राव° । ५ अ—कहि । ६ व—ट्ठेण । ७ व—°ट्ठेण । ८ व—°णिहि ।

तणु संछाइउ बहलधूलिसंभारनिवाइण खण्डिउ तेण पयण्डतुण्डउड्डंसन्निकाइण ।
पीवरनउलन्दुरोहिं दीहदाढग्गेहिं वियलिउ तहवि समाहिहि बद्धलक्खु तुह चित्तु न तरलिउ ॥ ३१ ॥
दुट्ठपिपीलियकुलिसतुण्डघेइल्लमहिल्लिय केसरिकन्धररोमवन्नविच्छुयगणपेल्लिय ।
छिन्दिउ भिन्दिउ डसिउ तेहिं तुह देहु करालिउ सुहज्झाणह सोडीर वीर ! मणु तुज्झ न चालिउ ॥३२॥
सुण्डादण्डेण लेवि गयणि तुह तणु उल्लालिउ पहणिउ दन्तग्गेहिं गैएण महियलि अप्फालिउ ।
घोरगुरुक्कारविवरघरुवेहिं विहण्डिउ धम्मज्झाणु पहाणु तोऽवि तुह णाह ! ण खण्डिउ ॥ ३३ ॥
खुडियकयन्तसमाणु फुरियभासुरकत्तियकरु दीहरदसणकरालवयणु तिहुयणह भयंकरु ।
विरइउ गुरुवेयालु तेण तणु तुज्झ कयत्थिउ तुह मणु तोऽवि न वीर ! धीर ! उम्मग्गि पत्थिउ ॥ ३४ ॥
सक्करेणुहिं निविडघाउ खरमारुइं ताडिउ मण्डलिवाइं कुलालचक्क जिह अङ्गु भमाडिउ ।
तेहिं न खोभिउ वीर ! तंसि न य दुट्ठसुयङ्गिहिं खोहिज्जइ केसरिकिसोरु किं कैहिं वि कुरङ्गिहिं ॥ ३५ ॥
पुण गयणग्गह कालचक्कु सिरिमुक्कु सुरुट्ठिण गिरिगुरु तेण सुतिक्खधारु सुरनरह अणिट्ठिणं ।
तसु घाएण तुह जाणु जाव तणु धरणिहिं खुत्तउ चलिउ न चित्तु समाहिमग्गि पसरन्तु निरुत्तउ ॥ ३६ ॥
विहरिउ तणु छम्मासु जाव बहुविहउवसग्गेहिं झाणभङ्गु पारद्धु वीर ! तुह णेगेहिं मग्गेहिं ।

१ व—°रण । २ अ—वेव्भु° । ३ अ—गयणि । ४ व—°राव° । ५ अ—कहि । ६ व—ड्ढेण । ७ व—°ड्ढेण । ८ व—°णिहि ।

जीवाइपयत्थविऊ चीवन्दणमाइधम्मकिच्चेसुं । निच्चं चिय उज्जुत्तो उदारयाईगुणजुओ य ॥ ४५ ॥

किञ्च—

जह भिक्खूणं बारस मासाईया हवन्ति पडिमाओ । तह सावयाण दंसणमाई एक्कारस[1]पडिमा ॥ ४६ ॥
दंसणवयसामाइयपोसहपडिमा अबम्भसच्चित्ते । आरम्भपेसउद्दिट्ठवज्जए समणभूए य ॥ ४७ ॥
एमाई परिभाविय जह सत्तीए य फासियप्पडिमो । सत्ताइसु मेत्ताईगुणेहिं पवरेहिं उववेओ ॥ ४८ ॥
दिट्ठो य तेण भयवं णाओ अरिहा इमो ये चरिमो त्ति । वन्दइ य पज्जुवासइ पइदियहं परमभत्तीए ॥ ४९ ॥
नाओ अ विहरणेणं मासक्खमणेण संठिओ भयवं । कत्तिगिदिवसे चिन्तइ नूणं पारिस्सई अज्ज ॥ ११५० ॥
तो[3] जइ कहमवि गेहे आगच्छइ मज्झ पुन्नजोगेणं । ता पडिलाहेमि अहं इय चिन्तिय अच्छए पउणो ॥५१॥
पउणियवरभोज्जविही भिक्खासमए य गोयरं पविसे । मत्तवरवारणगई वीरो चउमासखवणन्ते ॥ ५२ ॥
अडमाणं दट्ठूणं हरिसियहियओ य कुणइ सो चिन्तं । सत्तट्ठपयाइँ अहं समुहं गन्तुं जिणवरस्स ॥ ५३ ॥
तिपयाहिणं करिस्सं पणमिस्सं भूमिनिहियभालयलो । पडिलाभिस्सामि तओ निययकरेहिं सुभत्तीए ॥५४॥
सफलं मज्झ भविस्सइ जम्मं जीयं च माणुसत्तं च । आगच्छिस्सइ भयवं मज्झ गिहे अज्ज जइ कह वि ॥
इय जिणवरभत्तीए पइसमयसमुल्लसन्तपरिणामो । अज्जिन्तो सुहपुन्नं खवयन्तो पावकम्माइं ॥ ५६ ॥

१ त—°पेम्ि° । २ त—र । ३ त—ता ।

जीवाइपयत्थविऊ चीवन्दणमाइधम्मकिच्चेसुं । निच्चं च्चिय उज्जुत्तो उदारयाईगुणजुओ य ॥ ४५ ॥

किञ्च—

जह भिक्खूणं बारस मासाईया हवन्ति पडिमाओ । तह सावयाण दंसणमाई एक्कारस पडिमा ॥ ४६ ॥
दंसणवयसामाइयपोसहपडिमा अबम्भसचित्ते । आरम्भपेसउद्दिट्ठवज्जए समणभूए य ॥ ४७ ॥
एमाई परिभाविय जह सत्तीए य फासियप्पडिमो । सत्ताइसु मेत्ताईगुणेहिं पवरेहिं उववेओ ॥ ४८ ॥
दिट्ठो य तेण भयवं णाओ अरिहा इमो ये चरिमो त्ति । वन्दइ य पज्जुवासइ पइदियहं परमभत्तीए ॥ ४९ ॥
नाओ अ विहरणेणं मासक्खमणेण संठिओ भयवं । कत्तिगिदिवसे चिन्तइ नूणं पारिस्सई अज्ज ॥ ११५० ॥
तो[3] जइ कहमवि गेहे आगच्छइ मज्झ पुन्नजोगेणं । ता पडिलाहेमि अहं इय चिन्तिय अच्छए पउणो ॥५१॥
पउणियवरभोज्जविही भिक्खासमए य गोयरं पविसे । मत्तवरवारणगई वीरो चउमासखवणन्ते ॥ ५२ ॥
अडमाणं दट्ठूणं हरिसियहियओ य कुणइ सो चिन्तं । सत्तट्ठपयाइँ अहं समुहं गन्तुं जिणवरस्स ॥ ५३ ॥
तिपयाहिणं करिस्सं पणमिस्सं भूमिनिहियभालयलो । पडिलाभिस्सामि तओ निययकरेहिं सुभत्तीए ॥५४॥
सफलं मज्झ भविस्सइ जम्मं जीयं च माणुसत्तं च । आगच्छिस्सइ भयवं मज्झ गिहे अज्ज जइ कह वि ॥
इय जिणवरभत्तीए पइसमयसमुल्लसन्तपरिणामो । अज्जिन्तो सुहपुन्नं खवयन्तो पावकम्माइं ॥ ५६ ॥

चित्तियधवलहरेसुं गवक्खसारेसु केइ निवसन्ति । अन्ने उ तणकुडीरे नीए थिलधूलिकलियम्मि ॥ ६८ ॥
वरभोज्जखज्जगविही सव्वरसं केइ एत्थ भुञ्जन्ति । अन्ने कुलत्थकोद्दवकूरम्बिलमाइ न लहन्ति ॥ ६९ ॥
पट्टंसुयाइपवरे महग्घवत्थे य केइ परिहन्ति । अन्ने उ जिन्नकम्बलिडण्डियखण्डाइं निवसन्ति ॥ ११७० ॥
मणिकञ्चणछुरियासु य सेज्जासुं पवरतूलिकलियासुं । एगे सुयन्ति अन्ने खडसत्थरयं पि न लहन्ति ॥ ७१ ॥
करितुरयरहाईसुं एगे गच्छन्ति पवरजाणेसुं । अन्नेणुवाहण चिय ढणक्कयं [2]देन्ति फुट्टपया ॥ ७२ ॥
पाहाउयसद्देहिं केइ वि उज्झ(ट्ठ)न्ति गीयसद्देहिं । अन्ने अरन्नवासी सिंयालरावेहिँ जग्गन्ति ॥ ७३ ॥
अन्तेउरमेगेसिं रूवाइजुयं वियक्खणविणीयं । अन्ने निम्महिल चिय दुम्महिला अहव जायन्ति ॥ ७४ ॥

तथाहि—

आलत्तावि न भासइ भिउडिं काउं व देइ उल्लावं । अज्जाघरघण्टा इव छिक्का सुइरं कणकणेइ ॥ ७५ ॥
एगे चाई भोगी अन्ने देहि त्ति जम्पिणो रङ्का । नग्गुग्घाडा अवरे करेन्ति कम्माइँ परगेहे ॥ ७६ ॥
सिसिरे गमन्ति रयणिं वरपाउरणेहिँ पाउया एगे । अन्ने देसउडीए वायन्ति उ दन्तवीणाओ ॥ ७७ ॥
केसिंचि कुलुद्धरणा धम्मत्थपरा हवन्ति वरपुत्ता । अन्नेसिं वहुयाओ दुच्छरहण्डाओं धूयाओ ॥ ७८ ॥
निसुणन्ति केइ निच्चं जिउ देव! महापहु! त्ति वयणाइं । अन्ने मदिट्ठ! पाविट्ठ! फिट्ट इय घरिणिमाईणं ॥ ७९ ॥

---

१ व–°कुद्द° । २ व–दिन्ति । ३ व–सीयालरवेहि । ४ अ–काउं व । ५ व–मोइ । ६ व–अन्ने ।

चित्तियधवलहरेसुं गवक्खसारेसु केइ निवसन्ति। अन्ने उ तणकुडीरे नीए यिलधुलिकलियम्मि ॥ ३८ ॥
वरभोज्जखज्जगविही सव्वरसं केइ एत्थ भुञ्जन्ति। अन्ने कुलत्थकोद्दवकूरम्बिलमाइ न लहन्ति ॥ ३९ ॥
पट्टंसुयाइपवरे महग्घवत्थे य केइ परिहन्ति। अन्ने उ जिन्नकम्बलिडणिडयखण्डाइं निवसन्ति ॥ ११७० ॥
मणिकञ्चणछुरियासु य सेज्जासुं पवरतूलिकलियासुं। एगे सुयन्ति अन्ने खडसत्थरयं पि न लहन्ति ॥ ७१ ॥
करितुरयरहाईसुं एगे गच्छन्ति पवरजाणेसुं। अन्नेणुवाहण चिय ढणकयं देन्ति फुट्टपया ॥ ७२ ॥
पाहाउयसद्देहिं केइ वि उज्झ(ट्ठ)न्ति गीयसद्देहिं। अन्ने अरन्नवासी सियालरावेहिँ जग्गन्ति ॥ ७३ ॥
अन्तेउरमेगेसिं रूवाइजुयं वियक्खणविणीयं। अन्ने निम्महिल चिय दुम्महिला अहव जायन्ति ॥ ७४ ॥

तथाहि—

आलत्तावि न भासइ भिउडिं काँउं व देइ उल्लावं। अज्जाघरघण्टा इव छिक्का सुइरं कणकणेइ ॥ ७५ ॥
एगे चाई भोगी अन्ने देहि त्ति जम्पिणो रङ्का। नग्गुग्घाडा अवरे करेन्ति कम्माइँ परगेहे ॥ ७६ ॥
सिसिरे गमन्ति रयणिं वरपाउरणेहिँ पाउया एगे। अन्ने देसउडीए वायन्ति उ दन्तवीणाओ ॥ ७७ ॥
केसिञ्चि कुलुद्धरणा धम्मत्थपरा हवन्ति वरपुत्ता। अन्नेसिं बहुयाओ दुच्छरहण्डाओं धूयाओ ॥ ७८ ॥
निसुणन्ति केइ निच्चं जिउ देव! महापहु! त्ति वयणाइं। अन्ने मदिट्ठ! पाविट्ठ! फिट्ट इय घरिणिमाईणं ॥ ७९ ॥

१ व–॰कुद्द॰। २ व–दिन्ति। ३ व–सीयालरवेहि। ४ अ–काउं व। ५ व–भोइ। ६ व–अन्ने।

मज्झिमवयपत्तो सो धम्मत्थी पुच्छिउं सयणवग्गं । दारुमयं चउपुडगं पडिग्गहं कारवेऊणं ॥ ९१ ॥
पडिवन्नो पव्वज्जं पाणायामं अभिग्गहं गेण्हे । जावज्जीवं छट्ठंछट्ठेण तवं करिस्सामि ॥ ९२ ॥
पारणए पुण पढमे पुडए जं पडइ भिक्खचरियाए । तं पहियाणं दोच्चे वायससुणगाइयाणं च ॥ ९३ ॥
तच्चे य जलयराणं दायव्वं मच्छकच्छभाईणं । जं पुण चउत्थपुडए तं भुञ्जिस्सामि सयमेव ॥ ९४ ॥
कुणमाणस्स य एवं बारसवासा उ तस्स वोलीणा । अन्ते तवसुसियङ्गो पच्चक्खियभत्तपाणो उ ॥ ९५ ॥
पाओवगमनिवेत्तो दिट्ठा केट्ठे जणे य खामेत्ता । अच्छइ समाहिचित्तो मासियसंलेहणाज्झुसिओ ॥ ९६ ॥
कालं काऊण तओ उववन्नो चमरचञ्चनामाए । असुराण पुरवरीए चमरो नामेण असुरिन्दो ॥ ९७ ॥
सीहासणे निसन्नो सोहाभावेण ओहिणा उड्ढं । सोहम्मगयं सक्कं पासइ सुरभडसहामज्झे ॥ ९८ ॥
तं दट्ठुमासुरुत्तो अप्पत्थियपत्थियाइगुणजुत्तो । को एस सुहं चेट्ठइ अवमन्नन्तो तिणं व जगं ॥ ९९ ॥
पुच्छइ य निए देवे उड्ढं को एस रिद्धिमयमत्तो । चिट्ठइ मम सीसोवरि तेऽवि य साहेन्ति पञ्जलिया ॥१२००॥
एसोऽवि देवराया सामी सोहम्मवासिदेवाणं । पडिवक्खमहणपच्चलवज्जधरो अतुलबलरिद्धी ॥ १ ॥
तं सोउं सुद्धयरं परिकुविओ भणइ अज्ज टालेमि । नियसुयपरक्कमेणं विलसन्तो सुरवराण सिरिं ॥ २ ॥
असुराणवि एस पहू हवेज्ज अहवा अहं सुराणं पि । एक्कम्मि न मायन्ति य पडियारे दोन्नि खग्गाइं ॥ ३ ॥

१ अ–गेण्ह । २ व–°वन्नो । ३ अ–°गट्ठे । ४ व–°गेत्तो । ५ व–चिट्ठ° । ६ व–°ण य । ७ व–नियय दे° ८ व–साहि° । ९ व–हु ।

मज्झिमवयपत्तो सो धम्मत्थी पुच्छिउं सयणवग्गं । दारुमयं चउपुडगं पडिग्गहं कारवेऊणं ॥ ९१ ॥
पडिवन्नो पव्वज्जं पाणायामं अभिग्गहं गेण्हे । जावज्जीवं छट्ठंछट्ठेण तवं करिस्सामि ॥ ९२ ॥
पारणए पुण पढमे पुडए जं पडइ भिक्खचरियाए । तं पहियाणं दोच्चे वायससुणगाइयाणं च ॥ ९३ ॥
तच्चे य जलयराणं दायव्वं मच्छकच्छभाईणं । जं पुण चउत्थपुडए तं भुञ्जिस्सामि सयमेव ॥ ९४ ॥
कुणमाणस्स य एवं वारसवासा उ तस्स वोलीणा । अन्ते तवसुसियङ्गो पच्चक्खियभत्तपाणो उ ॥ ९५ ॥
पाओवगमनिविट्ठो दिट्ठा केई जणे य खामेत्ता । अच्छइ समाहिचित्तो मासियसंलेहणाज्झुसिओ ॥ ९६ ॥
कालं काऊण तओ उववन्नो चमरचञ्चनामाए । असुराण पुरवरीए चमरो नामेण असुरिन्दो ॥ ९७ ॥
सीहासणे निसन्नो सोहम्मावेण ओहिणा उड्ढं । सोहम्मगयं सक्कं पासइ सुरमण्डसहामज्झे ॥ ९८ ॥
तं दट्ठुमासुरुत्तो अप्पत्थियपत्थियाइगुणजुत्तो । को एस सुहं चेट्ठइ अवमन्नन्तो तिणं च जगं ॥ ९९ ॥
पुच्छइ य निए देवे उड्ढं को एस रिद्धिमयमत्तो । चिट्ठइ मम सीसोवरि तेऽवि य साहेन्ति पञ्जलिया ॥१२००॥
एसोऽवि देवराया सामी सोहम्मवासिदेवाणं । पडिवक्खमहणपचलवज्जधरो अतुलबलरिद्धी ॥ १ ॥
तं सोउं सुट्ठुयरं परिकुविओ भणइ अज्ज टालेमि । नियभुयपरक्कमेणं विलसन्तो सुरवराण सिरिं ॥ २ ॥
असुराणवि एस पहू हवेज्ज अहवा अहं सुराणं पि । एक्कम्मि न मायन्ति य पडियारे दोन्नि खग्गाइं ॥ ३ ॥

१ अ—गेण्ह । २ व—°वन्नो । ३ अ—°मट्ठे । ४ व—°गेचो । ५ व—चिट्ठ° । ६ व—ण य । ७ व—नियपदे° ८व—साहि° । ९ व—हु ।

मज्झिमवयपत्तो सो धम्मत्थी पुच्छिउं सयणवग्गं । दारुमयं चउपुडगं पडिग्गहं कारवेऊणं ॥ ९१ ॥
पडिवन्नो पव्वज्जं पाणायामं अभिग्गहं गेण्हे[1] । जावज्जीवं छट्ठंछट्ठेण तवं करिस्सामि ॥ ९२ ॥
पारणए पुण पढमे पुडए जं पडइ भिक्खचरियाए । तं पहियाणं दोच्चे वायससुणगाइयाणं च ॥ ९३ ॥
तच्चे य जलयराणं दायव्वं मच्छकच्छभाईणं । जं पुण चउत्थपुडए तं भुञ्जिस्सामि सयमेव ॥ ९४ ॥
कुणमाणस्स य एवं बारसवासा उ तस्स वोलीणा । अन्ते तवमुसियङ्गो पच्चक्खियभत्तपाणो उ ॥ ९५ ॥
पाओवगमनिवन्नो[2] दिट्ठा कट्ठे[3] जणे य खामेत्तो[4] । अच्छइ समाहिचित्तो मासियसंलेहणाज्झुसिओ ॥ ९६ ॥
कालं काऊण तओ उववन्नो चमरचञ्चनामाए । असुराण पुरवरीए चमरो नामेण असुरिन्दो ॥ ९७ ॥
सीहासणे निसन्नो सोहाभावेण ओहिणा उड्ढं । सोहम्मगयं सक्कं पासइ सुरभडसहामज्झे ॥ ९८ ॥
तं दट्ठुमासुरुत्तो अप्पत्थियपत्थियाइगुणजुत्तो । को एस सुहं चेट्ठइ[5] अवमन्नन्तो तिणं व जगं ॥ ९९ ॥
पुच्छइ य निए[6] देवे उड्ढं को एस रिद्धिमयमत्तो । चिट्ठइ मम सीसोवरि तेऽवि य साहेन्ति[8] पञ्जलिया ॥१२००॥
एसोऽवि[9] देवराया सामी सोहम्मवासिदेवाणं । पडिवक्खमहणपच्चलवज्जधरो अतुलबलरिद्धी ॥ १ ॥
तं सोउं सुट्ठुयरं परिकुविओ भणइ अज्ज टालेमि । नियभुयपरक्कमेणं विलसन्तो सुरवराण सिरिं ॥ २ ॥
असुराणवि एस पहू हवेज्ज अहवा अहं सुराणं पि । एक्कम्मि न मायन्ति य पडियारे दोन्नि खग्गाइं ॥ ३ ॥

१ अ–गेण्ह । २ व–°वन्नो । ३ अ–°मट्ठे । ४ व–°मेत्तो । ५ व–चिट्ठ° । ६ व–°ण य । ७ व–नियय दे° ८ व–साहि° । ९ ज–हु ।

मज्झिमवयपत्तो सो धम्मत्थी पुच्छिउं सयणवग्गं । दारुमयं चउपुडगं पडिग्गहं कारवेऊणं ॥ ९१ ॥
पडिवन्नो पव्वज्जं पाणायामं अभिग्गहं गेण्हे । जावज्जीवं छट्ठंछट्ठेण तवं करिस्सामि ॥ ९२ ॥
पारणए पुण पढमे पुडए जं पडइ भिक्खचरियाए । तं पहियाणं दोज्जे वायससुणगाइयाणं च ॥ ९३ ॥
तच्चे य जलयराणं दायव्वं मच्छकच्छभाईणं । जं पुण चउत्थपुडए तं भुञ्जिस्सामि सयमेव ॥ ९४ ॥
कुणमाणस्स य एवं वारसवासा उ तस्स वोलीणा । अन्ते तवसुसियङ्गो पच्चक्खियभत्तपाणो उ ॥ ९५ ॥
पाओवगमनिवेत्तो दिट्ठा रुट्ठे जणे य खामेत्तों । अच्छइ समाहिचित्तो मासियसंलेहणाज्झुसिओ ॥ ९६ ॥
कालं काऊण तओ उववन्नो चमरचञ्चनामाए । असुराण पुरवरीए चमरो नामेण असुरिन्दो ॥ ९७ ॥
सीहासणे निसन्नो सोहाभावेण ओहिणा उड्ढं । सोहम्मगयं सक्कं पासइ सुरभडसहामज्झे ॥ ९८ ॥
तं दट्ठुमासुरुत्तो अप्पत्थियपत्थियाइगुणजुत्तो । को एस सुहं चेट्ठइ अवमन्नन्तो तिणं व जगं ॥ ९९ ॥
पुच्छइ य निए देवे उड्ढं को एस रिद्धिमयमत्तो । चिट्ठइ मम सीसोवरि तेऽवि य साहेन्ति पञ्जलिया ॥१२००॥
एसोऽवि देवराया सामी सोहम्मवासिदेवाणं । पडिवक्खमहणपच्चलवज्जधरो अतुलबलरिद्धी ॥ १ ॥
तं सोउं सुट्ठुयरं परिकुविओ भणइ अज्ज टालेमि । नियभुयपरक्कमेणं विलसन्तो सुरवराण सिरिं ॥ २ ॥
असुराणवि एस पहू हवेज्ज अहवा अहं सुराणं पि । एक्कम्मि न मायन्ति य पडियारे दोन्नि खग्गाइं ॥ ३ ॥

१ अ–गेण्ह । २ व–°वन्नो । ३ अ–°मट्ठे । ४ व–°मेत्तो । ५ व–चिट्ठ° । ६ व–ण य । ७ व–निययदे° ८ व–साहि° । ९ व–ह ।

तओ य—

अमिमसिकज्जलवन्नं विगरालं सुरनराण तासणयं । जोयणसयसाहस्सं विउव्वए भीसणं रूवं ॥ १६ ॥
घेत्तूण महाफरिहं गज्जइ उल्ललइ कुणइ हक्काओ । दलइ य भूमिचवेडं करेइ पयदद्दरं घोरं ॥ १७ ॥
सीहो व नदइ तुरओ व हेसए गुलुगुलेइ हत्थि व्व । अङ्गुट्ठअङ्गुलीए मुहं तिरिच्छं विडम्बेइ ॥ १८ ॥
खोहन्तो अहलोगं कम्पेमाणो य मेइणीपीढं । फोडेमाणो व्व नहं पकरेन्तो घणरयंग्घायं ॥ १९ ॥
तमुकायगज्जिविज्जं वुट्ठिं च कुणन्तओ समुप्पइओ । तासन्तो वणचरए जोइसिए दुहवि भयमाणो ॥ १२२० ॥
पत्तो सहं सुहम्मं एगं पायं सहाएँ मज्झम्मि । बीयं च वेइयाए काउं इय भणिउमाढत्तो ॥ २१ ॥
भो भो सक्का सामाणिया! य भो आयरक्खदेवा! य । सुमरह सा सुररिद्धी भुत्ता जा एत्तियं कालं ॥ २२ ॥
अज्जं महेमि अज्जं वहेमि सग्गाओ अज्ज टालेमि । अहवावि भिच्चभावं पडिवज्जह मज्झ सव्वेऽवि ॥ २३ ॥
चमरम्मि वि पपरोक्खे तुम्हं पि पहुत्तणं इमं आसि । रविविरहे ससिणोऽवि हु फुरइ पयावो नहयलम्मि ॥
संपइ सक्क मोत्तुं सुररिद्धी संकमेउ चमरम्मि । अमरवहू तौ य इमा तस्सेवाराहगा होन्तु ॥ २५ ॥
सुरजोहावि हु चमरं समागयं पेच्छिऊण संभन्ता । दुव्वयणभासणेण य अमरिसिया भणिउमाढत्ता ॥२६॥
भो चमरा! कोऽसि तुमं भट्ठो भमिओ य किन्न उम्मत्तो । किं तं वाउत्तारिओ जं पलवसि इय विरुद्धाइं॥२७॥

१ व-°काए° । २ व-°रवु° । ३ व-इइं । ४ व-तो । ५ अ-होंतु । ६ व-°यंत° ।

तओ य—

अत्तिमसिकज्जलवन्नं विगरालं सुरनराण तासणयं । जोयणसयसाहस्सं विउव्वए भीसणं रूवं ॥ १६ ॥
घेत्तूण महाफरिहं गज्जइ उल्ललइ कुणइ हक्काओ । दलइ य भूमिचवेडं करेइ पयदद्दरं घोरं ॥ १७ ॥
सीहो व नदइ तुरओ व हेसए गुलगुलेइ हत्थि व्व । अङ्गुट्ठअङ्गुलीए मुहं तिरिच्छं विडम्बेइ ॥ १८ ॥
खोहन्तो अहलोगं कम्पेमाणो य मेइणीपीढं । फोडेमाणो व्व नहं पकरेन्तो घणरयंग्घायं ॥ १९ ॥
तमुकायगज्जिविज्जं वुट्ठिं च कुणन्तओ समुप्पइओ । तासन्तो वणचरए जोइसिए दुहवि भयमाणो ॥ १२२० ॥
पत्तो सहं सुहम्मं एगं पायं सहाएँ मज्झम्मि । बीयं च वेइयाए काउं इय भणिउमाढत्तो ॥ २१ ॥
भो भो सक्का सामाणिया ! य भो आयरक्खदेवा ! य । सुमरह सा सुररिद्धी भुत्ता जा एत्तियं कालं ॥ २२ ॥
अज्ज महेमि अज्जं वहेमि सग्गाओ अज्ज टालेमि । अहवावि भिच्चभावं पडिवज्जह मज्झ सव्वेऽवि ॥ २३ ॥
चमरम्मि वि प्परोक्खे तुम्हं पि पहुत्तणं ईमं आसि । रविविरहे ससिणोऽवि हु फुरइ पयावो नहयलम्मि ॥
संपइ सक्कं मोत्तुं सुररिद्धी संकमेउ चमरम्मि । अमरवहू ताँ य इमा तस्सेवाराहगा होन्तु ॥ २५ ॥
सुरजोहावि हु चमरं समागयं पेच्छिऊण संभन्ता । दुव्वयणभासणेण य अमरिसिया भणिउमाढत्ता ॥२६॥
भो चमरा ! कोऽसि तुमं मुक्को भमिओ य किन्न उम्मत्तो । किं तं वाउत्तारिओ जं पलवसि इय विरुद्धाइं॥२७॥

१ ब—॰कां॰ । २ ब—॰चु॰ । ३ ब—इइं । ४ ब—तो । ५ अ—होतु । ६ ब—॰यंत॰ ।

तिपयाहिणं च काउं वन्दइ खामइ पुणो पुणो वीरं। कहिऊण चमरपरिहववइयरमावद्धकरजुयलो ॥ १२४० ॥
मुक्कोऽसि चमर! चिट्ठसु वीसत्थो भगवओ पभावेणं। इहरा चुक्को होन्तो वज्जहओ असुररिद्धीए ॥ ४१ ॥
चमर! तए साहुकयं सामीसरणं पवज्जमाणेणं। जं सव्वस्सवि सरणं एसो च्चिय वसणपत्तस्स ॥ ४२ ॥
जा यं तुमे गलगज्जी सुराण पुरओ कया विगयसङ्कं। निव्वडिया सावि तुहं सामीसरणं पवन्नस्स ॥ ४३ ॥
इय जम्पिऊण सक्को गओ सठाणं जिणं पणमिऊणं। चमरोऽवि पायवडिओ थुणइ जिणिन्दं भयविमुक्को ॥ ४४ ॥
*नाहु! अणाहहँ वीर! तं सि अप्पडिहयसासण दुट्ठोवद्दवदुट्ठरिट्ठकम्मट्ठविणासण।
सरणु अन्नु भवरन्नि देव दुक्खियहं न विज्जइ तुम्ह चेव ओलग्ग तेण इह विउसेहि किज्जइ ॥ ४५ ॥
धन्नु सलक्खणु सो कयत्थु जो पइं आराहइ वयणु करेविणु तुम्ह सग्गु अपवग्गु पसाहइ।
पइं सामिउ को लहइ एत्थु पेडिहय सव्वाँवइ फलइ पुन्नु जसु सो जि देव! चिन्तामणि पावइ ॥ ४६ ॥
वलि किज्जउ नरजम्मु तासु वलि किउ देवत्तणु भत्तिभरेण करेइ देव! जो तुह भिचत्तणु।
मह लीणह पयकमलि एक्कपत्थण णिसुणिज्जउ जह तुह दंसणु लहिमि साँमि! भवि भवि तह किज्जउ ॥ ४७ ॥
इय थोउं असुरिन्दो विलक्खवयणो गओ नियं ठाणं। भयवं पि विहरमाणो कोसम्बिपुरीए संपत्तो ॥ ४८ ॥
तत्थ सयाणियनामो राया भज्जा मिगावई तस्स। तम्मन्ती य सुगुत्तो नन्दा पुण पणइणी तस्स ॥ ४९ ॥

---

१ व-वि। २ अ-प्पडि॰। ३ अ-॰ऽभावइ। ४ व-दुलहु। * रोलावृत्तानि।

तिपयाहिणं च काउं वन्दइ खामइ पुणो पुणो वीरं । कहिऊण चमरपरिहवबइयरमावद्धकरजुयलो ॥ १२४० ॥
मुक्कोऽसि चमर ! चिट्ठसु वीसत्थो भगवओ पभावेणं । इहरा चुक्को होन्तो वज्जहओ असुररिद्धीए ॥ ४१ ॥
चमर ! तए साहुकयं सामीसरणं पवज्जमाणेणं । जं सव्वस्सवि सरणं एसो च्चिय वसणपत्तस्स ॥ ४२ ॥
जा यं तुमे गलगज्जी सुराण पुरओ कया विगयसङ्कं । निव्वडिया सावि तुहं सामीसरणं पवन्नस्स ॥ ४३ ॥
इय जम्पिऊण सक्को गओ सठाणं जिणं पणमिऊणं। चमरोऽवि पायवडिओ थुणइ जिणिन्दं भयविमुक्को ॥४४॥
*नाहु ! अणाहहँ वीर ! तं सि अप्पडिहयसासण दुट्ठोवद्दवदुट्ठरिट्ठकम्मट्टविणासण ।
सरणु अन्नु भवरन्नि देव दुक्खियहं न विज्जइ तुम्ह चेव ओलग्ग तेण इह विउसेहि किज्जइ ॥ ४५ ॥
धन्नु सलक्खणु सो कयत्थु जो पइं आराहइ वयणु करेविणु तुम्ह सग्गु अपवग्गु पसाहइ ।
पइं सामिउ को लहइ एत्थु पेडिहय सव्वोवइ फलइ पुन्नु जसु सो जि देव ! चिन्तामणि पावइ ॥ ४६ ॥
वलि किज्जउ नरजम्मु तासु वलि किउ देवत्तणु भत्तिभरेण करेइ देव ! जो तुह भिच्चत्तणु ।
मह लीणह पयकमलि एक्कपत्थण णिसुणिज्जउ जह तुह दंसणु लहिमि सॉमि ! भवि भवि तह किज्जउ ॥४७॥
इय थोउं असुरिन्दो विलक्खवयणो गओ नियं ठाणं । भयवं पि विहरमाणो कोसम्बिपुरीएँ संपत्तो ॥४८॥
तत्थ सयाणियनामो राया भज्जा मिगावई तस्स । तम्मन्ती य सुगुत्तो नन्दा पुण पणइणी तस्स ॥ ४९ ॥

---

१ व–वि । २ अ–प्पडि॰ । ३ अ–॰ब्भावइ । ४ व–दुलहु । * रोलावृत्तानि ।

णिग्गनयरीए न याणसि अभिग्गहं चावि तस्स न मुणेसि। एत्तियकालो वट्टइ अलद्धभिक्खो भमइ सामी॥६३॥
मा कुणसु देवि! अधिइं एत्तियकालं न किं पि मे नायं। संपइ सामिअभिग्गहपूरणकज्जे जइस्सामि ॥ ६४ ॥
अंबाडिओ अमच्चो अम्हं चिन्तेसि सयलकज्जाइं। जयगुरुपारणकज्जे कीस पमत्तोऽसि इय भणिउं ॥ ६५ ॥

अमच्चेण भणियं—

सामि! न नायं संपइ करेसु वायं तओ य वाहरइ। तच्चावाइं नामं ओज्झायं धम्मसत्थविउं ॥ ६६ ॥

भणिओ य—

तुह सत्थे आयारो वन्निज्जइ चेव सव्वधम्मीणं। ता मुणसु जिणाभिग्गहरूवं होऊण अभिउत्तो॥ ६७ ॥
सो भणइ निवैवियक्खा संभूयाभिग्गहा बहुपयारा। दव्वाइएहिं भणिया सत्त य पिण्डेसणा चेव ॥ ६८ ॥
असंसट्ठा उँ संसट्ठा उद्धडा अप्पलेविया। उग्गहिया पग्गहिया सत्तमुज्झियधम्मिया ॥ ६९ ॥
ता सामि! परवियक्खा न मुणिज्जइ राइणा तओ लोगो। सव्वोऽवि समाइट्ठो जत्तेणं सामपुव्वं तु॥१२७०॥
वीरजिणोऽभिग्गहिओ गोयरचरियं करेउ ता तुब्भे। सामिस्स देह भिक्खं इमिणा इमिणा पयारेण ॥७१॥
सो धम्मत्थी वियरइ बहुयपयारेहिं सत्थभणिएहिं। सामी न चेव गिण्हइ जणो य सव्वोऽवि उव्विग्गो ॥७२॥

इओ य पुव्वं—

---

१ व-°वायं। २ व-°त्थवियं। ३ व-°याविक्खा। ४ व-संसट्ठा य। ५ व-करेह। ६ अ-य।

णियनयरीए न याणसि अभिग्गहं वावि तस्स न मुणेसि। एत्तियकालो वट्टइ अलद्धभिक्खो भमइ सामी॥६३॥
मा कुणसु देवि! अधिइं एत्तियकालं न किं पि मे नायं। संपइ सामिअभिग्गहपूरणकज्जे जइस्सामि ॥ ६४ ॥
अंबाडिओ अमच्चो अम्हं चिन्तेसि सयलकज्जाइं। जयगुरुपारणकज्जे कीस पमत्तोऽसि इय भणिउं ॥ ६५ ॥

अमच्चेण भणियं—

सामि! न नायं संपइ करेमुवायं तओ य वाहरइ। तच्चावाईं नामं ओज्झायं धम्मसत्थविउं ॥ ६६ ॥

भणिओ य—

तुह सत्थे आयारो वन्निज्जइ चेव सव्वधम्मीणं। ता मुणसु जिणाभिग्गहरूवं होऊण अभिउत्तो ॥ ६७ ॥
सो भणइ नियैविवक्खा संभूयाभिग्गहा बहुपयारा। दव्वाइएहिं भणिया सत्त य पिण्डेसणा चेव ॥ ६८ ॥
असंसट्ठा उँ संसट्ठा उद्धडा अप्पलेविया। उग्गहिया पग्गहिया सत्तमुज्झियधम्मिया ॥ ६९ ॥
ता सामि! परविवक्खा न मुणिज्जइ राइणा तओ लोगो। सव्वोऽवि समाइट्ठो जत्तेणं सामपुव्वं तु ॥१२७०॥
वीरजिणोऽभिग्गहिओ गोयरचरियं करेउ ता तुब्भे। सामिस्स देह भिक्खं इमिणा इमिणा पयारेण ॥७१॥
सो धम्मत्थी वियरइ बहुयपयारेहिं सत्थभणिएहिं। सामी न चेव गिण्हइ जणो य सव्वोऽवि उव्विग्गो ॥७२॥

इओ य पुव्वं—

---

१ व-°वायं। २ व-°त्थवियं। ३ व-°याविक्खा। ४ व-संसट्ठा य। ५ व-करेह। ६ अ-य।

नीया य नियघरम्मी कासि तुमं पुच्छिया न साहेइ । रुयइ परं पव्वालियगण्डयला अंसुधाराहिं ॥ ८५ ॥
पियवयणेहिं सनेहं संठविया [1]वेट्टिय त्ति पडिवन्ना । ण्हावणभोयणवत्थाइएहिं सम्माणिया धणियं ॥ ८६ ॥
मूला य नियभज्जा भणिया धूया तुहेस ता सम्मं । तह कायव्वं जह सरइ नेव नियजणणिजणयाणं ॥ ८७ ॥
चिट्ठइ य कुलहरम्मि व सा निव्वुयमाणसा गिहे तम्मि । विणएणं सीलेण य सव्वोऽवि य रञ्जिओ लोगो ॥
गिहवासी पुरवासी भणइ अहो ! सीलचन्दणा एसा । तो तीएँ बीयनामं संजायं चन्दण त्ति फुडं ॥ ८९ ॥
एवं वचइ कालो मूला पुण मच्छिरिज्जए हियए । तीए उवरि धणावहबहुमाणं पेच्छमाणी उ ॥ १२९० ॥

चिन्तइ य—

सव्वोऽवि जणो पायं अहिणववत्थुम्मि कुणइ अणुरायं । चिरपरिचियमवधीरइ ता जइ एसो इमं भज्जं ॥
कुणइ गुरुरायरत्तो ता गेहअसामिणी अहं होमि । इय सा पावा तीए चिट्ठइ छिड्डाइँ जोयन्ती ॥ ९२ ॥
सो सेट्ठी मज्झण्हे [2]वीहीओ आगओ गिहे विजणे । एगम्मि दिणे नत्थि उ जो कोइ विसोयए चलणे ॥ ९३ ॥
ताहे चन्दणबाला उवट्ठिया तत्थ पाणियं घेत्तुं । वारन्तस्सवि य बला आढत्ता सोइउं चलणे ॥ ९४ ॥
एत्थन्तरम्मि तीए छुट्टा केसा सहावसोहिल्ला । पडिहिन्ति कद्दमे इय चिन्तेउं सेट्ठिणा झत्ति ॥ ९५ ॥
हत्थट्ठियलीलाजट्ठियाएँ धरिया तहेव बद्धा य । [3]ओलोवणोवविट्ठा मूला चिन्तेइ तं दट्ठुं ॥ ९६ ॥

१ व–विट्टिय । २ व—य । ३ गवाक्षस्था इत्यर्थः ।

नीया य नियघरम्मी कासि तुमं पुच्छिया न साहेइ । रुयइ परं पव्वालियगण्डयला अंसुधाराहिँ ॥ ८५ ॥
पियवयणेहिँ सनेहं संठविया [1]वेट्टिय त्ति पडिवन्ना । ण्हावणभोयणवत्थाइएहिँ सम्माणिया धणियं ॥ ८६ ॥
मूला य नियय भज्जा भणिया धूया तुहेस ता सम्मं । तह कायव्वं जह सरइ नेव नियजणणिजणयाणं ॥ ८७ ॥
चिट्ठइ य कुलहरम्मि व सा निव्वुयमाणसा गिहे तम्मि । विणएणं सीलेण य सव्वोऽवि य रञ्जिओ लोगो ॥
गिहवासी पुरवासी भणइ अहो ! सीलचन्दणा एसा । तो तीएँ बीयनामं संजायं चन्दण त्ति फुडं ॥ ८९ ॥
एवं वचइ कालो मूला पुण मच्छिरिज्जए हियए । तीए उवरि धणावहबहुमाणं पेच्छमाणी उ ॥ १२९० ॥

चिन्तइ य—

सव्वोऽवि जणो पायं अहिणववत्थुम्मि कुणइ अणुरायं । चिरपरिचियमवधीरइ ता जइ एसो इमं भज्जं ॥
कुणइ गुरुरायरत्तो ता गेहअसामिणी अहं होमि । इय सा पावा तीए चिट्ठइ छिड्डाइँ जोयन्ती ॥ ९२ ॥
सो सेट्ठी मज्झण्हे वीहीओ आगओ गिहे विजणे । एगम्मि दिणे नत्थि उ जो कोइ विसोयए चलणे ॥ ९३ ॥
ताहे चन्दणबाला उवट्ठिया तत्थ पाणियं घेत्तुं । [2]वारन्तस्सवि य बला आढत्ता सोइउं चलणे ॥ ९४ ॥
एत्थन्तरम्मि तीए छुट्टा केसा सहावसोहिल्ला । पडिहिन्ति कद्दमे इय चिन्तेउं सेट्ठिणा झत्ति ॥ ९५ ॥
हत्थट्ठियलीलाजट्ठियाएँ धरिया तहेव बद्धा य । [3]ओलोवणोववेट्ठा मूला चिन्तेइ तं दट्ठुं ॥ ९६ ॥

१ व–विट्टिय । २ व–य । ३ गवाक्षस्था इत्यर्थः ।

तं दट्ठुं सुसियङ्गिं तिसभुक्खकिलामियं सुदीणमुहं । रे जीव ! सहसु कुकयकम्मफलं इय भावन्ती ॥ ७ ॥
वाहजलभरियनयणो गुरुदुक्खं पावए जलं थोवं । नियइ य भोयणजायं णत्थि य अनियबन्धनमेगं ॥ ८ ॥
कुम्मास चिय दिट्ठा न य दिट्ठं तत्थ भायणं किं पि । उस्सुगभावेणं निय सुप्पे काऊण कुम्मासा ॥ ९ ॥
पासेसु पुत्ति ! एए तुह भञ्जावेमि जाव नियलेऽहं । इय भणिय ते पणामिय लोहारघरं गओ सेट्ठी ॥ १० ॥
सा तयवत्था सुमरिय पिउगेहं हत्थिणि व्व नियजूहं । मुत्ताहलसरिसाइं रोयइ अंसूणि मुयमाणी ॥ ११ ॥
जणयविओगं पत्ता जणणीमरणं च बन्धुविरहं च । परदेसमिममवत्थं हा हा ! देवस्स परिणामो ॥ १२ ॥
तारिसकुलजायाए तारिसलीलाएँ एरिसं वसणं । ता नत्थि सा अवत्था कम्मवसा जा न संपडइ ॥ १३ ॥
एवं चिन्तेमाणी उद्धठिया गरुयदुक्खपब्भारा । पुरओ कयसुप्पा सा चिट्ठइ दारं पलोयन्ती ॥ १४ ॥
जइ कोइ एज्ज अतिही ता अट्ठमपारणं करेमि अहं । एए चिय कुम्मासे दाउमवत्थोचियं तस्स ॥ १५ ॥
एत्थन्तरम्मि सामी पत्तो पुन्नाणुभावओ तीए । सा दट्ठुं भयवन्तं खणेण जाया विगयदुक्खा ॥ १६ ॥
गुरुहरिसभरा चिन्तइ दरिद्दगेहे हिरन्नवुट्ठि व्व । संपत्तो मम भयवं कयपुन्नाए इहावसरे ॥ १७ ॥
तो सुप्पं दरिसित्ता पयमेगं काउमेलुया बाहिं । बीयं देन्तो पभणइ भयवमणुग्गहह कुम्मासे ॥ १८ ॥
पुन्नो अभिग्गहो मे दव्वाइचउव्विहोऽवि इय नाउं । कुम्मासग्गहणत्थं पसारिओ सामिणा पाणी ॥ १९ ॥

१ व–दट्ठुं तं । २ व–एव । ३ व–°क्खो पावए । ४ व–थोयं । ५ व–°सूइं । ६ व–पुरओ । ७ अ–°चिए । ८ व–°लुगा । ९ व–अन्तो ।

तं दट्ठुं सुसियङ्गिं तिसभुक्खकिलामियं सुदीणमुहं । रे जीव ! सहसु कुकयकम्मफलं इम
बाहजलभरियनयणो गुरुदुक्खं[3] पावए जलं थोवं[4] । नियइ य भोयणजायं णत्थि य अनियत्तगवक्खमेगं ॥ ८ ॥
कुम्मास चिय दिट्ठा न य दिट्ठं तत्थ भायणं किं पि । उस्सुगभावेणं निय सुप्पे काऊण कुम्मासा ॥ ९ ॥
पासेसु पुत्ति ! एए तुह भञ्जावेमि जाव नियलेऽहं । इय भणिय ते पणामिय लोहारघरं गओ सेट्ठी ॥ १० ॥
सा तयवत्था सुमरिय पिउगेहं हत्थिणि व्व नियजूहं । मुत्ताहलसरिसाइं रोयइ अंसूणि मुयमाणी ॥ ११ ॥
जणयविओगं पत्ता जणणीमरणं च बन्धुविरहं च । परदेसमिममवत्थं हा हा ! देवस्स परिणामो ॥ १२ ॥
तारिसकुलजायाए तारिसलीलाएँ एरिसं वसणं । ता नत्थि सा अवत्था कम्मवसा जा न संपडइ ॥ १३ ॥
एवं चिन्तेमाणी उद्धठिया गरुयदुक्खपब्भारा । पुरओ कयसुप्पा सा चिट्ठइ दारं पलोयन्ती ॥ १४ ॥
जइ कोइ एज्ज अतिही ता अट्ठमपारणं करेमि अहं । एए चिय कुम्मासे दाउमवत्थोचिए तस्स ॥ १५ ॥
एत्थन्तरम्मि सामी पत्तो पुन्नाणुभावओ तीए । सा दट्ठुं भयवन्तं खणेण जाया विगयदुक्खा ॥ १६ ॥
गुरुहरिसभरा चिन्तइ दरिद्दगेहे हिरन्नवुट्ठि व्व । संपत्तो मम भयवं कयपुन्नाए इहावसरे ॥ १७ ॥
तो सुप्पं दरिसित्ता पयमेगं काउमेलुया बाहिं । बीयं चेन्तो पभणइ भयवमणुग्गहेह कुम्मासे ॥ १८ ॥
पुन्नो अभिग्गहो मे दव्वाइचउव्विहोऽवि इय नाउं । कुम्मासग्गहणत्थं पसारिओ सामिणा पाणी ॥ १९ ॥

१ व–दट्ठुं तं । २ व–एव । ३ व–°क्खो पावए । ४ व–थोयं । ५ व–°सूइं । ६ व–पुरओ । ७ अ–°चिए । ८ व–°लुगा । ९ व–अन्तो ।

ता संगोवाहि तुमं परिवालसु आयरेण परमेणं । रक्खा नह नि भणिउं कल्लेउरगिहे नीया ॥ ३३ ॥
मूला भणावइएणं निच्छूढा ताडिया तह जणेणं । निन्दिज्जन्ती खिंसिज्जन्ती निगाढ्या नयरमज्झम्मि ॥ ३४ ॥
भयवं पि विहरमाणो छम्माणीगामसमागओ तस्स । बाहिं पडिमाएँ ठिओ नन्दावि कुम्मारगामे व्व ॥ ३५ ॥
गोवो सामिसमीवे गोणे मुत्तूण गओ य ते अडविं । सो आगओ निएउं पुच्छइ देवज्जगा कत्थ ॥ ३६ ॥
मज्झ चइट्ठा सामी मोणेणं चिट्ठए तओ कुविओ । कन्नेसु कडसलागा दोसु वि पक्खिवइ ता निविडा ॥ ३७ ॥
दोन्नि वि मज्झे मूलाओ भज्जए उक्खणेउ मा कोइ । कप्पं निविट्ठकाले जयन्तियं नं उच्छिणं ॥ ३८ ॥

भणियं च—

कन्नेसु तउयतत्तं गोवस्स कयं तिविट्ठुणा रन्ना । कन्नेसु वद्धमाणस्स तेण छूढा कडसलागा ॥ ३९ ॥
तित्थयरस्सवि एवं कडाण कम्माण नत्थि मोक्खो त्ति । इय मुणिय बन्धहेऊ तुब्भेहिं सेउ वज्जियव्वो त्ति ॥ ४० ॥

भावेइ य भयवं—

सयमेव कडं एयं इहइं पि अकज्जयारिणो दण्डो । अकयं कोइ न पावइ भणियं नागज्जुणेणं व्व ॥ ४१ ॥
सम्ममहियासमाणो सामी तं वेयणं विसुद्धमणो । मज्झिमपुरम्मि पत्तो सिद्धत्थो नत्थ अत्थि वणी ॥ ४२ ॥

---

१ अ—धाडिआ । २ अ—तत्थ । ३ ब—सग । ४ ब—कयं । ५ ब—डण्डो । ६ अ—°हुणं त ।

ता संगोवाहि तुमं परिवालसु आयरेण परमेणं । रत्ता नइ नि भणिउं कन्नेउ रगिहे नीया ॥ ३३ ॥
सूला भणावइेणं निच्छूढा तोडिया तइ जणेणं । निन्दिज्जा खिंसिज्जा निगोइया नयरमज्झम्मि ॥ ३४ ॥
भयवं पि विहरमाणो छम्माणीगाममागओ तस्स । बाहिं पडिमाएँ ठिओ तत्थ वि कुम्मारसालं च ॥ ३५ ॥
गोवो सामिसमीवे गोणे मुञ्चइ गया य ते अडविं । सो आगओ निएइ पुच्छइ देवज्जगा कत्थ ॥ ३६ ॥
मज्झ चइछा सामी मोणेणं चिट्ठए तओ कुविओ । कन्नेसु कडसलागा दोसु वि पक्खिवइ ता मिलिया ॥ ३७ ॥
दोन्नि वि मज्झे मूलाओ भञ्जए उक्खणेउ मा कोइ । कम्मं निविडुकाले जमज्जियं तं उक्खयियं ॥ ३८ ॥

भणियं च—

कन्नेसु तउयतत्तं गोवस्स कयं तिविट्ठुणा रन्ना । कन्नेसु कडसलागास तेण छूढा कडसलागा ॥ ३९ ॥
तित्थयरस्सवि एवं कडाण कम्माण नत्थि मोक्खो त्ति । इय सुणिय कम्महेउं जुत्तेहिं होइ न विसयलोभो त्ति ॥ ४० ॥

भावेइ य भयवं—

सयमेव कँडं एयं इहइं पि अकज्जयारिणो दंण्डो । अकयं कोइ न पावइ भगीरही नागद्वीणं च ॥ ४१ ॥
सम्ममहियासमाणो सामी तं वेयणं विसुज्झमणो । मज्झिमपुरम्मि पत्तो सिद्धत्थो तत्थ अत्थि वणी ॥ ४२ ॥

१ अ–धाडिआ । २ अ–तत्थ । ३ ब–सग । ४ ब–कयं । ५ ब–डण्डो । ६ अ–॰द्धणं च ।

दिव्वादी उवसग्गा सम्मं अहियासिया इय जिणेणं । पडिकूला अणुकूला छउमत्थाणन्तकालम्मि ॥ २५ ॥

छउमत्थकालमाणं पुण इमं—

बारसवासा सद्धा पक्खो तवचारणादिणेहि इमो । वीरस्स दिक्खदिणसंजुओ य छउमत्थपरियाओ ॥ २६ ॥
एयम्मि य परियाए जो अणुचिन्नो तवो जिणवरेणं । वीरेण भगवया तं कहिज्जमाणं निसामेह ॥ २७ ॥
नव चउमासियखमणे छ प्पुण दोमासिए अकासी य । बारस य मासियाइं बावत्तरि अद्धमासाइं ॥ २८ ॥
एगं पुण छम्मासं दोन्नि य तेमासियाइँ खमणाइं । अड्ढाइयमासाइं दो दोन्नि दिवड्ढमासाइं ॥ २९ ॥
दोहिं अहोरत्तेहिं भद्दप्पडिमं अकासि वीरजिणो । चउहिं च महाभद्दं दसहिं पुणो सव्वओभद्दं ॥ [1] [2] ३० ॥
पढमाए उस्सग्गो चउजामा चउदिसिं पि पत्तेयं । बीयाएँ अहोरत्तं निय तइयाएँ दिसिविभागे ॥ ३१ ॥
पंचदिवसेहिं ऊणं खमणं छम्मासियं च कासी य । गोयरचरियसमेयं घोराभिग्गहजुयं वीरो ॥ ३२ ॥
बारस य एगराइयपडिमाओ अट्ठमेण भत्तेणं । चरिमाए रयणीए काउस्सग्गोवचेयाओ ॥ ३३ ॥
दो चेव उ छट्ठ सए अउणत्तीसे अकासि जिणवसभो । कासी य निच्चभत्तं चउत्थभत्तं च न कयाइ ॥ ३४ ॥
अउणापन्नं तिन्नि य सयाणि वीरस्स पारणदिणाणं । बहुयसयाणि य आसी उक्कुडुयनिसेज्जपडिमाणं ॥ ३५ ॥
एवं तवो गुणरओ छउमत्थो विहरिउं अपडिबद्धं । घोरं परीसहचमुं अहियासिन्तो महावीरो ॥ ३६ ॥

---

१ ब–तइए दिसा° । २ ब–धीरो । ३ ब–आसी । ४ अ–°णेणं । ५ ब–°भत्तं ।

दिव्वादी उवसग्गा सम्मं अहियासिया इय जिणेणं । पडिकूला अणुकूला छउमत्थाणन्तकालम्मि ॥ २५ ॥

छउमत्थकालमाणं पुण इमं—

बारसवासा सड्ढा पक्खो तवपारणादिणेहिं इमो । वीरस्स दिवसदिणसंजुओ य छउमत्थपरियाओ ॥ २६ ॥
एयम्मि य परियाए जो अणुचिन्नो तवो जिणवरेणं । वीरेण भगवया तं कहिज्जमाणं निसामेह ॥ २७ ॥
नव चउमासियखमणे छ प्पुण दोमासिए अकासी य । बारस य मासियाइं बावत्तरि अद्धमासाइं ॥ २८ ॥
एगं पुण छम्मासं दोन्नि य तेमासियाइँ खमणाइं । अड्ढाइयमासाइं दो दोन्नि दिवड्ढमासाइं ॥ २९ ॥
दोहिं अहोरत्तेहिं भद्दप्पडिमं अकासि वीरजिणो । चउहिं च महाभद्दं दसहिं पुणो सव्वओभद्दं ॥ ३० ॥
पढमाए उस्सग्गो चउजामा चउदिसिं पि पत्तेयं । बीयाएँ अहोरत्तं तं चिय तइयाएँ दिसिदसगे ॥ ३१ ॥
पंचदिवसेहिँ ऊणं खमणं छम्मासियं च कासी य । गोयरचरियसमेयं घोराभिग्गहजुयं वीरो ॥ ३२ ॥
बारस य एगराइयपडिमाओ अट्ठमेण भत्तेणं । चरिमाए रयणीए काउस्सग्गोवचेयाओ ॥ ३३ ॥
दो चेव उ छट्ठ सए अउणत्तीसे अकासि जिणवसभो । कासी य निच्चभत्तं चउत्थभत्तं च न कयाइ ॥ ३४ ॥
अउणापन्नं तिन्नि य सयाणि वीरस्स पारणदिणाणं । बहुयसयाणि य आसी उक्कुडुयनिसेज्जपडिमाणं ॥ ३५ ॥
एवं तवो गुणरओ छउमत्थो विहरिउं अपडिबद्धं । घोरं परीसहचमुं अहियासिन्तो महावीरो ॥ ३६ ॥

---

१ ब–तइए दिसा° । २ ब–धीरो । ३ ब–आसी । ४ अ–°णेणं । ५ ब–°भद्दं ।

सुरगायण गायहिँ गेउ ताऊ किवि पढहिँ थीरु तिहुयणह सारु ।
उक्कुट्ठि नाउ केइ वि कुणन्ति जय जयहिँ देव ! केइ वि भणन्ति ॥ ७७ ॥
गज्जन्ति केइ नहिँ उच्छलन्ति किवि मयगलु नायइ गुलुगुलेन्ति ।
महिवट्टि केइ पुणु पुणु कलन्ति मयमत्त जेम केइ वि घुलन्ति ॥ ७८ ॥
अट्टट्टहाससद्दं हसन्ति रोमञ्च सव्वगत्तेहिँ वहन्ति ।
इय हरिसचेट्ठ बहुविह करेन्ति खणि अप्पुणाहिँ नहिँ संभरन्ति ॥ ७९ ॥
नच्चन्ति पवरकरणङ्कहार सुररमणिहियचोलन्नहार ।
किउ अमरिहिँ चारु समोसरणु तहिँ जिणु निविट्ठु गयजरमरणु ॥ १३८० ॥
सक्कोऽवि हट्ठतुट्ठो काऊण पयाहिणं च तिक्खुत्तो । पणमित्तु महावीरं संथुणइ सुगहिरनिग्घोसो ॥ ८१ ॥
*जय जिणेसर ! जय जयाणन्द !, जय जीवरक्खणपरम !, जय समत्थतिहुयणदिवायर ! । जय भीमभवमहण !, जय अपारकारुन्नसायर ॥
जय सिवकारण ! सिवनिलय !, वद्धमाण ! जिणइन्द ! । तिहुयणपत्थियकप्पतरु !, जय जय पणयसुरिन्द ! ८२॥

१ अ-°ढहि । २ ब-जेम्ब । ३ अ-°कर । * वस्तु रड्डा वा वृत्तम् ।

सुरगायण गायहिं गेउ तारु किवि पढंति वीरु तिहुयणइ सारु ।
उक्कुट्ठि नाउ केइ वि कुणन्ति जय जयहि देव ! केइ वि भणन्ति ॥ ७७ ॥
गज्जन्ति केइ नहि उच्छलन्ति किवि मयगलु नावइ गुलुगुलेन्ति ।
महियट्टि केइ पुणु पुणु कलन्ति मयमत्ता जेम केइ वि डुलन्ति ॥ ७८ ॥
अट्टट्टहाससद्दं हसन्ति रोमञ्च सव्वगत्तेहिं वहन्ति ।
इय हरिसचेट्ठ बहुविह करेन्ति खणि अन्नुणाहिं नहिं संभरन्ति ॥ ७९ ॥
नचन्ति पवरकरणङ्गहार सुररमणिहियथयोलन्तहार ।
किउ अमरिहिं चारु समोसरणु तहिं जिणु निविट्ठु गयजरमरणु ॥ १३८० ॥

सक्कोऽवि हट्ठतुट्ठो काऊण पयाहिणं च तिक्खुत्तो । पणमित्तु महावीरं संथुणइ सुगहिरनिग्घोसो ॥ ८१ ॥

*जय जिणेसर ! जय जयाणन्द !, जय जीवरक्खणपरम !, जय समत्थतिहुयणदिवायर ! । जय भीमभवमहण !, जय अपारकारुण्णसायर ॥

जय सिवकारण ! सिवनिलय !, वद्धमाण ! जिणइन्द ! । तिहुयणपत्थियकप्पतरु !, जय जय पणयसुरिन्द ! ॥ ८२॥

१ अ-०ढहि । २ व-जेम्व । ३ अ-०कर । * वस्तु रड्डा वा वृत्तम् ।

विण्टसंठियसुरहिगन्धह, जलथलयंरुसंभवहं, पञ्चवन्न सुरगणविमुक्किय । आजाणुउस्सेह तहिं, गन्धलुद्धभमरहं अच्चुक्किय ।
सहइ समन्ता जिणवरह वियसियकुसुमहं वुट्ठि । जिणदंसणि उप्फुल्लमुह नाइ पयासइ तुट्ठि ॥ ११ ॥
हरिसवियसियवयणणयणोहिं, हरिणोहिं सुय अइरसिण, विजियसजलजलवाहगज्जिय । अन्नाणतिमिरन्तरियसुवणभावपायडणसज्जिय ।
जिणझुणि पसरइ दसदिसिहिं, तिहुयणजणियपणाम । नं गुरुतमनिद्दोवहयजणपडिबोहणकाम ॥ १२ ॥
खीरसायरलहरिडिण्डीरपण्डुरयरसरयससिकिरणसरिसचिहुरोहसुन्दरु । माणिक्कमण्डियपवरकणयदण्डुरञ्जियपुरन्दरु ।
सुरवइकरकमलट्ठिउं चामरजुयलु ढलेइ । नावइ गुणगणु मुद्धमणु पुणु पुणु जिणह नमेइ ॥ १३ ॥
जच्चकञ्चणघडिउ मणिचित्तु, उत्तुङ्गु वित्थरपवरु, नमियमज्झु पेरन्तउज्जुरु । वहुचित्ताविच्छुरियतणु, पडिमरूवरसीहसिन्धुरु ।
सीहासणु तिहुयणगुरुहु सोहइ निरुवमकन्ति । नं रूवन्तरि मेरुगिरि धारइ तणु गुरुभत्ति ॥ १४ ॥
अब्भवज्जियगयणरविकिरणनियरो व्व परिभासुरइ, विप्फुरन्ततणुकिरणरइयंइ । नइविवरपरिसक्किरइ

१ ब–°तह° । २ अ–°सिहु । ३ अ–°दण्ड° । ४ ब–°ठियं । ५ ब–°गाण । ६ अ–°...

विण्दसंठियसुरहिगन्धड्ढ, जलथलयंरुसंभवहं, पञ्चवन्न सुरगणविमुक्किय । आजाणुउस्सेह तहिं, गन्धलु-द्धभमरहं अनुक्किय ।

सहइ समन्ता जिणवरह वियसियकुसुमहं वुट्ठि । जिणदंसणि उप्फुल्लमुह नाइ पयासइ तुट्ठि ॥ ११ ॥

हरिसवियसियवयणणयणोहिं, हरिणोहिं सुय अइरसिण, विजियसजलजलवाहगज्जिय । अन्नाणतिमिरन्तरि-यसुवणभावपायडणसज्जिय ।

जिणझुणि पसरइ दसदिसिंहिं, तिहुयणजणियपणाम । नं गुरुतमनिद्दोवहयजणपडिबोहणकाम ॥ १२ ॥

खीरसायरलहरिडिण्डीरपण्डुरयरसरयससिकिरणसरिसचिहुरोहसुन्दरु । माणिक्कमण्डियपवरकणयडण्डु-रञ्जियपुरन्दरु ।

सुरवइकरकमलट्ठिउं चामरजुयलु ढलेइ । नावइ गुणगणु मुइयमणु पुणु पुणु जिणह नमेइ ॥ १३ ॥

जवकञ्चणघडिउ मणिचित्तु, उत्तुङ्गु वित्थरपवरु, नमियमज्झु पेरन्तउद्धुरु । बहुचित्ताविछुरियतणु, पडिमरूं-वरसीहसिन्धुरु ।

सीहासणु तिहुयणगुरुहु सोहइ निरुवमकन्ति । नं रुवन्तरि मेरुगिरि धारइ तणु गुरुभत्ति ॥ १४ ॥

अब्भवज्जियगयणरविकिरणनियरो व्व परिभासुरह, विप्फुरन्ततणुकिरणरइयह । नहविवरपरिसक्किरह,

---

१ ब–°तरु° । २ अ–°सिहु । ३ अ–°दण्ड° । ४ ब–°ट्ठियं । ५ ब–°गण । ६ अ–°मण ।

...ह पुव्वेण पविसिउं वीरं । काउं पयाहिणं पुव्वदक्खिणे ठन्ति दिसिभाए ॥ २१ ॥
...इसिय भवणवन्तरदेवीओ दक्खिणेण पविसित्तु । चिट्ठन्ति दक्खिणावरदिसिम्मि तिगुणं जिणं काउं ॥ २२ ॥
अवरेण भवणवासी वन्तरजोइससुरा य अइगन्तुं । अवरोत्तरदिसिभागे ठन्ति जिणं ते नमंसित्ता ॥ २३ ॥
समहिन्दा कप्पसुरा राया नरनारिओ उत्तरेणं । पविसन्ति पणमिऊणं ठन्ति य पुव्वुत्तरदिसाए ॥ २४ ॥

अवि य—

इन्तं महिड्ढियं पणिवयन्ति ठियमवि वयन्ति पणमन्ता । नवि जन्तणा ण विकहा न परोप्परमच्छरो न भयं ॥ २५ ॥
बीयम्मि होन्ति तिरिया तइए पायारमन्तरे जाणा । पायारबहिं तिरियानि केवला मणुयमिस्सा वा ॥ २६ ॥
सव्वइ समणुगाए जुगवं चिय सव्वसंसयहराए । अमयरसमाविणीए जोयणनीहारिणीए य ॥ २७ ॥
वाणीए मणहराए कयकिच्चोऽवि हु कहेइ भव्वाणं । तित्थयरनामकम्मोदएण धम्मं महावीरो ॥ २८ ॥
धम्मत्थकाममोक्खा पुरिसत्था एत्थ होन्ति चत्तारि । धम्माओं जेण सेसा हवन्ति ता तम्मि जइयव्वं ॥ २९ ॥
पुरिसेणं बुद्धिमया, सो पुण दुविहो भवे समासेणं । पढमो य समणधम्मो सावगधम्मो भवे बीओ ॥ १४३० ॥
पव्वज्जापडिवत्ती आरम्भपरिग्गहाण चाएण । विहियाणुट्ठाणपवित्तिओं य धम्मो जईणेसो ॥ ३१ ॥
सो पुण दुप्परियल्लो[6] काउरिसाणं विवेगरहियाणं । दुद्धरपञ्चमहव्वयधारणमित्थं जओऽवस्सं ॥ ३२ ॥

१ व—०वरुत्त० । २ व—पागा० । ३ व—उ । ४ अ—०परिग्गहो य । ५ व—सा । ६ व—०परियछा । ७ व—भैरथं ।

संजयवेमाणित्थीसंजइ पुव्वेण पविसिउं वीरं। काउं पयाहिणं पुव्वदक्खिणे ठन्ति दिसिभाए ॥ २१ ॥
जोइसियभवणवन्तरदेवीओ दक्खिणेण पविसित्तु। चिट्ठन्ति दक्खिणावरदिसिम्मि तिगुणं जिणं काउं ॥ २२ ॥
अवरेण भवणवासी वन्तरजोइससुरा य अइगन्तुं। अवरोत्तरदिसिभागे ठन्ति जिणं ते नमंसित्ता ॥ २३ ॥
समहिन्दा कप्पसुरा राया नरनारिओ उईणेणं। पविसन्ति पणमिऊणं ठन्ति य पुव्वुत्तरदिसाए ॥ २४ ॥

अवि य—

इन्तं महिड्ढियं पणिवयन्ति ठियमवि वयन्ति पणमन्ता। नवि जन्तणा न विकहा न परोप्परमच्छरो न भयं ॥ २५ ॥
बीयम्मि होन्ति तिरिया तइए पायारमन्तरे जाणा। पायारवहिं तिरिया वि होन्ति केवला मणुयमिस्सा वा ॥ २६ ॥
सव्वइ समणुगाए जुगवं चिय सव्वसंसयहराए। अमयरससाविणीए जोयणनीहारिणीए य ॥ २७ ॥
वाणीए मणहराए कयकिच्चोऽवि हु कहेइ भव्वाणं। तित्थयरनामकम्मोदएण धम्मं महावीरो ॥ २८ ॥
धम्मत्थकाममोक्खा पुरिसत्था एत्थ होन्ति चत्तारि। धम्माओ जेण सेसा हवन्ति ता तम्मि जइयव्वं ॥ २९ ॥
पुरिसेणं बुद्धिमया, सो पुण दुविहो भवे समासेणं। पढमो य समणधम्मो सावयधम्मो भवे बीओ ॥ ३० ॥
पव्वज्जापडिवत्ती आरम्भपरिग्गहाण चाएण। विहियाणुट्ठाणपवित्तिओ य धम्मो जईणेसो ॥ ३१ ॥
सो पुण दुप्परियल्लो काउरिसाणं विवेगरहियाणं। दुद्धरपञ्चमहव्वयभारणमित्थं जओऽवस्सं ॥ ३२ ॥

१ व—०वरुत्त० । २ व—पागा० । ३ व—उ । ४ अ—०परिग्गहो य । ५ व—णा । ६ व—०परियल्ला । ७ व—

वुब्भन्ति नाम भारा ते च्चिय वुब्भन्ति वीसमन्तेहिं । सीलभरो वोढव्वो जावज्जीवं अविस्सामो ॥ ४४ ॥

अओ य—

विसयसुहपिवासाए अहवा वन्धवजणाणुरागेणं । अचइन्तो वावीसं परीसहे दुस्सहे सहिउं ॥ ४५ ॥
जइ न तरेज्ज विसुद्धं काउं अइदुक्करं समणधम्मं । समणोवासगधम्मं तो कुज्जा सत्तिओ मइमं ॥ ४६ ॥
पढइ पढमं च ताइं सुणेइ जाणेइ गुरुसमीवम्मि । तत्तो गिण्हइ पालइ उवओगपरो सया कालं ॥ ४७ ॥
दुविहतिविहेण पढमो दुविहं दुविहेण वीयओ होइ । दुविहं एगविहेणं एगविहं चेव तिविहेणं ॥ ४८ ॥
एगविहं दुविहेणं एक्केक्कविहेण छट्ठओ होइ । उत्तरगुणसत्तमओ अविरओ चेव अट्ठमओ ॥ ४९ ॥

सो य इमो—

पञ्च य अणुव्वयाइं गुणव्वयाइँ च होन्ति तिन्नेव । सिक्खावयाइँ चउरो सावगधम्मो दुवालसहा ॥ १४५० ॥
थूलपणासववि रई दिसिवयभोगवयणत्थदण्डो य । समइयदेसवगासियपोसहतिहिसंविभागो य ॥ ५१ ॥
वोसिरइ जहासत्तिं थूलं संकप्पओ निरवराहं । जीवं पडुच्च हिंसं जयणं च करेइ सुहुमेसु ॥ ५२ ॥
थूलमुसावायवए कन्नालियमाइपञ्चभेयं च । गुरुसंकिलेसहेऊ असच्चवयणं विवज्जेइ ॥ ५३ ॥
थूलमदत्तादाणं सचित्ताचित्तमीसविसयं च । जं इह अणत्थहेऊ तं वज्जे जावजीवाए ॥ ५४ ॥

१ व–चेय । २ व–॰सावगा॰ । ३ अ–॰प्पए ।

वुब्भन्ति नाम भारा ते चिय वुब्भन्ति वीसमन्तेहिं । सीलभरो वोढव्वो जावज्जीवं अविस्सामो ॥ ४४ ॥

अओ य—

विसयसुहपिवासाए अहवा बन्धवजणाणुरागेणं । अचइन्तो बावीसं परीसहे दुस्सहे सहिउं ॥ ४५ ॥
जइ न तरेज्ज विसुद्धं काउं अइदुक्करं समणधम्मं । समणोवासगधम्मं तो कुज्जा सत्तिओ मइमं ॥ ४६ ॥
पढइ पढमं च ताइं सुणेइ जाणेइ गुरुसमीवम्मि । तत्तो गिण्हइ पालइ उवओगपरो सया कालं ॥ ४७ ॥
दुविहतिविहेण पढमो दुविहं दुविहेण वीयओ होइ । दुविहं एगविहेणं एगविहं चेव तिविहेणं ॥ ४८ ॥
एगविहं दुविहेणं एक्केक्कविहेण छट्ठओ होइ । उत्तरगुणसत्तमओ अविरओ चेव अट्ठमओ ॥ ४९ ॥

सो य इमो—

पञ्च य अणुव्वयाइं गुणव्वयाइँ च होन्ति तिन्नेव । सिक्खावयाइँ चउरो सावगधम्मो दुवालसहा ॥ १४५० ॥
थूलपणासववि[1]रई दिसिवयभोगवयणत्थदण्डो य । समइयदेसवगासियपोसहतिहिसंविभागो य ॥ ५१ ॥
वोसिरइ जहासत्तिं थूलं संकप्पओ[2] निरवराहं । जीवं पडुच्च हिंसं जयणं च करेइ सुहुमेसु ॥ ५२ ॥
थूलमुसावायवए कन्नालियमाइपञ्चभेयं च । गुरुसंकिलेसहेऊ असच्चवयणं विवज्जेइ ॥ ५३ ॥
थूलमदत्तादाणं सचित्ताचित्तमीसविसयं च । जं इह अणत्थहेऊ तं वज्जे जावजीवाए ॥ ५४ ॥

१ व—चेय । २ व—॰सावगा॰ । ३ अ—॰प्पए ।

वुब्भन्ति नाम भारा ते चिय वुब्भन्ति वीसमन्तेहिं । सीलभरो वोढव्वो जावज्जीवं अविस्सामो ॥ ४४ ॥

अओ य—

विसयसुहपिवासाए अहवा बन्धवजणाणुरागेणं । अचइन्तो बावीसं परीसहे दुस्सहे सहिउं ॥ ४५ ॥
जइ न तरेज्ज विसुद्धं काउं अइदुक्करं समणधम्मं । समणोवासगधम्मं तो कुज्जा सत्तिओ मइमं ॥ ४६ ॥
पढइ पढमं च ताइं सुणेइ जाणेइ गुरुसमीवम्मि । तत्तो गिण्हइ पालइ उवओगपरो सया कालं ॥ ४७ ॥
दुविहतिविहेण पढमो दुविहं दुविहेण बीयओ होइ । दुविहं एगविहेणं एगविहं चेव तिविहेणं ॥ ४८ ॥
एगविहं दुविहेणं एक्केक्कविहेण छट्ठओ होइ । उत्तरगुणसत्तमओ अविरओ चेव अट्ठमओ ॥ ४९ ॥

सो य इमो—

पञ्च य अणुव्वयाइं गुणव्वयाइँ च होन्ति तिन्नेव । सिक्खावयाइँ चउरो सावगधम्मो दुवालसहा ॥ १४५० ॥
थूलपाणासवविरई दिसिवयभोगवयणत्थदण्डो य । समइयदेसवगासियपोसहअतिहिसंविभागो य ॥ ५१ ॥
वोसिरइ जहासत्तिं थूलं संकप्पओ निरवराहं । जीवं पडुच्च हिंसं जयणं च करेइ सुहुमेसु ॥ ५२ ॥
थूलमुसावायवए कन्नालियमाइपञ्चभेयं च । गुरुसंकिलेसहेऊ असच्चवयणं विवज्जेइ ॥ ५३ ॥
थूलमदत्तादाणं सचित्ताचित्तमीसविसयं च । जं इह अणत्थहेऊ तं वज्जे जावजीवाए ॥ ५४ ॥

---

१ ब—न्नेय । २ ब—॰सावगा॰ । ३ अ—॰प्पए ।

वुब्भन्ति नाम भारा ते चिय वुब्भन्ति वीसमन्तेहिं । सीलभरो वोढव्वो जावज्जीवं अविस्सामो ॥ ४४ ॥

अओ य—

विसयसुहपिवासाए अहवा बन्धवजणाणुरागेणं । अचइन्तो बावीसं परीसहे दुस्सहे सहिउं ॥ ४५ ॥
जइ न तरेज्ज विसुद्धं काउं अइदुक्करं समणधम्मं । समणोवासगधम्मं तो कुज्जा सत्तिओ मइमं ॥ ४६ ॥
पढइ पढमं च ताइं सुणेइ जाणेइ गुरुसमीवम्मि । तत्तो गिण्हइ पालइ उवओगपरो सया कालं ॥ ४७ ॥
दुविहतिविहेण पढमो दुविहं दुविहेण बीयओ होइ । दुविहं एगविहेणं एगविहं चेव तिविहेणं ॥ ४८ ॥
एगविहं दुविहेणं एक्केक्कविहेण छट्ठओ होइ । उत्तरगुणसत्तमओ अविरओ चेव अट्ठमओ ॥ ४९ ॥

सो य इमो—

पञ्च य अणुव्वयाइं गुणव्वयाइँ च होन्ति तिन्नेव । सिक्खावयाइँ चउरो सावगधम्मो दुवालसहा ॥ १४५० ॥
थूलपाणासववि[1]रई दिसिवयभोगवयणत्थदण्डो य । समइयदेसवगा[2]सियपोसहतिहिसंविभागो य ॥ ५१ ॥
वोसिरइ जहासत्ति थूलं संकप्पओ[3] निरवराहं । जीवं पडुच हिंसं जयणं च करेइ सुहुमेसु ॥ ५२ ॥
थूलमुसावायवए कन्नालियमाइपञ्चभेयं च । गुरुसंकिलेसहेऊ असच्चवयणं विवज्जेइ ॥ ५३ ॥
थूलमदत्तादाणं सचित्ताचित्तमीसविसयं च । जं इह अणत्थहेऊ तं वज्जे जावजीवाए ॥ ५४ ॥

---

१ व—°नेय । २ व—°सावगा° । ३ अ—°प्पए ।

नियमेइ उड्डुसिलकुट्टयत्तंहलखडणमाइणा वित्ती । सव्वेसिमागराणं ववहारे वोसिरेइ सया ॥ ६९ ॥
नहदन्तचमरचम्मं कच्छुरियपूइए ससुत्तीणं । मुत्ताहलसंखवराडेया य जहसत्तिओ नियमे ॥ १४७० ॥
वोसिरइ लक्खजउलोहमाइमहुमज्जलोणियाईणं । विससत्थमुसलजन्तणिउक्खलपंभिईण य वणिज्जं ॥ ७१ ॥
मणुयाण तिरिक्खाण य केसवणिज्जम्मि विक्कयं नियमे । जन्ताण वाहणं घञ्चियत्तातिलतेल्लियं वज्जे ॥ ७२ ॥
णिल्लञ्छणं च वसभाइयाण दाणं च पावकम्माणं । दवदाणं सरदहसोसणं च वज्जे असइपोसं ॥ ७३ ॥
चउहा अणत्थदण्डो अवज्झाणपमायहिंसदाणे य । पावुवएसम्मि तहा तत्थावज्झाणविसयम्मि ॥ ७४ ॥
अजरामरत्तदेसाइघोइविज्जाहरिन्दकिड्डाइ । धाउव्वायाइ असंबद्धज्झाणं विवज्जेइ ॥ ७५ ॥
वज्जइ पमायचेट्ठं परेसि खग्गाइहिंसगप्पिणणं । करिसणनिवसेवाई पावुवएसं च नो देइ ॥ ७६ ॥
सावज्जजोगवज्जणरूवं सामाइयं उभयकालं । बहुसो वावि करेज्जा समभावावट्ठिओ सड्ढो ॥ ७७ ॥

भणियं च—

जो समो सव्वभूएसु तसेसुं थावरेसु य । तस्स सामाइयं होइ इइ केवलिभासियं ॥ ७८ ॥
सामाइयम्मि उ कए समणो इव सावओ हवइ जम्हा । एएण कारणेणं बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥ ७९ ॥
देसावगासियं पुण दिसापमाणस्स आवकहियस्स । पइदिणमाइसमासो सव्ववयाणं च संखिवणं ॥ १४८० ॥

१ अ—°तवह° । २ व—°डइयाइ । ३ अ—°पमीण° । ४ अ—°या य ।

नियमेइ उद्धुसिलकुट्टयत्तंहलखडणमाइणा वित्ती । सव्वेसिमागराणं ववहारे वोसिरेइ सया ॥ ६९ ॥
नहदन्तचमरचम्मं कच्छूरियपूइए ससुत्तीणं । मुत्ताहलसंखवराडेया य जहसत्तिओ नियमे ॥ १४७० ॥
वोसिरइ लक्खजउलोहमाइमहुमज्जलोणियाईणं । विससत्थमुसलजन्तणिउक्खलपेभिईण य वणिज्जं ॥ ७१ ॥
मणुयाण तिरिक्खाण य केसवणिज्जम्मि विक्कयं नियमे । जन्ताण वाहणं घञ्चियत्तातिलतेल्लियं वज्जे ॥ ७२ ॥
णिल्लञ्छणं च वसभाइयाण दाणं च पावकम्माणं । दवदाणं सरदहसोसणं च वज्जे असइपोसं ॥ ७३ ॥
चउहा अणत्थदण्डो अवज्झाणपमायहिंसदाणे य । पावुवएसम्मि तहा तत्थावज्झाणविसयम्मि ॥ ७४ ॥
अजरामरत्तदेसाइघाइविज्जाहरिन्दकिड्डाइ । धाउव्वायाइ असंबद्धज्झाणं विवज्जेइ ॥ ७५ ॥
वज्जइ पमायचेट्ठं परेसि खग्गाइहिंसगप्पिणणं । करिसणनिवसेवाई पावुवएसं च नो देइ ॥ ७६ ॥
सावज्जजोगवज्जणरूवं सामाइयं उभयकालं । बहुसो वावि करेज्जा समभावावट्ठिओ सड्ढो ॥ ७७ ॥

भणियं च—

जो समो सव्वभूएसु तसेसुं थावरेसु य । तस्स सामाइयं होइ इइ केवलिभासियं ॥ ७८ ॥
सामाइयम्मि उ कए समणो इव सावओ हवइ जम्हा । एएण कारणेणं बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥ ७९ ॥
देसावगासियं पुण दिसापमाणस्स आवकहियस्स । पइदिणमाइसमासो सव्ववयाणं च संखिवणं ॥ १४८० ॥

१ अ—॰तवह॰ । २ व—॰डइयाइ । ३ अ—॰पमीण॰ । ४ अ—॰या य ।

तित्थअतित्थे सिद्धा तित्थयरा तह अतित्थकरसिद्धा । सयपत्तेयविबुद्धा बुद्धबोहियसगिहिलिङ्गे ॥ ९२ ॥
इत्थीपुरिसनपुंसा एगाणेगसिद्धाइभेएणं । मुत्ता अणेगभेया असरीरा परमसुहजुत्ता ॥ ९३ ॥
धम्माधम्मागासा गइठिइअवगाहलक्खणा होन्ति । तह पुग्गलत्थिकाओ कालो अ इमे अजीवा उ ॥ ९४ ॥
सायं उच्चागोयं सत्तत्तीसा य नामपगडीओ । तिन्नि य आऊणि तहा बायालं पुन्नपगडीओ ॥ ९५ ॥
नाणन्तरायदसगं दंसण नव मोहपयडिछव्वीसं । णामस्स चउत्तीसं तिण्हं एक्केक्क पावाओ ॥ ९६ ॥
अव्वयकसायइन्दियकिरियाजोगा य आसवो होइ । एएसि निरोहो पुण बोधव्वो संवरो चेव ॥ ९७ ॥
अणसणमेयाइ तवो बारसहा तेण निज्जरा होइ । भद्दमहाभद्दाई अहव तवोऽणेगहा भणिओ ॥ ९८ ॥
पयइठिईअणुभागप्पएसभेया चउव्विहो बन्धो । नीसेसकम्मविगमो मोक्खो इय नव उ तत्ताणि ॥ ९९ ॥
चउसद्दहणतिलिङ्गं अट्ठविहायारसुपरिसुद्धं च । पञ्चविहलक्खणजुयं संमत्तं छव्विहागारं ॥ १५०० ॥
परमत्थसंथवो वा सुदिट्ठपरमत्थसेवणा वावि । वावन्नकुदंसणवज्जणा य संमत्तसद्दहणा ॥ १ ॥
सुस्सूसधम्मराओ गुरुदेवाणं जहासमाहीए । वेयावच्चे नियमो सम्मद्दिट्ठिस्स लिङ्गाइं ॥ २ ॥
निस्सङ्किय निक्कङ्खिय निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य । उववूहथिरीकरणे वच्छल्लपभावणे अट्ठ ॥ ३ ॥
उवसमसंवेगोऽवि य निव्वेगोऽवि य तहाणुकम्प त्ति । अत्थिक्कं चेव तहा संमत्ते लक्खणा पञ्च ॥ ४ ॥
छिण्डी रायभियोगो गणाभियोगो बलाभियोगो य । देवाभियोग गुरुनिग्गहो य कन्तारवित्ती य ॥ ५ ॥

तित्थअतित्थे सिद्धा तित्थयरा तह अतित्थकरसिद्धा । सयपत्तेयविबुद्धा बुद्धबोहियसन्नगिहिलिङ्गे ॥ ९२ ॥
इत्थीपुरिसनपुंसा एगाणेगसिद्धाइभेएणं । मुत्ता अणेगभेया असरीरा परमसुहजुत्ता ॥ ९३ ॥
धम्माधम्मागासा गइठिइअवगाहलक्खणा होन्ति । तह पुग्गलत्थिकाओ कालो अ इमे अजीवा उ ॥ ९४ ॥
सायं उच्चागोयं सत्तत्तीसा य नामपगडीओ । तिन्नि य आऊणि तहा बायालं पुन्नपगडीओ ॥ ९५ ॥
नाणन्तरायदसगं दंसण नव मोहपयडिछव्वीसं । णामस्स चउत्तीसं तिण्हं एक्केक्क पावाओ ॥ ९६ ॥
अव्वयकसायइन्दियकिरियाजोगा य आसवो होइ । एएसि निरोहो पुण बोधव्वो संवरो चेव ॥ ९७ ॥
अणसणमेयाइ तवो बारसहा तेण निज्जरा होइ । भद्दमहाभद्दाई अहव तवोऽणेगहा भणिओ ॥ ९८ ॥
पयइठिईअणुभागप्पएसभेया चउव्विहो बन्धो । नीसेसकम्मविगमो मोक्खो इय नव उ तत्ताणि ॥ ९९ ॥
चउसद्दहणतिलिङ्गं अट्ठविहायारसुपरिसुद्धं च । पञ्चविहलक्खणजुयं संमत्तं छव्विहागारं ॥ १५०० ॥
परमत्थसंथवो वा सुदिट्ठपरमत्थसेवणा वावि । वावन्नकुदंसणवज्जणा य संमत्तसद्दहणा ॥ १ ॥
सुस्सूसधम्मराओ गुरुदेवाणं जहासमाहीए । वेयावच्चे नियमो सम्मद्दिट्ठिस्स लिङ्गाइं ॥ २ ॥
निस्सङ्किय निक्कङ्खिय निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य । उववूहथिरीकरणे वच्छल्लपभावणे अट्ठ ॥ ३ ॥
उवसमसंवेगोऽवि य निव्वेगोऽवि य तहाणुकम्प त्ति । अत्थिक्कं चेव तहा संमत्ते लक्खणा पञ्च ॥ ४ ॥
छिण्डी रायभियोगो गणाभियोगो बलाभियोगो य । देवाभियोग गुरुनिग्गहो य कन्तारवित्ती य ॥ ५ ॥

उक्कुट्ठिनायमुहले अप्फालियदुन्दुही नहाउ सुरे । आगच्छन्ते दट्ठुं परितुट्ठो भणइ अन्नो
जन्ने अहो ! सुजट्ठं सक्खं चिय जं सुरा इह समिन्ति इय । तेसि वयन्ताणं देवा जन्नं
गच्छन्ति जिणसगासे ताहे जम्पन्ति ते विलक्खमणा । को एस इहायाओ कुणन्ति म
रुप्पाइसालतियगाइया उ रिद्धी विउव्विया एसा । जाणियपरमत्थेहिं अन्नेहिं वि तेसि
सव्वन्नुसव्वदंसी तित्थयरो एत्थ आगओ वीरो । तिहुयणमहिओ सव्वे सुरासुरा कि
... गुरुअमरिसगहविहुरियचित्तो चिन्त ... ॥ २२ ॥
तं सोऊण दियवरो गोतमगोत्तो उ इन्दभूइ त्ति । अन्नोऽवि जाणइ मए ठिअम्मि कत्ता चियं एयं ॥ २३ ॥
मोत्तूण ममं लोगो किं धावइ एस तस्स पामूलं । वन्दन्ति संथुणन्ति य जेणं सव्वन्नुबुद्धीए ॥ २४ ॥
वच्चेज्ज व मुक्खजणो देवा कहणेण विम्हयं नीया । अणुसरिसो संजोगो गामनडाणं च मोक्खाणं ॥ २५ ॥
अहवा जारिसओ चिय सो णाणी तारिसा सुरा तेऽवि । नासेहं नीसेसं खणेण सवन्नुवायं से ॥ २६ ॥
काउं हयप्पयावं पुरओ देवाण दाणवाणं वा । चउतीसाइसयणिहिं स सक्किओ सो ठिओ पुरओ ॥ २७ ॥
इय वोत्तूणं पत्तो दट्ठुं तियलोयपरिवुडं वीरं ।

उक्तं च—

"साक्षाद्दृष्ट्वेन्द्रभूतिः समवसृतिभुवो भूषणस्यान्तिकस्था—

१ व—य । २ अ—चिंयं न—चयं । ३ व—मोक्ख° । ४ व—च ।

उक्कुट्ठिनायमुहले अप्फालियदुन्दुही नहाउ सुरे । आगच्छन्ते दट्ठुं परितुट्ठो भणइ जन्नजा
जन्ने अहो ! सुजट्ठं सक्खं चिय जं सुरा इह समिन्ति इय । तेसि वयन्ताणं देवा जन्नं
गंच्छन्ति जिणसगासे ताहे जम्पन्ति ते विलक्खमणा । को एस इहायाओ कुणन्ति
रुप्पाइसालतियगाइया उ रिद्धी विउव्विया एसा । जाणियपरमत्थेहिं अन्नेहिं विं तेसि
सव्वन्नुसव्वदंसी तित्थयरो एत्थ आगओ वीरो । तिहुयणमहिओ सव्वे सुरासुरा कि
तं सोऊण दियवरो गोतमगोत्तो उ इन्दभूइ त्ति । गुरुअमरिसगहविहुरियचित्तो चिन्त ॥ २२ ॥
मोत्तूण ममं लोगो किं धावइ एस तस्स पामूलं । अन्नोऽवि जाणइ मए ठिअम्मि कत्ता चिंयं एयं ॥ २३ ॥
वचेज्ज व मुक्खजणो देवा कहणेण विम्हयं नीया । वन्दन्ति संथुणन्ति य जेणं सव्वन्नुबुद्धीए ॥ २४ ॥
अहवा जारिसओ चिय सो णाणी तारिसा सुरा तेऽवि । अणुसरिसो संजोगो गामनडाणं च मोक्खाणं ॥ २५ ॥
काउं हयप्पयावं पुरओ देवाण दाणवाणं वों । नासेहं नीसेसं खणेण सवन्नुवायं से ॥ २६ ॥
इय वोत्तूणं पत्तो दट्ठुं तियलोयपरिवुडं वीरं । चउतीसाइसयणिहिं स सक्किओ सो ठिओ पुरओ ॥ २७ ॥

उक्तं च—

"साक्षाद्दृष्ट्वेन्द्रभूतिः समवसृतिभुवो भूषणस्यान्तिकस्था-

---

१ व-य । २ अ-चियं व-चयं । ३ व-मोक्ख० । ४ व-च ।

उक्कुट्ठिनायमुहले अप्फालियदुन्दुही नहाउ सुरे । आगच्छन्ते दट्ठुं परितुट्ठो भणइ जन्नजा
जन्ने अहो ! सुजट्ठं सक्खं चिय जं सुरा इह समिन्ति इय । तेसि वयन्ताणं देवा जन्नं
गच्छन्ति जिणसगासे ताहे जम्पन्ति ते विलक्खमणा । को एस इन्दयाओ कुणन्ति
रुप्पाइसालतियगाइया उ रिद्धी विउव्विया एसा । जाणियपरमत्थेहिं अन्नेहिं वि
सव्वन्नुसव्वदंसी तित्थयरो एत्थ आगओ वीरो । तिहुयणमहिओ सव्वे सुरासुरा किं ... ... त्थाणीं ॥ २२ ॥
तं सोऊण दियवरो गोतमगोत्तो उ इन्दभूइ त्ति । गुरुअमरिसगहविहुरियचित्तो चिन्तेइ एवं ॥ २३ ॥
मोत्तूण ममं लोगो किं धावइ एस तस्स पामूलं । अन्नोऽवि जाणइ मए ठिअम्मि कत्तो चिंत एवं ॥ २४ ॥
वच्चेज्ज व मुक्खजणो देवा कहणेण विम्हयं नीया । वन्दन्ति संथुणन्ति य जेणं सव्वन्नुबुद्धीए ॥ २५ ॥
अहवा जारिसओ चिय सो णाणी तारिसा सुरा तेऽवि । अणुसरिसो संजोगो गामनडाणं व मोक्खाणं ॥ २६ ॥
काउं हयप्पयावं पुरओ देवाण दाणवाणं वा । नासेहं नीसेसं तस्सेय सव्वन्नुवायं मे ॥ २७ ॥
इय वोत्तूणं पत्तो दट्ठुं तियलोयपरिवुडं वीरं । चउतीसाइसयगिद्धिं स मङ्ख्यिओ लोठिओ पुरओ ॥ २७ ॥

उक्तं च—

"साक्षाद्वीन्द्रभूतिः समवसृतिभुवो भूषणस्यान्तिकस्था–

उक्कुट्ठिनायमुहले अप्फालियदुन्दुही नट्ठाउ सुरे। आगच्छन्ते दट्ठुं परितुट्ठो भणइ जणजा
जन्ने अहो! सुजट्ठं सक्खं चिय जं सुरा इह समिन्ति इय। तेसिं वयन्ताणं देवा जणं
गच्छन्ति जिणसगासे ताहे जम्पन्ति ते विलक्खमणा। को एस इन्दयाओ कुणन्ति
रुप्पाइसालतियगाइया उ रिद्धी विउव्विया एसा। जाणियपरमत्थेहिं अजेहिं तिं नेहिं
सव्वन्नुसव्वदंसी तित्थयरो एत्थ आगओ वीरो। तिहुयणमहिओ सव्वे सुरासुरा कि... ...रसमाणी ॥ २२ ॥
तं सोऊण दियवरो गोतमगोत्तो उ इन्दभूइ त्ति। गुरुअमरिसगहतिहुरियनियो निय... ...गयं ॥ २३ ॥
मोत्तूण ममं लोगो किं धावइ एस तस्स पामूलं। अहोऽवि जाणइ मए ठिअम्मि कत्तो तिनं गयं ॥ २४ ॥
वंवेज्ज व मुक्खजणो देवा कहणेण विम्हयं नीया। वन्दन्ति संथुणन्ति य जेणं सव्वन्नुबुद्धीए ॥ २५ ॥
अहवा जारिसओ चिय सो णाणी तारिसा सुरा तेऽवि। अणुसरिसो संजोगो गामनडाणं व मोक्खाणं ॥ २६ ॥
काउं हयप्पयावं पुरओ देवाण दाणवाणं वा। नासेमि नीसेसं तस्स सव्वन्नुवायं मे ॥ २७ ॥
इय वोत्तूणं पत्तो दट्ठुं तियलोयपरिवुडं वीरं। चउतीसाइसयगणेहिं स मण्डिओ सो ठिओ तुण्हो ॥ २८ ॥

उक्तं च—

"साक्षात्कृतेन्द्रभूतिः समवसृतिभुवो भूषणस्यान्तिकस्था-

१ च-य। २ अ-चियं च-चयं। ३ च-मोक्ख॰। ४ च-त।

जिनबिंब संणयन्नी [illegible]

[illegible]

वेइउन्नुनम्— "[illegible]

किंबम्मि संणयन्नी जिणेण [illegible] ॥ १२ ॥

ते [illegible] ॥ १३ ॥

सीसचं पडिवन्ना [illegible]

---

१ ब–मव । २ ब–डु ।

अधुवत्तमसारत्तणकहणेणं वेयवयणमेयं तु । संसारियवत्थूसुं पडिबन्धनिवारणपहाणं ॥ ५८ ॥
न उ सव्वसुन्नभावस्स साहगं किंञ्चि अत्थि अन्नं पि । वेयपयं भूयाणं सत्तासंसूयगं तं च ॥ ५९ ॥

"पृथिवी वै देवता, आपो वै देवता, तेजो वै देवता, वायुर्वै देवता" इत्यादि ॥

छिन्नम्मि संसयम्मी जिणेणजरमरणविप्पमुक्केणं । सो समणो पव्वइओ पञ्चहिँ सह खण्डियसएहिं ॥१५६०
तो एइ सुहम्मदिओ विम्हियचित्तो उ जिणसयासम्मि । आभासिओ जिणेणं आमन्तेऊण नामेणं ॥ ६१ ॥
जो जारिसो इह भवे सो तारिसो उ परभवे होइ । इय संसओ तुह मणे वेयपयाणत्थभन्तीए ॥ ६२ ॥

वेयपयं च—"पुरुषो वै पुरुषत्वमश्नुते पशवः पशुत्वमश्नुवते ।" इत्यादि ॥

अन्नं च तुज्झ बुद्धी कज्जं किर कारणस्स अणुरूवं । ण जणेइ सालिबीजं जं कइयवि गोहुमङ्कूरं ॥ ६३ ॥

इमं च न जुत्तं, जओ—

कारणरूवं कज्जं णेगन्तो सिंगओऽवि होइ सरो । जायइ तह गोलोमा विलोमओ एत्थ दुव्व त्ति ॥ ६४ ॥
जं पुरिसो पुरिसत्तं पावइ इच्चाइ भासियं वेएँ । तं मद्दवज्जवाईगुणजुत्तो सो तयं लहइ ॥ ६५ ॥
मायाईगुणजुत्ता पुणो पसुत्तं लहन्ति पसुणोऽवि । न उ नियमेणं जं इह कम्मावेक्खा भवुप्पत्ती ॥ ६६ ॥
कम्मं च चित्तरूवं ता कारणरूवमेव कज्जन्ति । एयं पि जुज्जइ चिय किञ्चन्नं वेयवयणं ति ॥ ६७ ॥

१ अ—किञ्च । २ ब—°हासि° । ३ ब—°बीयं । ४ अ—कयाइ यवि । ५ अ—चेवं ।

अधुवत्तमसारत्तणकहणेणं वेयवयणमेयं तु । संसारियवत्थूसुं पडिबन्धनिवारणपहाणं ॥ ५८ ॥
न उ सव्वसुन्नभावस्स साहगं किंचि अत्थि अन्नं पि । वेयपयं भूयाणं सत्तासंसूयगं तं च ॥ ५९ ॥
"पृथिवी वै देवता, आपो वै देवता, तेजो वै देवता, वायुर्वै देवता" इत्यादि ॥
छिन्नम्मि संसयम्मी जिणेणजरमरणविप्पमुक्केणं । सो समणो पव्वइओ पञ्चहिँ सह खण्डियसएहिं ॥१६६०
तो एइ सुहम्मदिओ विम्हियचित्तो उ जिणसयासम्मि । आभासिओ जिणेणं आमन्तेऊण नामेणं ॥ ६१ ॥
जो जारिसो इह भवे सो तारिसो उ परभवे होइ । इय संसओ तुह मणे वेयपयाणत्थभन्तीए ॥ ६२ ॥
वेयपयं च—"पुरुषो वै पुरुषत्वमश्नुते पशवः पशुत्वमश्नुवते ।" इत्यादि ॥
अन्नं च तुज्झ बुद्धी कज्जं किर कारणस्स अणुरूवं । ण जणेइ सालिबीजं जं कइयवि गोहुमङ्कूरं ॥ ६३ ॥
इमं च न जुत्तं, जओ—
कारणरूवं कज्जं णेगन्तो सिंगओऽवि होइ सरो । जायइ तह गोलोमा विलोमओ एत्थ दुव्व त्ति ॥ ६४ ॥
जं पुरिसो पुरिसत्तं पावइ इच्चाइ भासियं वेएँ । तं मद्दवज्जवाईगुणजुत्तो सो तयं लहइ ॥ ६५ ॥
मायाईगुणजुत्ता पुणो पसुत्तं लहन्ति पसुणोऽवि । न उ नियमेणं जं इह कम्मावेक्खा भवुप्पत्ती ॥ ६६ ॥
कम्मं च चित्तरूवं ता कारणरूवमेव कज्जन्ति । एयं पि जुज्जइ चिय किञ्चन्नं वेयवयणं ति ॥ ६७ ॥

१ अ—किञ्च । २ ब—°हासि° । ३ ब—°बीयं । ४ अ—कयाइ यवि । ५ अ—चेवं ।

एयम्मि य वेयपए सुरसत्ता सुइया तुह मयम्मि । इय छिन्नसंसओ सो अद्धुठसएहिँ पव्वइओ ॥ ७५ ॥
आगच्छइ जिणपासे अकम्पिओ सो जिणेण आलत्तो । तुह नारएसु जाओ सन्देहो वेयवयणाओ ॥ ७६ ॥

तं च इमं—"न ह वै प्रेत्य नरके नारकाः सन्ति ।"

एयं च वेयवयणं सुहकम्माणो न नारया होन्ति । एयत्थसाहगं चिय न य तदभावं पसाहेइ ॥ ७७ ॥
केवलिणो पच्चक्खा जुत्तीगम्मा भवारिसाणमिमे । जे वेइन्ति पगिट्ठं पावफलं ते उ नेरइया ॥ ७८ ॥

किञ्च—"नारको वै एष जायते यः शूद्रान्नमश्नाति ।"

वेउत्तीएँ इमाए विज्जन्ते नारय त्ति बोधेव्वं । वोच्छिन्नसंसओ सो पव्वइओ तिहिँ सएहिँ समं ॥ ७९ ॥
संपइ य अयलभाया आगच्छइ भयवओ समीवम्मि । भो तुज्झ पुन्नपावेसु संसओ इय जिणो आह॥१५८०॥
सो य न जुत्तो जम्हा पच्चक्खं चेव दीसए पयडं । पुन्नस्स य पावस्स य फलमिह लोगागमपसिद्धं ॥ ८१ ॥
सुकुलुप्पत्ती रूवं विहवो भोगा पहुत्तमारोगं । एमाइ पुन्नफलं विवरीयं होइ पावस्स ॥ ८२ ॥
सुतिवयणं एत्थत्थे जहग्गिभूइम्मि तह उ दट्ठव्वं । इय छिन्नसंसओ सो पव्वइओ तिहिँ सएहिँ समं ॥ ८३ ॥
मेयज्जो आगच्छइ जिणपामूलम्मि तं जिणो भणइ । मेअज्ज ! संसओ तुह परलोगत्थित्तणे अत्थि ॥ ८४ ॥
सो य ण जुत्तो जम्हा आया चेयन्नलिङ्गओ सिद्धो । सो परलोगं वच्चइ सो वज्जियकम्मजोएणं ॥ ८५ ॥

---

१ व-नार° । २ अ-वेउघं ।

एयम्मि य वेयपए सुरसत्ता सूइया तुह मयम्मि । इय छिन्नसंसओ सो अद्धुट्ठसएहिँ पव्वइओ ॥ ७५ ॥
आगच्छइ जिणपासे अकम्पिओ सो जिणेण आलत्तो । तुह नारएसु जाओ सन्देहो वेयवयणाओ ॥ ७६ ॥

तं च इमं—"न ह वै प्रेत्य नरके नारकाः सन्ति ।"

एयं च वेयवयणं सुहुकम्माणो न नारया होन्ति । एयत्थसाहगं चिय न य तदभावं पसाहेइ ॥ ७७ ॥
केवलिणो पच्चक्खा जुत्तीगम्मा भवारिसाणमिमे । जे वेइन्ति पगिट्ठं पावफलं ते उ नेरइया ॥ ७८ ॥

किञ्च—"नारको वै एष जायते यः शूद्रान्नमश्नाति ।"

वेउत्तीएँ इमाए विन्नन्ते नारय त्ति बोधव्वं । वोच्छिन्नसंसओ सो पव्वइओ तिहिँ सएहिँ समं ॥ ७९ ॥
संपइ य अयलभाया आगच्छइ भयवओ समीवम्मि । भो तुज्झ पुन्नपावेसु संसओ इय जिणो आह॥१५८०॥
सो य न जुत्तो जम्हा पच्चक्खं चेव दीसए पयडं । पुन्नस्स य पावस्स य फलमिह लोगागमपसिद्धं ॥ ८१ ॥
सुकुलुप्पत्ती रूवं विहवो भोगा पहुत्तमारोगं । एमाइ पुन्नफलं विवरीयं होइ पावस्स ॥ ८२ ॥
सुनियवयणं पत्थत्थे जहग्गिभूइम्मि तह उ दट्ठव्वं । इय छिन्नसंसओ सो पव्वइओ तिहिँ सएहिँ समं ॥८३॥
मेयज्जो आगच्छइ जिणपामूलम्मि तं जिणो भणइ । मेअज्ज ! संसओ तुह परलोगत्थित्तणे अत्थि ॥ ८४ ॥
सो य ण जुत्तो जम्हा आया चेयन्नलिङ्गओ सिद्धो । सो परलोगं वचइ सो वज्जियकम्मजोएणं ॥ ८५ ॥

---

१ ब–नार° । २ अ–वेउयं ।

ताणि य इमाणि—

उप्पायपुव्वमग्गेणियं च तइयं च वीरियं पुव्वं । अत्थीनत्थिपवायं तत्तो नाणप्पवायं च ॥ ९८ ॥
सच्चप्पवायपुव्वं तत्तो आयप्पवायपुव्वं च । कम्मप्पवायपुव्वं पच्चक्खाणं भवे नवमं ॥ ९९ ॥
विज्जाअणुप्पवायं अवञ्झपाणा उ बारसं पुव्वं । तत्तो किरियविलासं पुव्वं तह बिन्दुसारं च ॥ १६०० ॥
गणहरपयम्मि ठविया ते तित्थयरेण सुहमुहुत्तम्मि । गन्धे निक्खिविय सिरे सुरोवणीए सुगन्धड्ढे ॥ १ ॥
जाओ य तत्थ सङ्घो चउव्विहो जिणवरस्स पढमिल्लो । सीसो गोयमसामी चन्दणबाला य सिस्सिणिया ॥२॥
भवियारविन्दपडिबोहदिणयरो विहरए महीवीढं । चउतीसअइसयजुओ वीरो बहुगामनयरड्ढं ॥ ३ ॥

ते य इमे—

वरकयसुरहियमलआमयपासेयवज्जियं देहं । गोखीरसंखधवलं निव्विस्सं मंसरुहिरं च ॥ ४ ॥
आहारो नीहारो दीसइ न जिणस्स मंसचक्खूहिं । वरफुल्लुप्पलसुरही निस्सासो दसदिसामोओ ॥ ५ ॥
जोयणमेत्ते खेत्ते मायन्ति सुराइयाण कोडिसया । सव्वसभासाणुगया जोयणनीहारिणी वाणी ॥ ६ ॥
पणवीसजोयणाइं चउद्दिसिं भगवओ उवसमन्ति । पुव्वुप्पन्ना रोगा पसमेइ वइरमारी य ॥ ७ ॥
अइवुट्ठि अणावुट्ठी दुब्भिक्खं तह न होइ डमरं च । भामण्डलं रविसमं विरायए पट्ठिभायम्मि ॥ ८ ॥
आगासगयं चक्कं छत्तं इन्दज्झओ चमरजुयलं । सीहासणं विचित्तं सपायपीढं सहविहारि ॥ ९ ॥

ताणि य इमाणि—

उप्पायपुव्वमग्गेणियं च तइयं च वीरियं पुव्वं। अत्थीनत्थिपवायं तत्तो नाणप्पवायं च ॥ ९८ ॥
सच्चप्पवायपुव्वं तत्तो आयप्पवायपुव्वं च। कम्मप्पवायपुव्वं पच्चक्खाणं भवे नवमं ॥ ९९ ॥
विज्जाअणुप्पवायं अवज्झपाणा उ बारसं पुव्वं। तत्तो किरियविलासं पुव्वं तह बिन्दुसारं च ॥ १६०० ॥
गणहरपयम्मि ठविया ते तित्थयरेण सुहमुहुत्तम्मि। गन्धे निक्खिविय सिरे सुरोवणीए सुगन्धड्ढे ॥ १ ॥
जाओ य तत्थ सक्को चउव्विहो जिणवरस्स पढमिल्लो। सीसो गोयमसामी चन्दणबाला य सिस्सिणिया ॥२॥
भवियारविन्दपडिबोहदिणयरो विहरए महीवीढं। चउतीसअइसयजुओ वीरो बहुगामनयरड्ढं ॥ ३ ॥

ते य इमे—

वररूवसुरहियमलआमयपासेयवज्जियं देहं। गोखीरसंखधवलं निव्विस्सं मंसरुहिरं च ॥ ४ ॥
आहारो नीहारो दीसइ न जिणस्स मंसचक्खूहिं। वरफुल्लुप्पलसुरही निस्सासो दसदिसामोओ ॥ ५ ॥
जोयणमेत्ते खेत्ते मायन्ति सुराइयाण कोडिसया। सव्वसभासाणुगया जोयणनीहारिणी वाणी ॥ ६ ॥
पणवीसजोयणाइं चउद्दिसिं भगवओ उवसमन्ति। पुव्वुप्पन्ना रोगा पसमेइ वइरमारी य ॥ ७ ॥
अइवुट्ठि अणावुट्ठी दुब्भिक्खं तह न होइ डमरं च। भामण्डलं रविसमं विरायए पट्ठिभायम्मि ॥ ८ ॥
आगासगयं चक्कं छत्तं इन्दज्झओ चमरजुयलं। सीहासणं विचित्तं सपायपीढं सहविहारि ॥ ९ ॥

उत्तुङ्गतोरणाइं मन्दरचूल व्व उच्चसिहराइं । मणिरयणकिङ्किणीगणपडागपन्तीसणाहाइं ॥ २३ ॥
कणगमयरङ्गचित्ताडरणडिरूवयपवरपन्तिजुत्ताइं । सव्वङ्गमणोहरसालभञ्जियावलयकलियाइं ॥ २४ ॥
गब्भहरमज्झभागे तेसिं मणिपीढिया य एगेगा । पवरा तासु य चिट्ठइ विसिट्ठसंठाणसाराणं ॥ २५ ॥
रयणमणिमयाणं अट्ठमहापाडिहेरजुत्ताणं । वरलोमहत्थयपडियधूयकडुच्छुयसमेयाणं ॥ २६ ॥
उसभजिणपमाणाणं उक्कोसेणं जिणिन्दपडिमाणं । वीरजिणिन्दपमाणं जहन्नओ अट्ठसयमेगं ॥ २७ ॥
जिणभवणदुवाराणं पुरओ मुहमण्डवा चउण्हं पि । वरथम्भपन्तिरम्मा विचित्तचित्ता उ तिदुवारा ॥ २८ ॥
तप्पुरओ पेच्छामण्डवा उ सुरपेच्छणाण ते जोगा । मुहमण्डवसारिच्छा तेसिं पुरओ य वरथूभा ॥ २९ ॥
चउरो जिणपडिमाओ थूभाभिमुहाउ चउदिसिं होन्ति । मणिपेढियाठियाओ पसन्तमुहनयणसोहाओ ॥१२३०॥
सिरिवच्छमच्छमगरनन्दावत्तारिंगणाभाओ । थूभाण तेसि पुरओ चेइयरुक्खा परमरम्मा ॥ ३१ ॥
तेसिं पुरओ मणिपेढिया य इन्दज्झया य अइउच्चा । तेसिं पुरओ होन्ति उ पुक्खरणीओ सुरम्माओ ॥ ३२ ॥
एव पसंखित्तया सिद्धाययणा जिणेहिं पन्नत्ता । नन्दीसरम्मि वीसं संपत्ता तेसु सुरवसभा ॥ ३३ ॥
पुन्नावविकसणविच्छिन्नसुपरडपडहउक्कोयं । सुरनरविकोसकुसुमोहविहियकुल्लहरयसमिद्धं ॥ ३४ ॥
जिणभवणगणसारं तुरयसुहासनट्टणीयड्ढं । सव्वजिणायणेसु कुणन्ति अट्ठाहियामहिमं ॥ ३५ ॥

१ त-पडिरूवसोहि° । २ मु-°त्त सिहि° । ३ त-°भवणे । ४ त-°यासु ।

अब्भुन्नतोरणाइं मन्दरचूल व्व उच्चसिहराइं । मणिरयणकिङ्किणीगणपडागपन्तीसणाहाइं ॥ २३ ॥
कयगयवरविज्जाहरपडिरूवयपवरपन्तिजुत्ताइं । सव्वङ्गमणोहरसालभञ्जियावलयकलियाइं ॥ २४ ॥
गब्भहरमज्झभागे तेसिं मणिपीढिया य एगेगा । पवरा तासु य चिट्ठइ विसिट्ठसंठाणसाराणं ॥ २५ ॥
रयणमणिमयाणं अट्ठमहापाडिहेरजुत्ताणं । चरलोमहत्थघण्टियधूयकडुच्छुयसमेयाणं ॥ २६ ॥
उसभजिणपमाणाणं उक्कोसेणं जिणिन्दपडिमाणं । वीरजिणिन्दपमाणं जहन्नओ अट्ठसयमेगं ॥ २७ ॥
जिणभवणदुवाराणं पुरओ मुहमण्डवा चउण्हं पि । वरधम्मपन्तिरम्मा विचित्तचित्ता उ तिदुवारा ॥ २८ ॥
तप्पुरओ पेच्छामण्डवा उ सुरपेच्छणाण ते जोगा । मुहमण्डवसारिच्छा तेसिं पुरओ य वरथूभा ॥ २९ ॥
चउरो जिणपडिमाओ थूभाभिमुहाउ चउदिसिं होन्ति । मणिपेढियाठियाओ पसन्तमुहनयणसोहाओ ॥१६३०॥
रिसहयवद्धमाणयचन्दाणणवारिसेणनामाओ । थूभाण तेसि पुरओ चेइयरुक्खा परमरम्मा ॥ ३१ ॥
तेसिं पुरओ मणिपेढिया य इन्दज्झया य अइउच्चा । तेसिं पुरओ होन्ति उ पुक्खरणीओ सुरम्माओ ॥ ३२ ॥
इय पुव्वनिद्दिट्ठा सिद्धाययणा जिणेहिं पन्नत्ता । नन्दीसरम्मि वीसं संपत्ता तेसु सुरवसभा ॥ ३३ ॥
धूवाइविविहगन्धाइविविहंसुयरइयवरउल्लोयं । सुरनरविकोसकुसुमोहविहियकुल्लहरयसमिद्धं ॥ ३४ ॥
जिणण्हवणगमणसारं सुरवरुद्दामनट्टगीयड्ढं । सव्वजिणाययणेसुं कुणन्ति अट्ठाहियामहिमं ॥ ३५ ॥

१ ब–°पडिरूवर्क्क° । २ ख–°ण सिरि° । ३ ब–°मणतं । ४ ब–°यासु ।

लद्धूण माणुसत्तं सुदुल्लहं जलहिपडियरयणं व । बुद्धिमया पुरिसेणं जत्तो धम्मम्मि कायव्वो ॥ ४९ ॥
सो पुण दाणं सीलं तवो य तह भावणा चउविगप्पो । दाणं तिविहं नाणाभयधम्मोवग्गहकराणं ॥ १६५० ॥
दिन्नेण जेण जीवो विन्नाया होइ बन्धमोक्खाणं । तं होइ नाणदाणं सिवसुहसंपत्तिसंजणगं ॥ ५१ ॥
एयं उ नाणदाणं जं सुयदाणं तयत्थकहणं च । भव्वाणमहव सुयणाणकारणं सुयलिहावणयं ॥ ५२ ॥
नाणाओ भवविरागो संवेगो इन्दियाण य निरोहो । कोहाइयाण जायइ खउवसमो भावसत्तूणं ॥ ५३ ॥
सयलपयत्थपईवं निरुवहयं निम्मलं इमं चक्खुं । नाणविहीणो मणुओ पसु व्व अन्धो व्व बहिरो वा ॥५४॥
जिणवयणं च लिहावइ जो सो अन्नाण अप्पणो हणइ । अन्नाण य भव्वाणं उम्मग्गं तह पणासेई ॥ ५५ ॥
पयडेइ मोक्खमग्गं कमेण तो घाइकम्मखवणेणं । पावइ केवलनाणं लोयालोयप्पयासयरं ॥ ५६ ॥
सव्वेसिं जीवाणं हिंसापरिवज्जणं जमिह सम्मं । तं होइ अभयदाणं इट्ठं तं चेव सव्वेसिं ॥ ५७ ॥
देसं चयन्ति रज्जं मुयन्ति उज्झन्ति बन्धुवग्गं पि । वियरन्ति य सव्वस्सं पडन्ति पाएसु रिउणोऽवि ॥ ५८ ॥
जीवियकज्जे मणुया नत्थि तयं किं पि जं न कुव्वन्ति । ता सव्वपियं तं चिय दायव्वं सोक्खकामेण ॥ ५९ ॥
दीहाऊ वरमुत्ती निरुजो जणवल्लहो परमविहवो । जीवो उ सुलहबोही संजायइ अभयदाणेणं ॥ १६६० ॥
धम्मोवग्गहदाणं असणं पाणं च वत्थु पत्तं च । ओसहमासण सयणं वसहिं च पडुच्च जं दाणं ॥ ६१ ॥

---

१ व–सु । २ व–कम्माणं घा० ।

लद्धूण माणुसत्तं सुदुल्लहं जलहिपडियरयणं व । वुद्धिमया पुरिसेणं जत्तो धम्मम्मि कायव्वो ॥ ४९ ॥
सो पुण दाणं सीलं तवो य तह भावणा चउविगप्पो । दाणं तिविहं नाणाभयधम्मोवग्गहकराणं ॥ १६५० ॥
दिन्नेण जेण जीवो विन्नाया होइ बन्धमोक्खाणं । तं होइ नाणदाणं सिवसुहसंपत्तिसंजणगं ॥ ५१ ॥
एयं उ नाणदाणं जं सुयदाणं तयत्थकहणं च । भव्वाणमहव सुयणाणकारणं सुयलिहावणयं ॥ ५२ ॥
नाणाओ भवविरागो संवेगो इन्दियाण य निरोहो । कोहाइयाण जायइ खउवसमो भावसत्तूणं ॥ ५३ ॥
सयलपयत्थपईवं निरुवहयं निम्मलं इमं चक्खुं । नाणविहीणो मणुओ पसु व्व अन्धो व्व बहिरो वा ॥५४॥
जिणवयणं च लिहावइ जो सो अन्नाण अप्पणो हणइ । अन्नाण य भव्वाणं उम्मग्गं तह पणासेई ॥ ५५ ॥
पयडेइ मोक्खमग्गं कमेण तो घाइकम्मखवणेणं । पावइ केवलनाणं लोयालोयप्पयासयरं ॥ ५६ ॥
सव्वेसिं जीवाणं हिंसापरिवज्जणं जमिह सम्मं । तं होइ अभयदाणं इट्ठं तं चेव सव्वेसिं ॥ ५७ ॥
देसं चयन्ति रज्जं मुयन्ति उज्झन्ति बन्धुवग्गं पि । विचरन्ति य सव्वस्सं पडन्ति पाएसु रिउणोऽवि ॥ ५८ ॥
जीवियकज्जे मणुया नत्थि तयं किं पि जं न कुव्वन्ति । ता सव्वपियं तं चिय दायव्वं सोक्खकामेण ॥ ५९ ॥
दीहाऊ वरमुत्ती निरुजो जणवल्लहो परमविहवो । जीवो उ सुलहबोही संजायइ अभयदाणेणं ॥ १६६० ॥
धम्मोवग्गहदाणं असणं पाणं च वत्थु पत्तं च । ओसहमासण सयणं वसहिं च पडुच जं दाणं ॥ ६१ ॥

१ व–तु । २ व–कम्माणं घा° ।

पारम्परेण पावइ परमपयं नरयतिरियगइमुक्को[1] । जत्थ न जरा न मच्चू न वाहिणो नेय वसणाइं ॥ ७२ ॥
सेज्जावसही तीए सुदुत्तरं तरइ जेण भवजलही । सेज्जायरो त्ति तेणं भणन्ति जं परमनाणी वि ॥ ७३ ॥

अन्नं च—

जह जह सज्झायज्झुणी निसुणिज्जइ जिणवराण[2] दुहदलणी । तह तह पावमलोहो गलइ जहा अञ्जलीसलिलं ॥
इय साहुवसहिदाणं कल्लाणपरम्परासुहनिहाणं । जिणवयणाओ नाउं जहसत्तीए उ दायव्वं ॥ ७५ ॥
मूलुत्तरगुणरूवं सीलं समणाण सावयाणं च । कम्मासवाण पिहणं महव्वयाणुव्वयाईणं[3] ॥ ७६ ॥
सव्वगुणालङ्कारो कुगइदुवारम्मि अग्गला सीलं । सोवाणपन्तिया इव सीलं सग्गापवग्गाणं ॥ ७७ ॥
सीलं कुलुन्नइकरं लोयपियत्तजणगं जसकरं च । सीलं सुइत्तणकरं सीलं चिय संपयामूलं ॥ ७८ ॥
सीलस्स पहावेणं कुव्वन्ति सुरासुरावि सन्निज्झं । सीयारेवइभद्दामणोरमासावियाणं च ॥ ७९ ॥
अणसणमूणोयरिया वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ । कालकिलेसो संलीणया य बज्झो तवो होइ ॥ १६८० ॥
पायच्छित्तं विणओ वेयावच्चं तहेव सज्झाओ । झाणं उस्सग्गोऽवि य अब्भिन्तरओ तवो होइ ॥ ८१ ॥
सिद्धिपुरमग्गजाणं संसारसमुद्दरुन्दवोहित्थो । कम्मिन्धणस्स जलणो पत्थियवत्थूण कप्पतरू ॥ ८२ ॥
वायायवेण सुस्सइ तलायसलिलं व पावकम्मं पि । तवसा हेममलो विव डज्झइ जलणो[4]हंतावेणं ॥ ८३ ॥

१ व–°चुको । २ व–मुणिवराण । ३ अ–°णीयं । ४ अ–सिद्ध° ।

पारम्परेण पावइ परमपयं नरयतिरियगइमुक्को । जत्थ न जरा न मच्चू न वाहिणो नेय वसणाइं ॥ ७२ ॥
सेज्जावसही तीए सुदुत्तरं तरइ जेण भवजलही । सेज्जायरो त्ति तेणं भणन्ति जं परमनाणी वि ॥ ७३ ॥

अन्नं च—

जह जह सज्झायझुणी निसुणिज्जइ जिणवराण दुहदलणी । तह तह पावमलोहो गलइ जहा अञ्जलीसलिलं ॥
इय साहुवसहिदाणं कल्लाणपरम्परासुहनिहाणं । जिणवयणाओ नाउं जहसत्तीए उ दायव्वं ॥ ७५ ॥
मूलुत्तरगुणरूवं सीलं समणाण सावयाणं च । कम्मासवाण पिहणं महव्वयाणुव्वयाईणं[3] ॥ ७६ ॥
सव्वगुणालङ्कारो कुगइदुवारम्मि अग्गला सीलं । सोवाणपन्तिया इव सीलं सग्गापवग्गाणं ॥ ७७ ॥
सीलं कुलुन्नइकरं लोयपियत्तजणगं जसकरं व । सीलं सुहत्तणकरं सीलं चिय संपयामूलं ॥ ७८ ॥
सीलस्स पहावेणं कुव्वन्ति सुरासुरावि सन्निज्झं । सीयारेवइभद्दामणोरमासावियाणं च ॥ ७९ ॥
अणसणमूणोयरिया वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ । कालकिलेसो संलीणया य वज्झो तवो होइ ॥ १९८० ॥
पायच्छित्तं विणओ वेयावच्चं तहेव सज्झाओ । झाणं उस्सग्गोऽवि य अब्भिन्तरओ तवो होइ ॥ ८१ ॥
सिद्धिपुरमग्गजाणं संसारसमुद्दरुन्दवोहित्थो । कम्मिन्धणस्स जलणो पत्थियवत्थूण कप्पतरू ॥ ८२ ॥
वायायवेण सुस्सइ तलायसलिलं व पावकम्मं पि । तवसा हेममलो विव डज्झइ जलणो[4]ईतावेणं ॥ ८३ ॥

१ ब—°चुक्को । २ ब—मुणिवराण । ३ अ—°णीयं । ४ अ—सिद्ध° ।

राया य सयमेवो नस्सामइ पउरजणवओ चावि । कुव्वलित्तपिण्डियवलिछडियतन्दुलाणाढगं कलमा ॥ ९७ ॥
भाविय दुब्बलियाणं अच्छंडकुडियाण कलमसरियाणं । कीरइ बली सुरावि य तत्थेव छुहन्ति गन्धाइं ॥ ९८ ॥
बलिपविसणसमकालं पुव्वद्दारेण ठाइ परिकहणा । तिगुणं पुरओ पाडण तस्सद्धं अवडियं देवा ॥ ९९ ॥
अद्धद्धं अहिवइणो अवसेसं होइ पागयजणस्स । सव्वामयप्पसमणी कुप्पइ नं नो य छम्मासं ॥ १७०० ॥
[illegible] च भयवं देवच्छन्दम्मि कुणइ विस्सामं । बीयाए पोरिसीए गणहारी कहइ परिसाए ॥ १ ॥

भणियं च—

राओवणीयसीहासणम्मि विट्ठो य पायपीढम्मि । जेट्ठो अन्नयरो वा गणहारी कहइ बीयाए ॥ २ ॥
संखाईए उ भवे साहइ जं वा परो उ पुच्छेज्जा । न य णं अणाइसेसी वियाणई एस छउमत्थो ॥ ३ ॥
खेयविणोओ सीसगुणदीवणा पच्चओ उभयओऽवि । सीसायरियकमोऽवि य गणहरकहणे गुणा होन्ति ॥ ४ ॥
भावगकुमारो संवेगवंसओ [illegible] । पुच्छइ विहारसमए किं किंचं सावगाण पहू ॥ ५ ॥

भगवया भणियं—

[illegible] अणुव्वयं च । आवस्सं निच्चं चिय धीरेहिं भवविरत्तेहिं ॥ ६ ॥
[illegible] गुणमाणं सिक्खं [illegible] च । [illegible] जीवन्तूणं सड्ढो ॥ ७ ॥

[illegible]

राया य सयलजणो नस्सासइ रत्तजणवओ चावि। कुव्वलियखंडियवलिछडियतन्दुलाणाढगं कलमा ॥ ९७ ॥
चाविय दुगालियाणं अच्चड्डकुडियाण कन्नसरियाणं। कीरइ बली सुराविय तत्थेव छुहन्ति गन्धाइं ॥९८॥
बलिपविसणसमकालं पुव्वद्दारेण ठाइ परिकहणा। तिगुणं पुरओ पाडण तस्सद्धं अवडियं देवा ॥ ९९ ॥
अद्धद्धं अहिवइणो अवसेसं होइ पागयजणस्स। सव्वामयप्पसमणी कुप्पइ नं नो य छम्मासं ॥ १७०० ॥
तत्थावसरं च समत्तं देवच्छन्दम्मि कुणइ विस्सामं। बीयाए पोरिसीए गणहारी कहइ परिसाए ॥ १ ॥

भणियं च—

राओवणीयसीहासणम्मि विट्ठो य पायपीढम्मि। जेट्ठो अन्नयरो वा गणहारी कहइ बीयाए ॥ २ ॥
संखाईए उ भवे साहइ जं वा परो उ पुच्छेज्जा। नय णं अणइसेसी वियाणई एस छउमत्थो ॥ ३ ॥
खेयविणोओ सीसगुणदीवणा पच्चओ उभयओऽवि। सीसायरियकमोऽवि य गणहरकहणे गुणा होन्ति ॥ ४ ॥
पायवकुमारो संसयसंभओ रवमलच्छलाउ। पुच्छइ विज्जाहसमए किं किंचं सावगाण पहू ॥ ५ ॥

भगवया भणियं—

सम्मत्तमूलमसम्मं सड्ढाणं नेव अणुव्वइयं च। जावज्जीवं निच्चं धीरेहिं भवविरत्तेहिं ॥ ६ ॥
अन्नं पुण वाणिज्जो गुणगाणं सिक्खवयं च। निच्चं अणुव्वइयो करेज्ज जीवन्तुणं सड्ढो ॥ ७ ॥

१ ख. [illegible] । २ ख—[illegible] । ३ ख—[illegible] ।

सामइयं चउवीसत्थओ य वन्दणयमह पडिक्कमणं। काउसग्गो पचक्खाणं आवस्सया छच ॥ २१ ॥
समभावो सामइयं तम्मि कए समणसन्निभो होइ। ता तं जिणदत्तो चिय निचलचित्तो करेज्जाहि ॥ २२ ॥

अन्नहा—

सामाइयं पि काउं घरचिन्तं जो य चिन्तए सड्ढो। अट्टवसट्टोवगओ निरत्थयं तस्स सामइयं ॥ २३ ॥
दव्वत्थयभावथए उसभाइजिणाण सावओ कुणइ। पहवणाई दव्वथए सन्तगुणुक्कित्तणा भावे ॥ २४ ॥
दारिद्दं दोहग्गं परपत्थणमिन्दियाण विगलत्तं। दीणत्तरोगसोगा जिणथयकारीण नो होन्ति ॥ २५ ॥
जो वन्दणयं सम्मं साहूण करेज्ज सीलकलियाणं। सो लहइ सग्गमोक्खे हरि व्व गुणलाभमजिणइ ॥ २६ ॥
खवइ य निचागोयं उच्चागोयं च बन्धए कम्मं। सोहग्गं निव्वत्तइ आणासारं जणपियत्तं ॥ २७ ॥
मिच्छाउक्कडवियडणनिन्दणगरिहाभियत्ताणं सोही। पायच्छित्तविहीए नियदुचरियस्स पडिक्कमणं ॥ २८ ॥
कयपावोऽवि मणुस्सो आलोइयनिन्दिओ गुरुसगासे। होइ अइरेगलहुओ ओहरियभरो व्व भारवहो ॥ २९ ॥
मिच्छत्तपडिक्कमणं तहेव अस्संजमे पडिक्कमणं। कसायाण पडिक्कमणं जोगाण य अप्पसत्थाणं ॥ १७३० ॥
काउस्सग्गे जह सुट्ठियस्स भज्जन्ति अङ्गमङ्गाइं। इय भिन्दन्ति मुणिवरा अट्ठविहं कम्मसंघायं ॥ ३१ ॥
जह करकओ निकिन्तइ दारुं इन्तो पुणोऽवि वच्चन्तो। इय किन्तन्ति सुविहिया काउसग्गेण कम्माइं ॥ ३२ ॥
अन्नं इमं सरीरं अन्नो जीवो त्ति एव कयबुद्धी। छिन्दिय देहममत्तं काउस्सग्गं कुणइ साहू ॥ ३३ ॥

सामइयं चउवीसत्थओ य वन्दणयमह पडिक्कमणं । काउसग्गो पच्चक्खाणं आवस्सया छच्च ॥ २१ ॥
समभावो सामइयं तम्मि कए समणसन्निभो होइ । ता तं जिणदत्तो विव निच्चलचित्तो करेज्जाहि ॥ २२ ॥

अन्नहा—

सामाइयं पि काउं घरचिन्तं जो य चिन्तए सड्ढो । अट्टवसट्टोवगओ निरत्थयं तस्स सामइयं ॥ २३ ॥
दव्वत्थयभावथए उसभाइजिणाण सावओ कुणइ । पहवणाई दव्वथए सन्तगुणुक्कित्तणा भावे ॥ २४ ॥
दारिद्दं दोहग्गं परपत्थणमिन्दियाण विगलत्तं । दीणत्तरोगसोगा जिणथयकारीण नो होन्ति ॥ २५ ॥
जो वन्दणयं सम्मं साहूण करेज्ज सीलकलियाणं । सो लहइ सग्गमोक्खे हरि व्व गुणलाभमज्जिणइ ॥ २६ ॥
खवइ य निच्चागोयं उच्चागोयं च बन्धए कम्मं । सोहग्गं निव्वत्तइ आणासारं जणपियत्तं ॥ २७ ॥
मिच्छाउक्कडवियडणनिन्दणगरिहानियत्तणं सोही । पायच्छित्तविहीए नियदुच्चरियस्स पडिक्कमणं ॥ २८ ॥
कयपावोऽवि मणुस्सो आलोइयनिन्दिओ गुरुसगासे । होइ अइरेगलहुओ ओहरियभरो व्व भारवहो ॥ २९ ॥
मिच्छत्तपडिक्कमणं तहेव अस्संजमे पडिक्कमणं । कसायाण पडिक्कमणं जोगाण य अप्पसत्थाणं ॥ १७३० ॥
काउस्सग्गे जह सुट्ठियस्स भज्जन्ति अङ्गमङ्गाइं । इय भिन्दन्ति मुणिवरा अट्ठविहं कम्मसंघायं ॥ ३१ ॥
जह करकओ निकिन्तइ दारुं इन्तो पुणोऽवि वच्चन्तो । इय किन्तन्ति सुविहिया काउसग्गेण कम्माइं ॥ ३२ ॥
अन्नं इमं सरीरं अन्नो जीवो त्ति एव कयबुद्धी । छिन्दिय देहममत्तं काउस्सग्गं कुणइ साहू ॥ ३३ ॥

[illegible] सिद्धं जं गहियं [illegible] नयं नेयं। [illegible] तु असइं सम्मं उवओगपडियरियं ॥ ४६ ॥
[illegible] उ सोहियं [illegible]। तुलेउवि [illegible] तीरियं होइ ॥ ४७ ॥
[illegible] सुत्त किट्टियं। एएहिं पगारेहिं सम्मं आराहियं होइ ॥ ४८ ॥
[illegible] न होइ दुविहं तु। इह लोए [illegible] परलोए ॥ ४९ ॥
[illegible] कुसलदिट्ठे। नवि अत्थि नवि य होही सज्झायसमं तवोकम्मं ॥ ५० ॥
[illegible]। [illegible] खणे खणे जाइ वेरग्गं ॥ ५१ ॥
[illegible] य। [illegible] अणुव्वरणं कुणन्तस्स ॥ ५२ ॥
[illegible]। [illegible] नामो कुमारगो परिसो जाओ ॥ ५३ ॥

[illegible] आओगपओगसंपउत्तो चिम-
[illegible] अज्झयणजीवाजीवे उवलद्धपुण्ण-
[illegible] नागसुवण्णजक्खरक्खसकिंनरकिं-
[illegible] निग्गंथे पावयणे निस्संकिए निक-
[illegible] अप्पमाउस्सो निग्गंथे

इय संयोगा एत्थं दुलहा जीवाण कुणह ता धम्मं। इय सोउं पडिवुद्धा सालमहासालरायाणो ॥ ६१ ॥
रज्जम्मि भाइणेज्जं पिढरसुयं जसमईए अङ्गरूहं। संठाविय पव्वइया संविग्गा सामिपासम्मि ॥ ६२ ॥
कालन्तरेण केणइ चम्पानयरीए विहरिओ भयवं। सालमहासालावि य गोयमगणहारिणा सहिया ॥ ६३ ॥
पिट्ठीचम्पाए गया तत्थ य वन्दन्ति परमभत्तीए। जसमइगग्गलिपिढरा सपरियरं गोयमगणिन्दं ॥ ६४ ॥
सुररइयकणयकमले उवविट्ठो गोयमो चउन्नाणी। उवइसइ इमं भव्वा धम्मो चिय एत्थ सुहमूलं ॥ ६५ ॥
कसछेयतावसुद्धं जहा सुवन्नं सुवन्नयमुवेइ। तह एएहिं सुद्धो धम्मो धम्मत्तणमुवेइ ॥ ६६ ॥
ते य इमे—
पाणवहाईयाणं पावट्ठाणाण जत्थ पडिसेहो। झाणज्झयणाईणं जो य विही एस धम्मकसो ॥ ६७ ॥
वज्झाणुट्ठाणेणं जेण न वाहिज्जए तयं नियमा। संभवइ य परिसुद्धं सो पुण धम्मम्मि छेउ त्ति ॥ ६८ ॥
जीवाइभाववाओ बन्धाइपसाहगो इहं तावो। एएहिं अपरिसुद्धो कारिमकणगोवमो धम्मो ॥ ६९ ॥
अवि य—
एएहिं जो न सुद्धो अन्नयरम्मि वि न सुट्ठुनिव्वडिओ। सो तारिसओ धम्मो नियमेण फले विसंवयइ १७७०॥
एमाई धम्मकहं सोउं संठाविउं सुयं रज्जे। अम्मापिईसमेओ पव्वइओ गग्गलिनरिन्दो ॥ ७१ ॥
आगच्छन्ताण पहे तेसिं सामिस्स वन्दणनिमित्तं। सुहपरिणामविसेसा केवल...

इय संयोगा एत्थं दुलहा जीवाण कुणह ता धम्मं। इय सोउं पडिबुद्धा सालमहासालरायाणो ॥ ६१ ॥
रज्जम्मि भाइणेज्जं पिढरसुयं जसमईए अङ्गरुहं। संठाविय पव्वइया संविग्गा सामिपासम्मि ॥ ६२ ॥
कालन्तरेण केणइ चम्पानयरीए विहरिओ भयवं। सालमहासालावि य गोयमगणहारिणा सहिया ॥ ६३ ॥
पिट्ठीचम्पाए गया तत्थ य वन्दन्ति परमभत्तीए। जसमइगग्गलिपिढरा सपरियरं गोयमगणिन्दं ॥ ६४ ॥
सुररइयकणयकमले उवविट्ठो गोयमो चउन्नाणी। उवइसइ इमं भव्वा धम्मो च्चिय एत्थ सुहमूलं ॥ ६५ ॥
कसछेयतावसुद्धं जहा सुवन्नं सुवन्नयमुवेइ। तह एएहिं सुद्धो धम्मो धम्मत्तणमुवेइ ॥ ६६ ॥
ते य इमे—
पाणवहाईयाणं पावट्ठाणाण जत्थ पडिसेहो। झाणज्झयणाईणं जोयविही एस धम्मकसो ॥ ६७ ॥
वज्झाणुट्ठाणेणं जेण न बाहिज्जए दुगं पि तयं। संभवइ य परिसुद्धं सो पुण धम्मम्मि छेउ त्ति ॥ ६८ ॥
जीवाइभाववाओ बन्धाइपसाहगो इहं तावो। एएहिं अपरिसुद्धो कारिमकणगोवमो धम्मो ॥ ६९ ॥
अवि य—
एएहिं जो न सुद्धो अन्नयरम्मि वि न सुट्ठुनिव्वडिओ। सो तारिसओ धम्मो नियमेण फले विसंवयइ ॥७०॥
एमाई धम्मकहं सोउं संठाविउं सुयं रज्जे। अम्मापिइसमेओ पव्वइओ गग्गलिनरिन्दो ॥ ७१ ॥
आगच्छन्ताण पहे तेसिं सामिस्स वन्दणनिमित्तं। सुहपरिणामविसेसा केवलणाणं समुप्पन्नं ॥ ७२ ॥

उत्तत्तकणगवन्नो सुन्दररूवलक्खणसंपन्नो । तं दट्ठुं ते सव्वे परोप्परं भणिउमाढत्ता ॥ ८६ ॥
अम्हे मुद्धा मुक्का इमं न सत्ता गिरिं विलग्गेउं । एयस्स थूलरिसिणो एत्थारुहणम्मि का सत्ती ॥ ८७ ॥
इय तेसि भणन्ताणं पेच्छन्ताणं च विम्हियमणाणं । तुरियं समारुहन्तो खणेण अदंसणीहूतो ॥ ८८ ॥
ते आउलियचित्ता भणन्ति ते पेच्छिमस्स सामत्थं । एस महप्पा कोइ वि परमरिसी पयडतवतेओ ॥ ८९ ॥
ता जइ एसो एही सीसा अम्हे इमस्स होहामो । इय ते निच्छियचित्ता गोयममित्तं पडिच्छन्ति ॥ १७९० ॥
अट्ठावयसिहरट्ठियमाययणं गोयमो वि संपत्तो । नन्दीसरसिद्धालयपडिच्छन्दो जं विणिम्मवियं ॥ ९१ ॥

अवि य—

आयामु जासु जोयणपमाणु जहिं रिसहपहु मोक्खपयाणु ।
गाउयइं तिन्नि उच्चत्तु कहिउ तं पवरु तित्थु अमरेहिं महिउ ॥ ९२ ॥
रयणुज्जलमणिमयचउदुवारु निम्मवियविविहनित्तप्पयारु ।
मन्दरचूला विव सिहरु जासु को वन्निउ सक्कइ सोहं तासु ॥ ९३ ॥
जहिं वड्डियवरकुलपियवन्नि अवयरियवरच्छर नं सुकन्ति ।
रयणमयवरकयवन्निच्छवन्ति नं इन्दचावसयविप्फुरन्ति ॥ ९४ ॥
लग्गाववरकलसु जाइ रविबिम्बु उदयगिरिसिहरि नाइ ।

उत्तत्तकणगवन्नो सुन्दरलावन्नरूवसंपन्नो । तं दट्ठुं ते सव्वे परोप्परं भणिउमाढत्ता ॥ ८६ ॥
अम्हे सुद्धा मुक्का इमं न सत्ता गिरिं विलग्गेउं । एयस्स थूलरिसिणो एत्थारुहणम्मि का सत्ती ॥ ८७ ॥
इय तेसि भणन्ताणं पेच्छन्ताणं च विम्हियमणाणं । तुरियं समारुहन्तो खणेण अदंसणीहूतो ॥ ८८ ॥
ते आउच्छियचित्ता भणन्ति ते पेच्छिमस्स सामत्थं । एस महप्पा कोइ वि परमरिसी पयडतवतेओ ॥ ८९ ॥
ता जइ एसो एही सीसा अम्हे इमस्स होहामो । इय ते निच्छियचित्ता गोयममिन्तं पडिच्छन्ति ॥ १७९० ॥
अट्ठावयगिरिवन्दियमाययणं गोयमो वि संपत्तो । नन्दीसरसिद्धालयपडिच्छन्दो जं विणिम्मवियं ॥ ९१ ॥

अवि य—

आयासु जासु जोयणपमाणु जहिं रिसहपहू मोक्खपयाणु ।
गाउयइं तिन्नि उच्चत्तु कहिउ तं पवरु तित्थु अमरेहिं महिउ ॥ ९२ ॥
रयणुज्जलमणिमयचउदुवारु निम्मवियविचित्तपयारु ।
मन्दरचूला विव सिहरु जासु को वण्णिउ सक्कइ सोह तासु ॥ ९३ ॥
जहिं पडिमरयणुज्जलियपन्ति अवयरियखरच्छर नं सुकन्ति ।
गयणग्गपलम्बविच्छुरन्ति नं इन्दचावसयविप्फुरन्ति ॥ ९४ ॥
कणयमयवरकलसु जाइ रविबिम्बु उदयगिरिसिहरि नाइ ।

जय सुविहि ! विहियसंसारभङ्ग ! जय सीयल ! ववगयसयलसङ्ग ! ।
सेज्जंस ! जयहि जयजन्तुरक्ख ! जय वासुपुज्ज ! सिवनन्दलक्ख ! ॥ ३ ॥
जय विमल ! दलियगुरु[1]कम्मकन्द ! जय जय अणन्त ! महिवलयचन्द ! ।
जय धम्म ! धम्मधुरधरणधीर ! जय सन्ति ! वसणघणरयसमीर ! ॥ ४ ॥
जय कुन्थुदेव ! भुवणप्पयास ! जय अरजिण ! सिवपुरकयनिवास ! ।
जय मल्लि ! मल्लसममोहमहण ! मुणिसुव्वय ! जय भवरन्नदहण ! ॥ ५ ॥
जय नमिजिण ! चिन्तामणिपकप्प ! जय नेमि ! भग्गकन्दप्प[2]सप्प ! ।
जय पास ! पणासियसयलदुक्ख ! जय वीरनाह ! जय कप्परुक्ख ! ॥ ६ ॥
सन्नाणपयासियवत्थुजाय बत्तीससुरेसरनमियपाय ।
रागाइसत्तुनिम्महणसूर भव्वारविन्दपडिवोहसूर ॥ ७ ॥
चउवीसवि करुणारसनिहाण चउवीसवि पावियसिद्धि[3]ठाण
चउवीसवि भुवणुद्धरणखम्भ चउवीसवि दुद्धरधरियबम्भ ॥ ८ ॥
चउवीसवि अट्ठावयमण्डण चउवीसवि मायामय[4]खण्डण ।

१. अ–°गुरु° । २ व–°दप्प° । ३ °द्धठा° । ४ व–°मद° ।

जय सुविहि ! विहियसंसारभङ्ग ! जय सीयल ! ववगयसयलसङ्ग ! ।
सेज्जंस ! जयहि जयजन्तुरक्ख ! जय वासुपुज्ज ! सिवबद्धलक्ख ! ॥ ३ ॥
जय विमल ! दलियगुरुकम्मकन्द ! जय जय अणन्त ! महियलयचन्द ! ।
जय धम्म ! धम्मधुरधरणधीर ! जय सन्ति ! वसणघणरयसमीर ! ॥ ४ ॥
जय कुन्थुदेव ! भुवणप्पयास ! जय अरजिण ! सिवपुरकयनिवास ! ।
जय मल्लि ! मल्लसममोहमहण ! मुणिसुव्वय ! जय भवरन्नदहण ! ॥ ५ ॥
जय नमिजिण ! चिन्तामणिपकप्प ! जय नेमि ! भग्गकन्दप्पसप्प ! ।
जय पास ! पणासियसयलदुक्ख ! जय वीरनाह ! जय कप्परुक्ख ! ॥ ६ ॥
सन्नाणपयासियवत्थुजाय बत्तीससुरेसरनमियपाय ।
रागाइसत्तुनिम्महणसूर भव्वारविन्दपडिबोहसूर ॥ ७ ॥
चउवीसवि करुणारसनिहाण चउवीसवि पावियसिद्धिठाण
चउवीसवि भुवणुद्धरणखम्भ चउवीसवि दुद्धरधरियबम्भ ॥ ८ ॥
चउवीसवि अट्ठावयमण्डण चउवीसवि मायामयखण्डण ।

१. अ-°मुरु° । २ व-°दप्प° । ३ °द्धठा° । ४ व-°मइ° ।

दारिद्दं चोयद्दयं बद्धं तित्थयरनामकम्मं ति । सद्धासंवेगपरं सड्ढो परिपूढओ जेण ॥ २१ ॥
एसा उ महादाणं एस चिय होइ भावजन्नो त्ति । एसा गिहत्थसारो एस च्चिय संपयामूलं ॥ २२ ॥
एयाएँ फलं नेयं परमं नेव्वाणमेव नियमेणं । नरसुरसुहाइँ अणुसंगियाइँ इह किसिपलालं व ॥ २३ ॥
भरहेण इमं सोउं अट्ठावयपव्वयम्मि एयम्मि । मोक्खगए उसभजिणे एयं काराविय तित्थं ॥ २४ ॥
जिणपडिमाचउवीसं भाउयपडिमासयं च एगूणं । नियमुत्ती य जिणिन्दे कारविया पज्जुवासन्ती ॥ २५ ॥
थूभसयं भाईणं परिपेरन्तेसु रक्खणनिमित्तं । चीभवणसमुत्तुङ्गं वड्ढइरयणेण निम्मवियं ॥ २६ ॥
लोहमया पडिहारा जन्तमया कारिया दुवारम्मि । अट्ठेव मेहलाओ ते छिन्ना दण्डरयणेणं ॥ २७ ॥
इगजोयणन्तराओ एगपँए अट्ठजोयणुस्सेहे । एयम्मि रक्खणत्थं तो पच्छा सगरपुत्तेहिं ॥ २८ ॥
फरिहा कया अगाहा भरिया गङ्गाजलस्स आणेउं । डण्डमहारयणेणं समन्तओऽलङ्घणिज्जस्स ॥ २९ ॥
इय कहिऊण गोयमो रयणिं गमिउं पहायसमयम्मि । उत्तिन्नो तो दिट्ठो तेहिं सहरिसं तावसेहिं ॥ १८३० ॥
पणमिय भणन्ति अम्हे सीसा तुम्हाण अम्ह तंसि गुरू । अम्हं तुम्हं च गुरू वीरो इय गोयमो आह ॥ ३१ ॥
सो केरिसो त्ति पुट्ठे वीरगुणुक्कित्तणं तओ कुणइ । सुहुमे खेत्तन्तरिए कालन्तरिए मुणइ सव्वे ॥ ३२ ॥
सो भावे सव्वाणी उम्मुक्को रागदोसमोहेहिं । बत्तीसं पि सुरिन्दा किङ्करभावं गया जस्स ॥ ३३ ॥

१ ब–गो व° । २ अ–वेगणं । ३ अ–°सड्ढो । ४ ब–निवा° । ५ अ–एयं । ६ ब–°पहे । ७ ब–दण्ड° ।

दारिद्दं चोवहयं बद्धं तित्थयरनामकम्मं ति । सद्धासंवेगपरं सद्धो परिपूइओ जेण ॥ २१ ॥
एसा उ महादाणं एस च्चिय होइ भावजन्नो त्ति । एसा गिहत्थसारो एस च्चिय संपयामूलं ॥ २२ ॥
एयाएँ फलं नेयं परमं नेव्वाणमेव नियमेणं । नरसुरसुहाइँ अणुसंगियाइँ इह किसिपलालं व ॥ २३ ॥
भरहेण इमं सोउं अट्ठावयपव्वयम्मि एयम्मि । मोक्खगए उसभजिणे एयं काराविय तित्थं ॥ २४ ॥
जिणपडिमाचउवीसं भाउयपडिमासयं च एगूणं । नियमुत्ती य जिणिन्दे कारविया पज्जुवासन्ती ॥ २५ ॥
थूभसयं भाईणं परिपेरन्तेसु रक्खणनिमित्तं । चीभवणसमुत्तुङ्गं वद्धइरयणेण निम्मवियं ॥ २६ ॥
लोहमया पडिहारा जन्तमया कारिया दुवारम्मि । अट्ठेव मेहलाओ ते छिन्ना दण्डरयणेणं ॥ २७ ॥
इगजोयणन्तराओ एगएँए अट्ठजोयणुस्सेहे । एयम्मि रक्खणत्थं तो पच्छा सगरपुत्तेहिं ॥ २८ ॥
फरिहा कया अगाहा भरिया गङ्गाजलस्स आणेउं । डंण्डमहारयणेणं समन्तओऽलङ्घणिज्जस्स ॥ २९ ॥
इय कहिऊण गोयमो रयणिं गमिउं पहायसमयम्मि । उत्तिन्नो तो दिट्ठो तेहिं सहरिसं तावसेहिं ॥ १८३० ॥
पणमिय भणन्ति अम्हे सीसा तुम्हाण अम्ह तंसि गुरू । अम्हं तुम्हं च गुरू वीरो इय गोयमो आह ॥ ३१ ॥
सो केरिसो त्ति पुट्ठे वीरगुणुक्कित्तणं तओ कुणइ । सुहुमे खेत्तन्तरिए कालन्तरिए मुणइ सव्वे ॥ ३२ ॥
सो भावे सव्वाणी उम्मुक्को रागदोसमोहेहिं । बत्तीसं पि सुरिन्दा किङ्करभावं गया जस्स ॥ ३३ ॥

१ ब-भो व° । २ अ-वेगेणं । ३ अ-°सद्धो । ४ ब-निव्वा° । ५ अ-एयं । ६ ब-°पहे । ७ ब-दण्ड° ।

भणइ जिणिन्दो गोयम ! मा आसाएहि केवली एए। तो खामइ संविग्गो मिच्छामीदुक्कडं
कुणइ महन्तमधीइं नाहं सिज्झामि नूण गुरुकम्मो। सिग्घमिमे लहुकम्मा कयपुन्ना केवली
भयवं पि तं सखेयं नाऊणं भणइ गोयमा ! कहसु। तित्थयराणं वयणं गज्झमुयाहो
एगन्तओ उ गज्झं ता खिज्जसि कीस जं तुममहं च। दोण्णि वि अम्हे गोयम! अन्ने

अन्नं च—

गोयम! चत्तारि कडा सुण्ठकडो वि दलचम्मकडगा य। कम्बलकडो ममोवरि कम्बलकडउ व्व तुह नेहो॥५०॥
चिरसंसिट्ठो[1] चिरपरिचिओ य जं मज्झ तंसि ता मोहो। आवरइ केवलं तुह विगए य इमम्मि तुह होही॥५१॥
तम्मि य समए गोयमनिस्साए पन्नवेइ अज्झयणं। दुमपत्तं वीरजिणो दिन्तो सिस्साणमणुसट्ठिं॥ ५२॥
दुमपत्तए पण्डुयए जहा निवडइ राइगणाण अचए। एवं मणुयाण जीवियं समयं गोयम! मा पमायए॥ ५३॥
कुस्सग्गे जह ओसबिन्दुए थोवं चिट्ठइ लम्बमाणए। एवं मणुयाण जीवियं समयं गोयम! मा पमायए॥ ५४॥

तहा—

मणुयत्तमारियत्तं अहीणपञ्चिन्दियत्तधम्मसुई। सद्दहण धम्मचरणं जहुत्तारं एयमइदुलहं॥ ५५॥
इय नाऊणं गोयम! समयं पिहु मा करेज्जसु पमायं। एमाइ तमणुसासिय चम्पाओ विहेरिउं[2] भयवं॥५६॥

[1] अ—संसट्ठो। [2] व—विहरिओ।

भयवं भणइ पहू सो आणन्दा ! किं परं न अरिहन्ते । परियावणे समत्थो तेसिं पिहु
गोयममाइमुणीणं गोसालं किं पि कोइ मा भणउ । सो कुद्धो आगमिही भणिओ तेएण
आणन्देण य कहियं मुणीण तं सो उ आगओ तुरियं । गोसालो बहुसीसो उवट्ठिओ भणइ भयवन्तं ॥ ७१ ॥
किं भणसि कासवा ! तं गोसालो आसि एस मम सीसो ?। अन्नो सो तुह सीसो अहं तु तन्नामओ अन्नो ॥ ७२ ॥
जह तेणो पारद्धो नगरारक्खियभडेहिं गोसाला ! । पुरओ देइ तणाइं आवरणत्थं सरीरस्स ॥ ७३ ॥
छाइज्जइ तेण तयं गोवेसि तुमं पि एवमप्पाणं । न य अन्नो होसि त्ति य भणिओ वीरेण अइरुट्ठो ॥ ७४ ॥
उच्चावयमक्कोसइ वेइ विणट्ठो सि मम सयासाओ । सव्वाणुभूइसाहू तं सोउं सामिभत्तीए ॥ ७५ ॥
जम्पइ हा गोसाला ! एकं पिहु अक्खराइ जो जत्तो । सिक्खइ सो तं वन्दइ गुरु त्ति काउं कुणइ भत्तिं ॥ ७६ ॥
तं पुण सीसत्तेणं पडिवन्नो भगवया य सिक्खविओ । तेऊलेसा वसणाउ मोइओ बहुसुओ य कओ ॥ ७७ ॥
पडणीयत्तं संपइ किं पडिवन्नो सि दुट्ठ तुज्झ मई । इय भणिओ सो रुट्ठो तं साहुं भाससा कुणइ ॥ ७८ ॥
पुणरवि जिणमक्कोसइ तओ सुनक्खत्तमहरिसी तत्थ । धम्मगुरूपरमभत्तो चिन्तइ नियजीवनिरवेक्खो ॥ ७९ ॥
मा जम्मउ सो पुरिसो जाओऽविहु जियउ मा चिरं कालं । जो पेच्छन्तो वि सहइ धम्मगुरुपराभवं मूढो १८८०॥
इय चिन्तिय पडिचोयइ गोसालं सो तहेव तेएणं । सोऽवि तयं परितावइ वाढं तो वीरपासम्मि ॥ ८१ ॥

१ ब–च । २ ब–न तं ।

भयवं भणइ पहू सो आणन्दा ! किं परं न अरिहन्ते । परियावणे समत्थो तेसिं पिहु
गोयममाइमुणीणं गोसालं किं पि कोइ मा भणउ । सो कुद्धो आगमिही भणिओ तेएण
आणन्देण य कहियं मुणीण तं सो उ आगओ तुरियं । गोसालो बहुसीसो उच्छढिओ भणइ भयवन्तं ॥ ७१ ॥
किं भणसि कासवा ! तं गोसालो आसि एस मम सीसो ? । अन्नो सो तुह सीसो अहं तु तन्नामओ अन्नो ॥ ७२ ॥
जह तेणो पारद्धो नगरारक्खियभडेहिं गोसाला ! । पुरओ देइ तणाइं आवरणत्थं सरीरस्स ॥ ७३ ॥
छाइज्जइ तेण तयं गोवेसि तुमं पि एवमप्पाणं । न य अन्नो होसि त्ति य भणिओ वीरेण अइरुट्ठो ॥ ७४ ॥
उच्चावयमक्कोसइ वेइ विणट्ठो सि मम सयासाओ । सव्वाणुभूइसाहू तं सोउं सामिभत्तीए ॥ ७५ ॥
जम्पइ हा गोसाला ! एकं पिहु अक्खराइ जो जत्तो । सिक्खइ सो तं वन्दइ गुरु त्ति काउं कुणइ भत्तिं ॥ ७६ ॥
तं पुण सीसत्तेणं पडिवन्नो भगवया य सिक्खविओ । तेऊलेसा वसणाउ मोइओ बहुसुओ य कओ ॥ ७७ ॥
पडणीयत्तं संपइ किं पडिवन्नो सि दुट्ठ तुज्झ मई । इय भणिओ सो रुट्ठो तं साहुं भाससा कुणइ ॥ ७८ ॥
पुणरवि जिणमक्कोसइ तओ सुनक्खत्तमहरिसी तत्थ । धम्मगुरुपरमभत्तो चिन्तइ नियजीवनिरवेक्खो ॥ ७९ ॥
मा जम्मउ सो पुरिसो जाओऽविहु जियउ मा चिरं कालं । जो पेच्छन्तो वि सहइ धम्मगुरुपराभवं मूढो १८८०॥
इय चिन्तिय पडिचोयइ गोसालं सो तहेव तेएणं । सोऽवि तयं परितावइ वाढं तो वीरपासम्मि ॥ ८१ ॥

१ व-न । २ व-न तं ।

भगवयाऽवि समणाण साहियं—

जो मुक्को नियतेओ गोसालेणं वहाय मह समणा । सो अङ्गवङ्गमाई सोलसदेसे अलं दहिउं ॥ ९४ ॥

इओ य—

अम्बंविलियापाणगमाई दाहस्स पसमणनिमित्तं । गोसालो पियइ बहू करेइ सीओवयारे य ॥ ९५ ॥
मज्जं पिएइ गायइ नचइ हालाहलाइ पकरेइ । अञ्जलिकम्मं मूढो सिञ्चइ मट्टियजलेण तणुं ॥ ९६ ॥
सत्तमअहरत्तन्ते नियमरणं जाणिउं भणइ सीसे । मं कालगयं तुब्भे सिणाणमाईहिं पूएउं ॥ ९७ ॥
सिवियारूढं काउं घोसिज्जह एत्थ सव्वनयरीए । चउवीसमतित्थयरो गोसालो भरहवासम्मि ॥ ९८ ॥
केवलणाणी सिद्धो देवाणुपिया इहेज्ज इय महया । इड्ढीसक्कारेणं नीहरणं मम करेज्जाह ॥ ९९ ॥
खणमेत्तेण पुणो सो कहिञ्चि मिच्छत्तलेयउवसमेणं । संमत्तभावियमणो चिन्तइ नाहं जिणो होमि ॥ १९०० ॥
मङ्खलिपुत्तो उ अहं समणाणं घायगो अणत्थखणी । गुरुपडणीओ धम्मस्स अयसकारी महापावो ॥ १ ॥
नियतेएणं दड्ढो करोमि कालं सकम्मदोसेणं । भयवं पि महावीरो तित्थयरो केवली एत्थ ॥ २ ॥
एवं परिभावेन्तो नियसीसाणं कहेइ सो सव्वं । पुव्वुत्तं ते भणिया तुब्भे मं मुणियकालगयं ॥ ३ ॥
सुंबेणं वन्धेत्ता वामे पायम्मि थोक्केह मुहम्मि । तिक्खुत्तो पुणो पच्छा कड्ढिकड्ढिं करेमाणा ॥ ४ ॥

---

१ व—°लाए । २ च—°हं जइ य । ३ अ—°गय° । ४ व—तो । ५ अ ठोक° ।

भगवयाऽवि समणाण साहियं—

जो मुक्को नियतेओ गोसालेणं वहाय मह समणा । सो अङ्गवङ्गमाई सोलसदेसे अलं दहिउं ॥ ९४ ॥

इओ य—

अम्बंविलियापाणगमाई दाहस्स पसमणनिमित्तं । गोसालो पियइ बहू करेइ सीओवयारे य ॥ ९५ ॥
मज्जं पिएइ गायइ नच्चइ हालाहलाइ पकरेइ । अञ्जलिकम्मं मूढो सिञ्चइ मट्टियजलेण तणुं ॥ ९६ ॥
सत्तमअहरत्तान्ते नियमरणं जाणिउं भणइ सीसे । मं कालगयं तुब्भे सिणाणमाईहिं पूएउं ॥ ९७ ॥
सिवियारूढं काउं घोसिज्जह एत्थ सव्वनयरीए । चउवीसमतित्थयरो गोसालो भरहवासम्मि ॥ ९८ ॥
केवलणाणी सिद्धो देवाणुपिया इहेज्ज इय महया । इड्ढीसक्कारेणं नीहरणं मम करेज्जाह ॥ ९९ ॥
खणमेत्तेण पुणो सो कहिंचि मिच्छत्तखयउवसमेणं । संमत्तभावियमणो चिन्तइ नाहं जिणो होमि ॥ १९०० ॥
मङ्खलिपुत्तो उ अहं समणाणं घायगो अणत्थखणी । गुरुपडणीओ धम्मस्स अयसकारी महापावो ॥ १ ॥
नियतेएणं दड्ढो करोमि कालं सकम्मदोसेणं । भयवं पि महावीरो तित्थयरो केवली एत्थ ॥ २ ॥
एवं परिभावेन्तो नियसीसाणं कहेइ सो सव्वं । पुवुत्तं ते भणिया तुब्भे मं मुणियकालगयं ॥ ३ ॥
सुंबेणं बन्धेत्ता वामे पायम्मि थोक्केह मुहम्मि । तिक्खुत्तो पुणो पच्छा कड्ढविकड्ढिं करेमाणा ॥ ४ ॥

---

१ ब–°लाए । २ ब–°हं जइ य । ३ अ–°गय° । ४ ब–तो । ५ अ ठोक्क° ।

जलरेणुपुढविपव्वयराईसरिसो चउव्विहो कोहो । तिणसलयाकट्ठट्ठियसेलत्थम्भोवमो माणो ॥ १७ ॥
मायावलेहिगोमुत्तमिण्ढसिङ्गघणवंसमूलसरिसा उ । लोहो हलिद्दकद्दमखञ्जणकिमिरागसम्माणो ॥ १८ ॥
पक्खचउमासवच्छरजावज्जीवाणुगामिणो कमसो । देवनरतिरियनारयगइसाहणहेयवो भणिया ॥ १९ ॥

पमाओ पुण—

वरं महाविसं भुत्तं वरं अग्गीपवेसणं । वरं सत्तूहिं संवासो वरं सप्पेहिं कीलियं ॥ १९२० ॥
मा धम्मम्मि पमाओ जमेगमच्चू विसाइणो । पमाएणं अणन्ताणि जम्माणि मरणाणि य ॥ २१ ॥

एवं हिओवएसा पडिबुद्धा तत्थ पाणिणो बहवे । सामिस्स तदा जाओ रोगायङ्को सकम्माओ ॥ २२ ॥
तिव्वो उ दुरहियासो जिणस्स वीरस्स पित्तजरजुत्तो । लोहियवच्चायं पि य करेइ जायइ य अबलतणू ॥ २३ ॥
रोगकिलन्तं दट्ठुं सामी सव्वो चउव्विहो सङ्घो । तह देवदेविवग्गो महन्तमुव्वेयमावन्नो ॥ २४ ॥
चाउवन्नो य जणो जम्पइ गोसालतेउलेसाए । छण्हं मासाणन्ते करिही कालं महावीरो ॥ २५ ॥
तं सोउं सीहमुणी एगागी विसिय मालुयाकच्छे । रोयइ कहकहसद्देण गरुयदुक्खं समावन्नो ॥ २६ ॥
सामी साहू पेसइ मुणिय इमं तस्स वाहरणकज्जे । भणिओ अ तेहिं गन्तुं सीहा ! सद्दाइ तं वीरो ॥ २७ ॥
सीहोऽवि समागन्तुं वन्दित्ता पज्जुवासए भयवं । भणिओ जिणेण सीहा ! कीस अधिइं तुमं कुणसि ॥ २८ ॥

१ व-°ई पि य । २ व-°णन्तो ।

जलरेणुपुढविपव्वयराईसरिसो चउव्विहो कोहो। तिणसलयाकट्ठट्ठियसेलत्थम्भोवमो माणो॥ १७॥
मायावलेहिगोमुत्तमिण्ढसिङ्गघणवंसमूलसरिसा उ। लोहो हलिद्दकद्दमखञ्जणकिमिरागसम्माणो॥ १८॥
पक्खचउमासवच्छरजावज्जीवाणुगामिणो कमसो। देवनरतिरियनारयगइसाहणहेयचो भणिया॥ १९॥

पमाओ पुण—

' वरं महाविसं भुत्तं वरं अग्गीपवेसणं। वरं सत्तूहिं संवासो वरं सप्पेहिं कीलियं॥ १९२०॥ '
मा धम्मम्मि पमाओ जमेगमच्चू विसाइणो। पमाएणं अणन्ताणि जम्माणि मरणाणि य॥ २१॥ "

एवं हिओवएसा पडिबुद्धा तत्थ पाणिणो बहवे। सामिस्स तदा जाओ रोगायङ्को सकम्माओ॥ २२॥
तिव्वो उ दुरहियासो जिणस्स वीरस्स पित्तजरजुत्तो। लोहियवच्चायं पि य करेइ जायइ य अबलतणू॥ २३॥[1]
रोगकिलन्तं दट्ठुं सामी सव्वो चउव्विहो सङ्घो। तह देवदेविवग्गो महन्तमुव्वेयमावन्नो॥ २४॥
चाउवन्नो य जणो जम्पइ गोसालतेउलेसाए। छण्हं मासाणन्ते करिही कालं महावीरो॥ २५॥
तं सोउं सीहमुणी एगागी विसिय मालुयाकच्छे। रोयइ कहकहसद्देण गरुयदुक्खं समावन्नो॥ २६॥
सामी साहू पेसइ मुणिय इमं तस्स वाहरणकज्जे। भणिओ अ तेहिं गन्तुं सीहा! सदाइ तं वीरो॥ २७॥
सीहोऽवि समागन्तुं वन्दित्ता पज्जुवासए भयवं। भणिओ जिणेण सीहा! कीस अधिइं तुमं कुणसि॥ २८॥

१ व–°इं पि य। २ व–°णन्तो।

जलरेणुपुढविपव्वयराईसरिसो चउव्विहो कोहो । तिणसलयाकट्ठट्ठियसेलत्थम्भोवमो माणो ॥ १७ ॥
मायावलेहिगोमुत्तमिण्ढसिङ्गघणवंसमूलसरिसा उ । लोहो हलिद्दकद्दमखञ्जणकिमिरागसम्माणो ॥ १८ ॥
पक्खचउमासवच्छरजावज्जीवाणुगाणिणो कमसो । देवनरतिरियनारयगइसाहणहेयवो भणिया ॥ १९ ॥

पमाओ पुण—

' वरं महाविसं भुत्तं वरं अग्गीपवेसणं । वरं सत्तूहिं संवासो वरं सप्पेहिं कीलियं ॥ १९२० ॥ '
मा धम्मम्मि पमाओ जमेगमच्चू विसाइणो । पमाएणं अणन्ताणि जम्माणि मरणाणि य ॥ २१ ॥"

एवं हिओवएसा पडिबुद्धा तत्थ पाणिणो बहवे । सामिस्स तदा जाओ रोगायङ्को सकम्माओ ॥ २२ ॥
तिव्वो उ दुरहियासो जिणस्स वीरस्स पित्तजरजुत्तो । लोहियवच्चायं पि य करेइ जायइ य अबलतणू ॥ २३ ॥
रोगकिलन्तं दट्ठुं सामी सव्वो चउव्विहो सङ्घो । तह देवदेविवग्गो महन्तमुव्वेयमावन्नो ॥ २४ ॥
चाउवन्नो य जणो जम्पइ गोसालतेउलेसाए । छण्हं मासाणन्ते करिही कालं महावीरो ॥ २५ ॥
तं सोउं सीहमुणी एगागी विसिय मालुयाकच्छे । रोयइ कहकहसद्देण गरुयदुक्खं समावन्नो ॥ २६ ॥
सामी साहू पेसइ मुणिय इमं तस्स वाहरणकज्जे । भणिओ अ तेहिं गन्तुं सीहा ! सद्दाइ तं वीरो ॥ २७ ॥
सीहोऽवि समागन्तुं वन्दित्ता पज्जुवासए भयवं । भणिओ जिणेण सीहा ! कीस अधिइं तुमं कुणसि ॥ २८ ॥

१ ब—°इं पि य । २ ब—°णन्तो ।

जलरेणुपुढविपव्वयराईसरिसो चउव्विहो कोहो । तिणसलयाकट्ठट्ठियसेलत्थम्भोवमो माणो ॥ १७ ॥
मायावलेहिगोमुत्तमिण्ढसिङ्गघणवंसमूलसरिसा उ । लोहो हलिद्दकद्दमखञ्जणकिमिरागसम्माणो ॥ १८ ॥
पक्खचउमासवच्छरजावज्जीवाणुगाणिणो कमसो । देवनरतिरियनारयगइसाहणहेयवो भणिया ॥ १९ ॥

पमाओ पुण—

वरं महाविसं भुत्तं वरं अग्गीपवेसणं । वरं सत्तूहिं संवासो वरं सप्पेहिं कीलियं ॥ १९२० ॥
मा धम्मम्मि पमाओ जमेगमच्चू विसाइणो । पमाएणं अणन्ताणि जम्माणि मरणाणि य ॥ २१ ॥

एवं हिओवएसा पडिबुद्धा तत्थ पाणिणो बहवे । सामिस्स तदा जाओ रोगायङ्को सकम्माओ ॥ २२ ॥
तिव्वो उ दुरहियासो जिणस्स वीरस्स पित्तजरजुत्तो । लोहियवच्चायं पि य करेइ जायइ य अबलतणू ॥ २३ ॥
रोगकिलन्तं दट्ठुं सामी सव्वो चउव्विहो सङ्घो । तह देवदेविवग्गो महन्तमुव्वेयमावन्नो ॥ २४ ॥
चाउवन्नो य जणो जम्पइ गोसालतेउलेसाए । छण्हं मासाणन्ते करिही कालं महावीरो ॥ २५ ॥
तं सोउं सीहमुणी एगागी थिसिय मालुयाकच्छे । रोयइ कहकहसद्देण गरुयदुक्खं समावन्नो ॥ २६ ॥
सामी साहू पेसइ मुणिय इमं तस्स वाहरणकज्जे । भणिओ अ तेहिं गन्तुं सीहा ! सद्दाइ तं वीरो ॥ २७ ॥
सीहोऽवि समागन्तुं वन्दित्ता पज्जुवासए भयवं । भणिओ जिणेण सीहा ! कीस अधिइं तुमं कुणसि ॥ २८ ॥

१ व–°इं पि य । २ व–°णन्तो ।

गोसालस्स जिणेणं सुहपरिणामाउ तेण सम्मत्तं । पत्तं तस्स पभावा अच्चुयकप्पे गओ सो त्ति ॥ ४१ ॥
'सम्मद्दिट्ठी मणुओ विमाणवज्जं न बन्धए आउं । जइ वि न संमत्तजढो अहवा बद्धाउओ पुव्विं ॥ ४२ ॥'
कप्पाओं चुओ सन्तो किं किं सो सामि ! पाविही एत्थ । भरहम्मि सयदुवारे नयरे होही महारायां ॥ ४३ ॥
नामेण महापउमो सो समणाणं उवद्दवे बहुए । मिच्छत्तं पडिवन्नो कारेही दुट्ठपरिणामो ॥ ४४ ॥
अक्कोसणनिब्भच्छणबन्धणरुम्भणयउवहिहरणं च । छविछेयं कारेही निव्वासेही य नयराओ ॥ ४५ ॥
विन्नत्तो य जणेणं मिच्छाभावेण उवरमं काही । चरियाएँ रहारूढो निग्गमिही अन्नया सो उ ॥ ४६ ॥
उज्जाणे अणगारं आयाविन्तं सुमङ्गलं नाम । दट्ठूणमासुरुत्तो नोल्लावेही रहसिरेणं ॥ ४७ ॥
सो सणियं उट्ठेत्ता पुणो वि आयाविही सुधीरमणो । इयरो नोल्लेइ पुणो बीयं वारं पुणो तइयं ॥ ४८ ॥
आभोएही य तओ ओहिन्नाणेण सो अईअद्धं । गोसालभवे दट्ठुं दुच्चरियं तस्स गुरुरोसा ॥ ४९ ॥
सहयं सरहं दहिही नियतवतेएण तं महापउमं । आउखए सो जाही सव्वट्ठेऽणुत्तरविमाणे ॥ १९५० ॥
सत्तमपुढविं जाही सो राया होहिई[2] य सो मच्छो । पुण सत्तमिए जाही एवं एगेगपुढवीए ॥ ५१ ॥
दो दो वारा जाही तत्तो पञ्चिन्दिएसु सव्वेसु । बहुसो उववज्जिस्सइ सव्वत्थवि सत्थवज्झो त्ति ॥ ५२ ॥
चउरिन्दियतेइन्दियबिइन्दिएगिन्दिएसु सव्वेसु । छिन्नो भिन्नो दड्ढो मरिही सव्वत्थ वियणत्तो ॥ ५३ ॥

१ ब–आउक्खयंमि जा० । २ अ–°हई ।

गोसालस्स जिणेणं सुहपरिणामाउ तेण सम्मत्तं । पत्तं तस्स पभावा अच्चुयकप्पे गओ सो त्ति ॥ ४१ ॥
सम्मद्दिट्ठी मणुओ विमाणवज्जं न बन्धए आउं । जइ वि न संमत्तजढो अहवा बद्धाउओ पुव्विं ॥ ४२ ॥
कप्पाओ चुओ सन्तो किं किं सो सामि ! पाविही एत्थ । भरहम्मि सयदुवारे नयरे होही महाराया ॥ ४३ ॥
नामेण महापउमो सो समणाणं उवद्दवे बहुए । मिच्छत्तं पडिवन्नो कारेही दुट्ठपरिणामो ॥ ४४ ॥
अक्कोसणनिब्भच्छणबन्धणरुम्भणयउवहिहरणं च । छविछेयं कारेही निव्वासेही य नयराओ ॥ ४५ ॥
विन्नत्तो य जणेणं मिच्छाभावेण उवरमं काही । चरियाए रहारूढो निग्गमिही अन्नया सो उ ॥ ४६ ॥
उज्जाणे अणगारं आयाविन्तं सुमङ्गलं नाम । दट्ठूणमासुरुत्तो नोल्लावेही रहसिरेणं ॥ ४७ ॥
सो सणियं उट्ठेत्ता पुणो वि आयाविही सुधीरमणो । इयरो नोल्लेइ पुणो बीयं वारं पुणो तइयं ॥ ४८ ॥
आभोएही य तओ ओहिन्नाणेण सो अईअद्धं । गोसालभवे दट्ठुं दुचरियं तस्स गुरुरोसा ॥ ४९ ॥
सहयं सरहं दहिही नियतवतेएण तं महापउमं । आउखए सो जाही सव्वट्ठेऽणुत्तरविमाणे ॥ १९५० ॥
सत्तमपुढविं जाही सो राया होहिई[2] य सो मच्छो । पुण सत्तमिए जाही एवं एगेगपुढवीए ॥ ५१ ॥
दो दो वारा जाही तत्तो पश्चिन्दिएसु सव्वेसु । बहुसो उववज्जिस्सइ सव्वत्थवि सत्थवज्झो त्ति ॥ ५२ ॥
चउरिन्दियतेइन्दियबिइन्दिएगिन्दिएसु सव्वेसु । छिन्नो भिन्नो दड्ढो मरिही सव्वत्थ वियणत्तो ॥ ५३ ॥

---

१ ब–आउक्खयंमि जा० । २ अ–०हई ।

सालिग्गामे आसी दुग्गो कुलपुत्तओ उ ओलग्गो । धन्ना य तस्स भज्जा तेसिं पुत्तो य संगमओ ॥ ६५ ॥
भवियव्वयावसेणं तीसे पञ्चत्तमुवगओ भत्ता । सा परघरकम्माइं कुणमाणी भरइ नियपोट्टं ॥ ६६ ॥
संगमओ पुण चारइ सिसुभावे गामवच्छरूवाइं । तेणन्नया वणम्मी दिट्ठो पडिमं ठिओ साहू ॥ ६७ ॥
निच्चलनिरुद्धकाओ लम्बियबाहू सिलायलोवगओ । उग्गतवसोसियङ्गो धम्मज्झाणं झियायन्तो ॥ ६८ ॥
जाया य तस्स सद्धा महारिसीए सधम्मपिण्डो त्ति । सो तं वन्दइ चलणे पमज्जिउं मलइ भत्तीए ॥ ६९ ॥
समुहं च पलोइन्तो खणमेत्तं चिट्ठए उपासन्तो । कुणमाणस्स य एवं के वि दिणा वोलिया तस्स ॥ १०७० ॥
जायम्मि कम्मि वि छणे गिहे गिहे तत्थ रज्झए खीरी । सो दट्ठूणं पभणइ अम्बे ! मज्झ देसु परमन्नं ॥ ७१ ॥
सा रोविउं पयत्ता सुयराहाडिं निएवि मणुइया । आसन्नगिहाहिन्तो तत्तो मिलियाउ महिलाओ ॥ ७२ ॥
पुट्ठं च ताहिं भद्दे ! किं रोयसि तीएँ तासि परिकहियं । न मुणइ अत्थि अणत्थि मम पुत्तो नियगगेहम्मि ॥ ७३ ॥
एसो मग्गइ खीरी सामग्गीविरहओ य सा कत्तो । दन्तेहिं विणा जम्हा न सिण्टणं होइ कइयावि ॥ ७४ ॥
तो पायसोवगरणं अणुकम्पाए विइन्नमेयाहिं । चिन्तिय दसाविभागो कस्सित्थ न जायए विसमो ॥ ७५ ॥
रद्धा य तीएँ खीरी भरियं भाणं च भोयणट्ठाए । पुत्तस्स घयमहुजुयं उवविट्ठो भुञ्जिउं सो वि ॥ ७६ ॥
एत्थन्तरे मुणी सो समागओ मासखमणपारणए । जुगमेत्तनिहियदिट्ठी तस्स गिहे पुन्नजोगेणं ॥ ७७ ॥

१ व–°सम्मि । २ व–केइ । ३ अ–दिणे । ४ व–°ण्टणं । ५ व–कस्से° ।

सालिग्गामे आसी दुग्गो कुलपुत्तओ उ ओलग्गो । धन्ना य तस्स भज्जा तेसिं पुत्तो य संगमओ ॥ ६५ ॥
भवियव्वयावसेणं तीसे पञ्चत्तमुवगओ भत्ता । सा परघरकम्माइं कुणमाणी भरइ नियपोट्टं ॥ ६६ ॥
संगमओ पुण चारइ सिसुभावे गामवच्छरूवाइं । तेणन्नया वणम्मी दिट्ठो पडिमं ठिओ साहू ॥ ६७ ॥
निच्चलनिरुद्धकाओ लम्बियबाहू सिलायलोवगओ । उग्गतवसोसियङ्गो धम्मज्झाणं झियायन्तो ॥ ६८ ॥
जाया य तस्स सद्धा महारिसीए सधम्मपिण्डो त्ति । सो तं वन्दइ चलणे पमज्जिउं मलइ भत्तीए ॥ ६९ ॥
समुहं च पलोइन्तो खणमेत्तं चिट्ठए उपासन्तो । कुणमाणस्स य एवं के वि दिणा वोलिया तस्स ॥ १९७० ॥
जायम्मि कम्मि वि छणे गिहे गिहे तत्थ रज्झए खीरी । सो दट्ठूणं पभणइ अम्बे ! मह देसु परमन्नं ॥ ७१ ॥
सा रोविउं पयत्ता सुयराहाडिं निएवि मन्तुइया । आसन्नगिहाहिन्तो तत्तो मिलियाउ महिलाओ ॥ ७२ ॥
पुट्ठं च ताहिं भद्दे ! किं रोयसि तीए तासि परिकहियं । न मुणइ अत्थि अणत्थं मम पुत्तो निययगेहम्मि ॥ ७३ ॥
एसो मग्गइ खीरी सामग्गीविरहओ य सा कत्तो । दन्तेहिं विणा जम्हा न सिण्टणं होइ कइयावि ॥ ७४ ॥
तो पायसोवगरणं अणुकम्पाए विइन्नमेयाहिं । चिन्तिय दसाविभागो कैस्सित्थ न जायए विसमो ॥ ७५ ॥
रद्धा य तीए खीरी भरियं भाणं च भोयणट्ठाए । पुत्तस्स घयमहुजुयं उवविट्ठो भुञ्जिउं सो वि ॥ ७६ ॥
एत्थन्तरे मुणी सो समागओ मासखमणपारणए । जुगमेत्तनिहियदिट्ठी तस्स गिहे पुन्नजोगेणं ॥ ७७ ॥

१ व-॰सम्मि । २ व-केइ । ३ अ-दिणे । ४ व-॰ण्टणं । ५ व-कस्से॰ ।

इओ य—

कालक्कमेण जाओ देवकुमारोवमो सुओ तीए । विहियं बन्धुजणेणं वद्धावणयं अइमहन्तं ॥ १९९० ॥
तस्स परिपालणत्थं ठवियाओ तेण पञ्च धावीओ । धावणमज्जणमण्डणकीलावणअङ्कधाईओ ॥ ९१ ॥
जं सालिखेत्तसुमिणं दिट्टं गब्भंगयम्मि एयम्मि । भद्दाएँ कयं नामं सुयस्स तो सालिभद्दो त्ति ॥ ९२ ॥
भद्दाएँ सुयं किर मे पवहणभङ्गेण उवरओ भत्ता । मुच्छइ रोयइ कन्दइ विलवइ सोआउरा ताहे ॥ ९३ ॥
हाहा हयविहि ! निद्दय ! निल्लज्ज ! अणज्ज ! मज्झ किं विहियं । वसणमसज्झमयण्डे सुहिसज्जणसोयणिज्जमिणं ॥ ९४ ॥
रे दइय ! जइ ममोवरि तुज्झ विणा नत्थि कूरचित्तस्स । ता किं एयम्मि वि बालयम्मि करुणा न तुह जाया ॥ ९५ ॥
एवं सा विलवन्ती संठविया सयणमित्तवग्गेणं । कालेण विगयसोगा जाया घरकज्जसंलग्गा ॥ ९६ ॥
जाओ य सालिभद्दो परिवड्ढन्तो कलागहणजोगो । गेहे चिय सिक्खविओ कलाउ कलसूरिणा मइमं ॥ ९७ ॥
लायन्नरूवमणहरसव्वङ्गं जोव्वणं च संपत्तो । रमणीयणमणहरणो पिओ य सव्वस्स लोयस्स ॥ ९८ ॥
चाई भोई दक्खिन्नसायरो सच्चभासणो सोमो । पियवाणी दयसारो धम्मपिओ विणयसंपन्नो ॥ ९९ ॥
उत्तमकुलुब्भवाओ मणहरतारुन्नकन्तिकलियाओ । सारयससिवयणाओ कुवलयदलदीहनयणाओ ॥ २००० ॥
अमरकरिकुम्भविब्भमपओहराओ य सुरवहुसमाओ । तिवलियतणुमज्झाओ कयलीखम्भोरुजुयलाओ ॥ १ ॥
अलिउलसमचिहुराओ सुरसरियापुलिणरम्मरमणाओ । परिणेइ एगदिवसं बत्तीसं इब्भकन्नाओ ॥ २ ॥

इओ य—

कालक्कमेण जाओ देवकुमारोवमो सुओ तीए। विहियं वन्धुजणेणं वद्धावणयं अइमहन्तं ॥ १९९० ॥
तस्स परिपालणत्थं ठवियाओ तेण पञ्चधावीओ। धावणमज्जणमण्डणकीलावणअङ्कधाईओ ॥ ९१ ॥
जं सालिखेत्तसुमिणं दिट्ठं गब्भंगयम्मि एयम्मि। भद्दाए कयं नामं सुयस्स तो सालिभद्दो त्ति ॥ ९२ ॥
भद्दाए सुयं किर मे पवहणभङ्गेण उवरओ भत्ता। मुच्छइ रोयइ कन्दइ विलवइ सोआउरा ताहे ॥ ९३ ॥
हाहा हयविहि! निद्दय! निल्लज्ज! अणज्ज! मज्झ किं विहियं। वसणमसज्झमयण्डे सुहिसज्जणसोयणिज्जमिणं ॥ ९४ ॥
रे दइय! जइ ममोवरि तुज्झ विणा नत्थि कूरचित्तास्स। ता किं एयम्मि वि बालयम्मि करुणा न तुह जाया ॥ ९५ ॥
एवं सा विलवन्ती संठविया सयणमित्तवग्गेणं। कालेण विगयसोगा जाया घरकज्जसंलग्गा ॥ ९६ ॥
जाओ य सालिभद्दो परिवड्ढन्तो कलागहणजोगो। गेहे च्चिय सिक्खविओ कलाउ कलसूरिणा सइमं ॥ ९७ ॥
लायन्नरूवमणहरसवङ्गं जोव्वणं च संपत्तो। रमणीयणमणहरणो पिओ य सव्वस्स लोयस्स ॥ ९८ ॥
चाई भोई दक्खिन्नसायरो सच्चभासणो सोमो। पियवाणी दयसारो धम्मपिओ विणयसंपन्नो ॥ ९९ ॥
उत्तमकुलुब्भवाओ मणहरतारुन्नकन्तिकलियाओ। सारयससिवयणाओ कुवलयदलदीहनयणाओ ॥ २००० ॥
अमरकरिकुम्भविब्भमपओहराओ य सुरवहुसमाओ। तिवलियतणुमज्झाओ कयलीखम्भोरुजुयलाओ ॥ १ ॥
अलिउलसमचिहुराओ सुरसरियापुलिणरम्मरमणाओ। परिणेइ एगदिवसं वत्तीसं इब्भकन्नाओ ॥ २ ॥

किञ्च—

तुज्झ पसिद्धिं सोउं जे वणिणो आगया इह नरिन्द ! । तेसिं पुरओ तुमए एवं लहुईकओ अप्पा ॥ १७
तं मोल्लं नो पुज्जइ जइ तुह रयणावलिं इमं गेण्ह । किणसु य कम्बलरयणं विगयासा ते वि मा होन्तु ॥१८॥
एवं च उवालद्धो भज्जाए सेणिओ तओ वणिए । मग्गइ कम्बलरयणं तेहि य भद्दागहो कहिओ ॥ १९ ॥
तं सोउं सुद्दुयरं सद्धा सा चेल्लणा भणइ एवं । वाणिगिणीए वि समं सत्तं तुह नत्थि नरनाह ! ॥ २०२० ॥
तो नरवइणा भद्दा भणाविया अज्ज जे तुमे गहिया । कम्बलरयणा तेसिं एगं मे देहि मोल्लेणं ॥ २१ ॥

ताहे पडिभणियं—

ते तक्खणमेव मए नरिन्द ! नियपुत्तसालिभद्दस्स । बत्तीसभारियाणं फालिय पयलूहणा विहिया ॥ २२ ॥
अत्थि य चिरन्तणाइं मज्झ गिहे ताइं गिण्हउ देवो । जइ कज्जं मोल्लेणं विणावि मेऽणुग्गहो एस ॥ २३ ॥
तो सुयसमयं पुच्छइ चउविहबुद्धीसमिद्धमइ राया । को एस सालिभद्दो तेण वि कहियं जहावत्तं ॥ २४ ॥
तो विम्हिओ विचिन्तइ रायाऽहो ! सालिभद्दसामग्गी । ता सुकयत्थो अहयं जस्स पुरे एरिसा वणिणो ॥ २५ ॥
भद्दा य समाइट्ठा तव्वयणदंसणकोउगमणेणं । पेसेसु नियं पुत्तं रायउले जेण पेच्छामि ॥ २६ ॥
तो तीए पडिभणियं अइसुकुमालो सुओ न मह सामि ! । गिहाओ कुणइ पयं न पेच्छए चन्दसूरा वि ॥ २७ ॥

१ च—णाए । २ अ—न्दाओ वि ।

किञ्च—

तुज्झ पसिद्धिं सोउं जे वणिणो आगया इह नरिन्द ! । तेसिं पुरओ तुमए एवं लहुईकओ ७-पा ॥ १८
तं मोल्लं नो पुज्जइ जइ तुह रयणावलिं इमं गेण्ह । किणसु य कम्बलरयणं विगयासा ते वि मा होन्तु ॥१८॥
एवं च उवालद्धो भज्जाए सेणिओ तओ वणिए । मग्गइ कम्बलरयणं तेहि य भद्दागहो कहिओ ॥ १९ ॥
तं सोउं सुकुयरं ह्वा मा चेल्लणा भणइ एवं । वाणिगिणीए वि समं सत्तं तुह नत्थि नरनाह ! ॥ २०२० ॥
तो नरवइणा भद्दा भणाविया अज्ज जे तुमे गहिया । कम्बलरयणा तेसिं एगं मे देहि मोल्लेणं ॥ २१ ॥

ताहे पडिभणियं—

तं नक्खणमेव मए नरिन्द ! नियपुत्तसालिभद्दस्स । बत्तीसभारियाणं फालिय पयलूहणा विहिया ॥ २२ ॥
अत्थि य चिरन्तणाइं मज्झ गिहे नाइं गिण्हउ देवो । जइ कज्जं मोल्लेणं विणावि मेऽणुग्गहो एस ॥ २३ ॥
तो सुयमयं पुच्छइ चउविहबुद्धीसमिद्धमइ राया । को एस सालिभद्दो तेण वि कहियं जहावत्तं ॥ २४ ॥
तो विम्हिओ विचिन्तइ राया अहो ! सालिभद्दसामग्गी । ता सुकयत्थो अहयं जस्स पुरे एरिसा वणिणो ॥ २५ ॥
भद्दा य समाइट्ठा तस्सुयदंसणकओऽहमसंगं । पेसेसु निययं पुत्तं रायउले जेण पेच्छामि ॥ २६ ॥
तो तीए पडिभणियं अइसुकुमालो सुओ न मह सामि ! । गिहवाहिं कुणइ पयं न पेच्छए चन्दसूरा वि ॥ २७ ॥

१ च—नाए । २ अ—ण्णो वि ।

भणियं च—

न करेन्ति जे तवं संजमं च ते तुल्लपाणिपायाणं । पुरिसा समपुरिसाणं अवस्सपेसत्तणमुवेन्ति ॥ ४२ ॥
धन्ना मुणिणो एगे जे विसयपरम्मुहा निरासंसा । मोत्तूणं देवगुरुं अन्नस्स कुणन्ति न पणामं ॥ ४३ ॥
संसारिया उ रिद्धी परमा विबुहाण नो रई कुणइ । ईसाविसायभयपरवसत्तमाईहिँ जमसारा ॥ ४४ ॥
विसयाभिलासविसघारियाण पुरिसाण निव्विवेयाण । न फुरइ धम्मम्मि मई तुच्छसिरीए मयन्धाणं ॥ ४५ ॥
एवं अहिमाणधणो तं चिय संवेगकारणं धरिउं । धम्मकरणुज्जयमई संजाओ सो महासत्तो ॥ ४६ ॥
इय विमणो ओयरिओ पासायाओ गतो निवसमीवं । सव्वालङ्कारधरो पच्चक्खो कप्परुक्खो व्व ॥ ४७ ॥
पसरन्तबहलपरिमलवासियदिसिमण्डलो सलीलगई । नियपणइणीसमेओ अच्छरसहिओ व्व सुरकुमरो ॥ ४८ ॥
निवचलणेसु निवडिओ आलिङ्गिय राइणा कओ अङ्के । दट्ठुं सरीरसोहं विम्हइओ चिन्तए एवं ॥ ४९ ॥
नूणं नत्थि असज्झं सुचरियधम्मस्स जीवलोगम्मि । जं इय माणुसमेत्ता अमरविभूइं विडम्बन्ति ॥ २०५० ॥
संभासिओ निवइणा न जम्पए जायए य सामसुहो । अंसुजलपुन्ननयणो भद्दाए निवो तओ भणिओ ॥ ५१ ॥
सुरभोयणेहिँ नव नव सुरभोगङ्गेहिँ लालियसरीरो । न सहइ मणुस्सतणुपरिमलं इमो सुयह ता देव ! ॥ ५२ ॥
गच्छसु वच्छ ! सठाणं इय भणिओ सेणिएण सो मुक्को । आरूढो पासायं उट्ठिउकामो उ नरनाहो ॥ ५३ ॥
भद्दाए विन्नत्तो जोडियहत्थाए गरुयपणएणं । देव ! पसाएणऽम्हं सागयकिच्चं पडिच्छेह ॥ ५४ ॥

भणियं च—

न करेन्ति जे तवं संजमं च ते तुल्लपाणिपायाणं । पुरिसा समपुरिसाणं अवस्सपेसत्तणमुवेन्ति ॥ ४२ ॥
धन्ना मुणिणो एगे जे विसयपरम्मुहा निरासंसा । मोत्तूणं देवगुरुं अन्नस्स कुणन्ति न पणामं ॥ ४३ ॥
संसारिया उ रिद्धी परमा विबुहाण नो रई कुणइ । ईसाविसायभयपरवसत्तमाईहिं जमसारा ॥ ४४ ॥
विसयाभिलासविसघारियाण पुरिसाण निव्विवेयाण । न फुरइ धम्मम्मि मई तुच्छसिरीए मयन्धाणं ॥ ४५ ॥
एवं अहिमाणधणो तं चिय संवेगकारणं धरिउं । धम्मकरणुज्जयमई संजाओ सो महासत्तो ॥ ४६ ॥
इय विमणो ओयरिओ पासायाओ गतो निवसमीवं । सव्वालङ्कारधरो पच्चक्खो कप्परुक्खो व्व ॥ ४७ ॥
पसरन्तबहलपरिमलवासियदिसिमण्डलो सलीलगई । नियपणइणीसमेओ अच्छरसहिओ व्व सुरकुमरो ॥ ४८ ॥
निवचलणेसु निवडिओ आलिङ्गिय राइणा कओ अङ्के । दट्ठुं सरीरसोहं विम्हइओ चिन्तए एवं ॥ ४९ ॥
नूणं नत्थि असज्झं सुचरियधम्मस्स जीवलोगम्मि । जं इय माणुसमेत्ता अमरविभूइं विडम्बयन्ति ॥ २०५० ॥
संभासिओ निवइणा न जम्पए जायए य सामसुहो । अंसुजलपुन्ननयणो भद्दाएँ निवो तओ भणिओ ॥ ५१ ॥
सुरभोयणेहिँ नव-नव सुरभोगङ्गेहिँ लालियसरीरो । न सहइ मणुस्सतणुपरिमलं इमो सुयह ता देव ! ॥ ५२ ॥
गच्छसु वच्छ ! सठाणं इय भणिओ सेणिएण सो मुक्को । आरूढो पासायं उट्ठिउकामो उ नरनाहो ॥ ५३ ॥
भद्दाए विन्नत्तो जोडियहत्थाएँ गरुयपणएणं । देव ! पसाएणऽम्हं सागयकिच्चं पडिच्छेह ॥ ५४ ॥

तुह सेवकरंतह निरु नरह पावपङ्कु उल्हिज्जइ । तं नत्थि किं पि भुवणे वि सुहु जं न सामि ! संपज्जइ ॥ ६६ ॥
भद्दाए विन्नत्तो भोयणकज्जम्मि निग्गओ तत्तो । भोयणसहसुवविट्ठो नियपरियणपरिगओ राया ॥ ६७ ॥
भुत्तो य अद्दाविहिणा तम्बोलाईकयोवयारो य । संभासिऊण भद्दं नियभवणम्मी गओ राया ॥ ६८ ॥
चिट्ठइ य सालिभद्दो विसयविरत्तो सुधम्मगयचित्तो । पत्तो य तत्थ सूरी तक्कालं धम्मघोसो त्ति ॥ ६९ ॥
वन्दणवडियाएँ गओ राया य जणो य तस्स सूरिस्स । जणाणिं च पुच्छिऊणं तत्थ गओ सालिभद्दो वि ॥ २०७० ॥
वन्दिय उवविट्ठाए परिसाए भवविरागजणणीए । सो धम्मदेसणाए पडिबोहं काउमाढत्तो ॥ ७१ ॥
कोडिं वराडियाहेउं जहा हारेज्ज कोइ णं । मणिं वेरुलियं वावि दलेज्जा सुत्तकारणा ॥ ७२ ॥
नावं जलहिमज्झम्मि लोहकज्जेण भिन्दए । सारं च चन्दणं भासहेउं मूढो दहेज्ज णं ॥ ७३ ॥
छेत्तुं कप्पूरसण्डं च कोद्दवाणं वई करे । धन्तं जच्चसुवन्नं च फुक्काए हारए नरो ॥ ७४ ॥
एवं माणुस्सयं जम्मं धम्मसाहणसंजुयं । असारविसयासत्ता सत्ता ! नासेह मा हु णं ॥ ७५ ॥
इय धम्मकहं सोउं पडिबुद्धा पाणिणो गया सगिहं । संविग्गो भद्दाए सुओ वि पत्तो सभवणम्मि ॥ ७६ ॥
तो पणमिऊण जणणिं सो पभणइ अम्ब ! अज्ज मे निसुओ । गुरुणो पासे धम्मो सा जम्पइ पुत्त ! सुट्ठुकयं ॥ ७७ ॥
तो पव्वज्जामि अहं तं अणुजाणेसु सा य तं सोउं । कन्नकडुयं च वयणं धसत्ति धरणीयले पडिया ॥ ७८ ॥

१ ब—°याइ ज° । २ ब—°राय° । ३ ब—°कारणे ।

तुह सेवकरंतह निरुनरह पावपङ्कु उल्हिज्जइ । तं नत्थि किं पि भुवणे वि सुहु जं न सामि ! संपज्जइ ॥ ६६ ॥
भद्दाए विन्नत्तो भोयणकज्जम्मि निग्गओ तत्तो । भोयणसहमुवविट्ठो नियपरियणपरिगओ राया ॥ ६७ ॥
भुत्तो य अह्नाविहिणा तम्बोलाईकयोवयारो य । संभासिऊण भद्दं नियभवणम्मी गओ राया ॥ ६८ ॥
चिट्ठइ य सालिभद्दो विसयविरत्तो सुधम्मगयचित्तो । पत्तो य तत्थ सूरी तक्कालं धम्मघोसो त्ति ॥ ६९ ॥
वन्दणवडियाएँ गओ राया य जणो य तस्स सूरिस्स । जणणिं च पुच्छिऊणं तत्थ गओ सालिभद्दो वि ॥ २०७० ॥
वन्दिय उवविट्ठाए परिसाए भवविरागजणणीए । सो धम्मदेसणाए पडिबोहं काउमाढत्तो ॥ ७१ ॥
कोडिं वराडियाहेउं जहा हारेज्ज कोइ णं । मणिं वेरुलियं वावि दलेज्जा सुत्तकारणा ॥ ७२ ॥
नावं जलहिमज्झम्मि लोहकज्जेण भिन्दए । सारं च चन्दणं भासहेउं मूढो दहेज्ज णं ॥ ७३ ॥
छेत्तुं कप्पूरसण्डं च कोद्दवाणं वइं करे । घन्तं जच्चसुवन्नं च फुक्काए हारए नरो ॥ ७४ ॥
एवं माणुस्सयं जम्मं धम्मसाहणसंजुयं । असारविसयासत्ता सत्ता ! नासेह मा हु णं ॥ ७५ ॥
इय धम्मकहं सोउं पडिबुद्धा पाणिणो गया सगिहं । संविग्गो भद्दाए सुओ वि पत्तो सभवणम्मि ॥ ७६ ॥
तो पणमिऊण जणणिं सो पभणइ अम्ब ! अज्ज मे निसुओ । गुरुणो पासे धम्मो सा जम्पइ पुत्त ! सुट्ठुकयं ॥ ७७ ॥
तो पव्वजामि अहं तं अणुजाणेसु सा य तं सोउं । कन्नकडुयं च वयणं धसत्ति धरणीयले पडिया ॥ ७८ ॥

---

१ ब–॰याइ ज॰ । २ ब–॰राय॰ । ३ ब–॰कारणे ।

माता—

असिधारगमणअयचणयचावणादुक्करं खु समणत्तं । भूसयणलोयभिक्खब्रम्भचेराइ जं एत्थ ॥ ८९ ॥

पुत्रः—

संसारसूयराणं विवेयरहियाण कायरनराणं । दुक्करमिह समणत्तं न उ धम्मियधीरपुरिसाण ॥ २०९० ॥

माता—

सुकुमालो वच्छ ! तुमं सुहोइओ सइ अदिठ्ठदुहलेसो । कह उवसग्गपरीसहसहणसमत्थो तुमं होसि ॥ ९१ ॥

पुत्रः—

नरयम्मि सुघोराओ वहुसो वियणाउ मे विसहियाओ । तयविक्खाए केत्तियमेयं उवसग्गमाइदुहं ॥ ९२ ॥

माता—

जइ एवं ता पुत्तय ! समीहियं कुणसु किन्तु कइवि दिणे । परिकम्मसु अप्पाणं एवं दिक्खा सुहं काउं ॥ ९३ ॥

जणणीउवरोहेणं पडिवज्जिय तं गओ सपासायं । भज्जाओ आमन्तिय पडिबोहन्तो[1] इमो भणइ ॥ ९४ ॥

पुरिसेणं बुद्धिमया परभवचिन्ता अवस्सकायव्वा । न हु विसयविमूढेणं हारेयव्वो मणुयजम्मो ॥ ९५ ॥

जं विसएसु पसत्ता बम्भसुभूमाइया गया नरयं । विसयविरत्ता उ गया भरहनरिन्दाइया मोक्खं ॥ ९६ ॥

---

१ च—पडिबोहत्थं ।

माता—

असिधारगमणअयचणयचावणादुक्करं खु समणत्तं । भूसयणलोयभिक्खव्वबम्भचेराइ जं एत्थ ॥ ८९ ॥

पुत्रः—

संसारसूयराणं विवेयरहियाण कायरनराणं । दुक्करमिह समणत्तं न उ धम्मियधीरपुरिसाण ॥ २०९० ॥

माता—

सुकुमालो वच्छ ! तुमं सुहोइओ सइ अदिट्ठदुहलेसो । कह उवसग्गपरीसहसहणसमत्थो तुमं होसि ॥ ९१ ॥

पुत्रः—

नरयम्मि सुघोराओ बहुसो वियणाउ मे विसहियाओ । तयविक्खाए केत्तियमेयं उवसग्गमाइदुहं ॥ ९२ ॥

माता—

जइ एवं ता पुत्तय ! समीहियं कुणसु किन्तु कइवि दिणे । परिकम्मसु अप्पाणं एवं दिक्खा सुहं काउं ॥ ९३ ॥

जणणीउवरोहेणं पडिवज्जिय तं गओ सपासायं । भज्जाओ आमन्तिय पडिबोहन्तो इमो भणइ ॥ ९४ ॥

पुरिसेणं बुद्धिमया परभवचिन्ता अवस्सकायव्वा । न हु विसयविमूढेणं हारेयव्वो मणुयजम्मो ॥ ९५ ॥

जं विसएसु पसत्ता बम्भसुभूमाइया गया नरयं । विसयविरत्ता उ गया भरहनरिन्दाइया मोक्खं ॥ ९६ ॥

---

१ व—पडिबोहत्थं ।

धन्नेणं तरिओऽहं इय चिन्तिय संठवेत्तु तं भइणिं। भद्दं तह भज्जाओ संभासिय उस्सुयमणो सो ॥ २११० ॥
दाऊण विउलदाणं महिमं कारिय जिणिन्दभवणेसु। पूइत्तु समणसङ्घं घोसाविय अभयदाणं तु ॥ ११ ॥
सिबियारूढो भद्दाए संजुओ भारियासयणसहिओ। तित्थं पभावयन्तो जणाभिनन्दिज्जमाणो य ॥ १२ ॥
तं रिद्धिं सग्गसमं पडलग्गतणं व सव्वमुज्झित्ता। महया विच्छड्डेणं समागओ जयगुरुसगासे ॥ १३ ॥
पुरओ चिय संपत्तो धन्नो ते दो वि तत्थ भयवन्तं। तिपयाहिणी करेत्ता वन्दन्ति इमं च भासन्ति ॥ १४ ॥
भयवं! अणुग्गहेत्ता भवमहणिं अम्ह देहि पव्वज्जं। तुम्ह पयकमललग्गा असेसदुक्खक्खयं कुणिमो ॥ १५ ॥
भद्दाए वि य भणियं भयवमिमे मज्झ पुत्तजामाऊ। इय सालिभद्दधन्नयनामा इच्छन्ति पव्वज्जं ॥ १६ ॥
ता पव्वाविद एए तिहुयणणाहेण दिक्खिया तत्तो। कयपञ्चमुट्ठिलोया सिक्खविया साहुकिरियं च ॥ १७ ॥
गुरुगच्छवसहिसेसग्गिभत्तउवगरणतववियारेसु। भावणविहारजइकहठाणेसु य ते समणुसट्ठा ॥ १८ ॥
विहरन्ति जिणेण समं चउत्थछट्ठट्ठमाइकुव्वन्ता। सुस्समणा संजाया अइरेण अहीयसुत्तत्था ॥ १९ ॥
सुक्का किडिकिडि भूया जाया दुक्करतवेण ते धीरा। पुण रायगिहं पत्ता सहिया तिंथलोयनाहेण ॥ २१२० ॥
परिसा मिलिया कहियं चउरासीजोणिलक्खभेयरूवं। पच्छा उचिए समए भिक्खट्ठं पत्थिया दो वि ॥ २१ ॥
छट्ठस्स उ पारणए भयवन्तं पुच्छिऊण कयकिच्चा। ते धन्नसालिभद्दा भणिया य जिणेण ते जन्ता ॥ २२ ॥

१ ब–तेलोक्कनाहेण। २ ब–०भवरू०।

धन्नेणं तरिओऽहं इय चिन्तिय संठवेत्तु तं भद्दणिं। भद्दं तह भज्जाओ संभासिय उस्सुयमणो सो ॥ २११० ॥
दाऊण विउलदाणं महिमं कारिय जिणिन्दभवणेसु। पूइत्तु समणसङ्घं घोसाविय अभयदाणं तु ॥ ११ ॥
सिबियारूढो भद्दाएँ संजुओ भारियासयणसहिओ। तित्थं पभावयन्तो जणाभिनन्दिज्जमाणो य ॥ १२ ॥
तं रिद्धिं सग्गसमं पडलग्गतणं व सव्वमुज्झित्ता। महया विच्छड्डेणं समागओ जयगुरुसगासे ॥ १३ ॥
पुरओ चिय संपत्तो धन्नो ते दो वि तत्थ भयवन्तं। तिपयाहिणी करेत्ता वन्दन्ति इमं च भासन्ति ॥ १४ ॥
भयवं! अणुग्गहेत्ता भवमहणिं अम्ह देहि पव्वज्जं। तुम्ह पयकमललग्गा असेसदुक्खक्खयं कुणिमो ॥ १५ ॥
भद्दाए वि य भणियं भयवमिमे मज्झ पुत्तजामाऊ। इय सालिभद्दधन्नयनामा इच्छन्ति पव्वज्जं ॥ १६ ॥
ता पव्वाविद एए तिहुयणणाहेण दिक्खिया तत्तो। कयपञ्चमुट्ठिलोया सिक्खविया साहुकिरियं च ॥ १७ ॥
गुरुगच्छवसहिसेसग्गिभत्तउवगरणतववियारेसु। भावणविहारजइकहठाणेसु य ते समणुसट्ठा ॥ १८ ॥
विहरन्ति जिणेण समं चउत्थछट्ठट्ठमाइकुव्वन्ता। सुस्समणा संजाया अइरेण अहीयसुत्तत्था ॥ १९ ॥
सुक्खा किडिकिडि भूया जाया दुक्करतवेण ते धीरा। पुण रायगिहं पत्ता सहिया तिंयलोयनाहेण ॥ २१२० ॥
परिसा मिलिया कहियं चउरासीजोणिलक्खभेयरूवं। पच्छा उचिए समए भिक्खट्ठं पत्थिया दो वि ॥ २१ ॥
छट्ठस्स उ पारणए भयवन्तं पुच्छिऊण कयकिच्चा। ते धन्नसालिभद्दा भणिया य जिणेण ते जन्ता ॥ २२ ॥

१ ब–तेलोक्कनाहेण। २ ब–॰भवरू॰।

गेहगओ वि न नाओ हा पुत्तय ! मन्दभाइणी अहयं । संभासिओ न दिट्ठो न वन्दिओ पावकम्माए ॥ ३६ ॥
अमराणियमाहारं भोत्तुं कहमन्तपन्तयं भुत्तं । बत्तीसतूलियासुं सुविउं कह सुवंसि सिलवट्टे ॥ ३७ ॥
हरियन्दणाणुलेवं काउं कह सेयपङ्कमुव्वहसि । कागलिगीयं सोउं सुणसि कहं घूयसिवरावे ॥ ३८ ॥
पुव्विं तुज्झ ममोवरि भत्ती विणओ य तारिसो आसि । संपइ उल्लावं पि हु न देसि किं पुत्त ! दीणाए ॥ ३९ ॥
गुरुदुक्खसल्लियमणा एमाई बहुविहं विलवमाणी । तेसिं वन्दणकज्जे गएण रन्ना समणुसट्ठा ॥ २१४० ॥
धन्ना एए जेहिं उ भवदुक्खाणं विमोइओ अप्पा । तं पि कयत्था जीसे सुएण आराहियं एवं ॥ ४१ ॥
अन्नं च—
वयणचलणाइचेट्ठा कायव्वा नेय एस कप्पो त्ति । पाओवगमे ता तं मा कुणसु अकारणे खेयं ॥ ४२ ॥
एमाइ सेणिएणं मज्झरगिरिं संठवित्तु सवहूया । नीया वरम्मि भद्दा अक्कन्दणखीणगलसद्दा ॥ ४३ ॥
ते निय मुणिवरवसभा कालगया णुत्तरेसु उववन्ना । तत्तो चुया विदेहे उववज्जिय उत्तमकुलम्मि ॥ ४४ ॥
भोगसमिद्धिं पाविय दिक्खं घेत्तूण निम्मलचरित्ता । निट्ठवियसयलकम्मा सिद्धिपुरीए गमिस्सन्ति ॥ ४५ ॥
इय एवं दाणफलं जणस्स विम्हयकरं सुणेऊणं । जइयव्वमगारीहिं विसेसओ दाणधम्मम्मि ॥ ४६ ॥
भणियं च—

१ व—°यसि । २ व—सघहु° । ३ व—चिय । ४ व—देक्खं । ५ व—मुणेऊणं ।

गेहगओ वि न नाओ हा पुत्तय ! मन्दभाइणी अहयं । संभासिओ न दिट्ठो न वन्दिओ पावकम्माए ॥ ३६ ॥
अमराणियमाहारं भोत्तुं कहमन्तपन्तयं भुत्तं । बत्तीसतूलियासुं सुविउं कह सुवसि सिलवट्टे ॥ ३७ ॥
हरियन्दणाणुलेवं काउं कह सेयपङ्कमुव्वहसि । कागलिगीयं सोउं सुणसि कहं घूयसिवरावे ॥ ३८ ॥
पुव्विं तुज्झ ममोवरि भत्ती विणओ य तारिसो आसि । संपइ उल्लावं पि हु न देसि किं पुत्त ! दीणाए ॥ ३९ ॥
गुरुदुक्खसल्लियमणा एमाई बहुविहं विलवमाणी । तेसिं वन्दणकज्जे गएण रन्ना समणुसट्ठा ॥ २१४० ॥
धन्ना एए जेहिं उ भवदुक्खाणं विमोइओ अप्पा । तं पि कयत्था जीसे सुएण आराहियं एवं ॥ ४१ ॥
अन्नं च—
वयणचलणाइचेट्ठा कायव्वा नेय एस कप्पो त्ति । पाओवगमे ता तं मा कुणसु अकारणे खेयं ॥ ४२ ॥
एमाइ सेणिएणं मल्हुरगिरिं संठवित्तु सवहूया । नीया घरम्मि भद्दा अक्कन्दणखीणगलसद्दा ॥ ४३ ॥
ते चिय मुणिवरवसभा कालगया णुत्तरेसु उववन्ना । तत्तो चुया विदेहे उववज्जिय उत्तमकुलम्मि ॥ ४४ ॥
भोगसमिद्धिं पाविय दिक्खं घेत्तूण निम्मलचरित्ता । निट्ठवियसयलकम्मा सिद्धिपुरीए गमिस्सन्ति ॥ ४५ ॥
इय एवं दाणफलं जणस्स विम्हयकरं सुणेऊणं । जइयव्वमगारीहिं विसेसओ दाणधम्मम्मि ॥ ४६ ॥
भणियं च—

१ व—°यसि । २ व—रायहु° । ३ व—चिय । ४ व—देक्खं । ५ व—मुणेऊणं ।

मणियङ्गेसु य भूसणवराइँ भवणाइँ भवणरुक्खेसु । जायन्ति य वत्थाइं अनिगिणनामेसु रुक्खेसु ॥ ५९ ॥
आउयसेसे मिहुणं पसवेत्ता ते सुरालयं जन्ति । तवसंजमरहिया वि हु अक्रूरपरिणामभावेण ॥ २१६० ॥
अयरतिकोडाकोडीपरिमाणा सुस्समा तहिं मणुया । कोसदुगुच्चा दोपलियजीविया सेस पुव्वसमा ॥ ६१ ॥
पलिओवममाईए पज्जन्ते होइ पुव्वकोडीए । तइयाए उ समाए दोकोडाकोडिमाणाए ॥ ६२ ॥
आईए कोसमुचा अन्ते पुण पञ्चचावसयमाणा । कालकमेणं हाणिं गच्छन्ति य कप्पतरुणो वि ॥ ६३ ॥
पुढविजलोसहिफलफुल्लमाइवत्थू वि हायमाणरसा । बलरूवचक्खुबमुत्तिअज्जवाई य हायन्ति ॥ ६४ ॥
तइयसमाए अन्ते उप्पन्नो पढमजिणवरो उसभो । सत्तमकुलगरपुत्तो मुणीण घयदाणधणजीवो ॥ ६५ ॥
सो दंसियसयलठिई होऊणं धम्मसारही पढमो । सिद्धो तिवाससड्ढट्ठमाससेसे तइयअरए ॥ ६६ ॥
देसूणायरकोडाकोडीमाणे चउत्थअरयम्मि । तेवीसं तित्थयरा उप्पन्ना एत्थ गणनाहा ! ॥ ६७ ॥
मोक्खंगयस्स मज्झं पञ्चमअरगो उ दूसमा होही । सड्ढट्ठमासअहिएहिं तीहिं वासेहिं अइएहिं ॥ ६८ ॥
छहिं वासाण सएहिं पञ्चहिं वासेहिं पञ्चमासेहिं । मम निव्वाणगयस्स उ उप्पज्जिस्सइ सगो राया ॥ ६९ ॥
तेरसवाससएहिं नवुत्तरेहिं सगाउ कुसुमपुरे । होही कक्की पैन्ते कुलम्मि केउ व दुट्ठप्पा ॥ २१७० ॥
बहुकोहमाणमायालोभयघत्थस्स तस्स जम्मम्मि । सहसा तत्थ पडिस्सइ देवउलं रामकण्हाणं ॥ ७१ ॥

---

१ व–ओ । २ व–उ । ३ व–॰पहा॰ । ४ व–॰नाह । ५ अ–अन्ते ।

मणियङ्गेसु य भूसणवराइँ भवणाइँ भवणरुक्खेसु । जायन्ति य वत्थाइं अनिगिणनामेसु रुक्खेसु ॥ ५९ ॥
आउयसेसे मिहुणं पसवेत्ता ते सुरालयं जन्ति । तवसंजमरहिया वि हु अक्रूरपरिणामभावेण ॥ २१६० ॥
अथरतिकोडाकोडीपरिमाणा सुस्समा तहिं मणुया । कोसदुगुच्चा दोपलियजीवियां सेस पुव्वसमा ॥ ६१ ॥
पलिओवममाईए पज्जन्ते होइ पुव्वकोडीए । तइयाए उ समाए दोकोडाकोडिमाणाए ॥ ६२ ॥
आईए कोसमुच्चा अन्ते पुण पञ्चचावसयमाणा । कालकमेणं हाणिं गच्छन्ति ये कप्पतरुणो वि ॥ ६३ ॥
पुढविजलोसहिफलफुल्लमाइवत्थू वि हायमाणरसा । बलरूवचक्खलमसुत्तिअज्जवाई ये हायन्ति ॥ ६४ ॥
तइयसमाए अन्ते उप्पन्नो पढमजिणवरो उसभो । सत्तमकुलगरपुत्तो मुणीण घयदाणधणजीवो ॥ ६५ ॥
सो दंसियसयलठिई होऊणं धम्मसारही पढमो । सिद्धो तिवाससङ्ढट्ठमाससेसे तइयअराए ॥ ६६ ॥
देसूणायरकोडाकोडीमाणे चउत्थअरयम्मि । तेवीसं तित्थयरा उप्पन्ना एत्थ गणनाहा ! ॥ ६७ ॥
मोक्खंगयस्स मज्झं पञ्चमअरगो उ दूसमा होही । सङ्ढट्ठमासअहिएहिं तीहिं वासेहिं अइएहिं ॥ ६८ ॥
छहिं वासाण सएहिं पञ्चहिं वासेहिं पञ्चमासेहिं । मम निव्वाणगयस्स उ उप्पज्जिस्सइ सगो राया ॥ ६९ ॥
तेरसवाससएहिं नवुत्तरेहिं सगाउ कुसुमपुरे । होही कक्की पन्ते कुलम्मि केउ व दुट्ठप्पा ॥ २१७० ॥
यहुकोहमाणमायालोभयघत्थस्स तस्स जम्मम्मि । सहसा तत्थ पडिस्सइ देवउलं रामकण्हाणं ॥ ७१ ॥

---

१ व–ओ । २ व–उ । ३ व–०पहा० । ४ व–०नाह । ५ अ–अन्ते ।

सव्वे वि य पासण्डे रुम्भेउं सो करं वि मग्गेही । काकोनेत्रो दाहिन्ति य सारम्भपारिग्गहा तं त्ति ॥ ८४ ॥
रुद्धो य समणसङ्घो करदाणत्थं च भासिही रायं । भिक्खाविती निक्किञ्चणा य अम्हे अणाथाणा ॥ ८५ ॥
ता अम्ह धम्मलाभं मोत्तूणं नत्थि किं पि अन्नं ति । इय नाऊण नराहिव ! जं रोयइ तं करेसु तुमं ॥ ८६ ॥

अन्नं च भणियं पुराणे—

सज्झायज्झाणनिरए तवुज्जए बम्भयारिणो दन्ते । जइणो परिरक्खन्तो छट्ठंसं लहइ धम्मस्स ॥ ८७ ॥
ता उवरम एयाओ अज्झवसाणाओं होइ न य खेमं । जइणं उवद्दवेणं कीरन्तेणं पुरे देसे ॥ ८८ ॥
एवं भणिओ जाहे न मन्निही रोसपरवसो होही । तो नगरदेवया तं भणिही किं इच्छसे मरिउं ॥ ८९ ॥
जं वाहसि मुणिसङ्घं इय भणिओ भीयमाणसो पडिही । पाएंसु संघस्स उ भयवं ! मे खमह इय वेन्तो ॥ २१९० ॥
होहिन्ति य उप्पाया तइया पुरनाससूयगा बहवे । सत्तरस अहोरत्ता निरन्तरं वासिही उदयं ॥ ९१ ॥
गङ्गादहो य सोणो उव्वत्तिस्सइ य गरुयजलवेगो । ताँ कुसुमपुरं नगरं समन्तओ वुंज्झिही तेणं ॥ ९२ ॥
पाडिवओ आयरिओ सङ्घजणो कोइ कोइ पुरलोगो । कक्की राया फलगाइएहिं तरिऊण छुट्टेही ॥ ९३ ॥
बहुओ जाही निहणं तत्थ जणो उवरए य जलवसणे । अन्नं नयरं काही कक्की नन्दस्स अत्थेणं ॥ ९४ ॥
होहिन्ति य आययणा साहुविहारो य सम्मवुद्धी य । ससससई पडिएणं कुम्भेणवि को वि न किणेही ॥ ९५ ॥

१ अ—अन्नं पि । २ ब—पाएसु समणसङ्घस्स खमह मम सामि इ० । ३ ब—तो । ४ अ—उज्झि० । ५ ब—छुट्टिहिही ।

सव्वे वि य पासण्डे रुम्भेउं सो करे वि मग्गेही। कक्किनिचो दाहिन्ति य सारम्भपरिग्गहा ते वि ॥ ८४ ॥
रुद्धो य समणसङ्घो करदाणत्थं च भासिही रायं। भिक्खावित्ती निक्किञ्चणा य अम्हे अणायाणा ॥ ८५ ॥
ता अम्ह धम्मलाभं मोत्तूणं नत्थि किं पि अन्नं ति। इय नाऊण नराहिव! जं रोयइ तं करेसु तुमं ॥ ८६ ॥

अन्नं च भणियं पुराणे—

सज्झायज्झाणनिरएँ तवुज्जए बम्भयारिणो दन्ते। जइणो परिरक्खन्तो छट्ठंसं लहइ धम्मस्स ॥ ८७ ॥
ता उवरम एयाओ अज्झवसाणाओं होइ न य खेमं। जइणं उवद्दवेणं कीरन्तेणं पुरे देसे ॥ ८८ ॥
एवं भणिओ जाहे न मन्निही रोसपरवसो होही। तो नगरदेवया तं भणिही किं इच्छसे मरिउं ॥ ८९ ॥
जं वाहसि मुणिसङ्घं इय भणिओ भीयमाणसो पडिही। पाएँसु संघस्स उ भयवं! मे खमह इय वेन्तो ॥ २१९० ॥
होहिन्ति य उप्पाया तइया पुरनाससूयगा वहवे। सत्तरस अहोरत्ता निरन्तरं वासिही उदयं ॥ ९१ ॥
गङ्गादहो य सोणो उव्वत्तिस्सइ य गरुयजलवेगो। ताँ कुसुमपुरं नगरं समन्तओ वुँज्झिही तेणं ॥ ९२ ॥
पाडिवओ आयरिओ सङ्घजणो कोइ कोइ पुरलोगो। कक्की राया फलगाइएहिँ तरिऊण छुँट्टेही ॥ ९३ ॥
वहुओ जाही निहणं तत्थ जणो उवरए य जलवसणे। अन्नं नयरं काही कक्की नन्दस्स अत्थेणं ॥ ९४ ॥
होहिन्ति य आययणा साहुविहारो य सम्मवुद्धी य। सस्ससई पडिएणं कुम्भेणवि को वि न किणेही॥ ९५ ॥

१ अ—अन्नं पि। २ व—पाएसु समणसङ्घस्स खमह मम सामि इ०। ३ व—तो। ४ अ—उज्झि०। ५ व—छुट्टिहिही।

तयणन्तरं च काही दत्तो जिणभवणमण्डियं वसुहं । इगुवीससहस्साइं होही धम्मुन्नई परमा
धणधन्नत्थसमिद्धं भारहवासं जिणिन्दकालम्मि । पुरगामागरपउरं आसी सुरलोगसंकासं ॥
गामा नगरब्भूया नगराणि य देवलोगसरिसाणि । रायसमा य कुडुम्बी वेसमणसमा य रा
चन्दसमा आयरिया अम्मापियरो य देवयसमाणा। सासू वि य माइसमा ससुरो विहु पीसः
धम्माधम्मविहिन्नू विणयपरो सच्चसोयसंपन्नो । गुरुदेवपूयणरओ सदारनिरओ जणो तइया ॥ १३ ॥
अग्घइ य सविन्नाणो अग्घइ सीलं कुलं च विज्जा य । परचक्कईइतक्करभयसोयविवज्जिओ लोगो ॥ १४ ॥
जिणभत्ता रायाणो पाएण कुतित्थिया य अवगीया । दससु वि वासेसु तहा दस दस अच्छेरया जाण ॥ १५ ॥
उवसग्ग गब्भहरणं इत्थीतित्थं अभाविया परिसा । कण्हस्स अवरकङ्का अवयरणं चन्दसूराणं ॥ १६ ॥
हरिवंसकुलुप्पत्ती चमरुप्पाओ य अट्ठसयसिद्धा । अस्संजयाण पूया दसवि अणन्तेण कालेणं ॥ १७ ॥
लोगुत्तमपुरिसेहिं चउप्पन्नाए इहं अईएहिं । केवलिमणपज्जवओहिणाणिसुयकेवलीहिं च ॥ १८ ॥
दूसमकाले लोगो कोहाइकसायविसहयविवेगो । अच्चोदगो व वप्पो जाओ संभिन्नमज्जाओ ॥ १९ ॥
जह जह वच्चइ कालो तह तह दयदाणसच्चपरिहीणो । अहियं अहम्मसीलो कुतित्थिमोहियमई होही ॥ २२० ॥
गामा मसाणभूया णगराणि य पेयलोयसरिसाणि । दाससमा य कुडुम्बी जमदण्डसमा य रायाणो ॥ २१ ॥

तयणन्तर च काही दत्तो जिणभवणमण्डियं वसुहं । इगुवीससहस्साइं होही धम्मुन्नई परमा
धणधन्नत्थसमिद्धं भारहवासं जिणिन्दकालम्मि । पुरगामागरपउरं आसी सुरलोगसंकासं ॥
गामा नगरब्भूया नगराणि य देवलोगसरिसाणि । रायसमा य कुडुम्बी वेसमणसमा य रा॰
चन्दसमा आयरिया अम्मापियरो य देवयसमाणा । सासू वि य माइसमा ससुरो वि हु पीसम॰
धम्माधम्मविहिन्नू विणयपरो सच्चसोयसंपन्नो । गुरुदेवपूयणरओ सदारनिरओ जणो तइया ॥ १३ ॥
अग्घइ य सविन्नाणो अग्घइ सीलं कुलं च विज्जा य । परचक्कईइतक्करभयसोयविवज्जिओ लोगो ॥ १४ ॥
जिणभत्ता रायाणो पाएण कुतित्थिया य अवगीया । दससु वि वासेसु तहा दस दस अच्छेरया जाण ॥ १५ ॥
उवसग्ग गब्भहरणं इत्थीतित्थं अभाविया परिसा । कण्हस्स अवरकङ्का अवयरणं चन्दसूराणं ॥ १६ ॥
हरिवंसकुलुप्पत्ती चमरुप्पाओ य अट्ठसयसिद्धा । अस्संजयाण पूया दसवि अणन्तेण कालेणं ॥ १७ ॥
लोगुत्तमपुरिसेहिं चउप्पन्नाए इह अईएहिं । केवलिमणपज्जवओहिणाणिसुयकेवलीहिं च ॥ १८ ॥
दूसमकाले लोगो कोहाइकसायविसहयविवेगो । अचोदगो व वप्पो जाओ संभिन्नमज्जाओ ॥ १९ ॥
जह जह वच्चइ कालो तह तह दयदाणसच्चपरिहीणो । अहियं अहम्मसीलो कुतित्थिमोहियमई होही ॥ २२० ॥
गामा मसाणभूया णगराणि य पेयलोयसरिसाणि । दाससमा य कुडुम्बी जमदण्डसमा य रायाणो ॥ २१ ॥

एवं परिहायन्ते लोए चन्दो व कालपक्खम्मि । जे धम्मिया मणुस्सा सुजीवियं जीवियं तेसिं ॥
दुप्पसहो आयरिओ फग्गुसिरी साहुणी गणपहाणा । सड्ढो नाइलनामो सच्चसिरी सावियाणं च ॥
तह विमलवाहणो च्चिय राया सुमुहो य तस्स उ अमच्चो । एए उ दूसमाए होहिन्ति अपच्छिमा भरहे
दोरयणिपमाणतणू वीससयवासाउया य होहिन्ति । दुप्पसहाई चउरो उक्कोसेणं च छट्ठतवो ॥ ३८ ॥
दसवेयालियधारी चोद्दसपुव्वी व पुज्जिही सड्ढो । दुप्पसहो तित्थं पि य ना वहिही जाव सो चेव ॥ ३९ ॥
जो भणइ नत्थि धम्मो ण य सामइयं न चेव य वयाइं । सो समणसङ्घवज्झो कायव्वो समणसङ्घेणं ॥ २२४० ॥
बारस वासाइँ गिहे गमिऊणं अट्ठ चेव सामन्ने । दुप्पसहो गच्छिहिही अट्ठमभत्तेण सोहम्मं ॥ ४१ ॥
पुव्वण्हे वोच्छेओ चरित्तधम्मस्स रायधम्मस्स । मज्झण्हे पुण होही अवरण्हे जायवेयस्स ॥ ४२ ॥
एवं दूसमकालो इगवीससहस्स होइ वासाणं । एगन्तदूसमा वि य एवइयं चेव नायव्वा ॥ ४३ ॥
नट्ठे चरणाइम्मि उ हाहाभूओ अणाहभूओ य । कालो अमाइपुत्तो गोधम्मसमो जणो तत्थ ॥ ४४ ॥
रयबहुला खरफरुसा अणिट्ठवाया तया य वाहिन्ति । धूमायन्ति दिसाओ भयजणणीओ य सव्वेसिं ॥ ४५ ॥
चन्दो मुइही सीयं अहियं अहियं च सूरिओ तविही । जेण इहं नरतिरिया सीउण्हहया किलिस्सन्ति ॥ ४६ ॥
तह अरसविरसमेहा अम्बिलमेहा य खारमेहा य । अग्गिविसअसणिमेहा अभिक्खणं वासिहिन्ति तया ॥ ४७ ॥

---

१ व—°सइ वा° २ व—°पुंधि व । ३ व—°सहा तित्थं पिय । ४ व—वहिहिइ । ५ व—नत्थ । ६ अ—खारमेहा खट्टमेहा य ।

एवं परिहायन्ते लोए चन्दो व कालपक्खम्मि । जे धम्मिया मणुस्सा सुजीवियं जीवियं तेसिं ॥
दुप्पसहो आयरिओ फग्गुसिरी साहुणी पवरपन्ना । सड्ढो नाइलनामो सच्चसिरी साविया णं च ॥
तह विमलवाहणो चिय राया सुमुहो य तस्स उ अमच्चो । एए उ दूसमाए होहिन्ति अपच्छिमा भरहे
दोरयणिपमाणतणू वीसयवासाउया य होहिन्ति । दुप्पसहाई चउरो उक्कोसेणं च छट्ठभत्ती ॥ ३८ ॥
दसवेयालियधारी चोद्दसपुव्वी व पुज्जिही सड्ढो । दुप्पसहो तित्थं पि य ना वट्टिही जाव सो चेव ॥ ३९ ॥
जो भणइ नत्थि धम्मो ण य सामइयं न चेव य वयाइं । सो समणसङ्घवज्झो कायव्वो समणसङ्घेणं ॥ २२४० ॥
बारस वासाइँ गिहे गमिऊणं अट्ठ चेव सामन्ने । दुप्पसहो गच्छिहिही अट्ठमभत्तेण सोहम्मं ॥ ४१ ॥
पुव्वण्हे वोच्छेओ चरित्तधम्मस्स रायधम्मस्स । मज्झण्हे पुण होही अवरण्हे जायतेयस्स ॥ ४२ ॥
एवं दूसमकालो इगवीससहस्स होइ वासाणं । एगन्तदूसमावि य एवइयं चेव नायव्वा ॥ ४३ ॥
नट्ठे चरणाइम्मि उ हाहाभूओ अणाहभूओ य । कालो अमाइपुत्तो गोधम्मसमो जणो तत्थ ॥ ४४ ॥
रयबहुला खरफरुसा अणिट्ठवाया तया य वाहिन्ति । धूमायन्ति दिसाओ भयजणणीओ य सव्वासिं ॥ ४५ ॥
चन्दो मुइही सीयं अहियं अहियं च सूरिओ तविही । जेण इहं नरतिरिया सीउण्हहया किलिस्सन्ति ॥ ४६ ॥
तह अरसविरसमेहा अम्बिलमेहा य खारमेहा य । अग्गिविसअसणिमेहा अभिक्खणं वासिहिन्ति तया ॥ ४७ ॥

१ व—॰सइ वा॰ २ व—॰पुधं व । ३ व—॰सहा तित्थं पिय । ४ व—वट्टिहिइ । ५ व—जत्थ । ६ अ—खारमेहा खट्टमेहा य ।

सागरकोडाकोडी एगा अरओ चउत्थओ होही । ऊणा इह वासाणं बायालीसं सहस्सेहिं ॥ ६१ ॥
सा पञ्चमछट्ठेहिं अरएहिं जुया य होइ पडिपुन्ना । ओसप्पिणी दसायरकोडाकोडी अओ होइ ॥ ६२ ॥
ओसप्पिणीएँ एवं जो अणुहावो उ वन्निओ पुव्विं । सो च्चिय पडिलोमेणं उस्सप्पिणिए मुणेयव्वो ॥ ६३ ॥
बायालीससहस्सा वासाण नरा उ होन्ति बिलवासी । उस्सप्पिणीएँ एगन्तदूसमा चरिमकालम्मि ॥ ६४ ॥
होहिन्ति पञ्च मेहा पुक्खल संवट्ट खीरमेहो य । घयमेहअमयमेहा रसमेहो पञ्चमो होइ ॥ ६५ ॥
एक्केक्को अणुबद्धं वासीही सत्त सत्त दिवसाइं । पञ्चत्तीसं दिवसे वद्दलिया होहिई सोमा ॥ ६६ ॥
पढमो उ निव्ववेही धन्नं बीओ करिस्सए मेहो । तइओ नेहं जणयइ ओसहिमाई चउत्थो उ ॥ ६७ ॥
पञ्चमओ पुण मेहो पुढवाईयाण रसकरो होही । तत्तो हरियदुमोसहिवेल्लिलयाई परोहिन्ति ॥ ६८ ॥
तो ते बिलवासिनरा पासित्ता तं महिं तह समिद्धं । आसत्था हिट्ठमणा नीहरिय बिलाण भमिहिन्ति ॥ ६९ ॥
भणिस्सन्ति य—
जायं खु सुहविहारं भरहम्मिमं पुप्फफलसमिद्धं च । ता जो कुणिमं खाही सो अम्हं वज्जणिज्जो उ ॥ २२७० ॥
जह जह वच्चइ कालो तह तह फलकुसुमओसहीणं च । सङ्घयणरूवउच्चत्तआउमाईण वुड्ढी य ॥ ७१ ॥
होहिन्ति सुहा रिउणो सुहा य वाया सुहाइँ उदगाइं । गयरोगा तो मणुया होहिन्ति तहा तिरिक्खा य ॥ ७२ ॥

१ अ—एक्केक्के । २ अ—होइही । ३ ब—°वल्लि° ।

सागरकोडाकोडी एगा अरओ चउत्थओ होही । ऊणा इह वासाणं बायालीसं सहस्सेहिं ॥ ६१ ॥
सा पञ्चमछट्ठेहिं अरएहिं जुया य होइ पडिपुन्ना । ओसप्पिणी दसायरकोडाकोडी अओ होइ ॥ ६२ ॥
ओसप्पिणीएँ एवं जो अणुहावो उ वन्निओ पुव्विं । सो चिय पडिलोमेणं उस्सप्पिणिए मुणेयव्वो ॥ ६३ ॥
बायालीससहस्सा वासाण नरा उ होन्ति बिलवासी । उस्सप्पिणीएँ एगन्तदूसमा चरिमकालम्मि ॥ ६४ ॥
होहिन्ति पञ्च मेहा पुक्खल संवट्ट खीरमेहो य । घयमेहअमयमेहा रसमेहो पञ्चमो होइ ॥ ६५ ॥
[1]एक्केक्को अणुबद्धं वासीही सत्त सत्त दिवसाइं । पञ्चत्तीसं दिवसे वद्दलिया [2]होहिई सोमा ॥ ६६ ॥
पढमो उ निव्ववेही धन्नं बीओ करिस्सए मेहो । तइओ नेहं जणयइ ओसहिमाई चउत्थो उ ॥ ६७ ॥
पञ्चमओ पुण मेहो पुढवाईयाण रसकरो होही । तत्तो हरियकुमोसहि[3]वेल्लियाई परोहिन्ति ॥ ६८ ॥
तो ते बिलवासिनरा पासित्ता तं महिं तह समिद्धं । आसत्था हिट्ठमणा नीहरिय बिलाण भमिहिन्ति ॥ ६९ ॥
भणिस्सन्ति य—
जायं खु सुहविहारं भरहम्मिमं पुप्फफलसमिद्धं च । ता जो कुणिमं खाही सो अम्हं वज्जणिज्जो उ ॥ २२७० ॥
जह जह वच्चइ कालो तह तह फलकुसुमओसहीणं च । संघयणरूवउच्चत्तआउमाईण बुड्ढी य ॥ ७१ ॥
होहिन्ति सुहा रिउणो सुहा य वाया सुहाइँ उदगाइं । गयरोगा तो मणुया होहिन्ति तहा तिरिक्खा य ॥ ७२ ॥

१ अ—एक्केक्के । २ अ—होइही । ३ व—०वल्लि० ।

सयगो य जिणो णवमो पुव्वं आसी सुनन्दणामो जो । मुणिसुव्वओ य दसमो सयगो जो आसि पुव्वभवे ॥ ८६ ॥
एक्कारसमो य जिणो देवइजीवो उ सव्वभावविऊ । अममो बारसमजिणो होही जो सच्चई आसि ॥ ८७ ॥
तह निक्कसायनामो तेरसमो वासुदेवजीवो उ । बलदेवो पुण होही चोद्दसमो निप्पुलायजिणो ॥ ८८ ॥
निम्ममजिणो अमोहो पनरसमो होइ रोहिणीजीवो । सुलसासावियजीवो सोलसमो चित्तगुत्तो य ॥ ८९ ॥
सतरसमो य समाही रेवइजीवो उ विगयभववाही। संवरजिणो य जयहिओ अट्ठारसमो मियालीओ॥ २२९०॥
दीवायणस्स जीवो नियट्टिअरहा य अगुणवीसइमो । कण्हो गयभवतण्हो वीसइमो देवसेणजिणो ॥ ९१ ॥
नत्तो य एगवीसो नारयजीवो विवेगजिणचन्दो । बावीसइमो विमलो अमरजिओ विगयकम्ममलो ॥ ९२ ॥
देवोववायनामो तेवीसइमो उ अम्मडो पुव्वं । चरिमो य साइबुद्धो अणन्तविजओ जिणो होही ॥ ९३ ॥
ओसप्पिणीजिणाणं पडिलोमेण होन्ति तित्थयरा । जा चरिमो जिणनाहो विन्नेओ उसभनाहो व ॥ ९४ ॥[1]
एएसु अईएसुं कमेण होहिन्ति पुव्वतुल्लगुणा । सुस्समदुसमा सुसमा सुस्समसुसमा य छट्ठा उ ॥ ९५ ॥
वीसं कोडाकोडी दोन्नि वि एया उ होन्ति अयराणं । ओसप्पिणी य उस्सप्पिणी य परियत्तमाणीओ ॥ ९६ ॥

अयरपमाणं पुण—

एगाहियबेहियतेहियाणि उक्कोससत्तरत्ताइं । घेत्तुं सिसुलोमाइं काउमसंखेज्जखण्डाइं ॥ ९७ ॥

---

१ व—य° । २ अ—भवगय° ।

सयगो य जिणो णवमो पुव्वं आसी सुनन्दणामो जो । मुणिसुव्वओ य दसमो सयगो जो आसि पुव्वभवे ॥ ८६ ॥
एक्कारसमो य जिणो देवइजीवो उ सव्वभावविऊ । अममो बारसमजिणो होही जो सच्चई आसि ॥ ८७ ॥
तह निक्कसायनामो तेरसमो वासुदेवजीवो उ । बलदेवो पुण होही चोद्दसमो निप्पुलायजिणो ॥ ८८ ॥
निम्ममजिणो अमोहो पनरसमो होइ रोहिणीजीवो । सुलसासावियजीवो सोलसमो चित्तगुत्तो य ॥ ८९ ॥
सतरसमो य समाही रेवइजीवो उ विगयभववाही। संवरजिणो य जयहिओ अट्ठारसमो मियालीओ॥ २२९०॥
दीवायणस्स जीवो नियट्टिअरहा य अगुणवीसइमो । कण्हो गयभवतण्हो वीसइमो देवसेणजिणो ॥ ९१ ॥
तत्तो य एगवीसो नारयजीवो विवेगजिणचन्दो । बावीसइमो विमलो अमरजिओ विगयकम्ममलो ॥ ९२ ॥
देवोववायनामो तेवीसइमो उ अम्मडो पुव्वं । चरिमो य साइबुद्धो अणन्तविजओ जिणो होही ॥ ९३ ॥
ओसप्पिणीजिणाणं पडिलोमेण होन्ति तित्थयरा । जा चरिमो जिणनाहो विन्नेओ उसभनाहो व्व ॥ ९४ ॥
एएसु अईएसुं कमेण होहिन्ति पुव्वतुल्लगुणा । सुस्समसुसमा सुसमा सुस्समसुसमा य छट्ठा उ ॥ ९५ ॥
वीसं कोडाकोडी दोन्नि वि एया उ होन्ति अयराणं । ओसप्पिणी य उस्सप्पिणी य परियत्तमाणीओ ॥ ९६ ॥

अयरपमाणं पुण—

एगाहियबेहियतेहियाणि उक्कोससत्तरत्ताइं । घेत्तुं सिसुलोमाइं काउमसंखेज्जखण्डाइं ॥ ९७ ॥

---

१ व—य° । २ अ—भवगय° ।

... सोउ भगवया समक्खायं । बहुसाहुसाहुणीहिं य पच्चक्खायाइँ भत्ताइं ॥
तम्मि य समए वीरस्स जम्मरिक्खम्मि दुट्ठपरिणामो । दोवाससहस्सठिई संकन्तो भासओ कुगहो ॥ ११ ॥
निव्वाणगमणसमयं नाऊण जिणस्स भणइ तो सक्को । भयवं ! उदग्ग दिट्ठी भासग्गहसन्तिया इंगिह ॥ १२ ॥
वड्ढइ ता परिवालह मुहुत्तमेत्तं भविस्सकालम्मि । जेण न जायइ तित्थस्स अवणई सपरपक्खाओ ॥ १३ ॥
भणिओ य सो जिणेणं समत्थवत्थूण सक्क ! परिणामं । अणुभावं कालस्स य जाणन्तो मुज्झसे कीस ॥ १४ ॥

तथा हि—

तुन्निज्जइ जरवत्थं सीडिज्जइ तह गिहं पि परिसडियं । भग्गं पि संघडिज्जइ सगडं तुट्टा वरत्ता य ॥ १५ ॥
सो पुण णत्थि उवाओ सन्धिज्जइ आणुपाणुमेत्तं पि । जेणाऊ जीवाणं झीणं जं पुव्वभवबद्धं ॥ १६ ॥
मन्ता तन्ता मणिमूलियाओ सन्ती सुराण सव्वेज्जं । झाणरसायणमाई रक्खन्ति न आउए झीणे ॥ १७ ॥
सुरगिरिदण्डं पुहविं छत्तं पिव धारिउं जे समत्था । अरहन्ता अतुलबला ते वि न मच्चुं निवारिन्ति ॥ १८ ॥
ता सुरवइ ! मा तम्मसु जेणेत्थमवस्सभाविणो भावा । तुमए मए व कहमवि तीरन्ति न अन्नहा काउं ॥ १९ ॥
एवं अणुसासेउं सक्कं चउभेयसमणसङ्घं च । संपलियङ्कनिसन्नो जोगनिरोहं च काऊणं ॥ २३२० ॥
सेलेसिं पडिवन्नो झायन्तो परमसुक्कझाणं च । खविऊण निरवसेसं भवोवगाहीणि कम्माणि ॥ २१ ॥
चइऊण इमं बुंदिं संपावेऊण सव्वणिज्जाणं । उज्जुसेढिं पडिवन्नो एगेणं चेव समएणं ॥ २२ ॥
॥ २३ ॥

अस्संजमभीएहिं तं सोउं भगवया समक्खायं। बहुसाहुसाहुणीहिं य पच्चक्खायाइँ भत्ताइं ॥ ११ ॥
तम्मि य समए वीरस्स जम्मरिक्खम्मि दुट्ठपरिणामो। दोवाससहस्सठिई सक्कन्तो भस्सओ कुगहो ॥ १२ ॥
निव्वाणगमणसमयं नाऊण जिणस्स भणइ तो सक्को। भयवं! उदग्ग दिट्ठी भासग्गहसन्तिया इणिंह ॥ १३ ॥
वड्ढइ ता परिवालह मुहुत्तमेत्तं भविस्सकालम्मि। जेण न जायइ तित्थस्स अवणई सपरपक्खाओ ॥ १४ ॥
भणिओ य सो जिणेणं समत्थवत्थूण सक्क! परिणामं। अणुभावं कालस्स य जाणन्तो मुज्झसे कीस ॥ १५ ॥
तथा हि—
तुट्टिज्जइ जरवत्थं सीडिज्जइ तह गिहं पि परिसडियं। भग्गं पि संघडिज्जइ सगडं तुट्टा वरत्ता य ॥ १६ ॥
सो पुण णत्थि उवाओ सन्धिज्जइ आणुपाणुमेत्तं पि। जेणाऊ जीवाणं झीणं जं पुव्वभवबद्धं ॥ १७ ॥
मन्ता तन्ता मणिमूलियाओं सन्ती सुराण सन्नेज्झं। झाणरसायणमाई रक्खन्ति न आउए झीणे ॥ १८ ॥
सुरगिरिदण्डं पुहविं छत्तं पिव धारिउं जे समत्था। अरहन्ता अतुलबला ते वि न मच्चुं निवारिन्ति ॥ १९ ॥
ता सुरवइ! मा तम्मसु जेणेत्थमवस्सभाविणो भावा। तुमए मए व्व कहमवि तीरन्ति न अन्नहा काउं ॥ २३२० ॥
एवं अणुसासेउं सक्कं चउभेयसमणसङ्घं च। संपलियङ्कनिसन्नो जोगनिरोहं च काऊणं ॥ २१ ॥
सेलेसिं पडिवन्नो झायन्तो परमसुक्कझाणं च। खविऊण निरवसेसं भवोवग्गाहीणि कम्माणि ॥ २२ ॥
चइऊण इमं बुंदिं संपावेऊण सव्वणिज्जाणं। उज्जुसेढिं पडिवन्नो एगेणं चेव समएणं ॥ २३ ॥

अप्फालियतूररवं मणहरनच्चन्तसुरवहुसमूहं । निवडन्तकुसुमवरिसं विकिन्नमणिमोत्तियसमूहं ॥ ३७ ॥
गिज्जन्तसारगेयं संचलिया सुरनरा चियाभिमुहं । पत्ता खणेण तत्थ य काऊण महूसवं परमं ॥ ३८ ॥
आरोवियं चियाए कलेवरं वद्धमाणसामिस्स । अग्गिकुमारेहिं तहिं खित्तो अग्गी नियमुहेहिं ॥ ३९ ॥
वायं विउव्विऊणं वाउकुमारेहिं फूमिओ जलणो । कुम्भग्गसोयखित्तं वयं महुं तह य तियसेहिं ॥ २३४० ॥
सोणियमंसे डड्ढे मेहकुमारेहिं गन्धउदगेणं । विज्झाविया चिया सा गिण्हन्ति सुरा य अट्ठीणि ॥ ४१ ॥
दाहिणमुवरिमहणुयं सक्को गिण्हेइ हेट्ठिमं चमरो । ईसाणो उवरिल्लं वामं हेट्ठिल्लयं तु बली ॥ ४२ ॥
दन्तट्ठीणि उ सेसा सुरा सुरिन्दासुरा य सव्वे वि । मणुया य चियाभूइं सिवसन्तिकरं च गेण्हन्ति ॥ ४३ ॥
गन्तियतुरगाइगया तत्थ जणा आगया सुणियवत्तं । अहमहमिगाए वीए दिणम्मि वाहाइ य पवत्ता ॥ ४४ ॥
इय मोक्खगमणमहिमं काऊण सुरासुरा जिणवरस्स । नन्दीसरम्मि महिमं काऊण गया नियं ठाणं ॥ ४५ ॥
तीसं अगारवासी वारसवासाइं साइरेगाइं । छउमत्थपरीयाओ देसूणा केवली तीसं ॥ ४६ ॥
बावत्तरि सव्वाऊ कणगाभो सत्तरयणिउस्सेहो । चवणाइ पञ्चहत्थुत्तरो य वीरो जिणो होत्था ॥ ४७ ॥
इओ अणागयमेव य पावाए समोसढेण वीरेणं । मम मोहमोहियमई एसो न करेइ वाइच्चयं ॥ ४८ ॥
ता अवणेमि य मोहं विप्पियउप्पायणेण एयस्स । इय चिन्तिऊण गोयमसामी संपेसिओ गामे ॥ ४९ ॥

१ व–खेत्तं । २ व–दड्ढे । ३ व–०य सा चीया गि० ।

अप्फालियतूररवं मणहरनच्चन्तसुरवहुसमूहं । निवडन्तकुसुमवरिसं विकिन्नमणिमोत्तियसमूहं ॥ ३७ ॥
गिज्जन्तसारगेयं संचलिया सुरनरा चियाभिमुहं । पत्ता खणेण तत्थ य काऊण मह्सवं परमं ॥ ३८ ॥
आरोवियं चियाए कलेवरं वद्धमाणसामिस्स । अग्गिकुमारेहिं तहिं खित्तो अग्गी नियमुहेहिं ॥ ३९ ॥
वायं विउव्विऊणं वाउकुमारेहिं फूमिओ जलणो । कुम्भग्गसोयखित्तं घयं महुं तह य तियसेहिं ॥ २३४० ॥
सोणियमंसे डड्ढे मेहकुमारेहिं गन्धउदगेणं । विज्झाविया चिया सा गिण्हन्ति सुरा य अट्ठीणि ॥ ४१ ॥
दाहिणमुवरिमहणुयं सक्को गिण्हेइ हेट्ठिमं चमरो । ईसाणो उवरिल्लं वामं हेट्ठिल्लयं तु बली ॥ ४२ ॥
दन्तट्ठीणि उ सेसा सुरा सुरिन्दासुरा य सव्वे वि । मणुया य चियाभूइं सिवसन्तिकरं च गेण्हन्ति ॥ ४३ ॥
गन्तियतुरगाइगया तत्थ जणा आगया सुणियवत्तं । अहमहमिगाए बीए दिणम्मि वाहाइ य पवत्ता ॥ ४४ ॥
इय मोक्खगमणमहिमं काऊण सुरासुरा जिणवरस्स । नन्दीसरम्मि महिमं काऊण गया नियं ठाणं ॥ ४५ ॥
तीसं अगारवासी वारसवासाइं साइरेगाइं । छउमत्थपरीयाओ देसूणा केवली तीसं ॥ ४६ ॥
वावत्तरि सव्वाऊ कणगाभो सत्तरयणिउस्सेहो । चवणाइ पञ्चहत्थुत्तरो य वीरो जिणो होत्था ॥ ४७ ॥
इओ अणागयमेव य पावाए समोसढेण वीरेणं । मम मोहमोहियमई एसो न करेइ वाइत्तं ॥ ४८ ॥
ता अवणेमि य मोहं विप्पियउप्पायणेण एयस्स । इय चिन्तिऊण गोयमसामी संपेसिओ गामे ॥ ४९ ॥

---

१ व–खेत्तं । २ व–दड्ढे । ३ व–०य सा चीया गि० ।

ता भगवयाणुचिन्नं निम्ममभावं अहं पुण चरामि । एमाइसुहज्झवसाण संगओ तक्खणं चेव ॥ २३३० ॥
संपत्तखवगसेढी घाइकम्मक्खयं च काऊण । गोयमसामी मग्गे उप्पाडइ केवलं णाणं ॥ ३१ ॥
दसगणहारी एत्थं नियनियसमए सुहम्मसामिस्स । नियनियगणं समप्पिय संपत्ता सिवपयं ते वि ॥ ३२ ॥
वीरजिणस्स भगवओ परमं तित्थुन्नइं करेमाणो । रायगिहे संपत्तो वरसमणगुणो स्रु भणियं च ॥ ३३ ॥

वज्जरिसभसङ्घयणे समचउरंससंठाणसंठिए जाइसंपन्ने कुलसंपन्ने बलरूवविणयसंपन्ने नाणसंपन्ने दंसणसंपन्ने चरित्तसंपन्ने ओयंसी तेयंसी वचंसी जसंसी जियकोहे जियमाणे जियमाए जियलोभे जियइन्दिए[1] जियपरीसहे जीवियासमरणभयविप्पमुक्के तवप्पहाणे गुणप्पहाणे चरणकरणप्पहाणे अज्जवमद्दवखन्तिमुत्तिगुत्तिप्पहाणे विज्जामन्तप्पहाणे उराले घोरे घोरव्वए घोरतवस्सी घोरबम्भचेरवासी[2] उच्छूढसरीरे संखित्तविउलतेयलेसे चउद्दसपुव्वे[3] चउनाणोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तेवासी सुहम्मे नाम गणहरे रायगिहं णगरं समोसढो[4] त्ति ॥

दिक्खित्तु जम्बुनामं कमेण संठाविऊण सूरिपए । निट्ठवियसयलकम्मो सासयसोक्खं गओ मोक्खं ॥ ३४ ॥
परिनिव्वुया गणहरा जीवन्ते नायए नव जणाओ । इन्दभूइसुहम्मे रायगिहे निव्वुए वीरे ॥ ३५ ॥
वियरियपवित्तिणिपया वीरजिणिन्देण चन्दणज्जा वि । एक्कारसङ्गकुसला पज्जन्ते सिद्धिमणुपत्ता ॥ ३६ ॥

१ अ–जिइंदिए । २ अ–०चेरे उ० । ३ अ–पुव्वी । ४ व–०सढे ।

ता भगवयाणुचिन्नं निम्ममभावं अहं पुण चरामि । एमाइसुहज्झवसाण संगओ तक्खणं चेव ॥ २३६० ॥
संपत्तखवगसेढी घाइकम्मक्खयं च काऊण । गोयमसामी मग्गे उप्पाडइ केवलं णाणं ॥ ६१ ॥
दसगणहारी एत्थं नियनियसमए सुहम्मसामिस्स । नियनियगणं समप्पिय संपत्ता सिवपयं ते वि ॥ ६२ ॥
वीरजिणस्स भगवओ परमं तित्थुन्नइं करेमाणो । रायगिहे संपत्तो वरसमणगुणो ह भणियं च ॥ ६३ ॥

वज्जरिसभसङ्घयणे समचउरंससंठाणसंठिए जाइसंपन्ने कुलसंपन्ने बलरूवविणयसंपन्ने नाणसंपन्ने दंसणसंपन्ने चरित्तसंपन्ने ओयंसी तेयंसी वचंसी जसंसी जियकोहे जियमाणे जियमाए जियलोभे जियइन्दिए जियपरीसहे जीवियासमरणभयविप्पमुक्के तवप्पहाणे गुणप्पहाणे चरणकरणप्पहाणे अज्जवमद्दवखन्तिमुत्तिगुत्तिप्पहाणे विज्जामन्तप्पहाणे उराले घोरे घोरव्वए घोरतवस्सी घोरबम्भचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविउलतेयलेसे चउद्दसपुव्वे चउनाणोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तेवासी सुहम्मे नाम गणहरे रायगिहं णगरं समोसढो त्ति ॥

दिक्खत्तु जम्बुनामं कमेण संठाविऊण सूरिपए । निट्ठवियसयलकम्मो सासयसोक्खं गओ मोक्खं ॥ ६४ ॥
परिनिव्वुया गणहरा जीवन्ते नायए नव जणाओ । इन्दभूइसुहम्मे रायगिहे निव्वुए वीरे ॥ ६५ ॥
वियरियपवित्तिणिपया वीरजिणिन्देण चन्दणज्जावि । एक्कारसङ्गकुसला पज्जन्ते सिद्धिमणुपत्ता ॥ ६६ ॥

१ अ–जिइंदिए । २ अ–०चेरे उ० । ३ अ–पुव्वी । ४ ब–०सढे ।

उज्जोयणसूरिस्स य सीसो अह अम्बदेवउवज्झाओ । खममद्दवज्जवाईगुणकलिओ सोममुत्ती य ॥ २३८० ॥
तस्स विणेएण इमं वीरजिणिन्दस्स साहियं चरियं । पावमलस्स खयट्ठाएँ सूरिणा णेमिचन्देण ॥ ८१ ॥
जं एत्थ अणागमियं लक्खणछन्देहिं दूसियं जं च । रइयमणाभोगेणं मिच्छामिह दुक्कडं तस्स ॥ ८२ ॥
जो पढइ इमं चरियं वक्खाणइ सुणइ वायए वावि । वीरस्स उ भत्तीए सो पावइ परमकल्लाणं ॥ ८३ ॥
अणहिलवाडपुरम्मी सिरिकन्नराहिवम्मि विजयन्ते । दोहट्टिकारियाए वसहीए संठिएणं च ॥ ८४ ॥
वाससयाणं एगारसण्ह विक्कमनिवस्स विगयाणं । अगुयालीसे संवच्छरम्मि एयं निबद्धं ति ॥ ८५ ॥
॥ ग्रन्थाग्रं श्लोकतो ज्ञेयम् ॥ ३००० ॥

॥ समत्तमिणं महावीरचरियं ॥

उज्जोयणसूरिस्स य सीसो अह अम्बदेवउवज्झाओ । खममद्दवज्जवाईगुणकलिओ सोममुत्ती य ॥ २३८० ॥
तस्स विणेएण इमं वीरजिणिन्दस्स साहियं चरियं । पावमलस्स खयट्ठाएँ सूरिणा णेमिचन्देण ॥ ८१ ॥
जं एत्थ अणागमियं लक्खणछन्देहिं दूसियं जं च । रइयमणाभोगेणं मिच्छामिह दुक्कडं तस्स ॥ ८२ ॥
जो पढइ इमं चरियं वक्खाणइ सुणइ वायए वावि । वीरस्स उ भत्तीए सो पावइ परमकल्लाणं ॥ ८३ ॥
अणहिलवाडपुरम्मी सिरिकन्ननराहिवम्मि विजयन्ते । दोहट्टिकारियाए वसहीए संठिएणं च ॥ ८४ ॥
वाससयाणं एगारसण्ह विक्कमनिवस्स विगयाणं । अगुयालीसे संवच्छरम्मि एयं निवद्धं ति ॥ ८५ ॥

॥ ग्रन्थाग्रं श्लोकतो ज्ञेयम् ॥ ३००० ॥

॥ समत्तमिणं महावीरचरियं ॥

३१ कल्पसूत्रं (सुबोधिकानाम्न्या टीकया भूषितम्)
३२ उत्तराध्ययनं (भाविजयगणिविरचितटीकयोपेतम्) मुद्र्यमाणम्
३३ उपदेशसप्ततिका
३४ कुमारपालप्रबन्धः
३५ आचारोपदेशः
३६ रोहिण्यशोकचन्द्रकथा
३७ ज्ञानसाराष्टकं (ज्ञानमञ्जरीनाम्न्या टीकया समलंकृतम्)
३८ गुरुगुणषट्त्रिंशत्षट्त्रिंशिकाकुलकं (दीपिकया भूषितम्)
३९ समयसारप्रकरणं (स्वोपज्ञव्याख्योपेतम्)
४० सुकृतसागरम्
४१ धम्मिलकथा
४२ धन्यकथानकम्
४३ प्रतिमाशतकम् सटीकम्
४४ चतुर्विंशतिस्तुतिसंग्रहः
४५ रौहिणेयकथा
४६ क्षेत्रसमासप्रकरणं (स्वोपज्ञटीकया भूषितम् ।)
४७ श्राद्धविधिः (विधिकौमुदीनाम्न्या वृत्त्युपेतः)
४८ बृहत्संग्रहणी सटीकः मुद्र्यमाणा
४९ षड्दर्शनसमुच्चयः सटीकः मुद्र्यमाणः
५० पञ्चसंग्रहः सटीकः मुद्र्यमाणः
५१ सुकृतसंकीर्तनमहाकाव्यम्
५२ चत्वारः प्राचीनकर्मग्रन्थाः सटीकाः
५३ सम्बोधसप्ततिः सटीका
५४ संकृतकुवलयमाला
५५ सामाचारीप्रकरणं (स्वोपज्ञटीकया भूषितम्)
५६ करुणावज्रायुधनाटकम् ।
५७ कुमारपालचरित्रमहाकाव्यम् ।
५८ महावीरचरियं प्राकृतम् ।
५९ कौमुदीमित्राणन्दनाटकम् ।
६० प्रबुद्धरौहिणेयम् मुद्र्यमाणम् ।

३१ कल्पसूत्रं (सुबोधिकानाम्न्या टीकया भूषितम्)
३२ उत्तराध्ययनं (भावविजयगणिविरचितटीकयोपेतम्) मुद्रयमाणम्
३३ उपदेशसप्ततिका
३४ कुमारपालप्रबन्धः
३५ आचारोपदेशः
३६ रोहिण्यशोकचन्द्रकथा
३७ ज्ञानसाराष्टकं (ज्ञानमञ्जरीनाम्न्या टीकया समलंकृतम्)
३८ गुरुगुणषट्त्रिंशत्षट्त्रिंशिकाकुलकं (दीपिकया भूषितम्)
३९ समयसारप्रकरणं (स्वोपज्ञव्याख्योपेतम्)
४० सुकृतसागरम्
४१ धम्मिलकथा
४२ धन्यकथानकम्
४३ प्रतिमाशतकम् सटीकम्
४४ चतुर्विंशतिस्तुतिसंग्रहः
४५ रौहिणेयकथा
४६ क्षेत्रसमासप्रकरणं (स्वोपज्ञटीकया भूषितम् ।)
४७ श्राद्धविधिः (विधिकौमुदीनाम्न्या वृत्त्युपेतः)
४८ बृहत्संग्रहणी सटीकः मुद्रयमाणा
४९ षड्दर्शनसमुच्चयः सटीकः मुद्रयमाणः
५० पञ्चसंग्रहः सटीकः मुद्रयमाणः
५१ सुकृतसंकीर्तनमहाकाव्यम्
५२ चत्वारः प्राचीनकर्मग्रन्थाः सटीकाः
५३ सम्बोधसप्ततिः सटीका
५४ संकृतकुवलयमाला
५५ सामाचारीप्रकरणं (स्वोपज्ञटीकया भूषितम्)
५६ करुणावज्रायुधनाटकम् ।
५७ कुमारपालचरित्रमहाकाव्यम् ।
५८ महावीरचरियं प्राकृतम् ।
५९ कौमुदीमित्राणन्दनाटकम् ।
६० प्रबुद्धरौहिणेयम् मुद्रयमाणम् ।